राज कपूर

एकमात्र शोमैन

उनकी बेटी रितु नंदा द्वारा प्रस्तुत

Table of Contents

ढकना
शीर्षक पेज
समर्पण
विषयसूची
ऋतु नंदा द्वारा प्रस्तावना
बचपन
परिवार
शुरुआत
नायिकाओं
फिल्में
सहकर्मी और मित्र
संगीत
राजनीतिक बैठकें
काम
छुट
कुछ विचार
भारत से परे
पिछले दिनों
श्रद्धांजलि
पुरस्कार
फिल्मोग्राफी
स्वीकृतियां
किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

राज कपूर

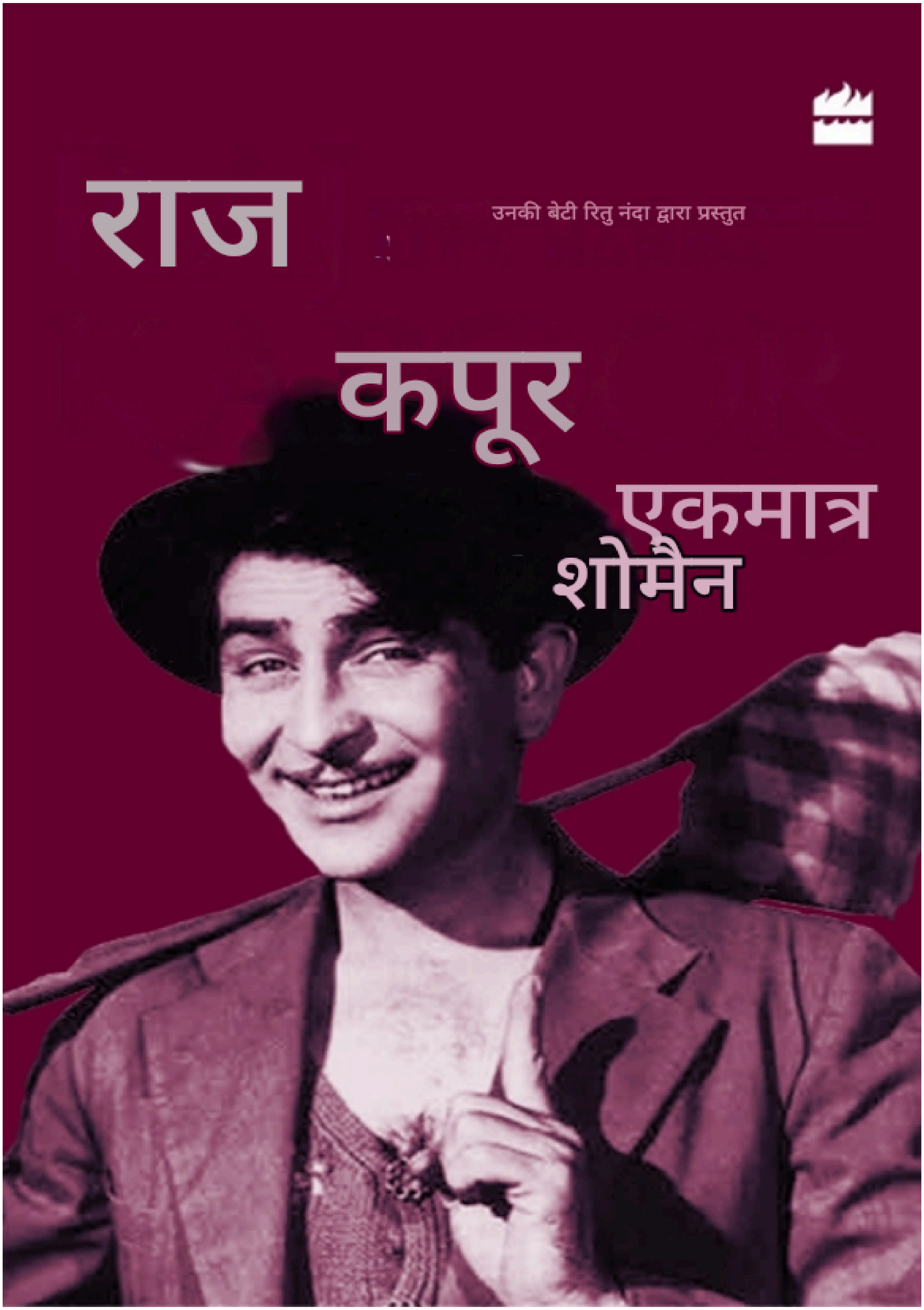
राज
उनकी बेटी रितु नंदा द्वारा प्रस्तुत
कपूर
एकमात्र
शोमैन

राज कपूर

एकमात्र शोमैन

उनकी बेटी रितु नंदा द्वारा प्रस्तुत।

HarperCollins *Publishers* India

यह पुस्तक मेरी मां को समर्पित है, जो अपने बच्चों की तरह मानती हैं कि राज कपूर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी मृत्यु नहीं हो सकती।

'हर कलाकार का, किसी भी रचनात्मक पेशे से जुड़े व्यक्ति का, बहुत सारा काम कुछ हद तक आत्मकथात्मक होता है... उसके अनुभव का कुछ अंश हमेशा उससे जुड़ा रहता है, वह उसमें बना रहता है और व्यक्ति उसे किसी न किसी रूप में प्रकट करता है। यही सच्चाई है।'

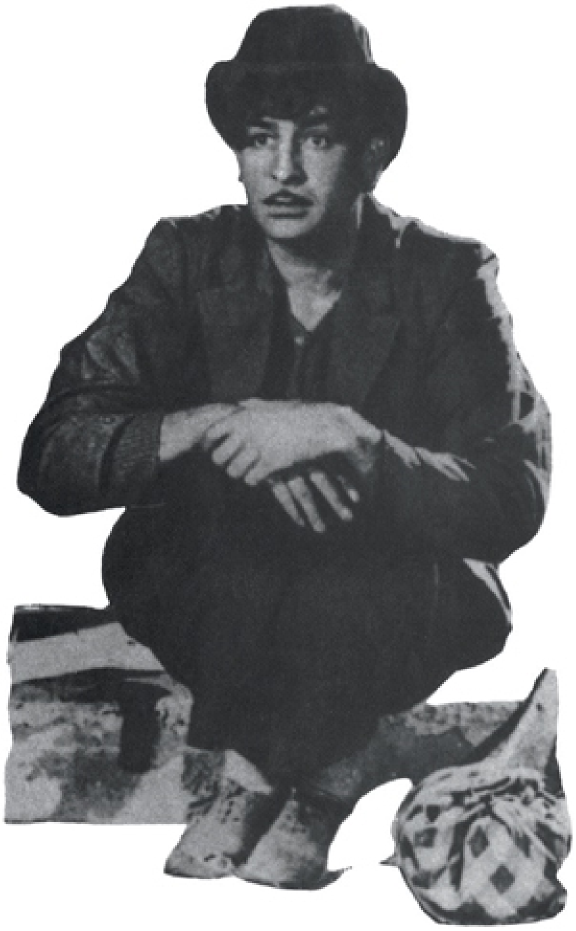

अंतर्वस्तु

ऋतु नंदा द्वारा प्रस्तावना
बचपन
परिवार
शुरुआत
नायिकाओं
फिल्में
सहकर्मी और मित्र
संगीत
राजनीतिक बैठकें
काम
छूट
कुछ विचार
भारत से परे
पिछले दिनों
श्रद्धांजलि
पुरस्कार
फिल्मोग्राफी

स्वीकृतियाँ
किताब के बारे में
लेखक के बारे में
कॉपीराइट

प्रस्तावना

ऋतु नंदा

राज कपूर अनेक लोगों के लिए अनेक भूमिकाओं में थे: निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, संपादक, संगीतकार, कहानीकार, बहुमुखी प्रतिभा के धनी और भारतीय फिल्म उद्योग के सर्वमान्य जनक। उन्हें एक असाधारण कलाकार, प्रेमी, आदर्शवादी, ज्ञानी और समाज सुधारक के रूप में भी जाना जाता है। पापा पढ़े-लिखे नहीं थे और न ही वे फिल्म को बौद्धिक माध्यम मानते थे। वे एक रोमांटिक व्यक्ति थे और सामाजिक-आर्थिक असमानता और अन्याय के प्रति उनकी प्रतिक्रिया बौद्धिक के बजाय भावनात्मक थी। उनका दृढ़ विश्वास था कि दर्शक मनोरंजन के लिए सिनेमाघरों में जाते हैं, न कि सामाजिक या राजनीतिक उपदेश सुनने के लिए। उन्होंने सामाजिक मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए लोकप्रिय सिनेमा की क्षमता को भी पहचाना। उन्होंने एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित किया जिससे वे जितने लोगों का मनोरंजन करते थे, उतने ही लोगों को प्रभावित करने में सफल रहे। कला पर राज कपूर की महारत ने उन्हें इस माध्यम के इतिहास में सबसे अधिक देखी जाने वाली फिल्मों में से कुछ का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। हिंदी सिनेमा इन दिनों इतना लोकप्रिय है कि हम भूल जाते हैं कि एक समय ऐसा भी था जब यह इतना लोकप्रिय नहीं था। राज कपूर ने सिर्फ फिल्में ही नहीं बनाईं, बल्कि उन्होंने बॉलीवुड शब्द के प्रचलन से पहले ही भारतीय फिल्म जगत के मुख्यधारा के दर्शकों को गढ़ दिया था। इसका यह अर्थ नहीं है कि उनकी फिल्में फ्लॉप नहीं हुईं। उनकी दो पसंदीदा फिल्में, 'आह' और 'मेरा नाम जोकर', बुरी तरह फ्लॉप हुईं। हालांकि उन्हें ये फिल्में थोड़ी ज्यादा पसंद थीं, लेकिन दर्शकों ने इन्हें उतना पसंद नहीं किया। लेकिन जब भी उन्हें सफलता मिली, तो उन्होंने जबरदस्त सफलता हासिल की, क्योंकि उन्होंने अपने चरम पर पहुंच चुके भारतीय समाजवाद में रोमांस, कामुकता, गीत और आत्मा का संचार किया।

हिंदी फिल्मों की दुनिया उस देश में शिक्षा और ज्ञानवर्धन का एक माध्यम भी थी, जहाँ स्वतंत्रता के समय साक्षरता दर मात्र 18 प्रतिशत थी। इसलिए, सिनेमा धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम था। एक ट्रक प्रोजेक्टर और एक रोल की हुई फिल्म लेकर गाँव-गाँव जाता था। पापा कपूर द्वारा प्रस्तुत और गाई गई फिल्मों का चित्रण संकीर्ण नहीं था, बल्कि यह नेहरू के भारत की झलक थी, जिसमें शहरीकरण और आधुनिकीकरण का माहौल साफ दिखाई देता था। उनकी भावुक, नम आँखों वाली नायिकाओं और कभी-कभी हास्यप्रद कॉमेडी के पीछे अक्सर गरीबों से किए गए वादों को पूरा करने की एक चुटीली और उत्साहपूर्ण अपील छिपी होती थी। राज कपूर की नजर उन छोटी-छोटी कमियों पर गहरी थी जो वंचितों का मनोबल तोड़ देती हैं। फिल्म 'बूट पॉलिश' के एक मार्मिक दृश्य में, कैमरा राशन के लिए इंतजार कर रहे लोगों की एक लंबी कतार पर फोकस करता है। यह जरूरतमंदों की एकजुटता की एक झलक है। लेकिन अचानक बारिश शुरू हो जाती है, और जरूरतमंदों का वर्ग फिर से विभाजित हो जाता है - कुछ लोग छाता निकाल लेते हैं और कुछ पूरी तरह भीग जाते हैं। गरीबों का अपमान देखकर दिल दहल जाता है, लेकिन राज कपूर की फिल्म होने के कारण हंसी भी आती है और जल्द ही एक अच्छा गाना भी आ जाता है। आजादी के बाद फैली सामूहिक निराशा के लिए उन्होंने जो समाधान सुझाए, उनका राजनीति से कम और प्रेम से अधिक संबंध था। हालांकि उनकी यह प्रवृत्ति उनके कुछ राजनीतिक सहयोगियों को निराश कर सकती थी, लेकिन इसी ने भारतीय सिनेमा को दुनिया से परिचित कराया।

सन् 1948 में, जब पापा की उम्र महज़ तेईस वर्ष थी, तब उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म, कम बजट वाली 'आग' रिलीज़ की। इस फ़िल्म की भावनात्मक तीव्रता, तकनीकी साहस और संवेदनशीलता ने भारतीय सिनेमा में एक असाधारण प्रतिभा

के आगमन की घोषणा कर दी। यह फ़िल्म राज कपूर और नरगिस के सबसे प्रसिद्ध और चिरस्थायी पर्दे के संयोजन की शुरुआत भी थी। यह फ़िल्म कई घटनाओं को एक साथ पिरोकर एक थिएटर निर्माता (राज कपूर) और उसके जीवन में अलग-अलग समय पर आने वाली तीन महिलाओं की कहानी को फ़्लैशबैक में बयां करती है। व्यावसायिक रूप से यह फ़िल्म औसत दर्जे की सफल रही, लेकिन राज कपूर की अगली फ़िल्म 'बरसात' (1949) ब्लॉकबस्टर साबित हुई। हालाँकि कहानी आम थी, लेकिन इसकी लोकप्रियता का कारण इसका दिल को छू लेने वाला संगीत, युवा जोश और यौन संबंधों के प्रति अपेक्षाकृत खुला नज़रिया था।

1952 में पापा ने के.ए. अब्बास से आवारा की पटकथा खरीदी। मेलोड्रामा और रोमांस का अद्‌भुत मिश्रण यह फिल्म न सिर्फ भारत में, बल्कि मध्य पूर्व, ईरान, तुर्की, चीन और पूर्व सोवियत संघ में भी दर्शकों को लुभाने में कामयाब रही। द्वितीय विश्व युद्ध और विभाजन के बाद के भारत में, जब पूरा सामाजिक-राजनीतिक तंत्र तनाव में था और हजारों प्रवासी शहरों की ओर उमड़ रहे थे, लाखों लोगों ने राज कपूर के बेघर नायक राजू से खुद को जुड़ा हुआ महसूस किया। आवारा का यह घुमक्कड़ 'श्री 420' में फिर से दिखाई दिया, लेकिन एक अलग अंदाज में। यह फिल्म भोले-भाले देहाती लड़के से शहरी चालाक बनने तक के उसके परिवर्तन का एक दिलचस्प चित्रण है।

जागते रहो (1956) उसी विषय पर आधारित एक कम प्रभावी फिल्म थी, जिसमें एक साधारण आदमी बड़ी, क्रूर दुनिया में फंसा हुआ दिखाया गया था। इस फिल्म ने 1957 में कार्लोवी वेरी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ग्रैंड प्रिक्स पुरस्कार जीता, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। इसी फिल्म के साथ नरगिस और राज कपूर का साथ भी समाप्त हो गया।

फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' (1960) की थीम गांधीवादी शांतिवादी विनोबा भावे से प्रेरित थी, जिन्होंने मध्य भारत की घाटियों में सक्रिय डाकुओं से आत्मसमर्पण करने की अपील की थी, जिस पर कुछ ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी थी। यह संदेश उस दौर के लिए बेहद प्रासंगिक और आकर्षक था, जिस दौर में फिल्म बनी थी, और इसने दुनिया को यह साबित कर दिया कि सहानुभूतिपूर्ण और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर कट्टर अपराधी भी सुधर सकते हैं।

1964 में, पापा अपनी सुपरहिट फिल्म संगम के लिए यूरोप गए। लंदन, पेरिस, वेनिस और स्विट्‌जरलैंड जैसी विविध जगहों पर फिल्माई गई यह फिल्म रंगीन फिल्मों में उनका पहला प्रयास था और उन्होंने इसे अपनी विशिष्ट कुशलता से अंजाम दिया। फिल्म निर्माता ने स्पष्ट रूप से इसे शुरू से अंत तक एक आकर्षक दृश्य बनाने के लिए डिज़ाइन किया था, जो ग्लैमर से भरपूर थी। दुनिया भर के फिल्म निर्माता यह साबित करने में लगे रहे हैं कि रूडयार्ड किपलिंग, जिन्होंने कहा था कि 'पूरब पूरब है और पश्चिम पश्चिम है, ये दोनों कभी नहीं मिल सकते', उन्हें इससे बेहतर पता होना चाहिए था। भारत में, राज कपूर ने किपलिंग के इस

मिथक को शानदार ढंग से साकार किया। यही संगम (जिसका शाब्दिक अर्थ है मिलन) की उपलब्धि है, जो न केवल पूरब और पश्चिम का, बल्कि कला और मनोरंजन का भी संगम करने का प्रयास करती है और उसमें सफल भी होती है। यह मशहूर हास्य फिल्म निर्माता अर्न्स्ट लुबिट्श थे जिन्होंने एक बार कहा था कि 'कोई भी व्यक्ति तब तक प्रतिभाशाली नहीं है जब तक वह ईमानदारी से मनोरंजन न कर सके'। पापा की एक रचनात्मक शिल्पकार और एक ईमानदार, दमदार मनोरंजनकर्ता के रूप में प्रतिभा संगम में सबसे अच्छी तरह से परिलक्षित हुई, जिसका निर्देशन उन्होंने किया और जो एक संपादक के रूप में उनकी पहली फिल्म भी थी।

मेरा नाम जोकर (1970) में, हम एक आवारा को सर्कस के विदूषक के रूप में फिर से देखते हैं। यह पापा की सबसे महत्वाकांक्षी और सबसे लंबी फिल्म थी, जो पूरे चार घंटे पंद्रह मिनट की थी! उन्होंने एक पूरा 'रूसी सर्कस' और बोल्शोई बैलेरीना क्सेनिया रियाबिंकिना को फिल्म में अभिनय करने के लिए भारत बुलाया था। फिल्म तीन अध्यायों में संरचित है, जो एक विदूषक के अंतिम प्रदर्शन पर केंद्रित है। फ्लैशबैक में, हम विदूषक के जीवन के संघर्ष और दुख को देखते हैं। यह अपने समय की सबसे महंगी फिल्म थी और रिलीज होने पर भारतीय फिल्मों की सबसे बड़ी फ्लॉप साबित हुई। यह अपने समय से आगे की फिल्म थी क्योंकि दस साल बाद, पापा ने फिल्म को फिर से संपादित किया, इसे छोटा किया और वही फ्लॉप फिल्म एक बड़ी सफलता बन गई।

'मेरा नाम जोकर' की आर्थिक विफलता के बाद, राज कपूर ने 'बॉबी' (1973) से शानदार वापसी की। उन्होंने अपने बेटे ऋषि कपूर को चौदह वर्षीय डिंपल कपाडिया के साथ कास्ट किया, जो देखते ही देखते एक पीढ़ी की चहेती बन गईं। किशोरों को किशोर की भूमिका में लेकर, राज कपूर ने एक बार फिर भारतीय सिनेमा में नया चलन स्थापित किया।

कल आज और कल (1972) कई मायनों में अनोखी फिल्म है। यह राज कपूर के सबसे बड़े बेटे, मेरे भाई रणधीर कपूर की पहली मुख्य भूमिका वाली फिल्म थी, जिन्होंने इसी फिल्म से निर्देशक के रूप में भी पदार्पण किया। इसके अलावा, कपूर परिवार की तीन पीढ़ियों - पृथ्वीराज कपूर, राज कपूर और रणधीर कपूर - ने अपने वास्तविक जीवन के रिश्ते को पर्दे पर उतारा, क्रमशः पिता, पुत्र और पोते की भूमिका निभाई। साथ ही, रणधीर की तत्कालीन मंगेतर (और अब पत्नी) बबीता ने उनकी परदे पर मंगेतर की भूमिका निभाई। इस तरह की कास्टिंग, जो काल्पनिक रिश्तों को वास्तविक जीवन के रिश्तों के साथ जोड़ती है, सिनेमा या रंगमंच के इतिहास में दुनिया भर में बेमिसाल है। वीरेंद्र सिन्हा द्वारा लिखित कल आज और कल, पीढ़ी के अंतर और उससे उत्पन्न संघर्ष पर प्रकाश डालती है। यह अतीत और भविष्य के बीच क्लासिक टकराव की कहानी है, जिसमें वर्तमान असहाय रूप से बीच में फंसा हुआ है। फिल्म में दादाजी के रूप में पृथ्वीराज कपूर, जीवन के प्रति पुराने, संभ्रांत और रूढ़िवादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते

हैं, जबकि पोता आधुनिक, विद्रोही और गैर-परंपरावादी सोच को दर्शाता है। पापा मध्य पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो माता-पिता को नाराज करने से डरती है और साथ ही बच्चों को नाराज करने से भी भयभीत रहती है, कहीं वे विद्रोह करके घर छोड़कर न चले जाएं। फिल्म सुख और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए एक आदर्श समाधान खोजने का प्रयास करती है।

धर्म कर्म (1976) का निर्देशन भी रणधीर कपूर ने ही किया था। जहाँ आवारा ने यह दिखाया कि परिस्थितियाँ और वातावरण मिलकर मनुष्य का व्यक्तित्व बनाते हैं, वहीं धर्म कर्म ने इसी अवधारणा के विपरीत, यह दिखाया कि मनुष्य के जीन ही उसके व्यक्तित्व को निर्धारित करते हैं: जैसा बाप वैसा बेटा।

राज कपूर की अगली फिल्म, जिसमें उन्होंने निर्माता और निर्देशक दोनों की भूमिका निभाई, सत्यम शिवम सुंदरम (1978) थी। यह एक अधिक जटिल फिल्म थी, जिसका मुख्य विषय शारीरिक सुंदरता के विपरीत आंतरिक सुंदरता का विचार था। राज कपूर ने इसमें यौन संबंध, धर्म और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों को भी शामिल किया। यह पापा की सबसे आकर्षक फिल्मों में से एक है। उनका हमेशा से मानना था कि कामुकता जीवन का एक हिस्सा है; यह सुंदरता का एक हिस्सा है। लेकिन इसमें न तो नग्नता थी और न ही अश्लीलता। पूरी फिल्म पुणे के पास लोनी स्थित उनके फार्महाउस में फिल्माई गई थी। उन्होंने फिल्म को बड़ी संवेदनशीलता और प्रेम से बनाया था। फिल्म के रंग, स्थलाकृति और दृश्य अद्भुत थे, और पापा के लिए संगीत इतना महत्वपूर्ण होने के कारण, फिल्म में लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल का शानदार संगीत भी था।

प्रेम रोग (1982) एक युवा विधवा की मार्मिक कहानी है, जिसे उसके देवर द्वारा बलात्कार जैसी अपमानजनक घटना का सामना करना पड़ता है। इसमें परंपरा और आधुनिकता का अनूठा संगम देखने को मिलता है। फिल्म विधवा पुनर्विवाह के मुद्दे पर आधारित है। सभी परंपराओं की तरह, भारतीय परंपराओं में भी कुछ ऐसे तत्व मौजूद हैं जो अप्रचलित, प्रतिकूल और आधुनिक, प्रबुद्ध जीवन के लिए हानिकारक हैं। कहानी से समझौता किए बिना, प्रेम रोग परंपरा में प्रासंगिक और अप्रचलित, सकारात्मक और नकारात्मक तत्वों के बीच अंतर करने के महत्व पर बल देती है, ताकि अस्वस्थ तत्वों को समाप्त किया जा सके और मूल्यवान तत्वों को बढ़ावा दिया जा सके।

राम तेरी गंगा मैली (1985) पापा की आखिरी फिल्म थी जिसे उन्होंने पूरा किया। फिल्म का विचार कई साल पहले तब आया जब उन्होंने एक संत की कही बात सुनी, जिन्होंने रामकृष्ण परमहंस से कहा था, 'हे राम, आपकी गंगा कितनी प्रदूषित है!' हिंदुओं के लिए पवित्र गंगा नदी हिमालय में अपने उद्गम स्थल पर बेहद निर्मल है, लेकिन मैदानों की ओर आते-आते प्रदूषित हो जाती है। फिल्म की नायिका गंगा भी पहाड़ों में अपने घर में भोली और खुश है, लेकिन अपने लापता प्रेमी की तलाश में शहर आने पर उसके साथ धोखा, बलात्कार और शोषण होता है। फिल्म प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और

छल को उजागर करना चाहती थी। इस प्रक्रिया में, फिल्म ने अपने बेबाक प्रेम दृश्यों और नायिका के लगभग नग्नता के कारण काफी विवाद खड़ा किया। आलोचकों ने राज कपूर पर ताक-झांक करने का आरोप लगाया, लेकिन वे अविचलित रहे क्योंकि दर्शकों ने स्पष्ट रूप से फिल्म का समर्थन किया, जिसने बॉक्स ऑफिस पर अभूतपूर्व कमाई की।

राज कपूर की फिल्मों पर हमेशा तीखी प्रतिक्रियाएं आती थीं, लेकिन वे इससे कभी प्रभावित नहीं हुए। वे जानते थे कि जनमानस ने ही उन्हें बनाया है और उन्होंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा। सिनेमा कला में उनके सटीक योगदान पर अंतहीन बहसें चलती रहेंगी, लेकिन इस बात से शायद ही कोई इनकार कर सके कि वे भारतीय सिनेमा के सबसे महान मनोरंजनकर्ता थे। उन्होंने अपनी विरासत में मिली सिनेमाई परंपरा के भीतर काम किया, उसमें बदलाव किए और नए तत्व जोड़े, और इस तरह एक ऐसी लोकप्रिय कला का निर्माण किया जो उनके स्वभाव और जीवन के प्रति दृष्टिकोण के अनुरूप थी। उन्होंने भारतीय सिनेमा में लोकप्रिय रोमांटिक भावना का संचार किया। राज कपूर भारतीय सिनेमा के अंतिम सच्चे फिल्म निर्माता थे। वे दबंग और राजसी थे, बड़े सपनों के धनी थे। उनकी रचनाएँ स्पष्ट रूप से आर.के. स्टूडियो से कई गुना बड़ी थीं, जो आज भी एक व्यक्ति की दूरदृष्टि, ऊर्जा और उद्यम का जीवंत स्मारक है।

1990 में विश्व सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, तत्कालीन सोवियत संघ ने विश्व की कुछ फिल्मी हस्तियों को सम्मानित किया। इनमें इंग्रीड बर्गमैन, जीन गैबिन, चार्ली चैपलिन, मर्लिन मोनरो और भारत से राज कपूर शामिल थे। इस अवसर पर, मॉस्को स्थित इस्कुस्टवो पब्लिशिंग हाउस ने इस पुस्तक का पहला संस्करण प्रकाशित किया, जिसका मूल शीर्षक राज कपूर था। रूसी भाषा में इसकी 100,000 से अधिक प्रतियां छापी गईं। पुस्तक का चीनी, हिंदी और अंग्रेजी में भी अनुवाद किया गया।

इस किताब का विचार पापा के 2 जून 1988 को निधन के कुछ समय बाद ही आया। मेरे एक व्यावसायिक सहयोगी, सुमन सहगल ने मुझे बताया कि सोवियत संघ में राज कपूर पर एक किताब की ज़रूरत है। मुझे याद है कि मैंने उन्हें बन्नी रूबेन से संपर्क करने के लिए कहा था, जो मेरे पिता के प्रिय मित्र और सहकर्मी होने के साथ-साथ उनकी जीवनी, 'राज कपूर: द फैबुलस शोमैन' के लेखक भी थे। यह जीवनी पापा के जीवनकाल में ही पूरी हो गई थी और उनके निधन के कुछ समय बाद ही प्रकाशित हुई थी। लेकिन बन्नी रूबेन के लिए यह नया प्रस्ताव व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य नहीं था, और सुमन सहगल आगे की सलाह के लिए मेरे पास वापस आए। तब मैंने उन्हें सिमी गरेवाल से संपर्क करने की सलाह दी। वह भी पापा की बहुत प्रिय मित्र और एक स्टार सहकर्मी थीं। उन्होंने चैनल फोर यूके के लिए पापा पर एक वृत्तचित्र बनाया था। विडंबना यह है कि जब 'लिविंग लीजेंड राज कपूर' नामक वृत्तचित्र पहली बार भारतीय टेलीविजन पर प्रसारित हुआ, तब पापा अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में जीवन के लिए संघर्ष कर रहे

थे, विज्ञान जो दे सकता था और नियति ने उनके लिए जो तय किया था, उसके बीच झूल रहे थे। राज कपूर की बेटी होने के नाते, मुझे इस शानदार डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से पापा के बारे में बहुत कुछ पता चला। मुझे पूरा यकीन था कि सिमी एक बेहतरीन किताब लिखेंगी। दुर्भाग्यवश, मॉस्को स्थित प्रकाशक शर्तों को पूरा नहीं कर सका और सुमन सहगल को फिर से प्रकाशक के पास जाना पड़ा!

राज कपूर पर एक और किताब आई थी, जिसका नाम था 'राज कपूर की फिल्में: संवादों का सामंजस्य', जिसे मालती सहाई और विमल दिसानायके ने लिखा था। यह वास्तव में अमेरिका के हवाई स्थित ईस्ट वेस्ट सेंटर में किया गया शोध था। पापा के काम का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया गया था कि एक सच्चा कलाकार राष्ट्र की नब्ज़ को कैसे समझता है और सिनेमा के शक्तिशाली माध्यम का उपयोग करके जनता से कैसे संवाद करता है। यह राज कपूर को एक शानदार श्रद्धांजलि थी, लेकिन किताब उनके व्यक्तित्व का सही प्रतिबिंब नहीं थी। मुझे नहीं लगा कि सोवियत प्रकाशक इस तरह की किताब चाहते थे। इसी समय मेरे मन में पापा पर एक फोटोग्राफिक किताब का विचार आया। मैंने इस अवधारणा का एक नमूना तैयार किया और उसे मॉस्को के प्रकाशन गृह को भेज दिया। परियोजना स्वीकार कर ली गई और मुझे एक टेलीग्राम मिला जिसमें मॉस्को से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के किताब पर काम शुरू करने की तारीख लिखी थी! मैं घबरा गया और मार्गदर्शन के लिए अपने एक प्रकाशक मित्र, अरुण पुरी के पास गया। मुझे आश्चर्य हुआ जब उन्होंने कहा, 'तुम ही करो। इस पर अपना नाम लिखवा लो।' मैंने तो कभी इस तरह की परियोजना शुरू करने के बारे में सोचा भी नहीं था। मुझे यह एक बेतुका सुझाव लगा और मैं अपनी सामान्य व्यस्तताओं में लग गया, इस उम्मीद में कि मुझे पापा के जीवन का रिकॉर्ड भावी पीढ़ियों के लिए लिखने के लिए एक उपयुक्त व्यक्ति मिल जाएगा।

प्रतिनिधिमंडल दिल्ली पहुंचा। मैं उनके साथ बॉम्बे के लिए रवाना हो गई। उस समय मेरे भाई मेरे पिता की अधूरी फिल्म 'हेन्ना' को पूरा करने में व्यस्त थे। मेरे बड़े भाई के सहायक निर्देशक खालिद थे। वे लेखक भी थे। मुझे याद है मैंने उनसे कहानी के बारे में सलाह मांगी थी। मेरे पास कॉन्सेप्ट तो था, लेकिन तस्वीरों के साथ लिखे जाने वाले टेक्स्ट के बारे में मुझे बिलकुल भी अंदाजा नहीं था। खालिद ने आकर मेरी मदद करने का वादा किया, लेकिन वे अपने वादे पर नहीं आए। स्थिति निराशाजनक लग रही थी। मुझे याद है मैं अपने पिता के कमरे में गई और फूट-फूटकर रोने लगी। सोवियत संघ मेरे पिता के लिए इतना बड़ा सम्मान देने की योजना बना रहा था, और मैंने इस विचार को जीवित रखा था, लेकिन अब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूं। मुझे यकीन हो गया था कि मैं खुद किताब नहीं लिख सकती। मैं राज कपूर की बेटी तो थी, लेकिन सिनेमा में उनके योगदान का एक स्थायी रिकॉर्ड बनाने के लिए जिस नजरिए की जरूरत होती है, उस नजरिए से मैं उन्हें नहीं जानती थी। मैंने अपने गुरु श्री शिरडी साई बाबा से प्रार्थना की कि वे मेरी मदद करें। पवित्र ग्रंथ साईं सच्चरित्र में, लेखक पहले ही

अध्याय में बाबा को संबोधित करते हुए कहते हैं: 'मैं आप पर पुस्तक कैसे लिख सकता हूँ? आप भगवान हैं और मैं तो बस एक मनुष्य हूँ!' साईं बाबा उन्हें दर्शन देते हैं और कहते हैं, 'तुम लिखो और मैं तुम्हारे माध्यम से लिखूँगा।' मैंने भी साईं बाबा से इसी प्रकार सहायता करने की प्रार्थना की। बदले में, मैं पुस्तक की पहली प्रति महाराष्ट्र के शिरडी स्थित उनके मंदिर में उनके नाम से अर्पित करूँगा। मैंने ऐसा ही किया! आस्था किसी ऐसी चीज़ में विश्वास करना है जिसे आप देख नहीं सकते और आस्था का परिणाम वही देखना है जिस पर आप विश्वास करते हैं। ऐसा लग रहा था मानो भगवान मुझसे संवाद कर रहे हों। पापा के कमरे में उनके साक्षात्कार का वीडियो चल रहा था, और मेरे मन में एक विचार कौंधा कि राज कपूर से उनकी अपनी पुस्तक लिखवाई जाए! और फिर मैं पूरी तरह से इस बात पर केंद्रित हो गया कि मैं इस पुस्तक को कैसे तैयार करना चाहता हूँ। मैंने चार महीने तक खुद को इस परियोजना में लगा दिया, शोध किया, पापा के अपने शब्दों से एक कथा बुनी। चार महीने के अंत में पुस्तक तैयार थी और 1991 में, मॉस्को में रूसी भाषा में एक लाख प्रतियाँ प्रकाशित हुईं। अदला-बदली के अनुबंध के हिस्से के रूप में, आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज को अंग्रेजी में छपी उसी पुस्तक की दस हजार प्रतियां दी गईं।

ग्यारह साल बाद, 2002 में, पुस्तक का दूसरा संस्करण पुनः प्रकाशित करना पड़ा। मैंने और अधिक शोध किया और उसी विषयवस्तु में और अधिक सामग्री जोड़ी, जिससे राज कपूर के जीवन और कार्य के विभिन्न पहलुओं की कहीं अधिक गहरी समझ विकसित हुई। पेंगुइन ने राज कपूर की आत्मकथा इस पुस्तक को उनके निधन के चौदह वर्ष बाद प्रकाशित किया। पुस्तक के साथ एक इंटरैक्टिव सीडी रोम भी दी गई थी जिसमें राज कपूर अपने बचपन, अपने शुरुआती जीवन, अपने काम, अपनी फिल्मों, अपनी नायिकाओं और अपने विचारों के बारे में बात करते हैं।

पंद्रह साल बाद, हार्पर कॉलिन्स आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज के लिए इसका तीसरा संस्करण फिर से प्रकाशित कर रहा है। यह संस्करण उनके पांचों बच्चों - रणधीर कपूर, रितु नंदा, ऋषि कपूर, रीमा जैन और राजीव कपूर - द्वारा एक पिता को दी गई श्रद्धांजलि है। मुझे भी इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह महान कलाकार राज कपूर का संपूर्ण अध्ययन है। यह उनकी आत्मकथा और जीवनी दोनों है। आत्मकथा उनके बचपन से लेकर अंत तक के जीवन पर किए गए शोध का परिणाम है। इसमें लिखा गया सारा पाठ राज कपूर के अपने शब्दों में है। राज कपूर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए, उनके विचारों और शब्दों की न तो व्याख्या की गई है और न ही उन्हें पुनर्लिखित किया गया है, बल्कि केवल संकलित और संपादित किया गया है। जीवनी उनकी भव्य शख्सियत के कम ज्ञात पहलुओं को भावी पीढ़ियों के लिए संजोने का एक प्रयास है। इसमें उनके परिवार, सहकर्मियों और मित्रों का योगदान रहा है। हर घटना राज कपूर के विचारों को दर्शाती है। समय सब कुछ मिटा देता है और कोई निशान नहीं

छोड़ता। राज कपूर के बच्चों का मानना है कि यह पुस्तक उनकी आत्मा को सदा जीवित रखेगी। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस पुस्तक की पहली प्रति भी महाराष्ट्र के शिरडी स्थित साईं बाबा के मंदिर में अर्पित की जाएगी। उनकी कृपा के बिना यह संभव नहीं हो पाता। हम सभी उनके बहुत आभारी हैं।

1993 में, मुझे तत्कालीन रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन से मिलने का अवसर मिला, जब वे भारत दौरे पर थे। विदेश मंत्रालय ने मुझे बाद में बताया कि जब उन्हें राज कपूर की बेटी के उनसे मिलने के अनुरोध के बारे में पता चला, तो उन्होंने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अपनी व्यस्तता में इस मुलाकात का समय निकालें। तो मैं, एक छोटा सा व्यक्ति, राष्ट्रपति भवन के विशाल गलियारों में चल रहा था, जहाँ भारत के राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन का स्वागत कर रहे थे, और सैकड़ों सुरक्षा गार्डों की पैनी और संदेह भरी निगाहों से मुझे देखा जा रहा था। मेरा उद्देश्य सीधा-सादा था। मैं रूसी राष्ट्रपति को पापा पर मॉस्को में प्रकाशित मूल पुस्तक की एक स्मृति प्रति भेंट करना चाहता था। यह राज कपूर परिवार की ओर से आभार व्यक्त करने का मेरा आधिकारिक तरीका था। बोरिस येल्तसिन ने जिस आदर के साथ मेरा स्वागत किया, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मैं कोई खास व्यक्ति नहीं हूँ और राज कपूर अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन राष्ट्रपति, जिनका हर पल अत्यंत महत्वपूर्ण आधिकारिक कार्यों में व्यस्त रहता है, ने फिर भी मेरे लिए समय निकाला और यह स्पष्ट था कि उनके लिए भी यह एक भावुक क्षण था। उनके हावभाव से राज कपूर के प्रति उनकी प्रशंसा स्पष्ट झलक रही थी। उन्होंने बदले में मुझे एक उपहार दिया और मेरी किताब की प्रति में लिखा, 'मैं तुम्हारे पिता राज कपूर से प्यार करता था, और मुझे वे आज भी याद हैं!'

यह लिखते हुए मुझे जवाहरलाल नेहरू की बहन विजया लक्ष्मी पंडित द्वारा सुनाई गई एक कहानी याद आ रही है। यह कहानी उन्हें इंदिरा गांधी ने सुनाई थी। श्रीमती गांधी अपने पिता, प्रधानमंत्री नेहरू के साथ सोवियत संघ की आधिकारिक यात्रा पर थीं। उस समय निकोलाई बुल्गानिन सोवियत राष्ट्रपति थे। भारत के प्रधानमंत्री के सम्मान में आयोजित आधिकारिक भोज में जब राष्ट्रपति बुल्गानिन के बोलने की बारी आई, तो वे उठे और अपने सहयोगियों के साथ राज कपूर की फिल्म 'आवारा' का शीर्षक गीत 'आवारा हूं' गाया।

1994 में, मेरी माँ सेंट पीटर्सबर्ग में थीं, जहाँ उन्होंने प्रसिद्ध पीटरहोफ पैलेस का दौरा किया। वहाँ के कर्मचारियों ने उनसे पूछा कि क्या वह भारतीय हैं और अगला सवाल था कि क्या वह राज कपूर को जानती हैं। वे उनकी पत्नी से मिलकर एक तरफ तो पूरी तरह से हैरान थे, वहीं दूसरी तरफ राज कपूर के निधन की खबर सुनकर स्तब्ध भी थे। 1996 में, रणधीर कपूर और मुझे भारत सरकार द्वारा राजकीय अतिथि के रूप में चीन भेजा गया। भारत चीन के साथ संबंध स्थापित कर रहा था, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के हिस्से के रूप में राज कपूर की फिल्मों का एक रेट्रोस्पेक्टिव भी आयोजित किया गया था। चीन में हम दोनों बच्चों

का अनुभव अविश्वसनीय था। राज कपूर ने कभी चीन का दौरा नहीं किया था; उन्हें पता था कि वे वहाँ प्रसिद्ध हैं, क्योंकि उन्हें बताया गया था कि उनकी फिल्में सोवियत संघ के रास्ते चीन पहुँचती हैं। वह चाहते थे कि चीन में उन्हें उसी रूप में याद किया जाए जैसे वे पर्दे पर, आवारा और श्री 420 में थे। रणधीर और मैं उनकी प्रसिद्धि में चमक उठे। हम एक बार तो भावुक भी हो गए जब एक ही दिन में छठी बार ऐसा हुआ कि हम भारतीयों को देखते ही चीनी लोगों ने अपना अमर गीत 'आवारा हूँ' गाना शुरू कर दिया। वे हमें नहीं जानते थे, वे सब राज कपूर और भारत का सम्मान कर रहे थे। कहा जाता है कि आवारा माओ की भी पसंदीदा फिल्म थी।

यह राज कपूर की विरासत है। उनमें न केवल हास्य की अद्‍भुत क्षमता थी, बल्कि ऐतिहासिक सूझबूझ भी थी, जिसने उन्हें समाजवादी और साम्यवादी देशों में जवाहरलाल नेहरू से भी बड़ा प्रशंसक वर्ग दिलाया। उन्होंने सिनेमाई परंपरा को आगे बढ़ाया, उसमें बदलाव किए, नए तत्व जोड़े और इस तरह एक विशिष्ट, मोहक रोमांटिक और बेहद लोकप्रिय विरासत का निर्माण किया। वे भारत के सबसे महान सांस्कृतिक राजदूत थे। उनकी फिल्में एक विचारधारा थीं, अगर इसे भावुकता और मनोरंजन की विचारधारा कहा जा सकता है। उन्होंने अपने सामाजिक मुद्दों को चंचलता, संगीत, रोमांस और मेलोड्रामा के साथ पेश किया। उनकी फिल्मों में हमेशा एक संदेश होता था और वे राष्ट्र की नब्ज़ को समझने के लिए जाने जाते थे।

मुझे अपने परिवार, विशेष रूप से मेरे पति राजन, मेरे बच्चों और राज कपूर के विस्तारित परिवार से मिले प्रोत्साहन और समर्थन के लिए हार्दिक आभार है। इस पुस्तक की सामग्री और अपने शोध के लिए मैंने राज कपूर की डायरियों, उनके साक्षात्कारों और आलोचकों तथा उनके सहयोगियों, मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ हुई बातचीत का सहारा लिया है।

अंत में, हम, राज कपूर के बच्चे, इस पुस्तक को अपनी माँ को समर्पित करना चाहते हैं, जो अपने बच्चों की तरह मानती हैं कि राज कपूर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी मृत्यु नहीं होगी।

बचपन

‘बचपन की मेरी शुरुआती यादों में से एक मेरे माता-पिता के साथ मेरा गहरा जुड़ाव है। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि मेरे जन्म के समय मेरे पिता मात्र अठारह वर्ष के थे और मेरी माता सोलह वर्ष की। हमारे बीच उम्र का अंतर इतना कम था कि वे मुझे कभी भी पूरी तरह से डरा नहीं पाए।’—राज कपूर

राज कपूर अपने माता-पिता रामसरनी, पृथ्वीराज कपूर और अपनी इकलौती बहन उमी के साथ (1933)

राज कपूर बचपन में

जिस माहौल में मैं पली-बढ़ी, वह पूरी तरह से रंगमंच और फिल्मों का था। हम 1927 में बंबई आए थे। वह मूक फ़िल्मों का दौर था। मेरे पिता जे. ग्रांट एंडरसन थिएटर से जुड़े, जहाँ अर्देशिर ईरानी ने पहली भारतीय टॉकी फिल्म 'आलम आरा' बनाई थी और उसमें मेरे पिता ने अभिनय किया था। मैं खुद मुश्किल से पाँच साल की थी जब मैंने पहली बार 'खिलौना गाड़ी' नामक नाटक में अभिनय किया, जिसके लिए मुझे अपना पहला पुरस्कार मिला। तभी मेरे मन में यह बात आई और मैं शो बिजनेस की दुनिया से जुड़ने के अलावा कुछ और नहीं कर सकती थी।

मैं गोरा था और मेरी नीली आँखें थीं। जब भी मैं स्टेज पर जाता, मेरे पिता की अभिनेत्रियाँ मुझे गले लगाती थीं और मैं बहुत उत्साहित हो जाता था। लेकिन इतनी कम उम्र में ही मैंने अपनी भावनाओं को छुपाना सीख लिया था। मैं बहुत ही समझदार था। और मुझे नग्नता से बेहद लगाव था। मुझे लगता है कि इसकी शुरुआत मेरी माँ के साथ मेरी घनिष्ठता से हुई, जो युवा, सुंदर और पठान स्त्री के तीखे नैन-नक्श वाली थीं। हम अक्सर साथ में स्नान करते थे और उन्हें नग्न अवस्था में देखकर मेरे मन पर गहरा कामुक प्रभाव पड़ा होगा। उर्दू में एक बेहतरीन मुहावरा है, 'मुकद्दस उरियान' (पवित्र नग्नता), जो इसे पूरी तरह से बयां करता है। मेरी फिल्मों में स्नान के दृश्य बार-बार आते हैं। मेरी शुरुआती यादों में महिलाओं का ही स्थान है और वे मेरी फिल्मों में उन भूतों की तरह दिखाई देती हैं जिन्हें दफनाना नामुमकिन है।

हम एक बार पश्चिमी पंजाब के लायलपुर गए थे, जो अब पाकिस्तान में है और मेरे पिता का जन्मस्थान है। मेरे परदादा वहाँ तहसीलदार थे और गाँव वाले हमारे परिवार का बहुत सम्मान करते थे। गाँव के बीचोंबीच हमेशा एक मिट्टी का चूल्हा जलता रहता था और औरतें उस पर चने भूनती थीं।

मुझे याद है, मैं चना खरीदने गई थी, मैंने सिर्फ शर्ट पहनी थी और उसके नीचे कुछ नहीं। ओवन के पास बैठी महिला के चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी और उसने कहा, 'चने के पैसे देने की ज़रूरत नहीं है, बस अपनी शर्ट ऊपर उठाओ और चने को कटोरी की तरह बना लो।' मैंने वैसा ही किया और खड़ी रही, और वह मुझे देखकर ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। मैं बिलकुल निर्दोष थी। सालों

बाद जब यह याद मेरे मन में ताज़ा हुई और मुझे समझ आया कि वह क्या चाल चल रही होगी, तो मुझे बहुत बुरा लगा। कुछ समय के लिए, चना मेरे लिए लगभग एक यौन वस्तु बन गया था। शायद यह मेरे सिनेमा में अवचेतन स्तर पर वापस आ गया था। बॉबी फिल्म में एक दृश्य है, जब लड़का बॉबी के चेहरे पर आईना दिखाता है, जब वह पुस्तकालय में बैठी होती है। लड़की बाहर आती है, पहले गुस्से में, फिर चंचलता से। लड़का कहता है, 'चलो चाय पीते हैं।' बॉबी कहती है, 'नहीं, चलो चना खाते हैं।'

राज कपूर के माता-पिता, पृथ्वीराज और रामसरनी कपूर (1954)

मैं बचपन से ही बहुत समझदार बच्चा था। मैं हमेशा अपने आस-पास की चीजों के प्रति सजग रहता था। लायलपुर में मेरे परदादा, जो तहसीलदार थे, अक्सर कपास तोड़ने जाया करते थे और हम बच्चे उनके साथ जाया करते थे क्योंकि हमें बहुत मज़ा आता था। एक दिन, शायद गर्मी के कारण, मैं कहीं भटककर एक पेड़ की छांव में आराम करने चला गया और सो गया। सूरज डूबते ही सबने मुझे बहुत याद किया। मेरी दादी जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगीं। अचानक रामू, जो सफाईकर्मी था और अछूत था, मुझे घर ले आया और बोला, 'मुझे माफ़ कर देना कि मैंने उसे छू लिया। मैं उसे उठाकर यहाँ लाया हूँ।'

उन्होंने हाथ जोड़कर माफी मांगी। मुझे घर में आने की इजाजत नहीं थी। मेरी मां को पहले मुझे नहलाने के लिए कहा गया, क्योंकि एक अछूत ने मुझे छुआ था। तब मुझे इन सब बातों के परिणाम समझ नहीं आए, लेकिन मैं जानती थी कि जो हो रहा था वह गलत था। हम आठ साल तक कलकत्ता में रहे और चौदह साल की उम्र में बंबई लौट आए। हम कालीघाट के पास हाजरा रोड पर रहते थे। मेरे पिताजी हर दिन साइकिल से काम पर जाते थे: न्यू थिएटर्स ज्यादा दूर नहीं था। मैंने सेंट जेवियर स्कूल में पढ़ाई की। मेरे मोहल्ले में सब मुझे 'पृथ्वी-र छेले, पृथ्वी-र छेले' कहकर बुलाते थे। मैं लाड़ली बच्ची थी। मोहल्ले की शादियां, दुर्गा पूजा के पंडाल, स्थानीय संगीत कार्यक्रम, मैं हर जगह मौजूद रहती थी।

एक वर्षीय राज (1925); राज कपूर के परदादा लाला केशवमल कपूर (1880); राज कपूर के दादा बिशेष कपूर (1910)

हमारे परिवार में सभी को खाने का बहुत शौक है। यही कारण है कि जवान और बूढ़े सभी मोटे हैं। बचपन में मैं भी बहुत मोटा था। मेरी माँ, मेरे पिताजी का उदाहरण देते हुए, मुझे हमेशा व्यायाम करने के लिए टोकती रहती थीं। मुझे स्कूल भेजते समय, वह मेरे लिए ऑमलेट और चपाती पैक करती थीं। लेकिन मेरी ज़बान हमेशा नए-नए स्वाद तलाशती रहती थी। तीन-चार खाने की दुकानें थीं जहाँ मैं नियमित रूप से जाता था। मुझे रोज़ाना सिर्फ़ दो आने मिलते थे, जो इस खर्च के लिए काफ़ी नहीं थे। इसलिए मैं एक दुकान पर अपना उधार बंद करवाकर दूसरी दुकान पर खाता खुलवा लेता था। जब उधार मेरी पहुँच से बाहर हो जाता, तो मैं एक-दो किताबें बेच देता... मैं स्कूल से घर लौटकर माँ को पैक किया हुआ खाना वापस दे देता और कहता कि मैंने नहीं खाया क्योंकि मैं डाइट पर था। उनकी चिंता और प्यार मुझे और भी ज़्यादा खाना खिला देते!

स्कूल में मुझे अभिनय का बहुत शौक था। मेरे पिता एक महान अभिनेता थे, इसलिए मुझे लगता था कि महान अभिनेता बनना मेरा सौभाग्य और अधिकार है। संयोग से हमारे स्कूल में एक नाटक का मंचन हुआ। मेरे मन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उस नाटक में भाग लेने वाले प्रत्येक बच्चे को सैंडविच, समोसे, कॉफी और आइसक्रीम जैसी स्वादिष्ट चीजें खाने के लिए तीन कूपन दिए गए थे। मुझे एक पादरी के चोगे जैसा परिधान मिला जो मेरे छोटे कद के लिए थोड़ा लंबा था।

खैर, हमें ईसा मसीह के पीछे एक-दो बार होसन्ना... होसन्ना... होसन्ना चिल्लाते हुए जाना था। मैंने एक बार ऐसा किया, दो बार किया, और एक जोशीले अभिनेता होने के नाते, मैं तीसरी बार भी अंदर चला गया, जो कि वहाँ नहीं होना चाहिए था। जब मैं मंच पर पहुँचा, तो मेरा पैर मेरे पहने हुए चोगे में फंस गया, और मैं एक गंभीर ईसा मसीह के ठीक सामने गिर गया, और लोग हँसने लगे और ईसा मसीह भी हँसे। मुझे खुशी थी कि मैंने ईसा मसीह को हँसा दिया था। जब पर्दा गिरा, तो नाटक निर्देशक ने मुझे गर्दन से पकड़ लिया। उन्होंने मुझे मारा और कहा, 'तुम अभिनेता हो? तुम्हारे पिता अभिनेता हैं? मुझे लगता है तुम गधे हो! बाहर जाओ और फिर कभी वापस मत आना!' मेरे कूपन छीन लिए गए और मुझे न सैंडविच मिले, न आइसक्रीम, न केक और न समोसे!

बाएं: राज कपूर अपनी बहन उमी, भाई शम्मी और मां रामसरनी के साथ (बाएं से) (1936)

मेरे बचपन की यादें अनुभवों के अमिट घावों से भरी हैं। मैं मोटा था। मुझ पर हर तरह के मज़ाक किए जाते थे। कुछ सुखद पलों को छोड़कर, मेरा बचपन काफी दुखमय था। खुशी के ये पल वे थे जब मुझे प्यार हुआ, लेकिन इसके बारे में बाद में बात करेंगे। दुखमय पलों की बात पर लौटते हैं। मैंने जल्द ही सबसे स्वाभाविक बचाव तंत्र अपना लिया—वही जो दुनिया के सभी महान मज़ाकिया लोग इस्तेमाल करते हैं। मैंने सीखा कि जितना कोई निशाना बनने से बचता है, उतना ही उसे कष्ट सहना पड़ता है। इसलिए, मैंने मज़ाकिया होने का दिखावा करके एक मज़ाकिया व्यक्ति का मुखौटा पहन लिया। वास्तव में, मैंने इसे एक कदम आगे बढ़ाते हुए खुद पर ही मज़ाक बनाना शुरू कर दिया, जिससे मेरे सहपाठी हंसते थे। दरअसल, मैं वही चाहता था जो हर स्कूली बच्चा चाहता है—दूसरों का प्यार, स्नेह और सम्मान। मुझे प्रधानाचार्य सोरेस याद हैं। वे लैटिन के शिक्षक भी थे और उन दिनों लैटिन दूसरी भाषा थी। परीक्षा में जब लैटिन का प्रश्नपत्र आया, तो मैंने लिखा, 'लैटिन एक मृत भाषा है, दफन हो चुकी भाषा को क्यों खोदना?' मुझे सौ में से एक अंक मिला, और वह भी प्रशंसात्मक। प्रधानाचार्य सोरेस ने कहा, 'दुर्भाग्यवश, बेटा, मैं तुम्हारी शैक्षणिक शिक्षा के बारे में कुछ नहीं कह सकता। तुम वैसे तो प्रतिभाशाली हो, और तुम्हारे सामने पूरी दुनिया पड़ी है!'

मैं सबकी पसंद बनना चाहता था। मुझमें प्यार करने और प्यार पाने की असीम क्षमता थी और देखते ही देखते मुझे एक, दो, तीन बार और इसी तरह प्यार हो गया। ये सारे अनुभव मेरे शुरुआती सालों में जीवन के एक व्यावहारिक दर्शन में तब्दील होने लगे। स्कूल के नाटकों में मैंने सबकी पसंद बनने और सबकी निगाहों में रहने के अपने सिद्धांत को अमल में लाना शुरू किया। मैंने देखा कि स्कूल के नाटकों में दर्शक लंबे, उबाऊ दृश्यों के दौरान बेचैन हो जाते थे। इसलिए, ठीक उनके बीच में, मैं अचानक कुछ मज़ेदार और बिल्कुल अलग बात कर देता था और आगे की सीटों पर बैठे लोग अनजाने में हंसने लगते थे। फिर मैं कुछ और मज़ेदार करता था और हंसी ठहाकों में बदल जाती थी और आगे की सीटों से लेकर पीछे की सीटों तक सब जगह फैल जाती थी। इस तरह मैंने 'दृश्य चुराने' के

बुनियादी सबक सीखे। मैंने अपने अनुभवों का भंडार बढ़ाना शुरू किया, जिसे मैं कई साल बाद फिल्मों में कदम रखने तक अपने साथ लेकर चलता रहा।

मेरा नाम ज़ोकर में, सिमी गरेवाल द्वारा अभिनीत खूबसूरत शिक्षिका के प्रति बच्चे का आकर्षण पटकथा लेखक की कल्पना मात्र नहीं है। मैं जिस भी स्कूल में पढ़ा, वहाँ की महिला शिक्षिकाओं का लाडला रहा। मेरा पहला स्कूल मुंबई के ह्यूजेस रोड स्थित न्यू एरा बॉयज़ स्कूल था, जहाँ शिक्षिकाएँ मुझे चूमने के लिए कतार लगाती थीं! मैं तब प्राथमिक कक्षा में था, और मैं उनसे चिढ़कर पूछता था, 'आप मुझे क्यों चूमती हैं? क्या आप मेरी माँ हैं?' फिर भी वे मुझे और चूमती थीं! मुझे इनमें से एक शिक्षिका बहुत पसंद थीं। एक बार हम उस शिक्षिका के साथ पिकनिक पर गए थे, जब हमने शाम के आकाश में पक्षियों का एक बड़ा झुंड उड़ते हुए देखा। यह दृश्य कई साल बाद मेरा नाम जोकर के एक दृश्य में 'टिटर के दो आगे टिटर...' गाने के साथ फिर से याद आया। छह साल की उम्र में ही मैं उस शिक्षिका से इतना जुड़ गया था कि जब मेरे पिता ने न्यू थिएटर्स में नौकरी कर ली और हमें कलकत्ता जाना पड़ा, तो मैंने अपने माता-पिता से कहा कि मैं स्कूल के छात्रावास में ही रहना पसंद करूँगा, न कि अपना सामान पैक करके चला जाऊँगा। बॉम्बे में अपने आखिरी कुछ दिनों में, मैं उसके लिए फूल लाया करता था। यह एक बेहद भावुक विदाई थी।

सफेद मेरा पसंदीदा रंग है और यह मेरे मन और हृदय में गहराई से बसा हुआ है। मुझे आज भी याद है कि सफेद रंग मेरी यादों में कैसे बस गया। हम कलकत्ता में रहते थे। एक सुबह, जब मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रही थी, मैंने अपनी माँ को रसोइए से चिकन लाने के लिए कहते सुना क्योंकि मेरे पिताजी के कुछ दोस्त दोपहर के भोजन पर आने वाले थे। चिकन! मेरे मुँह में पानी आ गया। मैंने उस दोपहर स्कूल से बंक करने और दोपहर के भोजन के लिए घर लौटने का फैसला किया। जब मैं भोजन कक्ष में दाखिल हुई, तब तक पिताजी और उनके मेहमान पहले से ही मेज़ पर बैठे हुए थे। 'आज स्कूल नहीं है?' पापाजी ने मुझसे सख्ती से पूछा। 'नहीं,' मैंने उनकी नज़रें बचाते हुए धीरे से कहा, 'आज आधा दिन है।' मेहमानों में एक युवती थी। उसने सफेद वस्त्र पहने थे। मैंने उसे देखा और मैं नज़रें नहीं हटा सकी। वह मुझे दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला लगी। मेहमान दोपहर भर रुके रहे और मैं भी घर में इधर-उधर घूमती रही। ज़ाहिर है, मुझे उससे प्यार हो गया था। फिर उनके जाने का समय हो गया। वे विदाई ले रहे थे। मैं घर के सामने वाले बगीचे में चली गई। मैंने कुछ मलाईदार सफेद कंदगुला के फूल तोड़े। मैं उन्हें तोड़ ही रही थी कि सफेद वस्त्र पहने एक महिला सीढ़ियों से नीचे उतरी। हकलाते और शरमाते हुए मैंने उसे सुगंधित फूल भेंट किए। उसने मुझसे फूल लिए और खुशी से बुदबुदाई। वह बगीचे से होते हुए सड़क पर चली गई। मुड़कर देखो, मैंने मन ही मन विनती की। बस एक बार! कृपया पीछे मुड़कर देखो! लेकिन वह नहीं मुड़ी। वह हमेशा के लिए चली गई और मैं उसे भूल नहीं पाई। तब से यह एक आदर्श की अंतहीन खोज है जो हमेशा दूर होती जाती है, और खोज के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में केवल सफेद फूल ही रह जाते हैं।

परिवार

‘कल शायद मैं न रहूँ, लेकिन मैं अपने बच्चों और अपनी विरासत के माध्यम से जीवित रहूँगा।’—राज कपूर

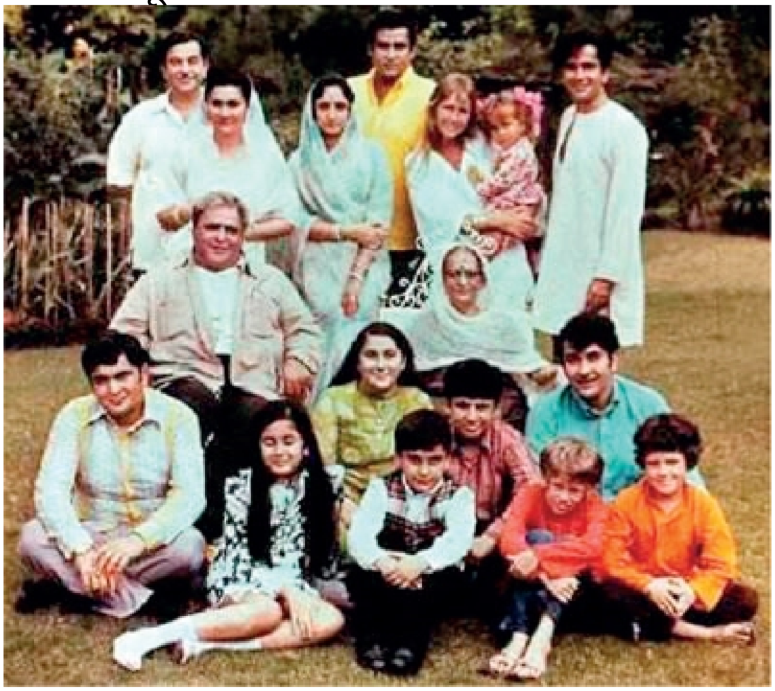

From left back row: Raj Kapoor, Krishna Kapoor, Neila Kapoor, Shammi Kapoor, Jennifer Kapoor with daughter Sanjana, Shashi Kapoor Middle row: Prithviraj Kapoor and Ramsarni Kapoor From left front row: Rishi, Kanchan, Rajiv, Aditya, Karan, Randhir and Kunal Kapoor

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा के साथ (1963)

पृथ्वीराज कपूर पर राज कपूर

मुझे याद है, मेरे पिताजी को तैरना बहुत पसंद था, और एक दिन, जब हम कलकत्ता में रह रहे थे, तो वे मुझे अपने साथ एक झील पर ले गए जहाँ वे अक्सर तैरते थे। उन्होंने मुझे अपनी बाँहों में उठाकर पानी में उतारा और जब पानी छाती तक गहरा हो गया, तो उन्होंने मुझे छोड़ दिया। किनारे पर खड़ी मेरी माँ पापाजी पर चिल्लाने लगीं: 'इस तरह आप मेरे बेटे को मार डालेंगे!' लेकिन पापाजी शांत और अविचलित रहे और मुझे बेताब होकर अपने हाथ-पैर हिलाते हुए देखते रहे। कुछ ही समय में मुझे तैरना आ गया और मैंने तैरना सीख लिया। यही पापाजी का रवैया था। उन्होंने अपने सभी बच्चों के साथ यही रवैया अपनाया, और यही रवैया मैंने भी अपना लिया है। पापाजी को एक मित्रवत पिता की भूमिका निभाने में बहुत आनंद आता था। जब मैं बहुत छोटा था, तो उन्होंने मुझे बड़े प्यार से एमजीएम

द्वारा निर्मित एंडी हार्डी फिल्म श्रृंखला दिखाई थी, जिसमें मिकी रूनी और लुईस स्टोन ने पिता-पुत्र की भूमिका निभाई थी और एक-दूसरे को बराबरी का दर्जा दिया था। एक बार वह एक प्रतिनिधिमंडल के साथ सुमात्रा और बाली गए और मेरे लिए उपहार के रूप में एक नग्न चित्र लेकर लौटे, जो आपको अभी भी मेरी कुटिया में मिलेगा, साथ में एक नोट भी था जिस पर लिखा था, 'क्षमा करें, मैं आपके लिए एक जीवित चित्र नहीं ला सका...'

मैरी के पीछे चलने वाले मेमने की तरह, मैं अपने पिता के पीछे-पीछे चला। वे 1927 में बंबई आए और एक अवैतनिक कलाकार के रूप में अपना जीवन शुरू किया, और कुछ ही वर्षों में स्टार बन गए। उन्होंने भारत की पहली टॉकी फिल्म 'आलम आरा' में मुख्य भूमिका निभाई। मेरे पिता ने ही मुझे सिखाया कि सबसे महान कलाकार वह होता है जो किसी भी काम को अपने आप का हिस्सा मानकर चलता है, जो अपनी विनम्रता और कोमलता के गुणों से दूसरों का प्यार पा सकता है। अगर आप सबके चहेते कलाकार बन सकते हैं, तो आपसे बड़ा कलाकार कोई नहीं हो सकता। मैंने उनकी छत्रछाया में रहकर सीखना और खुद को शिक्षित करना शुरू किया। उन्होंने ही मुझे नाटक और रंगमंच से परिचित कराया। और रंगमंच से ही मैंने पर्दे तक का सफर तय किया।

पृथ्वीराज कपूर, पिता

मेरे पास चालीस से ज़्यादा सालों की यादें हैं; मैं राजू के बारे में शायद उतने ही सालों तक बात कर सकता हूँ और फिर भी मेरी यादें खत्म नहीं होंगी! जब मेरी पत्नी (रामसरनी कपूर) हमारे पहले बच्चे की उम्मीद कर रही थीं, तो मैंने भविष्यवाणी की थी कि लड़का होगा। मैंने लड़के के लिए अपना चुना हुआ नाम 'रणबीर राज' एक पर्ची पर लिखकर रामसरनी के तकिए के नीचे रख दिया था। राज एक प्यारा बच्चा था, जिसकी नीली आँखें और गुलाबी गाल थे। आँखें शायद उसे अपने परदादा से विरासत में मिली थीं। उसके गाल इतने ज़्यादा गुलाबी थे कि रामसरनी उन्हें गीले कपड़े से रगड़ती थीं, यह सोचकर कि बच्चे के चेहरे पर धूल जम गई है! सालों बाद, हम तीनों मॉस्को में थे। राजू फिल्म फेस्टिवल में जूरी सदस्य थे। मैं परदेसी की शूटिंग कर रहा था और मेरी पत्नी मेरे साथ थीं। फेस्टिवल हॉल में रूसी लड़कियाँ राज को घेर रही थीं और जब मैंने पत्नी के कहने पर उसे छुड़ाकर उनके पास लाया, तो उन्होंने फिर से उसके गाल पोंछे। इस बार रंग उतर गया—यह सब लिपस्टिक थी!

पीछे की पंक्ति में बाएं से: पिता पृथ्वीराज कपूर, भाई शम्मी कपूर, बहन उर्मी सियाल, राज कपूर; मध्य पंक्ति में: माता रामसरनी, पत्नी कृष्णा; आगे की पंक्ति में: भाई शशि कपूर

पेशावर, जहाँ राज का जन्म हुआ था, और समुंदरी जैसी जगहों पर, जहाँ वह परिवार से मिलने जाया करते थे, वह घर और बाहर सभी के चहेते थे। वह सबके चहेते थे। यहाँ तक कि दुकानदार भी उन्हें गाना और नाचना पसंद करते थे। दुकान से कोई छोटी सी चीज़ माँगने पर भी वे पैसे नहीं लेते थे। राज की संगीत प्रतिभा के बारे में ज़्यादा लोग नहीं जानते। जब वह बहुत छोटे थे, तब उन्होंने अपना पहला बड़ा सार्वजनिक प्रदर्शन दिया, जिसमें उन्होंने सीमावर्ती पहाड़ी इलाके मुर्री में एक वैरायटी शो में फिल्म 'हमारी बात' के दो गाने गाए। यह प्रदर्शन दर्शकों को बहुत पसंद आया और इसके बाद राज की काफी मांग बढ़ गई। नाटक 'दीवार' में उनके गाए गाने रिकॉर्ड किए गए थे, लेकिन शायद वे डिस्क कभी बाज़ार में नहीं पहुँचे।

राज कपूर पृथ्वीराज कपूर के साथ

जब राज करीब सात साल का था, एक शाम वह अपने नौकर के साथ उस स्टूडियो में आया जहाँ मैं शूटिंग कर रहा था। उसने बताया कि उसका भाई बिंदू बीमार है। उसने इसके अलावा कुछ नहीं कहा। लेकिन चूंकि उसकी माँ उसे टैक्सी से भेज रही थी, जो उन दिनों हमारे लिए एक विलासिता की बात होती थी, इसलिए मुझे तुरंत समझ आ गया कि कुछ गंभीर हुआ है। चार साल का बिंदू (रविंदर) हमारे पड़ोस के खार इलाके में, जहाँ हम रहते थे, एक पड़ोसी के बगीचे में खेलने गया था। उसकी माँ ने उसे नहाने के लिए बुलाया। वह ऊपर आया, उसका दम घुट गया और उसकी गोद में ही उसकी मौत हो गई। डॉक्टर ने अनुमान लगाया कि यह साँप के काटने का मामला है, लेकिन बाद में यह बात ज़ोर पकड़ने लगी कि बच्चे ने गलती से पड़ोसी द्वारा चूहे मारने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मीठी गोलियों में से एक निगल ली थी। दो हफ्ते के भीतर ही परिवार पर फिर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। बिंदू से छोटा एक और बच्चा, देवेंद्र, तेज बुखार से बीमार पड़ गया और उसकी भी मौत हो गई। मैं उन बच्चों के चेहरे और उस दिन स्टूडियो में आए राज के चेहरे को कभी नहीं भूल पाया हूँ।

राज एक होशियार छात्र था, अंग्रेजी में सबसे आगे और स्कूल के नाटकों में अभिनय और निर्देशन में भी बहुत अच्छा था, साथ ही भाषण प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी जीतता था। लेकिन वह मैट्रिक पास नहीं कर पाया। शायद उसकी असफलता का कारण गणित और लैटिन में उसकी कमजोरी थी! राज के मैट्रिक पास होने से एक साल पहले, मैंने उसे फोन करके व्यक्तिगत बातचीत की, पाठ्येतर गतिविधियों में उसकी उपलब्धियों की प्रशंसा की, लेकिन उसे चेतावनी दी कि उसे कुछ विषयों में अपनी कमजोरी को दूर करना चाहिए। मेरे पिता ने हाल ही में मुझसे स्कूल के प्रधानाचार्य से मिलने और (मेरे छोटे भाई) विशी की ओर से सिफारिश करने के लिए कहा था, जिसे मैट्रिक परीक्षा का फॉर्म मिलने की उम्मीद नहीं थी। लेकिन मैं अपने बेटे के लिए इस तरह से सिफारिश नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने उससे वादा करने को कहा कि वह अपना फॉर्म खुद भरेगा और मुझसे कभी भी उसके लिए फॉर्म भरने को नहीं कहेगा। राज ने वादा कर दिया। कुछ दिनों बाद, मेरी पत्नी मेरे पास आई और कहा कि राज को मैट्रिक परीक्षा में बैठने की अनुमति मिलना मुश्किल है और मुझे प्रधानाचार्य से मिलना चाहिए। मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा, बिल्कुल, मैं यह कर दूंगी। बस, राज खुद आकर मुझसे पूछे। लेकिन उसने कभी नहीं पूछा।

राज ऐसा ही था। मुझे याद है, उन दिनों एक मशहूर सितारे के तौर पर मैं अपने बेटों को कई सुख-सुविधाएँ दे सकता था। लेकिन मैंने कभी नहीं दीं। राज बाकी लड़कों की तरह ट्राम से स्कूल जाता था। एक बरसात की सुबह, जब मेरी पत्नी ने राज को पारिवारिक कार से स्कूल भेजने की अनुमति माँगी, तो मैंने उससे कहा, 'जानती हो, हर किसी के पास कुछ अनमोल अनुभव होते हैं। आज जैसे बरसात के दिन, सड़कों पर पैदल चलने में एक अलग ही रोमांच होता है... मज़ा आता है। लेकिन आज तो ज़ाहिर है, बहुत तेज़ बारिश हो रही है और राजू को देर हो रही

है, तो उसे कार से जाने दो।' राज पास ही था। उसने मुझसे कहा, 'नहीं, साहब, मैं ट्राम से जाऊँगा।' जब हम बालकनी से लड़के को जाते हुए देख रहे थे, तो मैंने अपनी पत्नी से कहा, 'कार की चिंता मत करो। यह लड़का अपने लिए ऐसी कारें बुक करवा चुका है जो उसके पिता के पास कभी नहीं थीं और न ही कभी होंगी।'

राज कपूर अपनी मां रामसरनी के साथ

मैट्रिक परीक्षा में हुई असफलता के बाद, राज मुझसे व्यक्तिगत बातचीत करने आया, इस बार अपनी पहल पर। उसने कहा, "मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकता हूँ, लेकिन मैं बस यही सीखूँगा कि स्टाइलिश कपड़े कैसे पहने जाते हैं और शायद डिग्री हासिल कर लूँगा, जिसके बाद मैं फिर आपके पास नौकरी के लिए आऊँगा।" इसके बजाय वह तुरंत फिल्मों में काम शुरू करना चाहता था। मुझे अपने परिवार में हुए हंगामे की याद आ गई जब मैंने फिल्मों में कदम रखा था, और मैं मुस्कुरा उठा। मैंने अपने बेटे को लगभग 300 रुपये दिए और उसे लाहौर, शेखपुरा, समुंदरी और देहरादून जैसे स्थानों पर अपने सभी रिश्तेदारों से मिलने के लिए कहा। "जब तुम वापस आओगे, अगर तुम तब भी फिल्मों में काम करना चाहते हो, तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" हमारे सभी रिश्तेदारों ने राज का बड़े प्यार से स्वागत किया। उसे खाने का बहुत शौक था। उन्होंने उसे तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन खिलाए, जिसके परिणामस्वरूप उसे दस्त हो गए। राजू ने इससे और फिल्मी करियर के खिलाफ खड़ी की गई बाधाओं से भी पार पा लिया। वह

वापस आया और मुझे बताया कि उसने अपना इरादा नहीं बदला है। तो मैंने चंदूलाल शाह से बात की और राज के लिए रणजीत स्टूडियो में नौकरी दिलवा दी। मैंने दो शर्तें रखीं। पहली, उसे कोई वेतन नहीं दिया जाएगा, और दूसरी, स्टूडियो में उसके साथ अन्य कर्मचारियों की तरह व्यवहार किया जाएगा, न कि पृथ्वीराज के बेटे के रूप में। घर पर मैंने अपने बेटे को बताया कि उसका मासिक भत्ता अब पंद्रह रुपये से बढ़ाकर तीस रुपये कर दिया जाएगा। मैंने उससे कहा, 'कामकाजी जीवन के लिए तैयार होने के लिए, तुम अपनी माँ से कहो कि तुम्हें जितने सफेद पतलून और कमीज चाहिए, सिलवा दें। सुबह सफेद कपड़े पहनकर जाओ और शाम को स्टूडियो की लाल धूल से सने कपड़ों के साथ वापस आओ।' राज का दोपहर का भोजन स्टूडियो में नहीं भेजा जाएगा। वह खुद ही ले जाएगा।
या फिर वो स्टूडियो के पास किसी होटल में खाना खा सकता था, जिसका बिल वो अपनी जेब खर्च से देता था। रणजीत स्टूडियो में राज निर्देशक किदार शर्मा के सहायक के रूप में काम करता था, जिन्होंने बाद में उसे फिल्म नील कमल में मुख्य भूमिका निभाने का पहला मौका दिया। राज को किदार शर्मा की एक फिल्म गौरी में एक छोटा सा सीन पहले ही मिल चुका था, जिसमें मैंने काम किया था। लेकिन यह उसकी पहली फिल्म नहीं थी। इससे पहले, जब मैं कलकत्ता में काम कर रहा था, तब मशहूर फिल्म निर्माता देबाकी बोस ने राज को, जो तब सिर्फ एक लड़का था, फिल्म आफ्टर द अर्थक्वेक में एक छोटी सी भूमिका के लिए लिया था। बाद में, अभिनेता-निर्देशक गुल हामिद ने राज को मुझसे कुछ शूटिंग के लिए अपने साथ ले लिया, लेकिन मुझे याद नहीं कि उसने आगे क्या किया। मैं राज को बाल कलाकार नहीं बनाना चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि मेरे किसी बेटे को जैकी कूगन जैसी स्थिति का सामना करना पड़े, यानी शुरुआती प्रसिद्धि के बाद जीवन में कठिनाइयाँ। रणजीत स्टूडियो में लगभग एक साल बिताने के बाद, राज बॉम्बे टॉकीज में शामिल हो गया, स्टूडियो के अभिनय और निर्माण विभागों में आवेदकों के लिए विज्ञापन के बाद। राज यहाँ वेतनभोगी कर्मचारी था। राज ने अपने हमेशा के उत्साह के साथ काम शुरू किया। लेकिन स्टूडियो में कुछ समय काम करने के बाद, उन्हें मुख्य भूमिका न मिलने से निराशा हुई। उन्हें फिल्मों में एक-दो छोटी भूमिकाओं के अलावा और कुछ नहीं मिला। उन्होंने मुझसे पृथ्वी थिएटर्स में शामिल होने की अनुमति मांगी। अनुमति मिल गई। राज ने सभी विभागों में सामान्य सहायक के रूप में काम किया। मैंने उनका वेतन 201 रुपये प्रति माह तय किया, जो बॉम्बे टॉकीज में उनके वेतन से प्रोत्साहन के तौर पर एक सांकेतिक रुपया अधिक था। थिएटर में, राज के छोटे भाई शम्मी को राज से पहले अभिनय का मौका मिला, जिन्हें फिल्म 'दीवार' से सफलता मिली। 'दीवार' के पहले दिन के प्रदर्शन से वर्षों का सारा दबा हुआ जोश बाहर आ गया। राज सभी के लिए एक अद्भुत प्रतिभा साबित हुए।

शम्मी और शशि कपूर के साथ राज कपूर

राज कपूर श्रद्धापूर्वक अपने माता-पिता के चरण स्पर्श करते थे। यह एक ऐसी चीज थी जिसे वे कभी नहीं भूलते थे, चाहे कहीं भी हों। वे अक्सर अपने पिता की कही बात याद करते थे, "आज लोग कहते हैं कि राज कपूर पृथ्वीराज कपूर के पुत्र हैं, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब लोग कहेंगे, 'देखो, राज कपूर के पिता पृथ्वीराज कपूर।' वह मेरे जीवन का सबसे बड़ा दिन होगा।"

राज कपूर अपने भाइयों के बारे में

मेरे दो छोटे भाई थे। एक का नाम रविंदर और दूसरे का नाम देवेंद्र था। रविंदर, जिसे सब बिंदी कहकर बुलाते थे, मुझसे कहीं ज्यादा स्थिर, गंभीर और समझदार था। एक दिन पापाजी स्टूडियो गए हुए थे, तभी बिंदी अचानक बीमार पड़ गया। उसने गलती से चूहे मारने की दवा निगल ली थी। उसकी मृत्यु हो गई। फिर एक हफ्ते के अंदर ही देवेंद्र की भी मृत्यु हो गई—उसे निमोनिया हो गया था। मैं

बिल्कुल अकेला रह गया। फिर शम्मी, मेरी बहन उमी और शशि का जन्म हुआ। तब से हमारा रिश्ता बहुत गहरा है।
शम्मी मुझे बहुत प्रिय हैं। लेकिन इतने सालों तक, जब वो एक बड़े सितारे थे, तब भी मुझे उनके लिए कोई फिल्म नहीं मिली। जब मुझे अपनी फिल्म 'प्रेम रोग' में उस भव्य, राजसी दिखने वाले ठाकुर की ज़रूरत पड़ी, तब मुझे वो इस भूमिका के लिए आदर्श अभिनेता लगे और मैंने उन्हें चुन लिया। 'याहू स्टार' के रूप में शम्मी मेरे किसी काम के नहीं थे। लेकिन 'प्रेम रोग' में, जब भी वो स्क्रीन पर आते हैं, तो पूरा स्क्रीन जगमगा उठता है।

Umi with Raj, Shammi and Shashi Kapoor

शम्मी कपूर, भाई

मैं राज जी से सात साल छोटा हूँ। मुझे याद है उनके कमरे में दो अलमारियाँ थीं जो हमेशा बंद रहती थीं। एक दिन मैंने बड़ी चालाकी से उनकी अलमारी खोली और मुझे अखबारों की कतरनें, विदेशी पत्रिकाएँ, महिलाओं के फैशन पत्रिकाएँ, हेयर स्टाइल और अलग-अलग तरह के कपड़ों और डिज़ाइनों की तस्वीरें, कहानियों की किताबें, पटकथाएँ और स्क्रिप्ट मिलीं। उस समय उनकी उम्र सोलह या सत्रह रही होगी। उस समय वे सहायक थे, इसलिए फिल्म निर्माण का यह जुनून उनमें शुरू से ही था। किसी को नहीं पता था कि वे मूल रूप से वही बनने की तैयारी कर रहे थे जो उनके भाग्य में लिखा था, एक फिल्म निर्माता। उन्हें फिल्मों का जुनून था, वे फिल्मों के बारे में बात करते थे, फिल्मों का धुआँ उड़ाते थे, फिल्मों का पेय पीते थे, फिल्मों का खाना खाते थे, फिल्मों के साथ सोते थे, वे हर समय फिल्मों के सपने देखते थे। मुझे याद है, मैं तीन या चार साल का था, हम कलकत्ता में थे, और रविवार होने के कारण हमें फिल्म देखने की अनुमति मिली थी। राज जी ने मुझे फिल्म दिखाने के लिए खुद आगे आने की पेशकश की। वरिष्ठ होने के नाते फिल्म चुनने का अधिकार उन्हीं के पास था। मुझे याद है कि उन्होंने गुलिवर ट्रेवल्स चुनी थी। माँ ने हमें एक रुपया दिया, जो उस समय बहुत बड़ी रकम थी, जिससे आने-जाने, टिकट और खाने-पीने का खर्च निकल गया। बहुत भीड़ थी। राजजी ने हमारे नौकर द्वारका, जो हमारे साथ था, और मुझे बाहर इंतज़ार करने को कहा। हम इंतज़ार करते रहे। आखिरकार, दो घंटे बाद राजजी

आए और कहा कि टिकट नहीं बचे हैं, और हम घर लौट आए। जब माँ ने हैरानी जताई कि उन्हें यह समझने में दो घंटे कैसे लग गए कि टिकट नहीं हैं, तो उन्होंने कबूल किया कि चार आने के टिकट बिक चुके थे, इसलिए उन्होंने बारह आने का टिकट खरीदा और अकेले ही फिल्म देखी! मैं यह बात कभी नहीं भूली।

नीला कपूर, शम्मी कपूर की पत्नी

राज जी मेरे लिए पिता समान थे। उन्हीं की बदौलत मैं कपूर परिवार का हिस्सा बन पाया। परिवार के किसी भी समारोह या अवसर पर वे हमेशा हमारे साथ होते थे। उनके लिए भुना हुआ सुअर का बच्चा तैयार करना हमारे लिए हमेशा सम्मान की बात होती थी! फिर वे पूछते थे, 'मेरी 'पुटिंग' कहाँ है?' यह उनकी पसंदीदा कैरेमल कस्टर्ड थी। उनकी फिल्मों या उनके द्वारा बनाई जा रही फिल्मों के बारे में सुनना एक सुखद अनुभव होता था। खासकर जब वे गाते थे और अपने संगीत के बारे में बात करते थे, तो वह अनुभव बेहद मनमोहक होता था। हम उन्हें बहुत याद करते हैं।

Raj Kapoor with Shashi, Prithviraj and Shammi Kapoor

Umi Sial with Shammi, Raj, Shashi and Prithviraj Kapoor

उमी सियाल, बहन

हमारे माता-पिता के निधन के कई वर्षों बाद, हम राज जी के गद्दे के ऊपर टंगी उनकी तस्वीरों के नीचे बैठकर बातें करते थे—वे कभी पलंग पर नहीं सोते थे! उनका चेहरा उदास हो जाता और उनकी नीली आँखें यादों से भर जातीं, फिर वे एक गहरी साँस लेते, सिर हिलाते और कहते, 'लेकिन मुझे अभी बहुत कुछ

सीखना है और बहुत कुछ बनाना है। मुझे अभी बहुत काम करना है।' जैसे ही मैं उनकी सच्ची विनम्रता पर आश्चर्यचकित होता, वे अचानक चिल्लाते, 'लेकिन मेरे बिना तुम सब कहाँ होते! अहम ब्रह्मास्मि (मैं भगवान हूँ)!' निश्चित रूप से, मैं इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था और यह बहुत बहस का विषय बन गया। जल्द ही वे यह कहकर अपनी बात वापस ले लेते, 'चुप रहो, प्रियतम, मैं तो बस मैट्रिक में फेल हूँ! मुझे लैटिन समझ नहीं आई, जिसे मुझे अभी सीखना है।' मुझे अभी बहुत लंबा सफर तय करना है।' मुझे आज भी याद है कि राज जी जब मुझे बुलाकर चुंबन करने को कहते थे और जब मैं उनके पास जाती थी, तो उनकी जीभ निकलकर मेरे पूरे चेहरे पर लग जाती थी और वो जोर-जोर से हंसते थे! जब मैं अपनी मां को बुलाकर उन्हें भगाती थी, तो वो भाग जाते थे... भाईचारे के प्यार का क्या ही नजारा होता था!

उमी के साथ

अनु खेता, उमी सियाल की बेटी

राज अंकल से जुड़ी मेरी सबसे पहली याद चेंबूर में दिवाली की है। हम सब पार्टी में जाने की तैयारी कर रहे थे और अंकल आए और सभी बच्चों को कतार में खड़ा होने को कहा और हर बच्चे को कुछ पैसे दिए। मैंने फिर से हाथ बढ़ाया और उन्होंने मुझे और पैसे दिए, उनकी आँखें चमक रही थीं, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह पता था कि उन्होंने मुझे मेरा हिस्सा पहले ही दे दिया है। मुझे याद है कि उनकी फिल्म सत्यम शिवम सुंदरम की शूटिंग के दौरान, उन्होंने रीमा और मुझे स्टूडियो में दोपहर के भोजन के लिए बुलाया। हम उनके सहयोगियों, कैमरामैन, स्पॉट बॉय और अन्य कर्मचारियों के साथ एक लंबी मेज पर बैठे थे। मेरे बगल में बैठे एक कलाकार को यह कहते हुए सुनना बहुत सुखद था, 'राज जी कितने महान व्यक्ति

हैं! वे सबके साथ बैठकर खाना खा रहे हैं। उनके रवैये में कर्मचारियों और कलाकारों के प्रति कोई भेदभाव नहीं है, सभी एक साथ बैठकर एक ही खाना खा रहे हैं।'

कुछ साल पहले, मैं अमेरिका के ऑरलैंडो में घूमने गया था। हम एक मॉल में घूम रहे थे। एक लड़का मुझे कुछ बेचने की कोशिश कर रहा था जिसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे भारतीय पोशाक में देखकर उसने मुझसे पूछा कि मैं किस देश से हूँ। जब मैंने उसे बताया कि मैं भारतीय हूँ, तो उसने फिल्म 'श्री 420' का गाना 'मेरा जूता है जापानी' गाना शुरू कर दिया। मैं दंग रह गया। मुझे गर्व है कि वह मेरा चाचा है।

प्रीति, उमी सियाल की बेटी

1985 में, मैं बॉम्बे में कॉलेज में पढ़ रहा था और राज अंकल के घर में रह रहा था। उस समय पता चला था कि उनके फेफड़ों में कुछ समस्या है और उनकी कई जांचें चल रही थीं। अंकल कभी-कभी शाम को मुझे फोन करके अपनी रिपोर्ट समझाने के लिए कहते थे। वे मुझसे कई विषयों पर बात करते थे। मुझे याद है एक बार वे उन लोगों के बारे में बात कर रहे थे जिन्हें हम अच्छा और पवित्र समझते हैं लेकिन वे बुरे निकलते हैं और कभी-कभी जब हम सोचते हैं कि कोई अच्छा नहीं है या उसे बुरा होना चाहिए, तो लोग अच्छे निकलते हैं। उन्होंने बाद में बनी फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' की कहानी विकसित करना शुरू किया। उन्होंने मुझे फिल्म की मुख्य कहानी लिखनी शुरू की। मैं उनके द्वारा दी गई नोटबुक में फिल्म के बारे में उनके विभिन्न विचारों को लिखता था। वहीं से उन्होंने अंततः फिल्म की पटकथा बुनी। फिल्म के अंत में, वे गंगा को मारना चाहते थे। यह कृष्णा आंटी (उनकी पत्नी) थीं जिन्होंने कहा कि आप गंगा को नहीं मार सकते। उन्होंने उसे जीवित रखा। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैंने देखा कि कैसे उन्होंने एक साधारण विचार से एक फिल्म को साकार किया। रीमा और मैं पार्टी करने जाया करते थे। कभी-कभी हम बहुत देर से लौटते थे। घर के गेट में घुसने से पहले, हम गाड़ी रोककर उसे बंद कर देते और धीरे से आगे बढ़ाते ताकि उसे सुनाई न दे, क्योंकि उसका कमरा ठीक प्रवेश द्वार पर था। हम अपने जूते उतारकर उसके कमरे में दबे पांव रेंगते हुए जाते थे, लेकिन उसकी छठी इंद्री अविश्वसनीय थी। उसे पता चल जाता था कि हम आ गए हैं! वह हमसे शाम के बारे में पूछता और फिर हमें सोने के लिए कहता। उसके पास मुर्गियां थीं जो रोज़ अंडे देती थीं। ये अंडे टोकरी में भरकर उसके पास जाते थे। वह इन अंडों को लेकर बहुत सजग था। ये अंडे परिवार के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ उसके लिए थे। लेकिन जब मेरी माँ उसके साथ रहती थी, तो वह उसे रोज़ दो अंडे भेजता था। यह उसकी बहन के प्रति प्रेम का इज़हार था!

जतिन सियाल: उमी सियाल का बेटा

मुझे याद है, गर्मियों की छुट्टियों में जब मैं अपने चाचा के घर चेंबूर में रहता था, तब मेरी उम्र लगभग बीस साल थी और रात भर पार्टी करना ही एकमात्र काम

होता था। एक बार जब मैं अपने चचेरे भाई चिंपू के साथ बाहर जाने के लिए तैयार था, तभी अचानक राज चाचा अंदर आ गए। चिंपू झट से पीछे हट गया और मैं उनकी खूबसूरत नीली, लेकिन प्रभावशाली, भेदक आँखों के सामने अकेला रह गया। मुझे सजे-धजे देखकर, उन्होंने अपनी एक भौंह ऊपर उठाते हुए सहजता से पूछा, 'कहाँ जा रहे हो?' हिम्मत जुटाकर मैंने सहजता से जवाब दिया, 'अरे! मैं बस अपने दोस्त के घर ड्रिंक करने जा रहा हूँ!' अपनी सर्वज्ञानी आँखों को बिना हटाए, वे मुस्कुराए बोले, 'बेटे, कमाओ, पियो और पिलाओ।' और चले गए। उस रात उन तीन सरल शब्दों का महत्व और सार्थकता मेरी समझ से परे थी, लेकिन वर्षों के बीतने के साथ-साथ वे मेरे मन में इतनी गहराई से समा गए हैं कि उन्होंने मुझे आज जो कुछ भी मैं हूँ, बनाने में योगदान दिया है। राज कपूर न केवल फिल्म निर्माण की कला में एक विलक्षण प्रतिभा थे, बल्कि एक ऐसे दूरदर्शी भी थे जिन्होंने जीवन को उस तरह से देखा और समझा जैसा बहुत कम लोग देख पाते हैं या समझते हैं।

शशि कपूर, भाई

मेरे माता-पिता की उपस्थिति में शादी करने के लिए जेनिफर और मेरे पास सिंगापुर से मुंबई आने के लिए हवाई यात्रा के पैसे नहीं थे। मैंने राज जी को पत्र लिखा और उन्होंने तुरंत मुझे दो हवाई टिकट भेज दिए। इस तरह मैंने अपनी माँ से किया वादा निभाया। राज कपूर मेरे लिए पिता समान थे।

मुझसे चौदह साल बड़े, वे अक्सर मुझे अपना सबसे बड़ा बेटा कहकर पुकारते थे। मेरी सबसे पुरानी यादें पृथ्वी थिएटर में उनकी कड़ी मेहनत से जुड़ी हैं। वे पूरे प्रोडक्शन के प्रभारी थे। वे सुबह छह बजे थिएटर पहुँच जाते थे और देर रात तक वहीं रहते थे। उनकी ऊर्जा देखकर लोग सोचते थे कि क्या राज जी के पास कोई अतिरिक्त जनरेटर है। मेरे पिता अपने सबसे बड़े बेटे की क्षमताओं की प्रशंसा करते थे, क्योंकि वे प्रोडक्शन से लेकर डिज़ाइन, संगीत से लेकर लाइटिंग तक लगभग सब कुछ संभालते थे। जब राज जी ने अपनी शादी के बाद 1946 में आर.के. स्टूडियो शुरू किया, तो मुझे उनके पहले प्रोजेक्ट 'आग' में शामिल किया गया। उनके साथ काम करना अद्‌भुत था। हालाँकि, एक चीज़ थी जो मुझे ज़्यादा पसंद नहीं थी, और वह थी रात में शूटिंग करना। लेकिन ओह, राज जी मुझसे काम निकलवाना जानते थे! वे मुझे एक अतिरिक्त ऑमलेट या एक शीतल पेय का लालच देते थे।

बचपन में ही मैंने अपशब्द सीख लिए थे और बड़ों से बात करते समय अक्सर उनका इस्तेमाल करता था। एक दिन राज जी ने मुझे माँ से अपशब्द बोलते हुए सुन लिया और तुरंत मुझे थप्पड़ मार दिया। मैं एकदम सन्न रह गया। मेरे भाई ने हमेशा मुझ पर खूब प्यार बरसाया था। इसके अलावा, मेरे माता-पिता में से किसी ने भी मुझे कभी नहीं मारा था। मैं एक कमरे में जाकर रोने लगा। राज जी ने मुझे सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन जब मैंने रोना बंद नहीं किया, तो वे भी फूट-फूटकर रोने लगे!

तीन भाई, राज, शम्मी और शशि कपूर

जब राज जी ने 'आवारा' फिल्म लॉन्च की, तो मुझे उनके साथ काम करने का एक और मौका मिला। मैंने उसमें एक युवा आवारा लड़के का किरदार निभाया। एक दिन मैं उनके पास गया और उनसे पूछा कि वे मुझे पैसे क्यों नहीं दे रहे हैं। वे हैरान रह गए। अगली ही सुबह उन्होंने मुझे बेल एंड हॉवेल का 16 मिमी का मूवी कैमरा खरीदकर दिया और कहा, 'देखो, तुम जितना हो सके रॉ स्टॉक का इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन तुम्हें फिल्म बनानी है।' इस तरह वे फिल्म जगत में मेरे गुरु बन गए।

मैं फिल्म 'आवारा' में उनके द्वारा फिल्माए गए स्वप्न दृश्य को अब तक का उनका सर्वश्रेष्ठ स्वप्न दृश्य मानता हूँ। एक बार जब मैंने उन्हें 'आवारा' से भी बेहतर स्वप्न दृश्य बनाने की चुनौती दी, तो उन्होंने तुरंत जवाब दिया, 'अगर मेरे साथ नरगिस, शंकर, जयकिशन, शैलेंद्र और मुकेश होते, तो मैं इससे भी बेहतर स्वप्न दृश्य बना देता।' मेरे पास कोई जवाब नहीं था। उनका शानदार व्यक्तित्व आपको अवाक कर देता था। यही राज कपूर की महानता है।

शशि कपूर राज कपूर के साथ

मुझे याद है जब मुझे पहली बार किसी गाने की शूटिंग करनी थी, तो मैं बहुत घबरा गई थी। मैं राज जी के पास गई और उन्होंने कहा, 'घबराने की क्या ज़रूरत है? आराम से रहो, स्वाभाविक रूप से करो। बोल याद करो, होंठ हिलाओ,

ज़रूरत पड़ने पर सांस लो। लेकिन ज़्यादा मत करो। किसी भी किरदार को सहजता से निभाना और स्वाभाविक दिखना बेहतर होता है। तुम कपूर हो और तुम यह कर सकती हो।' उनकी सलाह जादू की तरह कारगर साबित हुई।

उनकी अपनी फिल्मों में से मुझे 'आग', 'बरसात' और 'संगम' में शादी के बाद का उनका किरदार सबसे ज़्यादा पसंद है। मुझे लगता है कि 'दास्तान' के कॉमेडी रोल में वे सबसे बेहतरीन थे। वे एक शानदार कलाकार थे। और वे अपने हर काम में पूरी तरह विश्वास रखते थे। राज कपूर के बारे में सबसे पहली बात जो आपको प्रभावित करती थी, वह थी उनकी जीवंतता। आप चाहे कितने भी शांत स्वभाव के हों, वे आपको मानसिक रूप से प्रेरित कर देते थे। उनके साथ कभी कोई नीरस पल नहीं होता था। शर्मीले लोगों के साथ भी वे बिना दिखावा किए उन्हें सहज महसूस कराने की कला जानते थे। वे फिल्मों में हों या बाहर, दूसरों की समस्याओं के बारे में बहुत ही सतर्क रहते थे। वे बिना पूछे कभी सलाह नहीं देते थे। एक फिल्म निर्माता के रूप में, वे निश्चित रूप से एक बेहतरीन कलाकार थे। उनकी फिल्मों में एक खास तरह का समग्र प्रभाव होता था, जो प्रचार और निर्माण जैसे विभिन्न तत्वों का परिणाम होता था, और मुझे नहीं लगता कि लोग उनसे कभी निराश हुए।

कुणाल कपूर, शशि कपूर के बेटे

राज अंकल ने आर.के. स्टूडियो की पहली मंजिल बनवाई थी—लेकिन उस पर छत नहीं थी, इसलिए वे रात में शूटिंग करते थे। वे 'आवारा' फिल्म की शूटिंग कर रहे थे और एक स्वप्निल गीत के दृश्य की योजना बना रहे थे। उन्हें 'बादल' चाहिए थे, लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि मनचाहा दृश्य प्रभाव कैसे प्राप्त करें। स्टूडियो में आग लग गई और सब लोग घबरा गए। कुछ लोग बाल्टियों में पानी भरकर आग बुझाने लगे। राज अंकल ने एक अग्निशामक यंत्र उठाया, उसे आग की ओर किया और उसे चालू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि चारों ओर सफेद 'धुएं' की मोटी चादर सी छा गई। राज अंकल आग के बारे में पूरी तरह भूल गए और अग्निशामक यंत्र से खेलने लगे। नतीजा: वह गीत, जैसा कि हम आज जानते हैं, मनचाहे 'बादलों' के साथ तैयार हो गया! फिल्मों के प्रति उनका जुनून था; वे सिनेमा के बारे में सोचते, सपने देखते, खाते और सोते थे। यहां तक कि जब उनके अपने स्टूडियो में आग लगने का खतरा मंडरा रहा था, तब भी वे अपनी फिल्म के बारे में सोच रहे थे, जो कुछ उन्होंने खोजा था उसमें खो गए थे और आग को नजरअंदाज कर रहे थे। उनका जुनून कुछ ऐसा ही था।

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा के बारे में

सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि मैं एक अच्छा पारिवारिक व्यक्ति रहा हूँ। और अगर मेरा परिवार है, तो सबसे बड़ा श्रेय और गुण श्रीमती राज कपूर को जाता है। उन्होंने ही पिछले तैंतीस वर्षों तक मुझे सहन किया है और मेरे करियर में मैंने जो कुछ भी किया है, उसमें उन्होंने ही मेरा साथ दिया है, मेरा समर्थन किया है और इस खूबसूरत परिवार का पालन-पोषण किया है।

मेरे तीन बेटे हैं। उनमें से दो अब आत्मनिर्भर हैं; वे अभिनेता और निर्देशक हैं, सितारे हैं। सबसे छोटा बेटा अभी तैयार हो रहा है। उसे ठीक वैसे ही सिखाया जा रहा है जैसे मैंने सीखा था, बिल्कुल शुरुआत से। वह फर्श साफ करता है, सारी लाइटें ठीक करता है, सहायक का काम करता है, प्रयोगशालाओं में जाता है, संपादन कक्ष में बैठकर संपादन करता है, इस कला को सीखने का सही तरीका सीख रहा है। मेरी दो बेटियाँ हैं। एक आज दो बच्चों के साथ खुशी-खुशी शादीशुदा है। मेरी दूसरी बेटी भी बहुत जल्द एक सुंदर घर और पति की ओर अग्रसर होगी। और मुझे लगता है कि तब कृष्णा और मैं, जीवन के अंतिम पड़ाव में बहुत सी यादें ताजा करेंगे... हमने क्या-क्या झेला और कैसे हम आज भी साथ हैं। इसका सारा श्रेय कृष्णा कपूर को जाता है। हालाँकि कभी-कभी हमारी आपस में बनती नहीं है—वैसे भी हमारे बीच कभी अच्छे संबंध नहीं रहे—लेकिन हम हमेशा साथ रहे हैं। और इसका श्रेय उन्हें जाता है, मुझे नहीं। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि वह बहुत दयालु और सहनशील महिला हैं। और वह मेरे माता-पिता के लिए एक बेहतरीन बहू रही हैं, उन्होंने उनकी देखभाल की है। राज कपूर के परिवार के बारे में यही सच्चाई है।

Raj Kapoor with Krishna and their three sons Rishi, Rajiv and Randhir Kapoor

राय साहब करतार नाथ मल्होत्रा, जो रीवा राज्य के पुलिस महानिरीक्षक थे, की चौथी पुत्री कृष्णा की शादी राज कपूर से हुई थी, तब उनकी उम्र मात्र सोलह वर्ष थी। वह पृथ्वीराज की चचेरी बहन हैं।

मैं 'आग' फिल्म बनाने की योजना बना रही थी और अपने सह-कलाकार प्रेम नाथ के घर उनसे भूमिका पर चर्चा करने के बहाने गई थी, लेकिन असल में उनकी बहन कृष्णा से मिलने गई थी, जिनका नाम मेरे परिवार के बड़ों ने मुझे शादी के लिए सुझाया था। घर में प्रवेश करते ही मुझे सितार की आवाज़ सुनाई दी। मैं स्वत: ही उस कमरे की ओर खिंची चली गई जहाँ से आवाज़ आ रही थी। जैसे ही मैं दरवाजे पर पहुँची, मैं वहीं स्तब्ध रह गई।

कृष्णा कपूर, पत्नी

जब हमारी शादी हुई तब हम बच्चे ही थे। मैं सोलह साल की थी और वो इक्कीस साल के! मैं मध्य प्रदेश के रेवा नाम के एक छोटे से कस्बे से थी। वो मेरे चचेरे भाई के बेटे थे। मेरे पिताजी की बहन के पोते! वो मेरे भाई प्रेम नाथ को फिल्मों में अभिनय करने की अनुमति दिलाने के लिए मेरे पिताजी से इजाज़त लेने रेवा आए थे। पहली नज़र में ही प्यार हो गया। मैं संगीत की प्रैक्टिकल परीक्षा की तैयारी कर रही थी। मुझे सितार बजाने का मौका मिला। उन्होंने कमरे में सितार की आवाज़ सुनी और अचानक अंदर आकर मुझसे पूछा कि क्या वो मेरे तबले के अभ्यास में संगत दे सकते हैं। मुझे आज भी याद है, अभ्यास खत्म होने के बाद उन्होंने अपना विजिटिंग कार्ड मेरे लिए मेज पर छोड़ दिया! ये उनका अपना परिचय देने का तरीका था। कार्ड पर लिखा था, 'प्रोडक्शन इंचार्ज, पृथ्वी थिएटर्स'। मैं उनसे बहुत प्रभावित हुई।

तीन दिन बाद, वह बंबई लौट आए। इसके कुछ ही समय बाद, अचानक मुझे कपूर परिवार से शादी का प्रस्ताव मिला। दो महीने बाद, 12 मई 1946 को हमारी शादी हो गई।

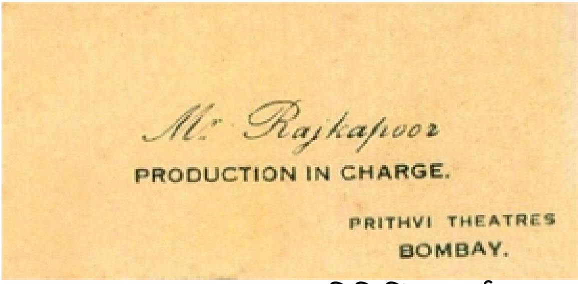

राज कपूर का पहला विजिटिंग कार्ड

PROGRAMME.

BOMBAY

1. Hath Bharna: Sunday 5th May' 1946
2. Barat Leaves Bombay for Rewa by Calcutta Mail — Sat. 11th May' 1946, 8-30 P. M.
3. Barat Reaches Satna (Rly. Station for Rewa) — Sunday 12th May' 46, 7 P. M.

REWA

4. Marriage Procession: Sunday 12th May' 46, Night
5. Doli & Vidai: Tuesday 14th May' 46

present their compliments and request the pleasure of

_____________'s company

at the happy and auspicious occasion of the marriage of their grand son

SRI. RANBIR RAJ KAPOOR
Son of

TO

KUMARI KRISHNA
Daughter of

Inspector General of Police
REWA

as per programme.

राज कपूर का शादी का कार्ड

मेरी शादी की रात, मेरे ससुर ने हमें रवींद्रनाथ टैगोर की गीतांजलि नामक पुस्तक उपहार में दी। पहले पृष्ठ पर हमारे लिए एक संदेश लिखा था, 'राज और कृष्ण को उनकी शादी की रात की शुभकामनाएं। परमात्मा आप दोनों को इस संसार के समस्त सुख और इस पृथ्वी पर मौजूद सभी अच्छी और सुंदर चीजों से नवाज़ें। हमारा आशीर्वाद सदा आपके साथ रहे!'

सोलह साल की कम उम्र में, मुझे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि राज कपूर जैसे प्रतिभाशाली और शानदार कलाकार से शादी करने का क्या मतलब होता है।
हमारी शादी के कुछ समय बाद ही उन्होंने निर्देशक किदार शर्मा के साथ अपनी पहली फिल्म 'नील कमल' साइन की। हमारे वैवाहिक जीवन में उतार-चढ़ाव आए, लेकिन अंततः हम दोनों को यह एहसास हुआ कि हम न तो एक-दूसरे के साथ रह सकते हैं और न ही एक-दूसरे के बिना। आज मुझे एहसास होता है कि एक सेलिब्रिटी का जीवन खुली किताब की तरह होता है। मुझे उन दिनों का अफसोस है जब हम एक-दूसरे से बात नहीं करते थे। शायद यही परिपक्वता है!

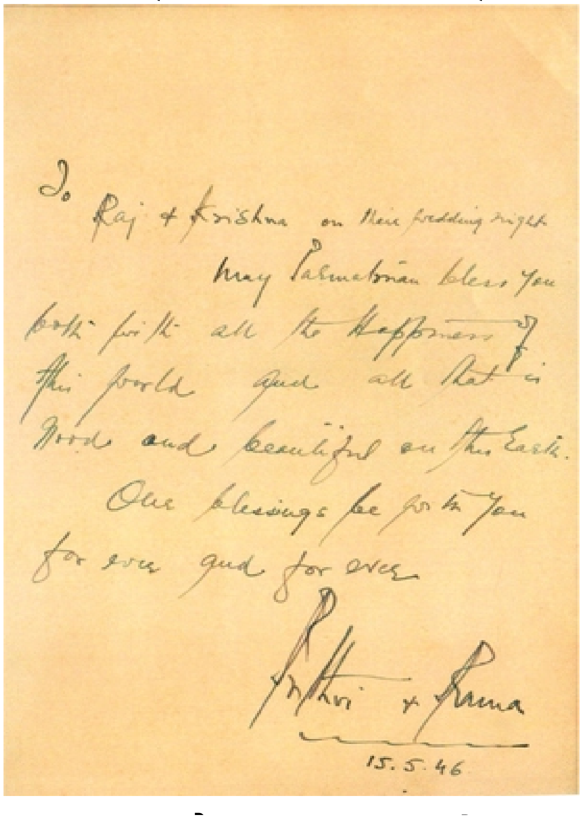

To Raj & Krishna on their wedding night
May Parmatman bless you
both with all the happiness of
this world and all that is
good and beautiful on this Earth.
Our blessings be with you
for ever and for ever
Prithvi & Rama
15.5.46

पृथ्वीराज कपूर द्वारा राज कपूर और कृष्णा कपूर को उनकी शादी की रात दिया गया उपहार

हालांकि वो हमेशा मुझे रानी की तरह मानते थे, लेकिन जब उनके प्रशंसक और लड़कियाँ उनके पीछे भागती थीं तो मुझे बहुत जलन होती थी। उस समय ये सब मेरे लिए असहनीय था। और आज, मुझे सिर्फ उनके नाम से ही जाना जाता है। वो मेरी पहचान हैं। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है। वो हर काम में बहुत आगे थे। उन्होंने जीवन में बहुत कम उम्र में सफलता हासिल की और 63 वर्ष की आयु में ही दुनिया से चले गए!

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा के बारे में

कृष्णा हर क्षेत्र में पूर्णतावादी हैं। जो लोग इस 'सफेद वस्त्रधारी महिला' को जानते हैं, वे इस बात से सहमत होंगे कि वह एक निष्ठावान पत्नी, मित्र और साथी होने के साथ-साथ एक आदर्श माँ और दादी भी हैं। वास्तव में, वह सभी अच्छे गुणों से परिपूर्ण हैं। वह एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व वाली, हास्यबोध से परिपूर्ण और एक बेहद मिलनसार मेज़बान हैं। उनके व्यक्तित्व का सबसे विशिष्ट पहलू यह है कि वह पारंपरिक मूल्यों को आधुनिकता के साथ सही मायने में जोड़ती हैं। उनके लिए आधुनिकता केवल एक फैशन नहीं, बल्कि जीवन शैली है। आधुनिकता में उनका विश्वास उतना ही दृढ़ है जितना पारंपरिक मूल्यों में। ये दोनों चीजें उनके व्यक्तित्व में इतनी सहजता से समाहित हैं कि उनमें कोई विरोधाभास नहीं दिखता। वह एक बेहतरीन मेज़बान हैं। वह हर मेहमान का, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कैसी भी हो, पूरा ध्यान रखती हैं।

राज कपूर अपनी भव्य पार्टियों के लिए मशहूर थे और इन पार्टियों के पीछे उनकी पत्नी की अहम भूमिका थी। वे किसी भी पार्टी का संचालन इतनी सहजता और कुशलता से करती थीं मानो कोई महान संगीतकार सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा का संचालन कर रहा हो। अपने आस-पास खुशियाँ फैलाना उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता थी और वे हमेशा आत्म-संतुष्ट रहती थीं। गरीबों और वंचितों के प्रति उनके मन में करुणा थी। वे दान-पुण्य में बहुत पैसा देती थीं, लेकिन हमेशा गुप्त रूप से। उन्होंने हमेशा प्रचार से दूरी बनाए रखी और वे इकलौती हस्ती हैं जिन्होंने कभी कोई इंटरव्यू नहीं दिया और न ही मीडिया के सामने आईं। वे अपने करीबी दोस्तों के साथ किटी पार्टी में शामिल होती थीं। रमी के खेल में जो भी जीतती थीं, उसे मेजबान के स्टाफ को टिप के रूप में दे देती थीं। रमी की तरह ही, जीवन में भी उन्होंने अपनी जीत दान कर दी और हार को अकेले ही गरिमा के साथ सहा। उनकी उदारता असीम थी। सुनील दत्त और नरगिस को ऋषि कपूर और नीतू सिंह की शादी में आमंत्रित किया गया था। राज कपूर बेहद तनावग्रस्त और घबराए हुए थे, लेकिन उनकी पत्नी शांत और संयमित थीं। जब नरगिस ने उनसे कहा कि आज एक माँ और पत्नी के रूप में, वह समझ सकती हैं कि अपने पति के जीवन में पर्दे पर और पर्दे के बाहर, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उन्होंने किन वर्षों में कितना आघात सहा होगा, तो कृष्णा ने तुरंत नरगिस को यह कहकर आश्वस्त किया कि उन्हें इस बात का अपराधबोध छोड़ देना चाहिए, क्योंकि राज एक भावुक व्यक्ति थे और अगर वह न होतीं तो कोई और होता। उन्होंने अत्यंत गरिमा के साथ कहा कि यह उनका भाग्य था।

बाएं से दाएं: राज कपूर, नीतू, संजय दत्त, नरगिस, ऋषि, सुनील दत्त और कृष्णा कपूर

राज कपूर ने पर्दे पर सदाचार, सादगी और करुणा का चित्रण किया, वहीं कृष्णा कपूर ने जीवन में इन गुणों का पालन किया। वास्तव में, राज कपूर का परदादा श्रीमती कृष्णा कपूर का ही एक आभासी रूप है। एक तरह से, राज कपूर ने अनजाने में ही उनके मूल्यों को पर्दे पर प्रदर्शित किया।

पापा अपना नाम कमाने में व्यस्त थे। और शुरुआत में मम्मी को उनकी फिल्मी दुनिया में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। जल्द ही उन्हें अपने पति और अपने बीच एक दूरी महसूस होने लगी।

कृष्णा कपूर, पत्नी

अब मुझे एहसास होता है कि गलती जितनी उनकी थी, उतनी ही मेरी भी थी। मैं अपरिपक्व थी, मुझमें आत्मविश्वास की कमी थी और स्वस्थ बच्चों और कुछ सुख-सुविधाओं से परे जीवन को देखने की क्षमता नहीं थी। मेरी बात मानिए, हर अंधेरी रात के बाद एक खूबसूरत सुबह आती है। और समय छोटी-छोटी बातों और चिंताओं को मिटा देता है। जब हम मर जाते हैं तो वासनाओं और संपत्ति का क्या उपयोग? मैंने छोटी-छोटी बातों की चिंता करना छोड़ दिया और अपनी खुशियों को गिनना शुरू कर दिया। आज मेरे पास जो कुछ भी है, वह मेरे पति हैं। उन्होंने इसे अपनी मेहनत से कमाया है। ऐसा कोई जोड़ा नहीं है जिसका वैवाहिक जीवन संकटों से अछूता हो। बहुत कुछ स्त्री पर निर्भर करता है, जिसे समय के साथ बदलना चाहिए, जैसे-जैसे उसका पति वर्षों के साथ बदलता है। राज जी एक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। वे हमेशा ज़मीन पर सोते थे। लंदन के हिल्टन होटल में, गद्दा नीचे खींचने पर उन्हें डांट पड़ी और दूसरी बार ऐसा करने पर उन पर जुर्माना लगाया गया। उन्होंने होटल छोड़ने तक हर दिन जुर्माना भरा। राज जी को सरल स्वभाव के लोग ही आकर्षित करते थे। वे पुणे के पास लोनी स्थित अपने खेत में सबसे अधिक प्रसन्न रहते थे। किसानों में उनके कई मित्र थे। वे मराठी में बातें करते, खाना बनाते और साथ खाते थे। राज जी स्वयं एक कुशल रसोइया थे। बिरयानी और चिकन उनकी खासियत थे। लेकिन महान रसोइया होने के बावजूद वे खाने के मामले में बहुत कंजूस थे! उनके अंदर का दिखावा करने वाला व्यक्ति

मेज को बेतरतीब ढंग से सजा हुआ नहीं देख सकता था; मेज तो हमेशा भरी-पूरी होनी चाहिए थी, लेकिन वे खुद बस थोड़ा सा खाना खाकर अपने रोज़ के पाव, अंडे और थोड़ी सी दाल से ही संतुष्ट हो जाते थे। कई वर्षों तक उन्होंने दोपहर का भोजन नहीं किया, केवल रात का खाना खाया। पार्टियों में वे केवल खाने का दिखावा करते थे। जब वे कभी-कभी सुबह तड़के घर पहुंचते, तो तुरंत अपने तले हुए अंडे खा लेते थे।

राज जी ईश्वर से डरने वाले व्यक्ति थे; वे लगभग सभी तीर्थ स्थलों के दर्शन करते थे। एक बार उन्होंने हिमालय में स्थित गुफा मंदिर अमरनाथ की जोखिम भरी यात्रा की। उनके लौटने तक घर में किसी को इसके बारे में पता नहीं चला। राज जी ने कहा था कि वे कश्मीर में छोटी छुट्टी मनाने जा रहे हैं। उनका धार्मिक विश्वास उन चीजों में से एक था जिसे वे दिखावा करना पसंद नहीं करते थे।

वे अपने परिवार और बच्चों से भी बहुत प्यार करते थे। मुझे याद है, जब रितु की शादी हुई और वह अपने पति के साथ दिल्ली जा रही थी, तो सब लोग रो पड़े। सिर्फ राज जी ने ही बड़ी चतुराई से खुद को संभाला। उन्होंने रितु के जाने का इंतज़ार किया और फिर अपनी कार में बैठकर स्टूडियो के लिए निकल पड़े। एक घंटे बाद जब उनका एक निजी सेवक उनके कॉटेज में आया, तो उनके मालिक अभी भी रो रहे थे। ये थे राज कपूर, एक पिता। लेकिन उन्हें ऐसे क्षणों में दूसरों का उन्हें देखना पसंद नहीं था। जब डब्बू (रणधीर) और चिंटू (ऋषि) पार्टियों से देर से लौटते थे, तो राज जी जागते रहते थे। लेकिन उन्होंने कभी उन्हें यह बात नहीं बताई। न ही उन्होंने अगली सुबह उनसे कुछ कहा। वे सिर्फ मुझे ही उनसे बात करने के लिए कहते थे क्योंकि वे घर में भी अपनी लोकप्रियता को दांव पर लगाने को तैयार नहीं थे!

रविवार को पारिवारिक चिकित्सक डॉ. घंटी घर आते थे। वे दोनों पक्के दोस्त थे। वे सट्टेबाजों को फोन करना शुरू कर देते थे। जब राज जी फोन पर 'दस' कहते थे, तो ऐसा लगता था मानो वे दस हजार का दांव लगा रहे हों, लेकिन असल में यह सिर्फ दस रुपये होते थे, पाँच रुपये उनके और पाँच रुपये डॉक्टर के! और जब वे पंद्रह या बीस रुपये जीत जाते, तो खुशी से पागल हो जाते। फोन की घंटी बजती और राज जी सिरिंज को हाथ में लटकाए हुए ही उठाने के लिए उछल पड़ते, और डॉ. घंटी उसे पकड़े उनके पीछे दौड़ते! यह कई सालों तक उनकी रविवार की दिनचर्या थी। वे दोनों साथ में छोटे बच्चों की तरह खेलते थे। दरअसल, राज जी कॉमिक्स के बहुत बड़े शौकीन थे, खासकर आर्ची और सैड सैक जैसी हास्यप्रद कॉमिक्स के। किसी विचार को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का तरीका उन्हें हमेशा से आकर्षित करता रहा है।

अगर मुझे अपना जीवन दोबारा जीने का मौका मिले तो मैं उसी आदमी को चुनूंगी। दस गुना ज़्यादा, और हाँ, वही अनुभव भी दोहराऊंगी। अंधेरी रात ही भोर की रोशनी देती है।

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा के बारे में

क्या आप जानते हैं कि कालिदास ने आदर्श पत्नी का वर्णन कैसे किया है? एक ऐसी पत्नी जो अपने पति की मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक बन सके जब वह भ्रमित हो और उसे सही दिशा दिखाने की आवश्यकता हो, जो उसे चोट लगने पर माँ की तरह सहारा दे सके और जो बीमार होने पर उसकी देखभाल कर सके। कृष्णा मेरे लिए ये सब रही हैं। कृष्णा मेरी शक्ति हैं, एक आदर्श स्त्री, जिन्होंने अर्धांगिनी की भूमिका को पूर्णता से निभाया है। उन्होंने हर सुख-दुख में मेरा साथ दिया है। वह मेरी सहारा रही हैं। हर पुरुष इतना भाग्यशाली नहीं होता कि उसे कृष्णा जैसी पत्नी मिले, लेकिन फिर, हर स्त्री इतनी भाग्यशाली नहीं होती कि उसे राज कपूर जैसा पति मिले!

~

भारत और चीन के युद्ध के दौरान उत्तर-पूर्वी सीमांत के लिए रवाना होने से पहले राज कपूर ने अपनी पत्नी को लिखे पत्र में कहा, "हे मेरी शाश्वत प्रेम और जीवन, हे मेरे बच्चों की माता, हे मेरी प्रिय पत्नी कृष्णा, मैं अपने भावों को व्यक्त करने के लिए कुछ शब्द लिख रहा हूँ, जो सत्य और वास्तविकता हैं। मैं अपने जीवन के सभी क्षेत्रों, घरेलू और सांसारिक, में अपनी सभी गलतियों और कमियों को स्वीकार करता हूँ। जब भी मैं अपने प्रियजनों के प्रेम और स्नेह का प्रतिदान करने में असफल रहा हूँ, तो ऐसा नहीं है कि मैं अपने ऊपर बरसाए गए अपनेपन के सभी भावों से अनभिज्ञ हूँ, बल्कि अपने अत्यधिक स्वार्थ में मैं यह व्यक्त करने में असमर्थ हूँ कि आप सभी मेरे हैं, और आपके साथ मेरा बंधन पहले से कहीं अधिक मजबूत हो जाता है। शायद यही मुझे अपने अस्तित्व से संबंधित जीवन की सभी विविधताओं, अर्थात् मेरे काम, के प्रति कार्य करने और प्रतिक्रिया देने की शक्ति देता है... आप भली-भांति जानती हैं कि मैं एक आवेगशील व्यक्ति हूँ। लेकिन एक बात मेरे लिए स्पष्ट है, और वह यह है कि हम दोनों को एक-दूसरे के साथ एकता का वातावरण बनाना होगा।" मैं सबसे पहले आपसे यह कहना चाहता हूँ कि मैं चाहे जो भी हूँ, जैसा भी हूँ और जहाँ भी हूँ, यह अटल सत्य है कि मैं हूँ, और मैं आपका हूँ। पूरे प्यार के साथ, आपका सदा के लिए, राज।

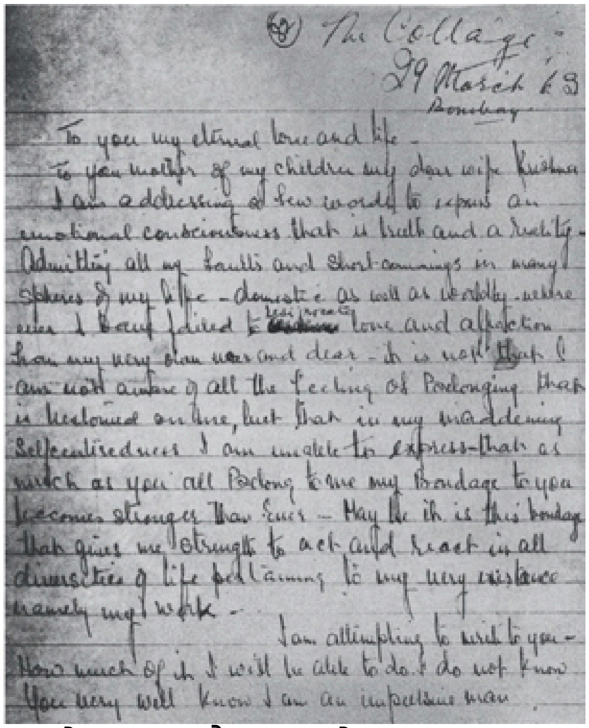

The Cottage
29 March 63
Bombay

To you my eternal love and life –
to you mother of my children my dear wife Krishna
I am addressing a few words to express an
emotional consciousness that is truth and a reality –
Admitting all my faults and short-comings in many
spheres of my life – domestic as well as worldly – where
even I have failed to reciprocate love and affection
from my very own near and dear – It is not that I
am not aware of all the feeling of belonging that
is bestowed on me, but that in my maddening
selfcentredness I am unable to express – that as
much as you all belong to me my bondage to you
becomes stronger than ever – May be it is this bondage
that gives me strength to act and react in all
diversities of life pertaining to my very existence
namely my work –
I am attempting to write to you –
How much of it I will be able to do I do not know
You very well know I am an impulsive man

सैनिकों का मनोरंजन करते हुए राज कपूर ने कहा, 'मैं आपको बताना चाहता हूं कि आप हमारी मातृभूमि की रक्षा के लिए यहां अकेले नहीं हैं। हम कलाकार, पूरा देश, आपके साथ हैं। आप जितने मजबूत और बहादुर होंगे, आपके भाई-बहन, बच्चे, माता-पिता और हमारा पूरा देश उतना ही सुरक्षित रहेगा।'

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा के बारे में

दिन के अंत में जब मैं आराम करती हूँ, तो मुझे बहुत दुख होता है कि मैंने आपको कितना दर्द दिया है। मैं आपके लिए वो दिन कैसे वापस ला सकती हूँ? लेकिन शो बिजनेस ऐसा है कि एक महिला को समझदार होना पड़ता है क्योंकि इसमें लगातार भावनात्मक जुड़ाव होता है, क्योंकि काम ही ऐसा है।

कोई और स्त्री होती तो मुझे बहुत पहले ही छोड़ देती। कृष्ण ने ही मेरा घर बनाया है। उन्होंने ही मेरा घर बनाया, बसाया, सजाया और संवारा।

लेकिन कृष्णा के लिए, अपने पति द्वारा अपने धैर्य और प्रेम की सराहना करना ही उनके लिए पर्याप्त प्रतिफल था। उनका प्रेम भक्ति और दृढ़ संकल्प की सीमा पर है।

~

राज कपूर ने कृष्णा को पहली बार एक सादी सफेद सूती साड़ी में देखा था और यहीं से उनके जीवन में 'सफेद वस्त्र वाली महिला' की छवि का जन्म हुआ, जो उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई। उनकी अभिनेत्रियाँ, नरगिस, पद्मिनी, वैजयंतीमाला, ने स्वेच्छा से उनके द्वारा गढ़ी गई छवि को अपनाया और हर एक राज कपूर की छाप लिए हुए सफेद वस्त्र वाली महिला के रूप में उभरी। कुछ लोग कहते हैं कि राज कपूर को अपनी नायिकाओं से प्रेम हो गया था, तो कुछ कहते हैं कि उन्हें राज कपूर से प्रेम हो गया था। सच्चाई तो यह है कि वे केवल अपनी पत्नी कृष्णा से ही प्रेम करते थे।

जैसा कि उन्होंने कहा, 'मेरी नायिका नरगिस मेरी प्रेरणा हैं और मेरी पत्नी कृष्णा मेरी ऊर्जा हैं। मेरी पत्नी अभिनेत्री नहीं होनी चाहिए और मेरी अभिनेत्री मेरी पत्नी नहीं होनी चाहिए।'

Randhir Kapoor, Son

राज कपूर के सबसे बड़े बेटे रणधीर का जन्म 15 फरवरी 1947 को हुआ था। उसी साल राज कपूर ने अपनी पहली फिल्म 'आग' की शूटिंग शुरू की थी। अपने पहले बच्चे के जन्म के साथ ही उन्होंने अपनी पहली कार भी खरीदी थी।

उनका दिमाग पूरी तरह से फिल्मों पर केंद्रित था। उनका पूरा जीवन फिल्मों के इर्द-गिर्द घूमता था। वे सिर्फ फिल्मों के बारे में ही सोचते या बात करते थे। चाहे वे शराब पीते हों या न पीते हों, खाने से पहले हों या खाने के बाद, सुबह हो, दोपहर हो या रात, घर पर हों या स्टूडियो में, उनकी बातचीत सिर्फ फिल्मों के बारे में ही होती थी। चाहे आप अंतरिक्ष या डोनाल्ड डक के बारे में बात करें, वे बातचीत को फिल्मों की ओर ही मोड़ देते थे।

From left: Babita, Kareena, Samaira, Karisma, Kiaan and Randhir Kapoor

यानी, उनकी फिल्मों की बात हो रही है। उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि दूसरे किस तरह की फिल्में बना रहे हैं, उन्हें सिर्फ अपनी फिल्मों में ही दिलचस्पी थी। अगर मुमकिन होता तो वो आर.के. स्टूडियो के गेट से बाहर कदम भी नहीं रखते थे। यही वो सुकून भरी जगह थी जो उन्होंने खुद के लिए बनाई थी। पापा ने हमसे पढ़ाई में बहुत अच्छे नंबर लाने की उम्मीद कभी नहीं की थी। दरअसल, उन्हें हमारी क्षमता का पूरा ज्ञान था। परीक्षा पास कर लेने से ही वे खुश हो जाते थे। लेकिन यह ज़रूरी था कि हम जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करें। मुझे याद है पापा एक बार हम दोनों, चिंटू और मुझसे, थोड़े नाराज़ हुए थे। हम पैंट और कुर्ता पहनकर बाहर निकले थे। उन्होंने चिल्लाकर कहा, 'अजीबोगरीब कपड़े पहनकर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश मत करो। तुम्हारा काम दुनिया का ध्यान खींचेगा।'

Raj Kapoor on Randhir Kapoor

जब मेरे पिता ने मुझसे पूछा कि क्या मैं आगे पढ़ाई करना चाहूँगा या कोई करियर बनाना चाहूँगा, तो मैंने उनसे कहा कि मैं फिल्मों में जाना चाहता हूँ। उन्होंने तुरंत मेरी बात मान ली और मुझे चंदूलाल शाह और देविका रानी के पास ले गए ताकि मैं फिल्मों में सहायक के रूप में प्रशिक्षण शुरू कर सकूँ। मुझे यह घटना तब याद आई जब मेरे अपने बेटे डब्बू (रणधीर) के साथ भी ऐसी ही स्थिति आई। इसलिए मैंने उसे सहायक निर्देशक के रूप में प्रशिक्षण शुरू करने को कहा। क्योंकि मेरा मानना है और मैंने अपने अनुभव से सीखा है कि सहायक के रूप में काम करने से ही फिल्म निर्माण की बारीकियों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है।

Randhir and Raj with Prithiviraj Kapoor

Randhir and Raj Kapoor

जब डबू सहायक के रूप में काम कर रहे थे, तब उन्हें नायक की भूमिका निभाने के प्रस्ताव मिले। जब उन्होंने मुझसे अनुमति मांगी, तो मैंने उनसे कहा कि अगर उन्हें कलाकार के रूप में अपना करियर शुरू करना है, तो उन्हें आर.के. से शुरुआत करनी चाहिए। एक पिता और स्वयं एक फिल्म निर्माता होने के नाते, मुझे

लगा कि मुझे अपने बेटे को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने का सौभाग्य मिलना चाहिए। इतना ही नहीं, मैं चाहता था कि वह निर्देशक के रूप में भी अपनी छाप छोड़े। हमें बस एक ऐसी कहानी की ज़रूरत थी जो उन्हें पसंद आए और उनमें उत्साह जगाए। वीरेंद्र सिन्हा की फिल्म 'कल आज और कल' में हमें वह कहानी मिल गई। वीरेंद्र सिन्हा से कहानी सुनकर मुझे लगा कि यह कहानी हमारे लिए ही लिखी गई है। क्योंकि इसमें न केवल डबू के लिए, बल्कि मेरे और मेरे पिता पृथ्वीराज जी के लिए भी एक आदर्श भूमिका थी। जिस तरह पापाजी ने 1947 में मेरे पदार्पण के समय रोमांटिक भूमिकाएं करना छोड़ दिया था और चरित्र अभिनय की ओर रुख किया था, उसी तरह मैंने भी अपने बेटे के नायक के रूप में पदार्पण के साथ चरित्र अभिनय की ओर रुख करने और वास्तविकता के अनुरूप एक पिता की भूमिका निभाने का फैसला किया। आवारा फिल्म में पापाजी ने मेरे पिता का किरदार निभाया था, और अब वे फिल्म में मेरे पिता और मेरे बेटे के दादा का किरदार निभाने के लिए फिर से तैयार हो गए हैं। दरअसल, वे भी मेरी तरह ही डबू को एक कलाकार और निर्देशक के रूप में सफल शुरुआत दिलाने के लिए उत्सुक थे।

Babita, Randhir Kapoor’s wife

मुझे याद है बचपन में पापा मेरे पिता हरि शिवदासानी के साथ सीसीआई क्लब में टेनिस खेलते थे। खेल के बाद अक्सर वो हमारे घर आते थे, जो क्लब के ठीक सामने था। मुझे याद है बचपन में मैं उनकी गोद में बैठती थी और वो मुझसे पूछते थे कि मैं बड़ी होकर क्या बनना चाहती हूँ। मैं कहती थी कि मैं अभिनेत्री बनना चाहती हूँ और वो हमेशा मुझे प्रोत्साहित करते हुए कहते थे कि एक दिन मैं ज़रूर बड़ी स्टार बनूँगी। अजीब बात है कि लोलो (करिश्मा) से भी उनके दादाजी यही सवाल पूछते थे! लोलो भी कहती थीं कि मैं अभिनेत्री बनना चाहती हूँ और वो उनसे भी यही कहते थे कि एक दिन तुम बड़ी स्टार बनोगी। मुझे याद है जिस दिन लोलो का जन्म हुआ था, मेरे ससुर जी को छोड़कर पूरा परिवार मेरे साथ ब्रीच कैंडी अस्पताल में था। उन्होंने कहा था कि वो अस्पताल तभी आएंगे जब नवजात शिशु की नीली आँखें होंगी! भगवान का शुक्र है कि लोलो की आँखें मेरे ससुर जी की तरह गहरी नीली थीं।

From left: Raj Kapoor, Mansur Ali Khan Pataudi, Randhir Kapoor, Babita and Sharmila Tagore

Karisma Kapoor, Randhir Kapoor's daughter

किशोरावस्था में, मैं हमेशा फिल्मों में काम करना चाहती थी, मैं एक अभिनेत्री बनना चाहती थी। मुझे याद है मेरे दादाजी ने मुझसे कहा था, 'अभिनेता बनना आसान नहीं है! अगर तुम अभिनेता बनना चाहती हो, तो कांटों पर चलो, ज़मीन जोतकर गुलाब उगाओ, फिर अभिनेता बनो। तुम्हारा लक्ष्य हमेशा सर्वश्रेष्ठ बनना होना चाहिए। तुम्हारे मन में हमेशा एक सफल व्यक्ति बनने की महत्वाकांक्षा होनी चाहिए।' मेरे पास आज भी वह पाक-पुस्तिका है जो मेरे दादाजी ने मुझे किशोरावस्था में उपहार में दी थी। उन्होंने उसमें लिखा था, 'मनुष्य के दिल का रास्ता उसके पेट से होकर जाता है। तुम्हें दादाजी पर अभ्यास करना चाहिए।' मुझे आज भी साफ-साफ याद है कि मैं रविवार को आर.के. स्टूडियो में फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' की शूटिंग देखने जाती थी। तब मैं दस साल की थी। मैं मन ही मन कामना करती थी कि काश मैं भी कपूर वंश की विरासत में अपना योगदान दे पाती।

Randhir and Babita Kapoor with Karishma and Kareena

Kareena Kapoor Khan, Randhir Kapoor's daughter

मुझे याद है, मैंने अपनी ज़िंदगी का पहला आम दादाजी से ही खाया था! रिद्धिमा, रणबीर और मैं दादाजी के बरामदे में झूले पर बैठे थे। उनके पास सिर्फ़ एक आम था और मैं बहुत खुश थी कि उन्होंने मुझे दिया, रणबीर या रिद्धिमा को नहीं, जो उस आम पर नज़र गड़ाए बैठे थे। उन्हें आम बहुत प्यारे थे और वे उन्हें अलमारी

में बंद करके रखते थे! तब से ही मुझे आमों से बेहद लगाव हो गया। दादाजी की पार्टियाँ बहुत मशहूर थीं! लोलो और मैं मम्मी-पापा के साथ इन शानदार पार्टियों में जाया करती थीं। फिल्म इंडस्ट्री के सारे सितारे और नामी लोग वहाँ मौजूद होते थे। रणबीर, लोलो और मैं तो सितारों को देखकर दंग रह जाते थे! हम उन सभी चकाचौंध को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे। हम ऐसे माहौल में पले-बढ़े हैं। इसमें कोई हैरानी नहीं कि बड़े होकर हम सबने फिल्म इंडस्ट्री में आने का फ़ैसला किया। दादाजी को इतना प्यार और सम्मान मिला, यह अद्‌भुत था। मैं भी वही पाना चाहती थी। दादाजी से मुझे इतनी प्रेरणा मिली कि मैं सिर्फ़ सर्वश्रेष्ठ बनना चाहती थी और इंडस्ट्री में सबसे ऊपर पहुँचना चाहती थी। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसका सारा श्रेय मेरे गुरु, मेरे दादाजी को जाता है!

रितु और राजन नंदा अपने बेटे निखिल, बहू श्वेता, बेटी निताशा और पोते-पोतियों नव्या और अगस्त्य के साथ।

ऋतु नंदा, बेटी

मेरा जन्म 30 अक्टूबर 1948 को हुआ था। आर.के. फिल्म्स ने मई 1948 में अपना पहला कार्यालय खरीदा और उसी वर्ष अक्टूबर में पापा ने अपनी दूसरी फिल्म बरसात रिलीज़ की। उसी समय उन्होंने अपनी दूसरी कार, वह शानदार कन्वर्टिबल ओल्ड्समोबाइल खरीदी, जो 1950 के दशक में पापा के करियर का एक अहम हिस्सा थी। राज कपूर अभिनीत फिल्म अंदाज़ भी 1948 में रिलीज़ हुई और इसने उन्हें काफी लोकप्रियता दिलाई।

मेरे पिता की स्मृति में सबसे अनमोल वस्तुएँ वे शब्द हैं जो वे हमेशा कहते थे: अपनी विरासत की गरिमा बनाए रखना और अच्छे कर्म करना। अपने पिता को कभी शर्मिंदा मत करना। अपने पति के दिल में हमेशा रहना। उनके प्रति तुम्हारी ईमानदारी ही तुम्हारा अनमोल रत्न है। उनकी सेवा करना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम्हारे जीवन में कोई दुख न हो। तुम्हारा घर खुशहाल और समृद्ध हो। मेरी बातों को हमेशा याद रखना और धीरे-धीरे मुझे भूल जाना। मैं तुम्हें हमेशा प्यार करूंगा। तुम मेरी जिंदगी हो।

रितु नंदा के साथ

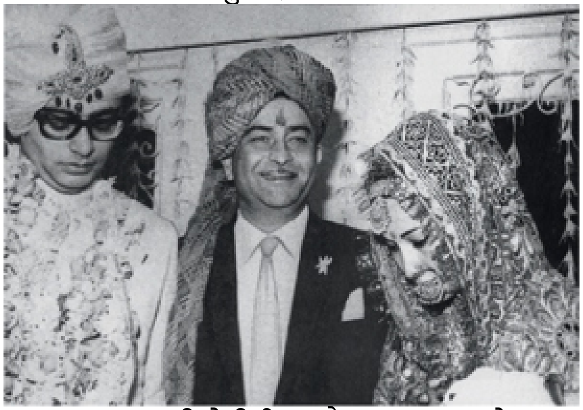

राजू कपूर अपनी बेटी रितु और राजन नंदा के साथ

राजन नंदा, रितु नंदा के पति

शादी की रात, व्यस्त दिनचर्या के बाद मुझे आराम करने के लिए एक कमरा दिया गया। कमरे में पहुँचते ही, मैं अपने सारे गहने उतारने, अपने कपड़ों के बोझ से राहत पाने और सुकून महसूस करने के बारे में सोच ही रही थी कि तभी मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई। मुझे बताया गया कि मेरे ससुर मुझसे मिलना चाहते हैं।
जब मैं उनसे मिलने गया, तो उन्होंने मुझे अपने बगल में बैठा लिया। उनके साथ यह मेरा पहला अकेला अनुभव था। उन्होंने कहा, 'आज तुम्हारी शादी हो रही है। तुम्हारी शादी उस महिला की बेटी से हुई है जिसके साथ मैंने अपना पूरा जीवन बिताया है। मैं तुम्हें बस इतना ही कह सकता हूँ कि तुम्हारी पत्नी के साथ जीवन चुनौतीपूर्ण और प्रभुत्वपूर्ण होगा।'
उन्होंने मुझसे रात के 2 बजे के बाद तक बात की। उन्होंने कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम मूल्यों के साथ जीवन जियो और समझो कि मनुष्य का धन उसके भीतर होता है, उसके आसपास नहीं। इसका अर्थ है कि तुम्हें जीवन में जो भी करना है, उसके प्रति समर्पित रहना होगा। यही तुम्हारे जीवन और प्रतिष्ठा का निर्माण करता है। तुम्हें अपनी कमाई से जीना चाहिए, इसलिए अपने हाथ मांगने के लिए नहीं, बल्कि देने के लिए रखो! जीवन उन मूल्यों पर आधारित है जिन्हें तुम अपने जीवन जीने के तरीके में प्रदर्शित करते हो, और याद रखो कि जीवन तुम्हें वही देगा जो तुम उसे दोगे।' उन्होंने मुझे एक और बहुमूल्य सलाह दी कि मुझे अपना जीवन पूरी प्रतिबद्धता के साथ जीना चाहिए, और इसका एकमात्र तरीका है ईमानदारी रखना और जो भी काम मैं करूँ, उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ करना। उन्होंने आगे कहा, 'तुम जो भी करोगे, उसमें जितना गहराई से उतरोगे, उसके द्वार उतने ही खुलते जाएंगे।'

इस सलाह ने मुझे अपने जीवन में सम्मान अर्जित करने में मदद की है। मैंने मिली सलाह पर बहुत विचार किया, यह अनमोल थी और बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह मेरे जीवन में कितनी फलदायी साबित हुई है। दुनिया उन्हें एक सुपरस्टार के रूप में देखती थी, मैं उन्हें एक विशेष इंसान के रूप में देखता हूँ जिनमें लोगों और उनके चरित्र को परखने की क्षमता थी। मैं उनकी बहुत प्रशंसा और सम्मान करता हूँ, उन्होंने मुझे उन लोगों के बारे में राय दी जिन्हें वे अच्छी तरह से नहीं जानते थे, फिर भी अपनी छोटी मुलाकातों के दौरान सहज रूप से उन्हें समझ लेते थे। वे बहुत गहरे व्यक्तित्व और मानवीय क्षमताओं वाले व्यक्ति थे। एक बार मैंने उनसे पूछा, 'अपने फिल्मी करियर की शुरुआत में बनाई गई फिल्मों की सफलता का श्रेय आप किसे देते हैं?' उन्होंने कहा, 'जब मैंने ये फिल्में बनाईं, तब भारत का विभाजन हो चुका था, देश में तनाव था, यूरोप में युद्ध अभी-अभी समाप्त हुआ था, समाज का माहौल उदास और निराश था। इसलिए, मैंने भावनाओं, सपनों, प्रेम पर फिल्में बनाईं और इस प्रकार मेरी फिल्में, आवारा, श्री 420, सादगीपूर्ण जीवन जीने और उसमें खुशी खोजने के बारे में थीं।'

यही वह मनोविज्ञान था जिसके आधार पर वे अपनी कहानियों की रचना कर रहे थे और ये कहानियां समाज की वास्तविक चिंताओं से कितनी अच्छी तरह जुड़ी हुई थीं।

ऋतु नंदा की बेटी निताशा नंदा

नानाजी हमेशा कहते थे, 'दूसरों के बारे में बोलने से पहले खुद को देखो।' यह हर किसी के लिए एक बहुत बड़ी सीख है। उन्होंने मुझे यह भी सिखाया कि, 'जागरूकता अपने आप में सबसे बड़ा ज्ञान है। चाहे वह आपके परिवेश के बारे में हो, आपके काम के बारे में हो या किसी और चीज के बारे में।' वे हमें रवि कैफे नाम के एक सड़क किनारे वाले रेस्तरां और चेंबूर स्टेशन पर स्थित गीता भवन ले जाया करते थे। हमें वहां के डोसे और इडली बहुत पसंद थे।

मुझे याद है कि मैं पुणे स्थित उनके फार्म और मुंबई स्थित उनके घर में मुर्गियों को दाना खिलाती थी। वे मुझसे कहा करते थे कि जिस प्रकार मुर्गियाँ उनके बुलाने पर दाना खाने आ जाती थीं, उसी प्रकार मुझे भी मुंबई आकर उनसे मिलना चाहिए, जब भी वे कहें, 'आह, आह, आह!' (आओ, आओ, आओ!)। मुझे यह बात हमेशा बहुत प्यारी और स्नेहपूर्ण लगती थी।

मुझे आज भी याद है, मेरे अठारहवें जन्मदिन पर नानाजी ने मेरे लिए एक छोटा और बढ़िया चीनी भोजन आयोजित किया था। मेरी माँ, भाई और मेरी मौसी भी वहाँ मौजूद थे। वह मेरे लिए बहुत खास जन्मदिन था। मुझे उनकी बहुत सी यादें हैं। वे अद्‌भुत और बेहद विनम्र थे। मुझे याद है छुट्टियों में चेंबूर जाना। उन्हें हर किसी की योजनाओं और हर किसी के करने की इच्छा के बारे में पता होता था। जब तक सब लोग अपने-अपने काम खत्म करके घर नहीं लौट आते, वे सोते नहीं थे। वे एक सरल और बेहद सहज व्यक्ति थे। मुझे खुशी है कि मैं उन्हें प्रतिष्ठित दादासाहेब फाल्के पुरस्कार लेते हुए देखने गया था। मेरी माँ शहर में नहीं थीं, क्योंकि वे इंडियन एयरलाइंस की बोर्ड मीटिंग में शामिल होने पुणे गई थीं। पुरस्कार प्राप्त करने के बाद, उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहाँ उनका निधन हो गया। वह आखिरी बार था जब मैं अपने दादाजी से मिला था।

रितु नंदा के बेटे निखिल नंदा

मेरे दादाजी हमेशा मुझे निकोली कहकर बुलाते थे। उन्होंने मुझे कभी निखिल नहीं कहा। मुझे लगता है कि रूस के प्रति उनके प्रेम के कारण ही उन्होंने मुझे यह उपनाम दिया था। उन्होंने मुझे एक टोपी भी उपहार में दी थी जिस पर यही नाम लिखा था। मैं इसे उनके मेरे प्रति प्रेम के प्रतीक के रूप में देखती हूँ और मुझे हमेशा उनका मुझे इस नाम से बुलाना अच्छा लगता था। एक रात, जब मैं मुंबई में अपने दादा-दादी के घर गई हुई थी, नानाजी मुझसे मिलने के लिए आधी रात को मुझे जगा दिया और हमने कुछ घंटे बातें कीं। उन्होंने मुझे गले लगाया और अपने पास बैठने को कहा। वे बहुत स्नेही और प्यार भरे थे और जीवन के बारे में कुछ गहरी बातें बताना चाहते थे। उन्होंने पूछा, 'क्या तुमने कभी आईने में खुद को देखा है?' मैंने कहा, 'हाँ, मैं हर सुबह ब्रश करते समय देखती हूँ।' उन्होंने आगे कहा, 'तुम्हें इसे थोड़ा और गहराई से देखना चाहिए, इसे समझना चाहिए, इस पर विचार करना चाहिए, खुद से पूछना चाहिए कि तुम इसके बारे में क्या महसूस करती हो। इससे सच्ची बातचीत करो और जो कुछ भी तुम देखती हो उसके बारे में ईमानदार रहो।' अगर आप पहले खुद से प्यार करते हैं, तो दुनिया भी आपसे प्यार करेगी।

अगर आपको लगता है कि आपको कुछ क्षेत्रों में सुधार करने की ज़रूरत है, तो ऐसा करें। आपको सबसे पहले खुद का सबसे अच्छा आलोचक बनना होगा और जो आप देखते हैं, उससे प्यार करना और उस पर भरोसा रखना होगा। अगर आपमें यह आत्मविश्वास आ जाएगा, तो आपको दूसरों की स्वीकृति की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं भी ऐसा ही करता हूँ। इससे पहले कि मैं इस बात की चिंता करूँ कि दुनिया मुझे एक अभिनेता के रूप में क्या सोचती है, मैं यह जानता हूँ कि मैं खुद को क्या समझता हूँ। मैं अपने बारे में जो महसूस करता हूँ, उसे ही व्यक्त करता हूँ और इस तरह दुनिया भी मेरे बारे में वही सोचती और महसूस करती है। अपना समय उन बेकार की चीजों में बर्बाद न करें जिनसे आपकी सीख में कोई मूल्य नहीं जुड़ता। अपना समय उन कामों में लगाएँ जो आपको जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए खुद को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। ऐसे काम करें जो आपको वह इंसान बनने में मदद करें जो आप बनना चाहते हैं। ऐसी आदतें बनाएँ जो आपको लगातार बेहतर बनने में मदद करें।

पोते निखिल नंदा और बेटियों रितु नंदा और रीमा जैन के साथ 'राम तेरी गंगा मैली' की शूटिंग के दौरान।

मैंने इस सलाह को आज तक अपने जीवन में शामिल रखा है और अक्सर इस पर विचार करता हूँ, यह उनकी दी हुई सबसे ज्ञानवर्धक सलाहों में से एक है। एक बार मैंने उनसे पूछा, 'अच्छा अभिनेता कैसे बना जा सकता है?' वे मुस्कुराए, मेरी ओर देखा और बोले, 'यह ज़रूरी है कि आप एक अच्छे इंसान हों और अगर आप अच्छे इंसान हैं, तो आपकी अच्छाई का सार अपने आप झलक जाएगा, क्योंकि कैमरे में उसे कैद करने की क्षमता होती है।' मैं उनके इस जवाब से दंग रह गया। आज जब मैं इस पर विचार करता हूँ, तो सोचता हूँ, क्या यह बात कॉर्पोरेट जगत पर भी लागू होती है? अच्छाई को कोमलता से भ्रमित न करें!

ऋषि कपूर, बेटा

राज कपूर सिर्फ मेरे पिता ही नहीं, बल्कि मेरे मार्गदर्शक और गुरु भी हैं। मैं आज जो कुछ भी जानता हूँ और जो कुछ भी हूँ, सब उन्हीं की बदौलत है। उन्होंने मेरे

साथ तीन फिल्में बनाई हैं: मेरा नाम जोकर, बॉबी और प्रेम रोग। ये तीनों फिल्में अपने-अपने समय में बेहद महत्वपूर्ण थीं। राज कपूर जैसे निर्देशक के साथ काम करने और मेरे अन्य निर्देशकों के साथ काम करने में बहुत बड़ा अंतर था। राज कपूर खुद भी एक अभिनेता थे। वे एक अभिनेता की कठिनाइयों को समझते थे। वे आपको बताते थे कि शॉट कैसे करना है, इससे अभिनेता के लिए आवश्यक शॉट देना आसान हो जाता था। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने मुझे अपनी क्षमता के अनुसार अभिनय करने की छूट दी!

रणबीर, रिद्धिमा, नीतू कपूर और पोती समारा के साथ ऋषि कपूर

मैंने जिस पहले गाने पर अभिनय किया, वह फिल्म बॉबी का 'मैं शायर तो नहीं' था। मैं बहुत उत्साहित था कि मैं एक फिल्म का हीरो बन रहा था और साथ ही मुझे फिल्म में गाना भी गाना था। मैं सेट पर पहुंचा। इस फिल्म में पापा के मुख्य सहायक मेरे बचपन के दोस्त थे। मैंने उनसे पूछा कि जिस गाने की शूटिंग हो रही थी, उसकी कोरियोग्राफी कौन कर रहा है। उन्होंने बताया कि अभी तक कोई नहीं आया है। इसी बीच मेरे पिताजी सेट पर आ गए। उन्होंने सेट पर मौजूद लोगों से पूछा कि क्या ज़रूरी शॉट के लिए सारी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। मैंने तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'साहब जी'—मैं सेट पर हमेशा पिताजी को औपचारिक रूप से संबोधित करता था—'लेकिन सेट पर कोई डांस डायरेक्टर तो है ही नहीं!' उन्होंने जवाब दिया, 'लेकिन इसकी क्या ज़रूरत है? बस खड़े होकर गाओ!' मैंने

कहा, 'मुझे नहीं पता क्या करना है!' उन्होंने कहा, 'बस कोशिश करो, तुम्हें सब पता चल जाएगा!'
उनका मानना था कि अगर उन्होंने मेरे लिए कोई डांस मास्टर रख दिया होता, तो मैं सिर्फ उनकी नकल ही करती। डांस मास्टर शायद मुझे वही स्टेप्स सिखाते जो उन्होंने दूसरे एक्टर्स को सिखाए थे, वही चीजें जो दूसरे लोग पहले कर चुके थे। फिर सब कहते कि मैं उनकी नकल कर रही हूँ। पापा चाहते थे कि मैं अपनी खुद की पहचान बनाऊँ।
अगर आप अब उस गाने को देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि मैं उसमें कितना अजीब लग रहा था... पुलिसवाले की तरह हाथ ऊपर उठाए हुए! मुझे कुछ भी नहीं पता था। वैसे भी, अब मुझे कुछ खास नहीं पता! अब मुझे समझ आता है कि उनसे मिली यह एक अच्छी सीख थी। उन्होंने मुझे स्विमिंग पूल में फेंक दिया, और मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया। इसी तरह मैंने सीखा। मैंने खुद पर भरोसा करना सीखा, कि मैं कर सकता हूँ! मुझे सिखाया गया था कि आप जो भी गाना गाएँ, उसकी पिच से ताल मिलाएँ। आपकी नसें दिखनी चाहिए और फूली हुई लगनी चाहिए, इतनी असली कि सुनने वालों को लगे कि आप सचमुच उसी पिच पर गाना गा रहे हैं।
मुझे एक कहानी याद है जो मेरे दादा पृथ्वीराज कपूर अक्सर सुनाया करते थे। यह कहानी एक घुमंतू ढोल वादक की थी, जो अपने कंधे पर एक लंबा डंडा रखकर अपने बेटे को डंडे के ऊपर चढ़ाता था। सड़क किनारे करतब दिखाने के बाद बेटा अपने पिता से पूछता, 'बापू, मेरा प्रदर्शन कैसा रहा?' पिता हमेशा जवाब देते, 'कसर रही, कसर रही (और बेहतर हो सकता था)।' एक दिन बेटे ने अपने पिता से पूछा, 'मैं इतना अच्छा प्रदर्शन करता हूँ, लोग मुझे देखकर इतने खुश होते हैं, लेकिन आप कभी संतुष्ट नहीं होते। आखिर मुझमें क्या कमी है?' पिता ने जवाब दिया, 'जिस दिन तुम डंडे पर महारत हासिल कर लोगे और जीवन में सब कुछ पा लोगे, और मैं 'कसर रही' न कहूँ, तो तुम गिर जाओगे। इसीलिए मैं हमेशा 'कसर रही' कहूँगा!' मेरे पिता भी इसी दर्शन में विश्वास करते थे।

Raj Kapoor with (left) Rishi Kapoor and (right) Randhir and Rishi Kapoor

आज मुझे 'मेरा नाम जोकर' में अपने अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला है, लेकिन मेरे पिता ने फिर भी कहा, 'चिंटू को मेरी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में अपने अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलते देखना कितना अद्भुत है। अपने जीवनकाल में अपने बेटे की तरक्की और सफलता देखकर एक पिता को इससे ज्यादा खुशी और क्या हो सकती है? उसे जनता का आशीर्वाद और प्यार मिला है, लेकिन मैं फिर भी कहूंगा, "कसरत रहे, कसरत रहे"।'

नीतू कपूर: ऋषि कपूर की पत्नी

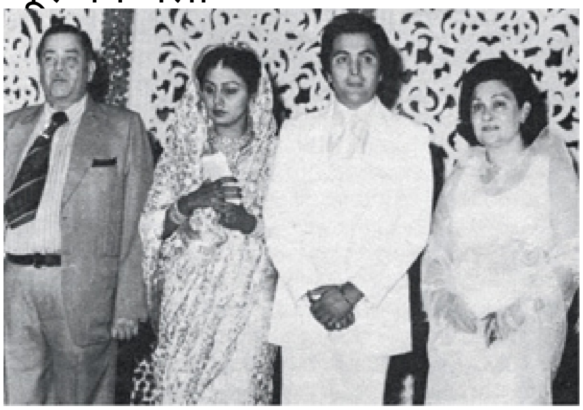

पापा (राज कपूर) ने जिस तरह से मेरी मां से अपने बेटे के लिए मेरा हाथ मांगा, वह अद्भुत था। उन्होंने मेरी मां से विनती करते हुए कहा, 'अपनी बेटी का हाथ मेरे बेटे को दे दीजिए।' मेरी मां बिल्कुल स्तब्ध रह गईं। राज कपूर जैसे महान व्यक्तित्व का इतनी विनम्रता से यह कहना मेरी मां को बहुत भावुक कर गया। उनकी आंखों में आंसू आ गए। और मेरी सगाई हो गई। उस दिन तीन महिलाओं की सगाई हुई थी। मैं भी उनमें से एक थी। वे सभी परिवार की सदस्य थीं। वे सभी बहुत खुश दिख रही थीं। मैं भी बहुत खुश थी।
एक दिन जब हम लोनी में अपने फार्म पर थे, पापा हमारे लिए खाना बना रहे थे। खाना खाते समय उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम ठीक हो! लेकिन मुझे बाकी दो के बारे में इतना यकीन नहीं है!' यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। एक साल के अंदर ही बाकी दो सगाई टूट गईं! पापा बहुत सहज और संवेदनशील व्यक्ति थे। उन्हें मानवीय भावनाओं की गहरी समझ थी। मेरी शादी 1980 में हुई। मैं बहुत छोटी थी और एक नए परिवार में नए सदस्य के रूप में नए माहौल में रहने को लेकर बहुत घबराई हुई थी। मैं अपने ससुराल वालों को प्रभावित करना चाहती थी, इसलिए मैंने खाना बनाना सीखना शुरू किया।
एक दिन मैंने काली दाल बनाई, जो मैंने सीखी थी। सब लोग बहुत खुश हुए। हालाँकि वह सबसे खराब बनी थी, पापा ने मेरी खूब तारीफ की! उन्होंने कहा, 'मैंने अपनी ज़िंदगी में इससे अच्छी काली दाल कभी नहीं खाई।' मुझे एहसास हुआ कि वह इतनी खराब थी, तो मेरी आँखों में आँसू आ गए, लेकिन मुझे खुश करने और मेरा हौसला बढ़ाने के लिए उन्होंने खुद भी खा ली। इंसान का सबसे बड़ा गुण होता है दूसरों को खुशी देना। पापा का यही तरीका था दूसरों को खास महसूस कराने का, भले ही वे उतने खास न हों!
एक बार मैं एक पार्टी में थी। मुझे पता था कि पापा बहुत पीते हैं, लेकिन मैंने उनसे एक सॉफ्ट ड्रिंक मांगी। उन्होंने मुझसे कहा, 'देखो, मेरी कृष्णा आ गई!' हम सब जानते हैं कि उनकी पत्नी उनके जीवन में कितनी महत्वपूर्ण थीं। उनके लिए मेरी तुलना उनसे करना, भले ही उन्होंने जानबूझकर न किया हो, मेरे लिए बहुत बड़ी तारीफ थी! मुझे बहुत अच्छा लगा। एक बार उन्होंने मुझे बताया कि प्रेम रोग फिल्म में पद्मिनी का गाना, 'ये गलियां ये चौबारा', मुझसे प्रेरित था! मुझे अपनी शादी में खुशी से नाचते और आनंद लेते देखकर वे बहुत खुश हुए थे! उसी फिल्म के एक और गाने में उन्होंने अपनी पोती की गुनगुनाने की आवाज़ जोड़ी थी! उस प्रतिभाशाली व्यक्ति की संवेदनशीलता को देखना वाकई अद्भुत था, कि कैसे वे छोटी-छोटी बातों से भी अपनी फिल्मों में भावनाओं को व्यक्त कर देते थे।
एक बार, जब मैं अपने पति के साथ रिलेशनशिप में थी, तो वो बहुत नशे में घर लौटे। मुझे उन पर बहुत गुस्सा आया। मैंने उन्हें फोन किया और फोन पर ही उन्हें खरी-खोटी सुना दी। दूसरी तरफ से सिर्फ एक वाक्य सुनकर मैं दंग रह गई, 'क्या तुम्हें पिता और बेटे की आवाज़ में फर्क नहीं दिखता?' उनकी आवाज़ें इतनी मिलती-जुलती थीं और मुझे बहुत शर्मिंदगी हुई!

मुझे याद है एक बार जब पापा ब्रीच कैंडी नर्सिंग होम में थे, मैं उनसे मिलने गई थी। वहाँ मुझे अपने एक करीबी और बुजुर्ग रिश्तेदार मिले, तो मैंने उनके पैर छूकर सम्मान व्यक्त किया। यह परिवार में एक पारंपरिक रिवाज था। मुझे बहुत दुख और शर्मिंदगी हुई क्योंकि उस रिश्तेदार ने इसे अस्वीकार कर दिया। पापा ने यह देखा। मैं नर्सिंग होम से चली गई और थोड़ी देर बाद मम्मी का फोन आया कि पापा ने निर्देश दिया है कि मुझे भविष्य में उस रिश्तेदार को इस तरह सम्मान नहीं देना है! पापा बहुत समझदार थे और इस तरह उन्होंने परिवार के सामने मेरी इज्जत बचाई।

रिद्धिमा कपूर सहानी, ऋषि कपूर की बेटी

जब दादाजी का देहांत हुआ, तब मैं मात्र आठ वर्ष की थी। जितना मुझे याद है, वे एक बेहद स्नेही दादाजी थे। वे मुझे 'राजकुमारी' कहकर बुलाते थे और मेरा उसी तरह ख्याल रखते थे। स्टूडियो से लौटते ही वे मुझे अपनी गोद में उठा लेते और गले लगा लेते। परिवार के सभी बच्चों के लिए उनके कुछ खास नाम थे। मैंने दादाजी के साथ कई अविस्मरणीय पल बिताए हैं। मुझे आज भी याद है कि रविवार को वे हमें चेंबूर के पास एक उडुपी रेस्टोरेंट में ले जाते थे। वे खुद भी खाने के बहुत शौकीन थे, वे इडली से लेकर उत्तपम, डोसा से लेकर वड़ा तक सब कुछ ऑर्डर करते थे। बाद में, वे हमें नवी मुंबई के एक वाटर पार्क में ले जाते और हम सब देर शाम तक तैरते थे। हम दोनों के बीच एक रस्म थी कि उन्हें शुभ रात्रि का चुंबन देने पर हमें एक-एक चॉकलेट मिलती थी। लेकिन इसके अलावा, हम उनके कमरे में जाने की हिम्मत भी नहीं करते थे। उनकी जगह कोई नहीं ले सकता; मेरे पिताजी या मेरे पति भी नहीं।

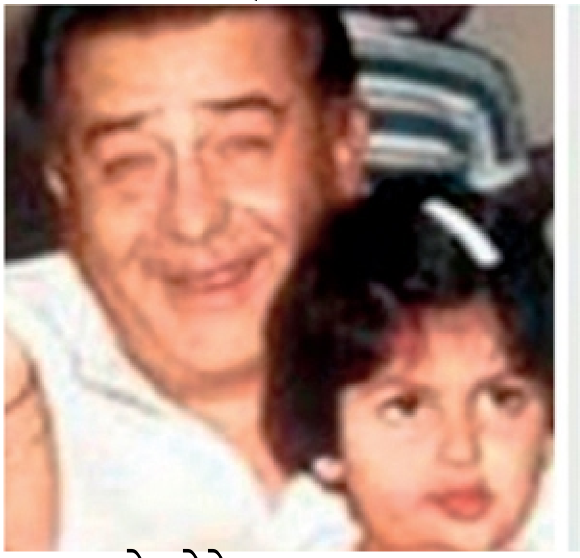

रणबीर कपूर, ऋषि कपूर के बेटे

एक बार जब दादाजी विदेश जा रहे थे, तो मैंने उनसे मेरे लिए एक सूट लाने का अनुरोध किया। और मुझे याद है कि वे मेरे लिए लगभग एक दर्जन सूट लाए थे! मुझे याद है कि मैंने उनमें से एक सूट दादाजी की आखिरी अधूरी फिल्म 'हेन्ना' के प्रीमियर पर पहना था, जिसे बाद में मेरे चाचा रणधीर कपूर ने पूरा किया था। जब भी मेरी माँ मुझे डांटती, मैं अपने दादाजी को फोन करता, जो तुरंत मेरी माँ को फोन करके उनसे विनती करते हुए कहते, 'कृपया मुझे डांटिए, लेकिन रणबीर पर गुस्सा मत कीजिए।'

वह मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुर्गियां पालना दादाजी का शौक था, और उनकी दिनचर्या का एक हिस्सा उन्हें दाना चुगना था, जिसके लिए वे 'आ, आ, आ' की आवाज लगाते थे। वे अपनी हर मुर्गी का नाम रखते थे और अक्सर मजाक में इसी लहजे में अपने पोते-पोतियों को भी बुलाते थे!

रीमा जैन, बेटी

राज कपूर का रीमा के साथ रिश्ता हमेशा बहुत खास था। उनके मतभेद सुलझाने का तरीका भी अनोखा था। अगर कोई झगड़ा होता, तो दोनों रूठ जाते। फिर सुलह कराने के लिए, वह रीमा के लिए एक छोटा सा नोट लिखते: 'मुझे पता है कि अगर मैं नहीं रहा, तो तुम्हें मेरी कमी महसूस नहीं होगी क्योंकि जब तक मैं जीवित हूं, तुम्हें मेरी कोई परवाह नहीं है। प्यार करके खो देना, बिल्कुल प्यार न करने से बेहतर है। प्यार देने और पाने के लिए बहुत कुछ है। इसे उन लोगों के लिए इस्तेमाल करो जो इसके हकदार हैं। शादी जरूरी है, लेकिन क्यों जरूरी है? एक औरत तभी पूरी होती है जब वह संतान पैदा करती है। एक औरत की जिंदगी में सबसे बड़ी उपलब्धि तब होती है जब वह बच्चे को जन्म देती है और सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुसार, बच्चा पैदा करने के लिए शादी जरूरी होती है। औरत को हमेशा सम्मान की नजर से देखा जाता है। औरत को यह साबित करने के लिए लड़ना नहीं पड़ता कि वह मर्द से बेहतर है। अगर मैं तुम्हारी शादी देख पाया, तो मैं तुम्हें हीरे की शादी का तोहफा दूंगा।'

Rima Jain with her husband Manoj and sons Armaan and Aadar

यह सन् 1972 की गर्मियों की बात है, जब ऋतु और मैं अपने माता-पिता के साथ स्विट्जरलैंड के इंटरलेकन में पाँच दिन की छुट्टियाँ मनाने गए थे। मैं पीलिया से अभी-अभी ठीक हुआ था और ऋतु, 1969 में अपनी शादी के बाद पहली बार अपने माता-पिता के साथ छुट्टियाँ मना रही थी। पापा को बेहतरीन रेस्टोरेंट में खाना-पीना बहुत पसंद था, लेकिन उन्हें खरीदारी बिल्कुल पसंद नहीं थी! खरीदारी करना उनके लिए वर्जित था! ब्यू रिवेज होटल में हमारे सुइट के ठीक सामने एक स्मृति चिन्हों की दुकान थी। ऋतु और मैं दोनों वहाँ जाकर कुछ खरीदने का मौका ढूंढ रहे थे। एक दिन पापा ने हमें इंटरलेकन से बाहर ब्लुसीया नाम के एक छोटे से गाँव में ले जाने की योजना बनाई, जो ट्रेन से एक घंटे की दूरी पर था और अपनी नदी से मिलने वाली ताज़ी ट्राउट मछली और एक खास स्थानीय शराब के लिए मशहूर था। पापा नहाने गए थे, तभी मम्मी, जो हमारी खरीदारी की उत्सुकता जानती थीं, ने हमें जल्दी से नीचे जाकर खरीदारी करने और उनके ब्लुसीया जाने के लिए निकलने का इंतज़ार करने को कहा। ऋतु और मैंने इस बहुप्रतीक्षित अवसर का लाभ उठाया और जल्द ही दुकान पर स्मृति चिन्ह खरीदने में जुट गए। हमने अपनी खरीदारी पूरी कर ली थी और बिल चुका रहे थे कि मम्मी और पापा नीचे आ गए। हमें खरीदारी करते देख पापा बड़बड़ाए और आगे बढ़ गए। जब तक हमने बिल चुकाया और दुकान से बाहर निकले, वे जा चुके थे। हमने बाएँ देखा, दाएँ देखा, लेकिन वे कहीं नज़र नहीं आए। वे या तो पूरब की ओर मुड़ गए थे या पश्चिम की ओर। हम उन्हें ढूँढ़ते हुए पश्चिम की ओर मुड़े। ज़ाहिर है, वे पूरब की ओर मुड़ गए थे। हम एक दुकान गए, फिर दूसरी दुकान गए और जल्द ही समझ गए कि हम सब रास्ता भटक गए हैं! इस समय, ऋतु और मैंने खरीदारी जारी रखने और इस खूबसूरत छोटे से कस्बे का आनंद लेने का फैसला किया।

हमने कॉफ़ी पी, केक खाया, कैसिनो गए, गुब्बारे खरीदे और ख़रीदारी की। लगभग दो घंटे बाद हम थक गए और घोड़े से चलने वाली बग्घी में बैठकर अपने होटल लौट रहे थे, तभी अचानक हमने अपने माता-पिता को सामने से हमारी ओर आते देखा। हमने उन्हें सवारी देने के लिए अपनी बग्घी रोक दी। पापा का चेहरा गुस्से से लाल था और वे हम पर बहुत नाराज़ थे। मम्मी ने जवाब दिया कि वे हमें ढूँढ़ते हुए पुलिस स्टेशन और अस्पताल गए थे। उन्हें तो यह भी लगा कि हमारा अपहरण हो गया है! चिढ़कर पापा ने कहा कि उन्होंने अपना मन बदल लिया है और सज़ा के तौर पर हमें दोपहर के खाने पर न ले जाने का फैसला किया है। मुझे याद है मैंने मम्मी को कोहनी मारी और उनसे कहा कि वे मान जाएं क्योंकि शहर में रुककर खरीदारी करना बेहतर होगा। हमने पापा को होटल छोड़ दिया। उन्होंने हमें शाम 6 बजे खाने के लिए तैयार रहने को कहा और चले गए। मम्मी, रितु और मैं अब जो चाहें करने के लिए आज़ाद थे। हमारे होटल के पास एक छोटा सा बंदरगाह था जहाँ अक्सर स्थानीय नावें आती-जाती थीं। हमने नाव की सवारी करने का फैसला किया और एक नाव में बैठ गए। हमने गरमा गरम कॉफी और केक का आनंद लिया और खूबसूरत नज़ारों का लुत्फ़ उठा रहे थे तभी मम्मी ने मुझसे पूछा कि नाव कब वापस आएगी। और यह सुनकर हम दंग रह गए! हमें पता चला कि नाव अगले दिन ही वापस आएगी। हमने नाव के चालक दल से खूब शोर मचाया कि हम गलती से गलत नाव पर आ गए हैं और उन्हें समझाने की कोशिश की कि हमें वापस जाना है। हालाँकि वे सिर्फ़ फ्रेंच बोलते थे, फिर भी वे किसी तरह हमारी परेशानी समझ गए और हमें सलाह दी कि हम पास के किसी गाँव के बंदरगाह पर उतर जाएँ और वहाँ से दूसरी फ़ेरी पकड़ने की कोशिश करें जो हमें इंटरलेकन वापस ले जाएगी। बिना सोचे-समझे हम उत्सुकता से नाव से कूद गए और शांत, सुनसान बंदरगाह पर धैर्यपूर्वक इंतज़ार करने लगे। बंदरगाह बंद था। वहाँ कोई भी नहीं था। हम एक-दूसरे को कसकर पकड़े हुए, फ़ेरी के आने की प्रार्थना और उम्मीद कर रहे थे। जल्द ही फ़ेरी आ गई। हम जल्दी से उस पर चढ़ गए और बार-बार 'इंटरलेकन ओस्ट' (अंतरलेकन) कहते रहे। ऐसा लगा जैसे वे हमारी बात समझ गए हों और हमें दिलासा देते रहे। जल्द ही हम इंटरलेकन पहुँच गए। हम पास के ही अपने होटल और कमरे की ओर भागे। पापा ने दरवाज़ा खोला। उन्होंने अपनी घड़ी देखी और कहा, 'आज तो तुम लोग समय पर आए हो।' वे रात के खाने के लिए जाने को तैयार थे, जबकि हम थककर चूर हो रहे थे। मम्मी हम दोनों, ऋतु से, पापा के अच्छे मूड में आने पर जाने के लिए मिन्नतें करती रहीं! हमें पता भी नहीं चला और तनाव से थककर चूर होकर हम खुद को एक केबल कार में पाए, जो पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक रेस्तरां में रात के खाने के लिए जा रही थी!

मनोज जैन, रीमा के पति

कपूर परिवार के एक पारिवारिक मित्र के बेटे मनोज की पापा से कई बार अनौपचारिक मुलाकात हुई थी। उन्हें एक घटना याद है, जिसमें उन्हें न केवल पापा की खास ब्लैक लेबल व्हिस्की की खरीदारी करने का सौभाग्य मिला, बल्कि उसी व्हिस्की को पीने का दुर्लभ अवसर भी मिला, जिसे लेकर पापा बहुत ही सजग रहते थे और अलमारी में छिपाकर रखते थे। मनोज मेरे भाई राजीव के भी घनिष्ठ मित्र थे। रीमा उनकी बहन रेणुका की बहुत करीबी दोस्त थीं। कई बार पापा को रीमा और मनोज के रिश्ते पर शक होता था। उनके मित्र विश्व मेहरा ने पापा से पूछा था, 'क्या आपको लगता है कि उनके बीच कुछ चल रहा है?' जिस पर पापा ने जवाब दिया था, 'नहीं, वे बस अच्छे दोस्त हैं।' किस्मत का खेल देखिए, रीमा ने अपने पिता की मृत्यु के सात महीने बाद मनोज जैन से शादी कर ली।

अरमान जैन, रीमा का बड़ा बेटा

राज कपूर जैसे महान व्यक्तित्व का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। एक दूरदर्शी, भारतीय सिनेमा के महाकलाकार, जिन्होंने आम आदमी की नब्ज़ को समझा और उसे पर्दे पर बखूबी उतारा। मेरे महान दादाजी, राज कपूर, एक असाधारण दूरदर्शी और नेक इंसान थे, जिन्होंने एक पल में अपनी जेब खाली कर दी, लेकिन बाद में लाखों लोगों को प्रेरित किया। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि किशोरावस्था में मैंने नासमझी में यह मान लिया था कि मेरे दादाजी असल जिंदगी के जोकर थे। फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में उनके अभिनय के प्रति मेरे बचपन के आकर्षण ने मुझे उनकी नकल करने के लिए प्रेरित किया। उनके शक्तिशाली गीत 'जीना यहां मरना यहां इसके शिव जाना कहां' सिनेमा के प्रति उनके प्रेम और जुनून का प्रतीक हैं। हालांकि मुझे नानाजी से मिलने का कभी मौका नहीं मिला, लेकिन वे अपने पीछे फिल्मों का ऐसा खजाना छोड़ गए हैं, जिससे मुझे हर दिन उन्हें जानने का मौका मिलता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि मैं हर दिन अपने जीवन में उनकी उपस्थिति महसूस कर पाता हूं।

Aadar Jain, Rima’s younger son

राज कपूर के पोते होने पर मुझे गर्व है, जिन्हें भारतीय सिनेमा के महान कलाकार के रूप में दुनिया जानती है! मुझे उनसे मिलने का कभी मौका नहीं मिला। हालांकि, मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे अपनी मां और दादी द्वारा सुनाई गई कहानियों और फिल्मों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व की जटिलताओं और उनकी फिल्मों की दुनिया के प्रति उनके अनूठे दृष्टिकोण को जानने का अवसर मिला। हमारे बचपन की सबसे प्यारी यादों में से एक है अपने भाई के साथ टीवी देखते हुए खाना खाना, 'मेरा नाम जोकर' देखना। अरमान और मैं यह मानने लगे थे कि हमारे दादाजी वास्तव में एक सर्कस के जोकर थे, जिनका काम लोगों का मनोरंजन करना और सबको हंसाना था। अरमान को बचपन में अपने जन्मदिन की पार्टी में बस एक जोकर चाहिए था! वह अपनी पार्टी में जोकर का रूप धारण करना चाहता था! यह विचार मेरे मन को छू गया क्योंकि मेरा मानना है कि जीवन का यही अर्थ है: लोगों को खुशी देना और किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश करना, चाहे वह किसी भी छोटे तरीके से हो, भले ही कभी-कभी इसके लिए हमें खुद कुछ खोना पड़े। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, दादाजी के बारे में मेरी जिज्ञासा बढ़ती गई। मैंने उनकी सभी फिल्में कई बार देखीं और उनकी पर्दे पर शख्सियत से तुरंत मोहित हो गया। तभी मुझे एहसास हुआ और पूरी तरह समझ आया कि उन्होंने जो हासिल किया था वह सचमुच अद्भुत था। मेरे दादाजी की दूरदृष्टि, सिनेमा के प्रति उनका समर्पण और जुनून बेहद प्रेरणादायक है। वे सचमुच अपने समय से आगे थे। मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि 'राज कपूर' मेरे दादाजी हैं। आज जब मैं एक अभिनेता बनने की अपनी यात्रा शुरू कर रहा हूँ, तो मुझे उम्मीद है कि वे कहीं न कहीं से मुझे देख रहे होंगे और मेरा मार्गदर्शन और आशीर्वाद दे रहे होंगे।

Rajiv Kapoor, son

सत्रह साल की उम्र में, मैं राहुल रवैल के साथ 'बीवी ओ बीवी' में सहायक निर्देशक बन गया। इस फिल्म के बाद, मैं पापा के सहायक निर्देशक के रूप में काम करने लगा, जो 'प्रेम रोग' का निर्देशन कर रहे थे। 'प्रेम रोग' के खत्म होने के बाद, मैंने अपनी पहली फिल्म 'एक जान है हम' में अभिनय किया। एक दिन जब मैं अपनी माँ से मिलने आया था, तो वह भी वहीं थे। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, 'मैं तुम्हें अपनी अगली फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' में ले रहा हूँ।' यह सुनकर मैं बहुत रोमांचित हुआ, लेकिन मेरे सामने एक समस्या थी।

तब तक मैंने सात फिल्में साइन कर ली थीं और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि निर्माताओं को दी गई तारीखों का क्या करूं। मैं सलाह लेने पापा के पास गया। पापा ने कागज पर एक रेखा खींचते हुए मुझसे कहा, 'मैं रेखा के एक तरफ हूं और तुम दूसरी तरफ। मुझसे जो भी बात करनी हो, इस तरफ से जो भी सलाह चाहिए, वह तुम्हें मिलेगी, लेकिन हमेशा याद रखना कि दूसरी तरफ पूरी तरह से तुम्हारी है। तुम्हें अपना जीवन जीना है, मुझे या किसी और को नहीं। इसलिए, जो भी करो, सोच-समझकर करो।'

पापा बहुत ही सहज और मिलनसार थे, उनके साथ समय बिताना बहुत मजेदार होता था। एक दिन, 'राम तेरी गंगा मैली' की शूटिंग के दौरान, मैं कोलन में 'फोटकिना' मेले में जा रही थी। निकलने से पहले मैं पापा से मिलने गई। उन्होंने पूछा, 'तुम किस फ्लाइट से जा रही हो?' मैंने कहा, 'लुफ्थांसा की फर्स्ट क्लास फ्लाइट से फ्रैंकफर्ट।' पापा ने तुरंत जवाब दिया, 'मैं भी आ रहा हूँ!' मैं हैरान रह गई। हम फ्रैंकफर्ट गए और वहाँ से गाड़ी से कोलन पहुँचे। पापा ने मेरा बहुत ख्याल रखा और मुझे कुछ पैसे और कोलन में घूमने की कई जगहों के पते दिए। मैं वहाँ गई और खूब मजे किए। जब मैं वापस लौटी, तो मैंने देखा कि पापा हमेशा की तरह मेरे कमरे में फर्श पर सो रहे थे और मुझे मेरे सामान के साथ दूसरे कमरे में भेज दिया गया था! उन्होंने मुझे फिर से चौंका दिया!

राजीव के साथ लोकेशन पर, राम तेरी गंगा मैली

पोतियों के साथ (बाएं से) रिद्धिमा, करीना और करिश्मा

With Randhir and Ritu

ऋषि के साथ

रितु के साथ

रीमा के साथ

Randhir and Ritu

राजीव के साथ

With Krishna, parents and children – Randhir, Rishi and Ritu

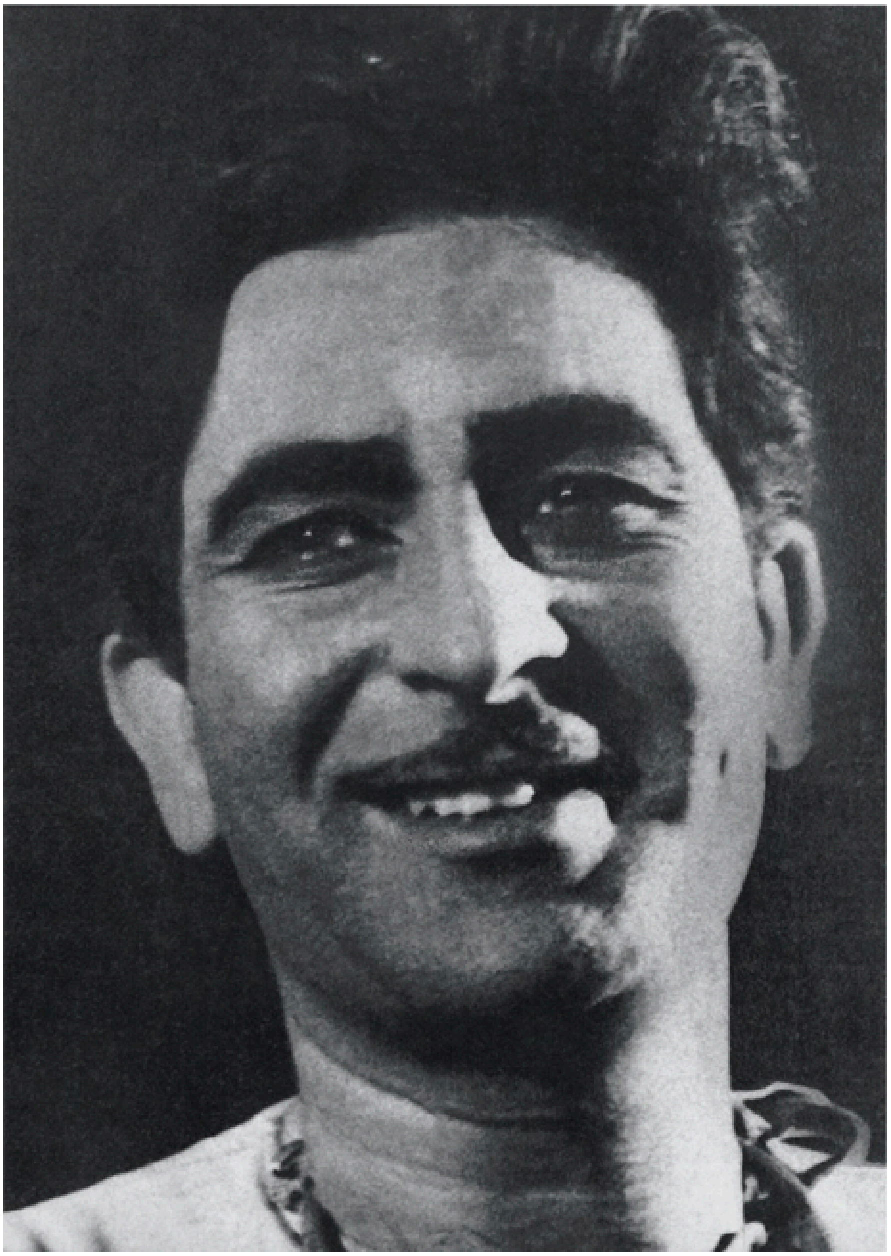

शुरुआत

'जब मैं पृथ्वी थिएटर में अपने पिता के साथ काम कर रहा था, जहाँ मैं सेट की लाइटिंग से लेकर कला निर्देशन तक हर तरह का काम करता था, तब उन्होंने मुझे 'दीवार' नाटक में रामू, नौकर की एक छोटी सी भूमिका निभाने के लिए कहा। मैं जवान था और अपने पिता को मना नहीं कर सका। "जी हाँ, मैं करूँगा!" उस नाटक के मंचन पर ही मुझे फिल्म इंडस्ट्री में दस साल बिताने के बाद एक अभिनेता के रूप में पहचान मिली।'—राज कपूर

Raj Kapoor with Kidar Sharma

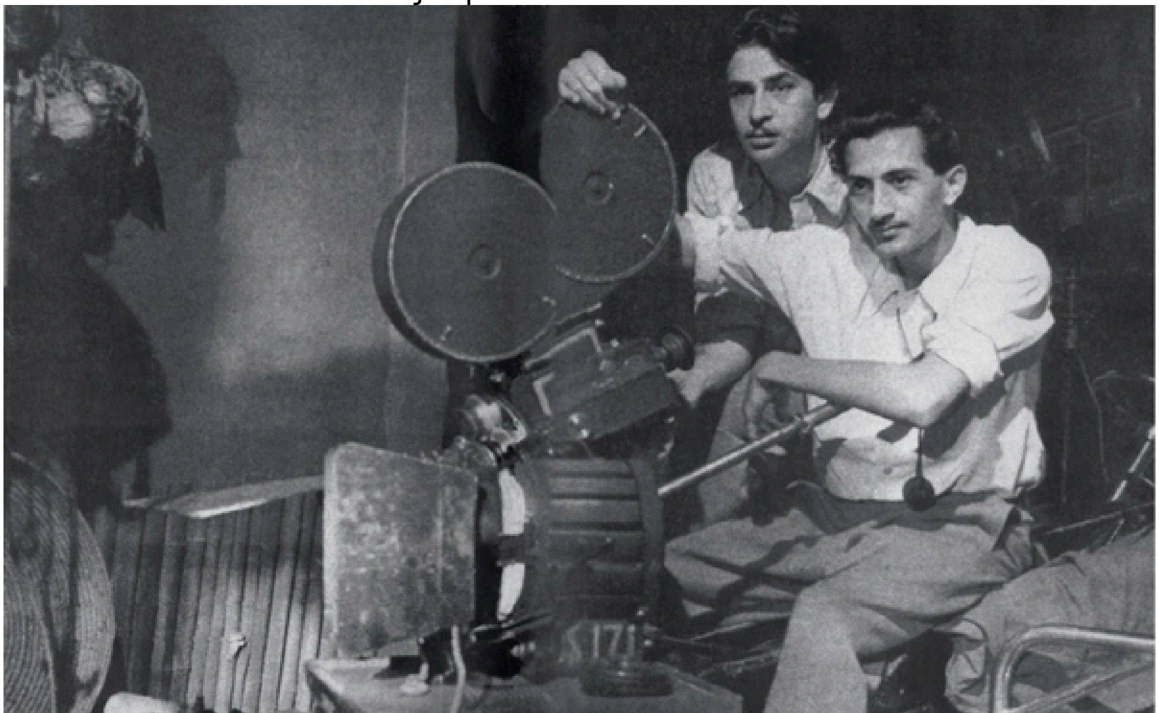

अभिनेता बनना मेरा एक संयोग था। मैं हमेशा से फिल्म निर्माता बनना चाहता था। मेरे पास अकादमिक योग्यताएँ बहुत कम हैं, सिवाय उन दस वर्षों के जब मैंने सहायक के रूप में कड़ी मेहनत की, फिल्म सेट पर फर्श साफ किए, फर्नीचर और प्रॉप्स इधर-उधर किए। मैंने फिल्म उद्योग के हर विभाग में काम किया है,

प्रयोगशाला से लेकर सिनेमा तक। इसका श्रेय मेरे पिता को जाता है। जब मैं स्कूल छोड़ना चाहता था, तो मेरे पिता ने मुझसे पूछा, 'तुम क्यों छोड़ना चाहते हो?' मैंने कहा, 'पिताजी, अगर मैं स्नातक हो जाऊं, तो क्या होगा? अगर आप वकील बनना चाहते हैं, तो आप लॉ कॉलेज जाते हैं; अगर आप डॉक्टर बनना चाहते हैं, तो आप मेडिकल कॉलेज जाते हैं; और अगर आप फिल्म निर्माता बनना चाहते हैं, तो आप कहाँ जाते हैं?' मेरे पिता के पास कोई जवाब नहीं था। भारत में कोई फिल्म संस्थान नहीं थे। एकमात्र संस्थान स्टूडियो थे। मैंने कहा, 'मैं वकील नहीं बनना चाहता, मैं डॉक्टर नहीं बनना चाहता।' मुझे जो पेशा पसंद है, वही आप कर रहे हैं, और सीखने का एकमात्र तरीका है किसी स्टूडियो में दाखिला लेना। इसी तरह मैंने अपने करियर की शुरुआत की, छठे या सातवें सहायक के रूप में, ट्रॉली खींचने वाले के रूप में, क्लैपर बजाने वाले के रूप में, प्रयोगशाला में कहीं-कहीं अधूरे शॉट्स उठाते हुए और संपादन विभाग में गामा प्लस (संपादन के लिए इस्तेमाल होने वाला घोल) के उपयोग को देखते हुए। इससे मुझे सिनेमा के मूल सिद्धांतों का बहुत बुनियादी प्रशिक्षण मिला।

~

राज कपूर ने 1935 में देबाकी बोस की इंकलाब में एक बाल कलाकार के रूप में अभिनय की शुरुआत की। उनकी दूसरी भूमिका किदार शर्मा की गौरी में थी, जो 1943 में रिलीज़ हुई थी। उसी वर्ष, वह हमारी बात में दिखाई दिए। 1946 में उन्होंने भालजी पेंढारकर की 'वाल्मीकि' की। 1947 में, उन्होंने मोहन सिन्हा की चित्तौड़ विजय में नारद मुनि की भूमिका निभाई। मोहन सिन्हा ने उन्हें 1947 में अपनी फिल्म दिल की रानी में दोहराया। उन्होंने जेल यात्रा में कामिनी कौशल के साथ एक भूमिका निभाई।

~

1944 में, श्री किदार शर्मा ने मुझे अपनी फिल्म 'नील कमल' में मुख्य भूमिका दी। मैं तीन साल से उनका सबसे कनिष्ठ सहायक था। मेरा एक काम हर शॉट से पहले क्लैप देना था। कैमरामैन के साथ मेरा अच्छा तालमेल था और वह हर शॉट से पहले मेरा क्लोज-अप लेने और मुझे तस्वीरें देने के लिए सहमत हो गए थे। मैं अपने बालों को अच्छे से संवारता था और फिर क्लैपरबोर्ड के ऊपर अपना चेहरा थोड़ा आगे झुकाता था ताकि अच्छा क्लोज-अप मिल सके। किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन एक दिन, मैंने हमेशा की तरह ज़ोर से ताली बजाई और हट गया, लेकिन इस बार अभिनेता की दाढ़ी क्लैपरबोर्ड और डंडे के बीच फंस गई। पूरी यूनिट ज़ोर से हंस पड़ी और गुस्से में शर्मा जी ने मेरे चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। मैं स्तब्ध रह गया, लेकिन मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। मुझे पता था कि गलती मेरी थी। मैं चुपचाप सेट से चला गया। इस घटना के परिणामस्वरूप, मुझे मेरी पहली मुख्य भूमिका मिली। शर्मा जी ने बाद में कहा, 'मैं उन तीव्र आँखों में गहराई और दर्द देखकर दंग रह गया था।' और फिर मैंने काम शुरू कर दिया। लेकिन स्टार बनने के बावजूद, मेरे मन में कुछ और ही चल रहा था। अभिनय से जो पैसा मिलता था, मैं उसे बचाता था, और इसी तरह अपने करियर की शुरुआत में मैं निर्माता, निर्देशक और अभिनेता, तीनों ही बन गया। इस तरह 1947 में मेरी अपनी आर.के. फिल्म्स का जन्म हुआ। मैंने कभी भी किसी फिल्म का निर्माण मुख्य रूप से अपने किसी बेटे को अभिनेता के रूप में लॉन्च करने के

लिए नहीं किया। ज़रा ध्यान से देखें, तो आपको पता चलेगा कि मैं जो कह रहा हूँ वह सही है। मैं सबसे पहले एक फ़िल्म निर्माता हूँ। राज कपूर, पिता, भाई, पति, प्रेमी, ये सब राज कपूर, फ़िल्म निर्माता के सामने गौण हैं। मैं एक बुरा पिता बनना पसंद करूँगा, लेकिन मैं एक फिल्म निर्माता के रूप में अपनी ईमानदारी से कभी समझौता नहीं करूँगा और न ही ऐसा कुछ करूँगा जिससे मेरे इस श्रेय को ठेस पहुँचे: 'राज कपूर द्वारा निर्देशित और संपादित'। मेरे लिए किसी फिल्म के निर्माण के पीछे की प्रेरणा शक्ति उसका विषय है। यह मुझे मोहित करना चाहिए। यह मेरे भीतर की गहरी भावनाओं को छूना चाहिए। एक बार जब मैं अपना विषय तय कर लेता हूँ, तो मैं उसी के अनुसार कलाकारों का चयन करता हूँ। मेरी पटकथा ही मेरे कलाकारों का निर्धारण करती है, कलाकार नहीं। मुझे इस बात की खुशी है कि हम सभी कपूर किसी न किसी रूप में फिल्मों से जुड़े हुए हैं। मुझे याद है, कुछ साल पहले जब मेरे पोते का जन्म हुआ था, तो मुझे एक टेलीग्राम मिला था जिसमें लिखा था: 'फिल्म जगत में एक नए अभिनेता के आगमन पर सभी को बधाई!' आज जब मेरे समकालीन युवा अभिनेत्रियों के साथ तस्वीरें खिंचवा रहे हैं, मैं अपनी पोतियों के साथ ऐसा कर रहा हूँ। रणधीर की बेटियाँ करिश्मा और करीना भारतीय फिल्म उद्योग में कपूर परिवार की चौथी पीढ़ी हैं।

नायिकाओं

'मेरे विचार से नरगिस एक अत्यंत नेक महिला थीं, जो उनसे बात करने आने वाले किसी भी व्यक्ति के दर्द, दुख और चिंता को भांप सकती थीं... वे किसी व्यक्ति में एक विशेष आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न कर सकती थीं, जो उस व्यक्ति को काम करने और किसी भी क्षेत्र में कदम रखने के लिए प्रेरित करती थी।'—राज कपूर

नरगिस मेरी प्रेरणा थीं, मेरी स्फूर्ति। जी हां, मेरी पत्नी ही मेरी शक्ति रही हैं, और मेरी सभी नायिकाएं मेरी स्फूर्ति रही हैं। मेरी पत्नी मेरी अभिनेत्री नहीं हो सकती, और मेरी अभिनेत्री मेरी पत्नी नहीं हो सकती।

राज कपूर ने नरगिस के बारे में कहा

जब मैंने 'आग' फिल्म बनाई, तब मैं शादीशुदा था और एक पिता बन चुका था। मैं करीब बाईस साल का था, नरगिस सोलह साल की। नरगिस से मेरी पहली मुलाकात उनके मरीन ड्राइव वाले फ्लैट पर हुई। घंटी बजाने के बाद मैं सांस रोककर खड़ा रहा। दरवाजा खुला और मैंने क्या देखा? मेरे सामने एक फरिश्ता खड़ी थी। वो किसी परी से कम नहीं थी! उनके बाल छोटे थे। बालों की एक लट उनकी बाईं आंख पर आ गई, और लग रहा था जैसे वो मुझे सिर्फ एक आंख से देख रही थीं। इस तरह मेरी उनसे मुलाकात हुई और हमने फिल्म 'आग' में साथ काम किया। वो कितनी शानदार अभिनेत्री थीं! मैंने अपनी फिल्म 'बॉबी' में एक दृश्य रचा जो असल जिंदगी से प्रेरित था। नरगिस से मेरी पहली मुलाकात तब हुई थी जब शिराज अली हकीम ने महालक्ष्मी में 'फेमस' नाम का स्टूडियो बनवाया था।

यह एक नया स्टूडियो था और ज़्यादातर निर्माताओं ने वहाँ फ़िल्म नहीं बनाई थी। मैंने 'आग' की शूटिंग वहीं करने का फ़ैसला किया। लेकिन उससे पहले मैं ध्वनि की गुणवत्ता की जाँच करना चाहता था, क्योंकि उन दिनों हमें दृश्य के साथ-साथ ध्वनि भी रिकॉर्ड करनी पड़ती थी; डबिंग जैसी कोई चीज़ नहीं थी। जब मैं 'फ़ेमस' स्टूडियो गया, तो मुझे पता चला कि जद्दन बाई (नरगिस की माँ) 'रोमियो एंड जूलियट' नाम की फ़िल्म बना रही थीं। उन्होंने फ़िल्म का काम समेट लिया था और घर चली गई थीं। मैंने उनसे मिलने का फ़ैसला किया। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। फिर जो हुआ, वही आपने 'बॉबी' में देखा, जब डिंपल दरवाज़ा खोलती है और वहाँ चिंटू को पाती है। जद्दन बाई की बेटी अंदर भजिया बना रही थी, उसने दरवाज़े की घंटी सुनी और दौड़कर बाहर आ गई। मुझसे बात करते हुए उसने घबराहट में अपना एक हाथ माथे पर रख लिया और सारा आटा उसकी माँ के माथे पर चिपक गया, और ठीक यही मैंने 'बॉबी' में डिंपल का लुक दिया।

उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ, और मैंने कहा कि मैं पृथ्वीराज कपूर का बेटा हूँ, क्योंकि उस समय मेरे पास बस यही पहचान थी। उन्होंने कहा कि वह मुझे अच्छी तरह जानती हैं क्योंकि उन्होंने मुझे 'दीवार' नाटक में मंच पर देखा था। मैंने पूछा कि बीबी जी (जद्दन बाई को इसी नाम से जाना जाता था) घर पर हैं या नहीं। उन्होंने कहा, 'नहीं, यहाँ कोई नहीं है। मैं घर में अकेली हूँ।' और उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा, लेकिन मैंने कहा, 'नहीं, नहीं, मुझे जाना होगा।' और मैं घर से निकल गया, लेकिन उन्हें पीछे नहीं छोड़ा। उनकी याद मेरे साथ रह गई। मैं सीधे इंदर राज आनंद के पास गया और कहा, 'मुझे इस लड़की को अपनी फ़िल्म में लेना ही है... आपको उसे पटकथा में शामिल करना होगा!' उस समय मैं 'आग' फिल्म की योजना बना रहा था। इसी तरह मेरी मुलाकात नरगिस से हुई और मैंने उन्हें अपनी फिल्म में लिया। 'आग' में जबरदस्त माहौल बनने के बाद, मेरे दर्शक उनकी एक झलक पाने के लिए बेताब थे, लेकिन वे उन्हें केवल नौवें रील में ही देख पाए! मेरे जीवन में महिलाओं का हमेशा से बहुत महत्व रहा है, लेकिन नरगिस का महत्व किसी और से कहीं अधिक था। मैं हमेशा उससे कहा करता

था, 'कृष्णा मेरी पत्नी है, वह मेरे बच्चों की मां है; मैं चाहता हूं कि तुम मेरी फिल्मों की मां बनो।' और वह बिल्कुल वैसी ही थी।

मुझे नरगिस और हमारे साथ काम करने की बहुत खूबसूरत यादें हैं। उनकी खूबसूरती, उनकी चाल-ढाल, उनकी वाणी में एक अलग ही आकर्षण था। उन्हें किसी भी भूमिका में ढालना नामुमकिन था, हालांकि उनमें अनुकूलनशीलता बहुत थी। ऐसी प्रतिभा, ऐसा व्यक्तित्व अब फिल्मों में देखने को नहीं मिलता।

मुझे लगता है कि नरगिस एक बहुत ही नेक महिला थीं, जो अपने पास आने वाले हर व्यक्ति के दर्द, दुख और चिंता को भांप लेती थीं। वे किसी भी व्यक्ति में एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति उत्पन्न कर देती थीं जो उसे काम करने और किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। वे मुझे समझती थीं और मैं उन्हें। आप जानते हैं, मैं उनके प्रति अपनी भावनाओं को ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। नहीं, यह प्रेम नहीं है, हालांकि मैं उन्हें बहुत पसंद करता हूँ। मुझे लगता है कि यह एक अच्छे कलाकार का दूसरे अच्छे कलाकार के प्रति भाव है।

~

जागते रहो फिल्म का आखिरी यादगार दृश्य

राज कपूर का नरगिस के प्रति रूढ़िवादी रवैया और उनके रिश्ते की निरर्थकता को देखते हुए, यह अपरिहार्य था कि इस रिश्ते का कोई भविष्य नहीं था। एक दिन, लगभग उतनी ही अचानक जितनी अचानक वह उनके जीवन में आई थीं, नरगिस ने अभिनेता, निर्माता और निर्देशक सुनील दत्त से शादी कर ली और फिल्मों से संन्यास ले लिया। जागते रहो फिल्म का वह मशहूर दृश्य नरगिस और आर.के. फिल्म्स के उस गौरवशाली जुड़ाव का आखिरी दृश्य था। नरगिस को मदर इंडिया के लिए साइन किया गया और वह महबूब फिल्म्स के साथ जुड़ गईं। और इस तरह एक खूबसूरत रिश्ते का अंत हो गया—एक ऐसा रिश्ता जिसने अपने पूरे समय तक सार्वजनिक और निजी जीवन के सभी उतार-चढ़ावों को सहा, और जिसने उस व्यक्ति की रचनात्मकता को बढ़ाया, जो अपनी प्रेमिका के प्यार में डूबा हुआ था, जिसने भारतीय सिनेमा को कुछ सबसे यादगार पल दिए। राज कपूर ने बाद में कहा, 'यह काफी संभव है कि जब नरगिस ने उस फिल्म के लिए साइन किया था, तब उन्होंने अपने भीतर अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण दुविधा को मानसिक रूप से सुलझा लिया था, कि क्या राज कपूर के साथ उस भविष्यहीन रिश्ते को जारी रखना है या आर.के. से दूर अपना जीवन बनाना है।'

Raj Kapoor on Kamini Kaushal, Nimmi and Baby Naaz
मैंने बेबी नाज़ को नहीं खोजा, उसे प्रकाश अरोरा मेरे पास लेकर आए थे। उसने तुरंत मेरा ध्यान खींचा—वह बहुत ही होशियार थी... सात साल की छोटी बच्ची, बेहद प्रतिभाशाली। बूट पॉलिश के लिए मुझे बिल्कुल ऐसी ही बच्ची चाहिए थी। उसने शानदार अभिनय किया।
नरगिस और आग से पहले, कामिनी कौशल से मेरी मुलाकात जेल यात्रा नाम की फिल्म में काम करते समय हुई थी। उन्होंने आग में बेहद संवेदनशील अभिनय किया था। वो ऐसी ही थीं - बेहद संवेदनशील, बेहद नाजुक, बेहद खूबसूरत, बेहद युवा, बेहद नारीत्व से भरपूर, एक अच्छी अभिनेत्री और बेहद भावुक। कामिनी में मुझे जो बात सबसे ज़्यादा पसंद आई, वो थी उनकी ईमानदारी, जो उनके अभिनय में साफ झलकती थी। जब वो बोलती थीं, तो लगता था, जी हां, वो दिल से बोल रही हैं।

Kamini Kaushal

Nimmi in Barsaat

दरअसल, मैंने निम्मी को खोजा नहीं था। मैंने उसे महबूब खान से लिया था। निम्मी मशहूर गायक वाहिदान की बेटी थी, जो उस समय महबूब खान के लिए काम कर रहे थे। निम्मी और उसकी मां महबूब स्टूडियो में 'अंदाज़' के सेट पर अक्सर आती थीं, और वहीं मेरी उससे पहली मुलाकात हुई। मैंने महबूब साहब से पूछा कि क्या मैं उसे अपनी फिल्म 'बरसात' में ले सकता हूं और उन्होंने हां कह दी। आपको बता दूं, जब मैंने उसे अपनी फिल्म में लिया, तो उसे अभिनय के बारे में कुछ भी नहीं पता था। मुझे उसे सब कुछ सिखाना पड़ा। पर्दे पर वह इतनी ताज़गी भरी, इतनी जवान, गुलाब की कली जैसी लग रही थी, जैसा मैंने उसके किरदार की कल्पना की थी।

बूट पॉलिश में बेबी नाज़

राज कपूर के साथ काम करने पर वैजयंतीमाला

संगम की एक खूबसूरत याद मेरे मन में बसी है, मेरे लिए वह एक बहुत ही दिलचस्प भूमिका थी। मैं राज जी के साथ मद्रास में बन रही एक और हिंदी फिल्म 'नज़राना' में काम कर रही थी। एक बार शूटिंग के दौरान, राज जी ने मेरी तरफ देखा और कहा, 'तुम मेरी आदर्श राधा हो, मेरी अगली फिल्म 'संगम' के लिए, क्या तुम राधा का किरदार निभाओगी?' शुरुआत में, मैं राज जी के काम करने के तरीके से परिचित नहीं थी। वह कभी-कभी बहुत सख्त होते थे, एक कठोर कार्यपालक थे जिनमें गहरी लगन थी। लेकिन मुझे यह समझने में ज्यादा समय नहीं लगा कि वह अपनी राधा को जीवंत, चंचल, चुलबुली, बेहद परिष्कृत, आकर्षक और बुद्धिमान बनाना चाहते थे। पहली बार किसी हिंदी फिल्म में यूरोप को खूबसूरती से दिखाया गया था। उनमें सौंदर्य की गहरी समझ थी, वे दर्शकों की नब्ज़ जानते थे, और उन्हें पता था कि कलात्मक रूप में उन्हें क्या देना है। उन्होंने बहुत मेहनत की और अपने छायाकार के साथ बहुत चर्चा की। दूसरी बात थी संगीत की उनकी अद्भुत समझ। ताल और समय की उनकी समझ कमाल की थी। मैंने उन्हें घंटों अपने संगीत निर्देशकों के साथ बैठकर एक खास धुन पर काम करते देखा है, जब तक कि वे संतुष्ट नहीं हो जाते थे। मैंने सभी महान फिल्म निर्माताओं के साथ काम किया है, हर किसी की अपनी शैली थी, इस तरह की

भूमिका के लिए मुझे लगता है कि मैं इससे बेहतर नहीं कर सकता था। राज कपूर महानतम फिल्म निर्माताओं में से एक थे।

पद्मिनी पर राज कपूर, सिमी गरेवाल और केन्सिया रयाबिंकिना

फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में पद्मिनी की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक थी। वह एक अनाथ लड़की थी जिसे जोकर सड़कों से उठाता है, संवारता है और अंत में स्टार बनाता है। जब वह सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंच जाती है, तो वह जोकर को छोड़ देती है और वह निराश और अकेला रह जाता है। 'मेरा नाम जोकर' की मीना को एक सीधी-सादी लड़की से एक कामुक देवी में बदलना था। मैंने पद्मिनी को इस भूमिका के लिए इसलिए चुना क्योंकि उनमें सादगी और सहज कामुकता थी। उस समय वह एकमात्र ऐसी लड़की थीं जिन्हें मैं एक कामुक देवी की भूमिका को विश्वसनीय ढंग से निभाने के लिए चुन सकता था। अभिनेत्री एक किरदार को निभाते हुए निर्देशक के साथ घुलमिल जाती है, उसे ऐसे निभाती है जैसे वह उसे जी रही हो, और जब वह खुद को स्क्रीन पर देखती है, तो उसे प्यार हो जाता है, 'मैंने यह किया? ओह, आप अद्भुत हैं!' और इस तरह वह निर्देशक से, उस छवि के निर्माता से प्यार कर बैठती है जिसे वह पसंद करती है। लेकिन वास्तव में, वह खुद से प्यार करती है। इसीलिए मुझे लगता है कि मेरी अभिनेत्रियों के साथ मेरे बहुत ही खूबसूरत रिश्ते रहे हैं, सभी के साथ, क्योंकि वे महसूस करती हैं कि वे इस समूह का हिस्सा हैं, और यह जुड़ाव हमारे पेशे में बहुत मायने रखता है। स्वाभाविक रूप से, इसमें एक पुरुष और एक महिला शामिल होते हैं, लेकिन वास्तव में इसमें आप खुद के अलावा किसी और से प्यार नहीं करते।

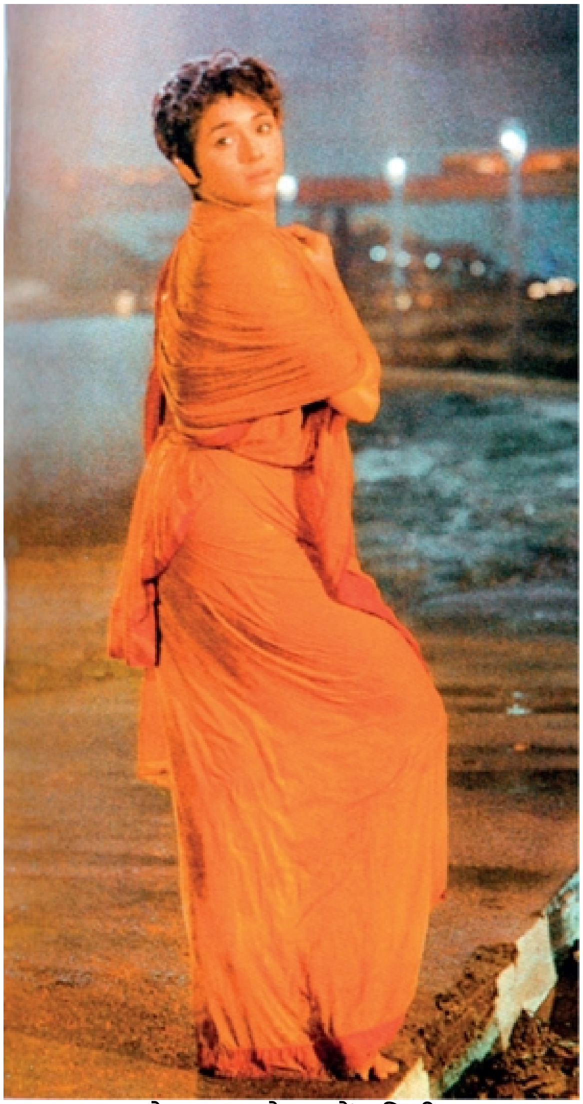

मेरा नाम जोकर में पद्मिनी

Simi Garewal in Mera Naam Joker

मेरा नाम जोकर के नायक को किशोरावस्था में ही मैरी से प्यार हो जाता है। मैरी उसकी स्कूल शिक्षिका है और अच्छाई व पवित्रता की प्रतीक है। वह स्नेहशील, मानवीय, कोमल और दयालु है। सिमी में इस भूमिका के लिए सभी गुण थे... और उन्होंने इसे बखूबी निभाया।

जब मैं रूस गया, तो मेरे मन में ट्रैपीज़ कलाकार की एक स्पष्ट छवि थी। मैंने मॉस्को के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा दिखाई गई सैकड़ों लड़कियों का साक्षात्कार लिया, लेकिन कोई भी मुझे उपयुक्त नहीं लगी। फिर अचानक एक रात, बैले देखते समय, मेरी नज़र एक युवती पर पड़ी। वह पीछे की पंक्ति में बैठी थी, वह मुख्य बैलेरीना भी नहीं थी! लेकिन जैसे ही मैंने उसे देखा, मैं जान गया कि वह मेरी मरीना है, 'मेरा नाम जोकर' की नायिका। मैंने तुरंत संबंधित लोगों को अपने निर्णय के बारे में बताया और एक दिन रियाबिंकिना बॉम्बे और आर.के. स्टूडियो में भूमिका निभाने के लिए आ गईं। मैंने उनके लिए एक हिंदी शिक्षक नियुक्त किया, क्योंकि उन्हें फिल्म में हिंदी की कुछ पंक्तियाँ बोलनी थीं। पर्दे पर

जो झलका, वह बैलेरीना की अंतर्निहित सुंदरता और गरिमा थी, और निश्चित रूप से, वह अवर्णनीय गुण जिसे 'स्टार क्वालिटी' कहते हैं।

Raj Kapoor with Kseniya Ryabinkina in a still from Mera Naam Joker

~

राज कपूर याद करते हुए कहते हैं, 'मुझे बॉबी के लिए एक नई लड़की चाहिए थी।' परिवार की दोस्त मुन्नी धवन ने सुझाव दिया कि उन्हें डिंपल कपाडिया पर विचार करना चाहिए। राज कपूर ने उन्हें देखा और पहली ही नज़र में पसंद कर लिया।

बॉबी में काम करने के बारे में डिंपल कपाडिया की राय

जब राज साहब ने मुझे फिल्म में लेने का फैसला किया, तब मैं सिर्फ तेरह साल का था। मेरे पिताजी चिंतित हो गए। उन्हें लगा कि मेरे फिल्मी करियर को लेकर कपड़िया परिवार हंगामा खड़ा कर सकता है। हम पहले ही ऋषिकेश मुखर्जी की फिल्म 'गुड्डी' में मुख्य भूमिका निभाने का प्रस्ताव ठुकरा चुके थे। राज साहब ने मेरे पिताजी से कहा, 'मुझे स्क्रीन टेस्ट देने दीजिए, फिर आप फैसला कीजिएगा।' मैं फिल्म करने के लिए बहुत उत्सुक था, इसलिए आखिरकार पिताजी मान गए। उस समय डब्बू 'कल आज और कल' बना रहे थे, और मेरा स्क्रीन टेस्ट डब्बू के सेट पर हुआ। राज साहब ने मुझे बाद में बताया कि जब मैं मेकअप लगाकर सेट पर पहुंचा, तो काफी हलचल मच गई थी। उन्होंने कहा कि पहले ही शॉट से मैं 'स्वाभाविक और निडर' था। टेस्ट के बाद, राज साहब ने साउंड रिकॉर्डिस्ट अलाउद्दीन खान से पूछा, 'कैसी लगी?' उन्होंने कहा, 'बिस्मिल्लाह करो!' फिर आया वो अहम पल, जब उन्होंने कैमरामैन राधू कर्माकर से राय मांगी। राधू साहब ने कहा, 'स्टार बनने लायक,' और बस बात खत्म। राज कपूर मेरे लिए पिता समान हैं। उन्होंने मुझे जो कुछ भी सिखाया है, वो सब मैंने अनजाने में ही याद रखा है। अगर मैं आज इंडस्ट्री में इतने आत्मविश्वास के साथ काम कर पाती हूं, तो ये उन्हीं की बदौलत है। उन्होंने मुझे अभिनय की सारी बारीकियां सिखाईं। वो मुझे डांटते, मनाते और लाड़-प्यार करते, जब तक कि मैं सही शॉट न दे दूं। एक बार जब मेरी

आंखों से आंसू बहने लगे, तो उन्होंने मेरी तारीफ करते हुए कहा, 'ये रही मेरी जन्मजात अभिनेत्री।' ऐसी छोटी-छोटी बातें ही आपको और मेहनत करने के लिए प्रेरित करती थीं। आप अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहते थे। मैं हमेशा खुद को बहुत कमतर महसूस करती थी क्योंकि मैं हमेशा उनके मानकों पर खरा उतरने की कोशिश करती रहती थी। वह हमारे लिए हर छोटी से छोटी हरकत करके दिखाते थे। मैंने कभी जानबूझकर खुद की तुलना दूसरी अभिनेत्रियों से नहीं की, फिर भी मुझे अक्सर खुद पर इतना भरोसा नहीं होता। अब मुझे एहसास होता है कि उन्होंने मेरे लिए जो ऊंचे मापदंड तय किए थे, उन्हीं की वजह से मैं हमेशा उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करती रहती हूं।

बॉबी फिल्म में ऋषि कपूर

देव आनंद याद करते हैं

मेट्रो सिनेमा में 'इश्क इश्क इश्क' के प्रीमियर के बाद, राज कपूर ने आमंत्रित दर्शकों के सामने मेरी अभिनेत्री ज़ीनत अमान को चूमा और फिल्म में उनके शानदार अभिनय के लिए उन्हें बधाई दी। इससे उनकी शाम और भी यादगार बन गई होगी। मुझे उन पर गर्व महसूस हुआ, साथ ही राज कपूर की उनकी ईमानदार और सहज प्रतिक्रिया की मैं बहुत प्रशंसा करता था। उनकी तारीफ करना अप्रत्यक्ष रूप से उनके गुरु की तारीफ करना था, और मैंने अपने समकालीन फिल्म निर्माता के विवेक को मन ही मन सलाम किया। फिर भी, मुझे उनसे ईर्ष्या हुई क्योंकि उन्होंने मेरी इकलौती संपत्ति, मेरी खोज, मेरी नायिका पर प्यार बरसाया और उन्हें चूमने की इच्छा जताई। समय बीतता गया। अचानक, एक दिन, मुझे लगा कि मैं ज़ीनत के प्यार में बुरी तरह पड़ गया हूँ—और मैं उनसे यह कहना चाहता था! एक बेहद खास, एकांत जगह पर, जो रोमांस के लिए बनी हो, मैं उनसे अपने दिल की बात कहना चाहता था। मैंने शहर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित ताज होटल के रेंडेज़वस को चुना, जहाँ हम पहले एक बार साथ में भोजन कर चुके थे। इससे बेहतर माहौल और कोई नहीं हो सकता था। मैंने कोने में मोमबत्ती की रोशनी से जगमगाती एक शांत मेज के बारे में सोचा, मोमबत्ती की चमक ज़ीनत के चेहरे पर पड़ रही थी, ठीक वैसे ही जैसे पहली बार मिलने पर उसकी सिगरेट की रोशनी ने उसके चेहरे को रोशन किया था। नीचे शहर की मंद

रोशनी, अंधेरे से छनकर आती हुई, उस पल के रोमांस को और भी रोशन कर रही थी। मैंने उसे फोन करके कहा, 'ज़ीनी, मैं आज रात तुम्हारे साथ डेट पर जाना चाहता हूँ।' उसने मुझसे पूछा, 'लेकिन क्या हम आज रात पहले से ही पार्टी में नहीं जा रहे हैं?' मैंने कहा, 'बिल्कुल जा रहे हैं। लेकिन चलो बस थोड़ी देर के लिए चलते हैं, सबको नमस्ते कहते हैं और फिर जल्दी से निकल जाते हैं!' यह एक आदेश था, लेकिन बहुत प्यार से कहा गया था। वह चुप रही। 'हेलो!' मैंने कहा। 'हाँ, मैं सुन रही हूँ।' मैंने पूछा, 'क्या यह डेट है?' उसने कहा, 'अगर तुम चाहो तो। फिर मिलते हैं!' और उसने फोन काट दिया। मैं उसे लेने गया। हम साथ में पार्टी में गए। पार्टी पूरे जोश में चल रही थी। दूर से ज़ीनत का अभिवादन करने वाला पहला व्यक्ति शराबी राज कपूर था, जिसने बड़े ही सधे हुए लहजे में कहा, 'देखो, वो रही!' उसने उत्साह से उसे गले लगा लिया। यह अचानक मुझे कुछ जाना-पहचाना सा लगा। और जिस तरह से ज़ीनत ने भी उसे गले लगाया, वह महज़ औपचारिकता से कहीं अधिक था। उसने जल्दी से झुककर उसके पैर छुए, और फिर मुझे शर्मिंदा नज़र से देखा। राज ने मेरा हाथ पहले से कहीं ज़्यादा कसकर पकड़ लिया, मानो किसी गलती को सुधारने की कोशिश कर रहा हो, अचानक स्नेह से भर उठा। मेरे मन में संदेह का एक हल्का सा भाव आया। कुछ दिन पहले ही यह अफवाह फैली थी कि ज़ीनत राज के स्टूडियो में उनकी नई फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' में मुख्य भूमिका के लिए स्क्रीन टेस्ट देने गई थी। अब यह अफवाह सच लगने लगी। मेरा दिल दुख से भर गया। राज नशे में धुत्त होकर ज़ीनत से कह रहा था, 'तुम अपना वादा तोड़ रही हो कि मैं तुम्हें हमेशा सफेद साड़ी में ही देखूंगा!' उसके चेहरे पर शर्मिंदगी साफ झलक रही थी, और मेरे लिए ज़ीनत अब पहले जैसी नहीं रही थी। मेरा दिल चकनाचूर हो गया। मैं तुरंत पार्टी छोड़कर कहीं अकेले जाना चाहता था, ताकि अपने अहंकार पर लगे इस अपमान को सह सकूं। लेकिन मेरे अंदर का संघर्ष 'भाड़ में जाए सब' वाले रवैये में बदल गया, और मुझे उस रिश्ते को अलविदा कहने के लिए मजबूर कर दिया जो भावनात्मक रूप से दोनों तरफ से भले ही प्रतिबद्ध न हो, लेकिन पूरी तरह ईमानदार था। उसमें पेशेवर बेईमानी की कोई जगह नहीं थी। मैंने उसके लिए जो पेंटिंग बनाई थी, उसमें दरारें पड़ने लगी थीं। 'ज़ीनत, तुम यहां कब तक रुकोगी?' मैंने उससे पूछा। उसने राज की तरफ देखा, मानो जाने की इजाजत मांग रही हो। 'उसे यहीं रहने दो, देव आनंद। तुम भी मजे करो!' वह नशे में धुत्त होकर बोला। 'ज़रूर,' मैंने कहा। 'मज़े करो, ज़ीनत। बाद में, जब तुम्हारा मन करे, मुझे फ़ोन कर लेना!' 'लेकिन क्या हमें दूसरी जगह साथ नहीं जाना था?' उसने बेपरवाही से पूछा। 'कोई बात नहीं!' मैंने कहा। मेरे मन में उस मुलाकात का कोई मतलब नहीं रह गया था। मैं चुपके से वहाँ से निकल गया और मेज़बान से चुपचाप माफ़ी माँगी। उस शाम ने मेरे अहंकार और मेरे दबंग स्वभाव को ठेस पहुँचाई। मैंने अचानक ही ज़ीनत को पहली बार यह बताने का फ़ैसला किया था कि मैं उससे कितना प्यार करता हूँ। और मेरे मन में एक ऐसी कहानी का विचार था जो उसे पहले से कहीं ज़्यादा ऊँचा

दर्जा दिलाएगी, अब तक का सबसे ऊँचा। लेकिन ऐसा होना मुमकिन नहीं था। और जो हुआ सो हुआ! मैंने खुद को जल्दी से अलग कर लिया, खुद को समझाते हुए कि मैंने बहुत सी बातों को हल्के में लेकर गलती की थी। मुझे ज़ीनत के प्रति अपने मन में कोई द्वेष पनपने देने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने उसे दुनिया के लिए तैयार कर दिया था, और वह किसी भी ऐसे व्यक्ति की बाहों में जाने के लिए स्वतंत्र थी जो उसके महत्वाकांक्षी सपनों को आगे बढ़ाने में उसकी मदद करे। भजन गाते भक्तों का एक समूह मेरी कार के पास से गुजर रहा था। मैं झांझ और घंटियों की आवाज़ सुनता रहा। 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे'। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। ज़ीनत मेरी आँखों में सुंदर और एक सच्ची आत्मा के साथ बनी रही। और राज एक जुनूनी फिल्म निर्माता। मैंने अपनी आँखें खोलीं। मानो बिजली की एक लकीर मेरे दिमाग में कौंधी और एक नया विचार जगाया। मैंने उस पर काम करना शुरू कर दिया। मेरे सामने एक नया अध्याय खुल गया, जिसके पहले पन्ने धीरे-धीरे खुलते गए। एक नई फिल्म का विचार धीरे-धीरे स्पष्ट होता जा रहा था।

राज कपूर के साथ काम करने के अनुभव पर ज़ीनत अमान की प्रतिक्रिया

जब भी राज कपूर कोई नई फिल्म शुरू करते थे, तो उनकी हीरोइन को लेकर काफी उत्सुकता रहती थी। सत्यम शिवम सुंदरम के साथ भी ऐसा ही हुआ। राज जी अभी भी हीरोइन की तलाश में थे, तभी मैं ठीक वैसे ही कपड़े पहनकर उनके कॉटेज गई, जैसे उन्होंने अपनी हीरोइन के बारे में सोचा था। जब मैंने दरवाजा खटखटाया और उन्होंने पूछा कि कौन है, तो मैंने जवाब दिया, 'आपकी भावी हीरोइन।' मुझे लगता है कि मेरी लगन और उनकी फिल्म में काम करने के मेरे दृढ़ संकल्प से वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने मेरा स्क्रीन टेस्ट लिया, जो अपने आप में एक अनोखा अनुभव था। मुझे रोल मिल गया। मैंने खुद को पूरी तरह से उनके हवाले कर दिया। मैं एक कुम्हार के हाथों में मिट्टी की तरह थी। फिल्म की शूटिंग में हमें दो साल लगे। इसका अधिकांश हिस्सा पुणे में उनके फार्म पर फिल्माया गया था। हम सब वहां एक बड़े परिवार की तरह रहते थे। हम सब उनके घर में रहते थे और साथ में खाना खाते थे, दिन भर के काम पर चर्चा करते थे, रात में उनकी पुरानी फिल्में देखते थे। हर सुबह मेरे लिए ताजे फूल होते थे। उन्होंने पूरे फार्म में मेरी बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगा रखी थीं - मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं दुनिया की इकलौती हीरोइन हूं। लेकिन कैमरे के पीछे वो बेहद सख्त मिजाज के थे। किसी भी बात पर समझौता नहीं करते थे। चाहे मुझे बारिश में भीगना पड़े, पत्थरों पर चलना पड़े या कंटीली झाड़ियों में नाचना पड़े, मुझे वो सब करना ही पड़ता था। बेशक, शॉट के बाद एक गर्म शॉल और एक चम्मच ब्रांडी तैयार रहती थी। और वो ये भी सुनिश्चित करते थे कि नंगे पैर झाड़ियों में चलने से पहले सारा रास्ता कांटों से साफ हो जाए! ये राज जी का खास अंदाज था। वो अपनी अभिनेत्रियों को बेहद नाजुक और महत्वपूर्ण महसूस कराते थे।

राज कपूर और ज़ीनत अमान

Zeenat Aman in Satyam Shivam Sundaram

Padmini Kolhapure on Raj Kapoor's role in shaping her career

आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह पूरी तरह से राज जी की वजह से है। जब मैंने सत्यम शिवम सुंदरम की, तब मुझे एक अभिनेत्री के रूप में पहचान मिलने लगी। मुझे अभिनय सिखाया गया, मतलब राज अंकल ने मुझे सिखाया कि क्या करना है, सेट पर कैसे काम करना है, कैमरे के सामने होने का क्या मतलब होता है। जब मैंने प्रेम रोग साइन की, तब मैं पंद्रह साल की थी। आर.के. बैनर तले मुख्य अभिनेत्री बनना किसी भी अभिनेत्री के लिए सपने के सच होने जैसा था। राज अंकल ने मुझे फोन किया और कहा, 'तुम्हें मनोरमा का किरदार निभाना है, लेकिन मुझे तुम्हारा स्क्रीन टेस्ट करवाना होगा, क्योंकि प्रेम रोग में तुम्हें एक युवा विधवा का किरदार निभाना है और तुम्हें विधवा दिखना चाहिए, बच्ची नहीं।' उन्होंने मेरा स्क्रीन टेस्ट

लिया और मुझे वह रोल मिल गया। मुझे यकीन नहीं हुआ। और हे भगवान, अभिनय का वह कितना अद्‌भुत अनुभव था! प्रेम रोग करते-करते मेरा उनसे एक खास रिश्ता बन गया था। वह अपनी कुर्सी पर बैठे रहते और मुझसे कहते, 'मुझे यही चाहिए,' और किसी तरह मैं समझ जाती कि उन्हें क्या चाहिए, और वह मेरे काम से खुश होते थे। मुझे लगता है कि कई मायनों में मैं उनके साथ पला-बढ़ा और उनसे बहुत कुछ सीखा... उनकी तीव्रता, भावनाएं और फिल्म निर्माण के प्रति उनका जुनून बेहद दिलचस्प था। एक निर्देशक के रूप में वे खुद को बहुत अच्छी तरह जानते थे और इस बात को खुलकर कहते थे। जब उन्हें कुछ मनचाहा मिल जाता था, तो वे कहते थे, 'यह शानदार है।' लेकिन कई बार ऐसा होता था कि मैं कोई सीन कर रहा होता था और वे शॉट को वहां नहीं काटते थे जहां उसे काटना चाहिए था; अगर फ्लो अच्छा होता था, तो वे कैमरे को चलने देते थे। कभी-कभी मैं अटक जाता था, अपने डायलॉग भूल जाता था, और वे गुस्सा हो जाते थे और मुझे डांटते थे। इससे मुझे बुरा लगता था। दिन के अंत में मैं जाकर उनसे इस बारे में पूछता और कहता कि मुझे उनका बोलने का तरीका पसंद नहीं आया, लेकिन तब तक वे सब कुछ भूल चुके होते थे!

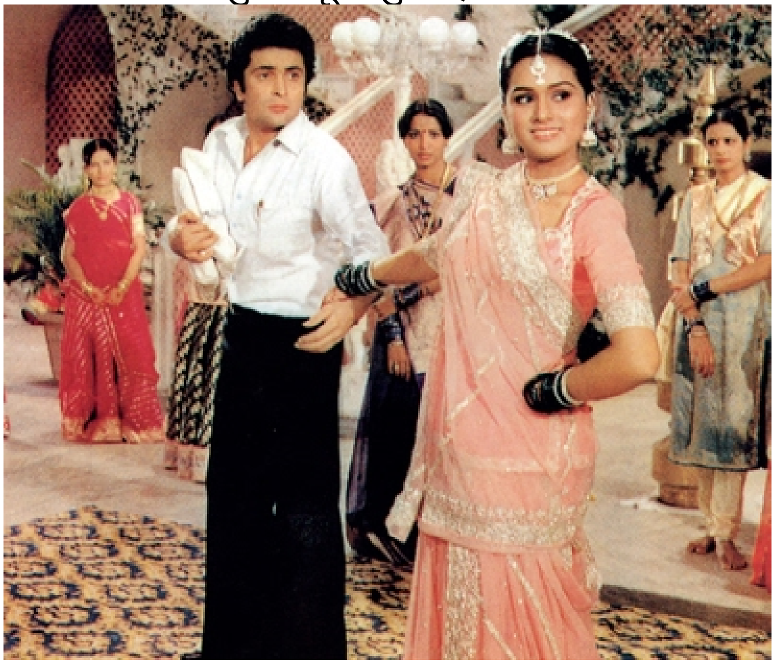

Rishi Kapoor with Padmini Kolhapure in Prem Rog

Mandakini in Ram Teri Ganga Maili

Mandakini’s father C. Joseph on Raj Kapoor

राम तेरी गंगा मैली में कुंवारी गंगा की भूमिका के लिए राज कपूर कई लड़कियों से मिले थे, लेकिन कोई भी इस भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं लगी, जब तक कि मेरठ की एक लड़की नहीं मिल गई। मंदाकिनी के पिता, सी. जोसेफ याद करते हैं, '1982 की शुरुआत में हमने एक फिल्म पत्रिका में पढ़ा कि राज कपूर राम तेरी गंगा मैली में मुख्य भूमिका के लिए एक नई लड़की की तलाश कर रहे हैं। मेरी बेटी यास्मीन फिल्मी करियर को लेकर बहुत उत्सुक थी, इसलिए हमने सोचा कि क्यों न एक बार कोशिश की जाए? मेरी बेटी और मैं मेरठ से मुंबई आए और सीधे आर.के. स्टूडियो में राज कपूर से मिलने गए। यह एक सुखद मुलाकात थी और उस महान व्यक्ति ने कहा कि वह हमारा स्क्रीन टेस्ट लेना चाहेंगे। राज साहब के टेस्ट लेने के बाद, हम मेरठ वापस चले गए। दो हफ्ते बाद, मेरठ का एक फिल्म प्रदर्शक हमारे घर भागा-भागा आया—हमारे पास फोन नहीं था—यह बताने के लिए कि उसे राज साहब के दिल्ली वितरक का फोन आया था, जिसमें राज साहब का संदेश था कि हमें तुरंत मुंबई जाना चाहिए। हम बेहद उत्साहित थे और मुंबई के लिए रवाना हो गए।' राज साहब ने हमें हमारे टेस्ट का नतीजा दिखाया और कहा कि वे एक और स्क्रीन टेस्ट लेना चाहेंगे। तब तक हमें पूरा यकीन हो चुका था कि राज साहब ने यास्मीन के पक्ष में अपना फैसला कर लिया है। और सच में उन्होंने फैसला कर लिया था, जिसके बाद बड़े पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया गया।

राज कपूर और नरगिस फिल्म श्री 420 में

फ़िल्में

'सभी समस्याओं, सभी बाधाओं के बावजूद, आप उस क्षितिज की ओर बढ़ते हैं जिसे आपने देखा है। वह आपकी आँखों में है, और अगर मैं अपनी फिल्मों के माध्यम से आपकी मदद कर सकूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने मानवता के लिए कुछ किया है।'—राज कपूर

राज कपूर की सभी फिल्मों की शुरुआत पृथ्वीराज कपूर द्वारा शिव को समर्पित श्लोक के पाठ और फिल्म को आशीर्वाद देने से होती थी। पृथ्वीराज के निधन के बाद, फिल्मों को आशीर्वाद देने के लिए उनके स्थान पर एक प्रतिमा स्थापित की गई।

आवारा में नरगिस के साथ

हम एक ही दुनिया में रहते हैं, एक ही वास्तविकता को साझा करते हैं, इसलिए हम अक्सर एक ही विषयों को देखते हैं, लेकिन उनसे निकलने वाले हमारे विचार हमें एक व्यक्ति के रूप में अलग करते हैं। राज कपूर का दर्शन, जैसा कि उनके कार्यों से झलकता है, हमारे आस-पास के जीवंत वातावरण के साथ एक संबंध था। राज कपूर व्यावहारिक दर्शन में निपुण थे। व्यावहारिक दर्शन का अर्थ है उपदेश दिए बिना, इसे व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करना, और इसे क्षितिज से परे विस्तारित करने की उनकी क्षमता या तो सहज थी या उनकी असाधारण प्रतिभा। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं: 'आग, आह, आवारा, श्री 420' में एक युवक का अपनी स्वतंत्र इच्छा और वास्तविकता तथा सत्य के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास। 'बरसात', 'जिस देश में गंगा बहती है' और 'संगम' में मानवीय संबंधों का महत्व। 'सत्यम शिवम सुंदरम' में आध्यात्मिक अस्तित्व की बोधगम्य जीवन पर श्रेष्ठता। 'प्रेम रोग' में रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों का व्यर्थ होना और उनकी सबसे स्थायी रचना, 'मेरा नाम जोकर' में प्रेम को सीमित करने की निरर्थकता। प्रेम एक दार्शनिक सिद्धांत है जिसे एकल लगाव तक सीमित नहीं किया जा सकता। अगर राज कपूर फिल्म 'हेन्ना' के दूसरे भाग की शूटिंग के दौरान जीवित होते, तो वे अंत में उस किरदार को नहीं मारते। राज कपूर कभी अपने संदेशवाहकों को नहीं

मारते थे। उनकी विचारधारा की सफलता दुख और अंधकारमय सच्चाइयों को सही ठहराने में नहीं थी। उनकी सफलता अंत में विजयी होने में थी। यहां तक कि अपनी फिल्म 'जागते रहो' के अंत में भी वे हमें जीवन की निराशा में नहीं छोड़ते। वे इसे हमारे भीतर की सच्चाई की सकारात्मक याद दिलाकर समाप्त करते हैं।

प्रेम, दया और करुणा, जो हमारी निरंतर विरासत हैं, और रोमांटिकता, उनकी फिल्मों की बुनियाद थीं। उनकी फिल्मों की कथाएँ एक धारा की तरह बहती थीं, मानो विभिन्न खेतों से सामंजस्यपूर्ण ढंग से गुज़र रही हों, बिना रुके उन खूबसूरत परिदृश्यों की प्रशंसा किए जिन्हें उन्होंने सींचा था। यहाँ तक कि जब उनके विषय जटिल मानवीय शक्तियों और कमजोरियों से संबंधित थे, या जब वे सामाजिक बंधनों की आलोचना करते थे, तब भी उनकी कथाएँ अपने पात्रों के प्रति सम्मानजनक और ईमानदार बनी रहीं। वे क्षमाशील या धैर्यपूर्वक सहनशील नहीं थीं, लेकिन वे असभ्य हुए बिना सत्यवादी थीं, मानो उन्होंने किसी को या किसी चीज़ को अस्वीकार नहीं किया हो। परिणामस्वरूप, भले ही कोई पात्र खलनायक हो, वह हमारी दुनिया का हिस्सा बना रहा। किसी भी व्यक्ति या विचार को उसकी जगह से वंचित नहीं किया गया। उन्होंने अपनी कला में ग्लैमर को खुलकर घुलने-मिलने दिया।

सत्यम शिवम सुंदरम में ज़ीनत अमान के पिता का किरदार कन्हैयालाल ने निभाया है। वे एक पुजारी हैं जो स्थानीय मंदिर में गीत गाते हैं और अपनी बदकिस्मती के कारण पीड़ित एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में सभी द्वारा सम्मानित हैं। शशि कपूर से शादी के बाद ज़ीनत अमान पहली बार अपने पिता की कुटिया में लौटती हैं। पंडित जी स्वस्थ हैं, उन्होंने दवाइयाँ लेना बंद कर दिया है। ज़ीनत यह देखकर कहती हैं, 'आपका स्वास्थ्य सुधर गया है, बाबा, अब आपको मेरी चिंता नहीं करनी पड़ेगी,' और वे जवाब देते हैं, 'यह सच है, अब जब मैं दवाइयाँ नहीं ले रहा हूँ, तो बीमारियाँ भी मेरे पास आना बंद हो गई हैं।' मुझे कुछ दृश्यों के बाद तक यह समझ नहीं आया कि इस दृश्य की क्या ज़रूरत थी, जब ज़ीनत गर्भवती हो जाती है; शशि उसे मंदिर ले जाता है और पंडित जी पर चिल्लाता है, 'पंडित! कहते थे मेरी बेटी सुशील है, पूछो किसका पाप पल रहा है इसके पेट में, संभालो अपनी बेटी, पंडित!’ पंडित जी की मौके पर ही दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो जाती है।

ऐसा ही एक दृश्य 'मेरा नाम जोकर' के पहले भाग में है, जब वह बच्चा एक पब्लिक स्कूल में पढ़ता है (ऋषि कपूर द्वारा अभिनीत)। स्कूल छुट्टियों के लिए बंद हो जाता है, लड़का, हालांकि स्थानीय निवासी है, शिक्षक को विदा करने स्टेशन आता है। एक गीत शुरू होता है, 'ओ सुज़ाना, मेरे लिए मत रोओ। मैं अपने रास्ते में घुटनों पर बैंजो लेकर जा रहा हूँ...' इसके बाद एक छोटा सा विराम आता है, मौसम बदलता है, फूल खिलते हैं और ट्रेन वापस आती है, बच्चा ट्रेन के साथ-साथ दौड़ता है और आने वाले बच्चों का फूलों से स्वागत करता है और अपनी शिक्षिका के लिए एक गुलाब लाता है। मेरे लिए, यह कहानी का एक महत्वपूर्ण क्षण था। लड़के के दीवानेपन को एक अलग ही स्तर पर ले जाता है। बरसात फिल्म में एक

दृश्य है, जिसमें वो वायलिन पर 'डेन्यूब वेव्स' इतनी पीड़ा से बजाते हैं कि नरगिस उनसे रुकने की गुहार लगाती हैं। लेकिन अगले ही पल, वो उनके बाल पकड़कर उनका सिर पीछे खींचते हैं और उनकी आँखों में सीधे देखते हैं, मानो उन्हें अपनी भावनाओं से मेल खाने की चुनौती दे रहे हों। यही थे राज कपूर!

आग (1948)

मैं 'आग' को कभी नहीं भूलूंगा, क्योंकि यह एक ऐसे युवा की कहानी है जो एक उज्ज्वल, अधिक जीवंत जीवन की चाहत में डूबा हुआ है। यह उन सभी लोगों के बारे में है जो मेरी ज़िंदगी में परछाई की तरह आते-जाते रहे, कुछ देते रहे, कुछ लेते रहे... पैसा कभी कम नहीं पड़ा, फिल्म के मुहूर्त से लेकर रिलीज के दिन तक का सफर एक कठिन संघर्ष था। मैंने अपनी कार गिरवी रख दी। यहां तक कि मैंने अपनी टीम के लिए चाय-खाना खरीदने के लिए अपने पुराने नौकर द्वारका से भी पैसे उधार लिए। मुझे याद है मेरी मां ने मेरे पिता से व्यंग्यात्मक पंजाबी मुहावरे में कहा था कि थूक पर पकौड़े नहीं तलते, यानी कि मैं बिना संसाधनों के फिल्म नहीं बना पाऊंगा। मेरे पिता ने उनकी ओर मुड़कर कहा, 'तुम बस इंतजार करो और देखो। लड़का फिल्म बना लेगा। उसमें आत्मविश्वास और दृढ़ विश्वास है।' मैं उन शब्दों को कभी नहीं भूल पाया, और आज भी नहीं भूला हूं, क्योंकि इस व्यवसाय में वास्तव में यही सब कुछ चाहिए होता है। 'आग' बनाते समय कई बार ऐसा भी हुआ कि मैं अपनी फिल्म के डिब्बे एक वितरक के दफ्तर से दूसरे वितरक के दफ्तर ले जाता रहा, इस उम्मीद में कि शायद कोई खरीदार मिल जाए, लेकिन कोई नहीं मिला। फिर एक दिन मैंने कुछ वितरकों को आधी बनी फिल्म के कुछ फुटेज दिखाए। उनका फैसला था: 'यह फिल्म किसी भी जगह नहीं चलेगी।' एक वितरक तो इतना ऊब गया था कि सो ही गया था! वैसे भी इस आदमी को फुटेज देखना कभी पसंद नहीं था। उसने मुझसे कहा: 'मैं किसी फिल्म का समर्थन नहीं करता, मैं एक इंसान का समर्थन करता हूं। चाहे यह फिल्म चले या न चले, मुझे यह हर हाल में चाहिए।' उसने एक बेचैन और महत्वाकांक्षी फिल्म निर्माता से मजबूती से हाथ मिलाया, उसकी हथेली में एक रुपये का चांदी का सिक्का थमा दिया, और सौदा पक्का हो गया। उस दिन से लेकर आज तक, मेरी हर फिल्म अपने आप उसी वितरक के पास जाती है, जिसने सबसे पहले एक अनजान नौजवान को फिल्मी करियर के जोखिम भरे सफर पर ले जाने का साहस और दूरदर्शिता दिखाई। मुझे किसी पटकथा के बारे में जो बात प्रभावित करती है, वह यह है कि कहानी में पर्याप्त मानवीय मूल्य हों। 'आग' की कहानी कुछ ऐसी ही थी। यह मेरे पिता के अनुभवों पर आधारित थी (पृथ्वीराज कपूर के पिता चाहते थे कि वे कानून की पढ़ाई करें, लेकिन पृथ्वीराज अभिनेता बनना चाहते थे)। फिल्म एक ऐसे नौजवान की कहानी है जो रंगमंच अभिनेता बनना चाहता है और अपने माता-पिता को निराश करता है, जो उसे वकील बनाना चाहते थे। इस फिल्म ने बहुत से लोगों को झकझोर दिया। उन दिनों यह फिल्म सोलह हफ्तों तक चली। यह एक बिलकुल अलग तरह की फिल्म थी, जिसने ज़बरदस्त सफलता हासिल की।

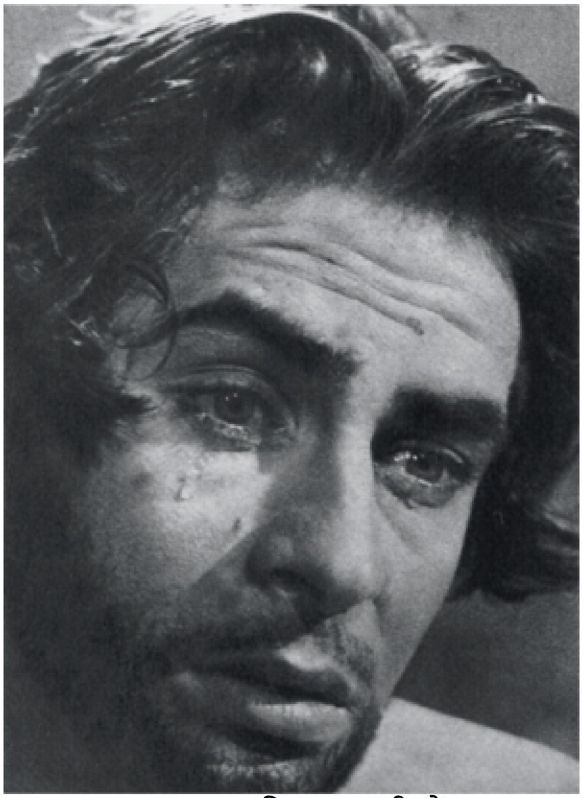

राज कपूर फिल्म 'एएजी' में

फिल्म 'आग' के प्रेम दृश्यों में दर्शकों को सीधे तौर पर आकर्षित करने की क्षमता थी, और इसी से एक जीवंत, नई परंपरा का जन्म हुआ। पीछे मुड़कर देखने पर, यह समझना आसान हो जाता है कि ऐसा क्यों हुआ।

एक कलाकार की अपनी जीवन संगिनी की तलाश की यह अर्ध-आत्मकथात्मक कहानी राज कपूर के निर्माता-निर्देशक के रूप में पदार्पण और दिग्गज आर.के. फिल्म्स की शुरुआत का प्रतीक थी। हालांकि फिल्म में राज कपूर तीन महिलाओं - कामिनी कौशल, निगार और नरगिस - के साथ रोमांस करते हैं, लेकिन राज कपूर और नरगिस की जोड़ी ही आर.के. फिल्म्स के बैनर तले फली-फूली, जिसने अपने गौरवशाली सफर की शुरुआत की। अपने करियर के शुरुआती दौर में, राज कपूर ने फिल्म के अधिकांश दृश्यों में विकृत रूप में दिखने का साहस किया। 'आग' बॉक्स ऑफिस पर औसत रूप से सफल रही। राज-नरगिस की जोड़ी को फिल्मों में सफलता बाद में मिली। इसने 'आग' को पुन: प्रदर्शित होने पर एक सफल फिल्म बना दिया। राज कपूर और नरगिस भारतीय सिनेमा की दिग्गज जोड़ियों में से एक बन गए। उनमें सच्चाई और दृढ़ विश्वास था। उन्होंने अभिव्यक्ति में एक नया रास्ता बनाया। उन्होंने युवाओं की दबी हुई इच्छाओं और आकांक्षाओं को चित्रित किया। शशि कपूर ने इस फिल्म में बाल कलाकार के रूप में अभिनय किया। गायक मुकेश कपूर का आर.के. फिल्म्स के साथ जुड़ाव भी महत्वपूर्ण था। फिल्म जगत में भी इसी फिल्म से शुरुआत हुई। मुकेश ने आर.के. फिल्म्स के

सभी प्रोडक्शन के लिए गीत गाए, जिनमें सत्यम शिवम सुंदरम उनका आखिरी रिकॉर्ड किया गया गीत था।
युवा भारत की आत्म-साक्षात्कार की इच्छा और उसके परिणामस्वरूप माता-पिता की अपेक्षाओं और परंपराओं के साथ होने वाले संघर्ष उनकी रचनाओं (और बाद में हिंदी सिनेमा के अधिकांश भाग) का एक प्रमुख विषय बन गए, लेकिन यह उन कई तरीकों में से एक था जिनसे 'आग' ने अपनी आधुनिक शैली का परिचय दिया। हिंदी फिल्मों में प्रचलित शैली की तुलना में अधिक स्वाभाविक अभिनय शैली और हास्य का प्रयोग करने के अलावा, उन्होंने कामुकता के प्रति एक नए दृष्टिकोण के साथ जोखिम भी उठाया।
राज कपूर भारतीय परंपरा में कामुकता को केंद्रीय महत्व देते थे। इसी वजह से वे फिल्म जगत के उन प्रचलित मानदंडों से असहमत थे, जिनके अनुसार पुरुषों द्वारा महिलाओं को थप्पड़ मारना तो ठीक था, लेकिन उन्हें सहलाना घोर अपराध माना जाता था। प्रेम के सिनेमाई चित्रण को नया रूप देते हुए, इस फिल्म ने यथार्थवाद और शालीनता के बीच एक बेहतरीन संतुलन बनाए रखा। एक दृश्य में, फिल्म का नायक एक खूबसूरत अभिनेत्री को ठुकराने की कोशिश करता है, जिससे उसका सबसे अच्छा दोस्त शादी करना चाहता है। वह उससे पूछता है, 'मुझमें ऐसा क्या है जो मेरे दोस्त में नहीं है?' जैसे ही वह उसकी आंखों और बालों से शुरू करते हुए, अपनी कामुकता का खुलकर बखान करती है, और स्त्री को प्रेम की निष्क्रिय वस्तु मानने की सिनेमाई परंपरा धराशायी हो जाती है। संकीर्ण सोच वाले सेंसरों ने सिनेमा पर रोमांस और प्रेम को व्यक्त करना असंभव बना दिया था। उदाहरण के लिए, पुरुष और स्त्री के बीच शारीरिक निकटता संभव नहीं थी। इस पुरातन और मनमानी नियम का शिकार होने वाली पहली फिल्मों में से एक राज कपूर की 'आग' थी। फिल्म में कोई चुंबन दृश्य नहीं थे, न ही नायिका ने नग्नता का प्रदर्शन किया, फिर भी प्रेम दृश्यों को हटाकर उनकी जगह चट्टानी तट से टकराती लहरों के दृश्य डाले गए! दरअसल, वह चट्टानी तट हिंदी सिनेमा में भविष्य में जुनून के चित्रण का प्रतीक बन गया, जिस पर फिल्म निर्माताओं की लहरें आईं और टकराईं।

Barsaat (1949)

आर.के. फिल्म के प्रतीक चिन्ह की उत्पत्ति के पीछे एक कहानी है। इसकी शुरुआत बरसात फिल्म के एक दृश्य से हुई। वह दृश्य इतना सुंदर था: एक पुरुष वायलिन बजा रहा है और एक महिला उसकी बाहों में गिर पड़ती है। वह एक हाथ में वायलिन और दूसरे हाथ में महिला को इतनी खूबसूरती से थामे हुए है कि मुझे लगा कि यह सृष्टि की संपूर्णता का प्रतीक हो सकता है, और इसलिए मैंने इसे आर.के. फिल्म्स का प्रतीक चिन्ह बना दिया। बरसात मेरी पहली बड़ी बॉक्स ऑफिस सफलता थी। इसमें योगदान देने वाले कई लोग नए थे। मैंने तब तक सिर्फ एक ही फिल्म बनाई थी। यह शंकर-जयकिशन का पहला संगीत था, शैलेंद्र और हसरत जयपुरी की गीतकार के रूप में पहली फिल्म थी, रामानंद सागर की मेरे लिए पहली फिल्म थी, और निम्मी भी नई थीं। बरसात मेरी पहली ऐसी फिल्म

थी जिसके लिए लता मंगेशकर ने गीत गाए थे। संगीत ने भी फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

~

रामानंद सागर द्वारा लिखित यह प्रेम कहानी, जो बाद में निर्माता-निर्देशक भी बने, उन दिनों में प्रेम की समझ के विभिन्न आयामों को तलाशने का प्रयास करती है। इसके प्रेम दृश्यों ने हिंदी सिनेमा में रोमांस और जुनून के चित्रण में एक नया आयाम स्थापित किया, और फिल्म के रोमांटिक माहौल को शंकर जयकिशन के संगीत निर्देशन और शैलेंद्र और हसरत जयपुरी के गीत लेखन ने और भी बढ़ा दिया।

राज कपूर ने नरगिस को गले लगाते हुए एक पल को कैमरे में कैद किया और उसे आर.के. फिल्म्स के लोगो में बदल दिया, ताकि यह आलिंगन उनके जीवनकाल के बाद भी अमर रहे! 'आग' और 'अंदाज़' दोनों फिल्मों में नरगिस को एक ऐसे दौर में आधुनिक लड़की के रूप में दिखाया गया, जब नायिकाएँ बहुत पारंपरिक हुआ करती थीं। यह कोई क्रांतिकारी कदम नहीं था; यह एक स्वाभाविक चयन था क्योंकि नरगिस स्वभाव से ही ऐसी थीं। वह उन गिनी-चुनी नायिकाओं में से एक थीं जिन्होंने कॉन्वेंट में शिक्षा प्राप्त की थी। वह कॉलेज जाने वाली लड़की थीं और अगर फिल्मों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित न किया होता, तो वह कॉलेज में पढ़ रही होतीं। नरगिस अपनी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती थीं।

राज कपूर और नरगिस के बीच के गहरे आकर्षण को भांपते हुए, नरगिस की मां जद्दन बाई ने अपनी बेटी को बरसात की शूटिंग के लिए कश्मीर जाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। अंततः, राज कपूर को समझौता करना पड़ा और सभी महत्वपूर्ण दृश्यों की शूटिंग महाबलेश्वर में ही करनी पड़ी। बरसात में, आग की तरह ही, युवावस्था और प्रेम का विषय था। इसका प्रसिद्ध प्रेम दृश्य आधुनिक भारतीय सिनेमा के सबसे रोमांटिक दृश्यों में से एक माना जाता है। इसमें दर्शाए गए जुनून की तीव्रता लगभग हिंसात्मक लगती है, लेकिन यह न तो आपत्तिजनक है और न ही अटपटा, क्योंकि प्रेम को पवित्रता से देखने का इसका दृष्टिकोण अत्यंत सच्चा है।

आवारा (1951)

आवारा उस दौर में आई जब फिल्मों का स्वरूप बिलकुल अलग था। हम पर अभी भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रभुत्व के अवशेष थे और हम एक नई सामाजिक व्यवस्था चाहते थे। मैंने मनोरंजन और जनता तक अपने संदेश को पहुंचाने के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की। आवारा में सब कुछ था। इसमें वर्गभेद का विषय था। इसमें स्वतंत्रता के बाद के युग की गरीबी में लिपटी एक बेहतरीन किशोर प्रेम कहानी थी। यह कीचड़ में कमल की तरह खिली और लोगों के सामने एक ऐसी चीज़ के रूप में आई जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी। क्या ऐसे हालात में किसी नौजवान के साथ ऐसा हो सकता है? होठों पर गीत और हाथ में फूल लिए उसने सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल के सभी कष्टों का सामना किया। जनता जो बदलाव चाहती थी, वह उन्हें उस नौजवान के हौसले में दिखाई दिया जो आवारा था, 'आवारा'। आवारा नवजन्मित गणतंत्र की मासूमियत का जश्न मनाती है, जो कठिन दुनिया से तालमेल बिठाना सीख रहा है।

राज कपूर ने अपना सबसे अहम फैसला तब लिया, जिसने उनके भाग्य की रूपरेखा तय कर दी, जब उन्होंने के.ए. अब्बास से 'आवारा' की पटकथा खरीदी, जिन्होंने पहले इसे दिग्गज फिल्म निर्माता महबूब खान को पेश किया था। खान ने पटकथा सुनी थी, लेकिन अपना फैसला टाल दिया था। जब लेखकों, अब्बास और वी.पी. साठे ने राज कपूर को पटकथा पढ़कर सुनाई, तो उन्होंने चुपचाप सुना और कहानी खत्म होते ही कहा, 'बस, यह पटकथा मेरी है!'

इस प्रोजेक्ट का मुख्य बिंदु, ज़ाहिर है, इसकी कास्टिंग थी। यह पिता-पुत्र के बीच एक क्लासिक टकराव था, और नाटकीयता की दृष्टि से एकमात्र उपयुक्त कास्टिंग पृथ्वीराज और राज कपूर की थी। भारतीय फिल्म उद्योग के दिग्गज अभिनेता पृथ्वीराज कपूर को राजी करना मुश्किल था। उन्होंने पहले तो यह कहते हुए भूमिका स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि पृथ्वीराज नायक के पिता की भूमिका नहीं निभा सकते। अब्बास ने तुरंत जवाब दिया, 'नहीं, आप नायक के पिता की भूमिका नहीं निभा रहे हैं। नायक के पुत्र की भूमिका राज कपूर निभा रहे हैं!' इस प्रकार आवारा की शूटिंग शुरू हुई।

तब तक पापा ने सहयोगियों की एक भरोसेमंद टीम बना ली थी, जिनमें मार्क्सवादी उपन्यासकार, राजनीतिक स्तंभकार और नवयथार्थवादी पटकथा लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास और शैलेंद्र शामिल थे, जो कवि और कपूर के कई मशहूर गीतों के लेखक थे। आवारा फिल्म ने उस समय के प्रासंगिक मुद्दों, आजादी के बाद बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और आपराधिक न्याय प्रणाली में भ्रष्टाचार को उठाया। समाजवाद के संदेश को दमदार नाटक, भावपूर्ण संगीत और शानदार अभिनय के साथ पेश करने वाली इस फिल्म ने कल्ट फिल्म का दर्जा हासिल कर लिया।

राज कपूर की कई फिल्मों की तरह, इस फिल्म में भी गरीबों की मुसीबतें अमीरों के कुकर्मों से उपजी दिखाई गई हैं। एक संवाद में, कपूर का किरदार आधुनिक समाज के चमत्कार का वर्णन करते हुए कहता है: 'पूंजीपति, कालाबाजारी करने वाले, मुनाफाखोर और साहूकार, ये सब कौन हैं? सब मेरे जैसे चोर हैं।' फिल्म के एक अदालती दृश्य में, नायक न्यायाधीश से भावुक होकर कहता है, 'मैं हत्यारा हूँ, मुझे उसी के लिए सज़ा दीजिए। लेकिन मैं जन्म से अपराधी नहीं था। मैं भी पढ़ना चाहता था और वकील या न्यायाधीश बनना चाहता था, लेकिन जिस मोहल्ले में मैं पला-बढ़ा, वहाँ से एक खुला नाला बहता था, जहाँ से अपराध पनपता था। मुझे चाहे जो भी भूल जाइए, लेकिन अपने बच्चों को अपराध के इन कीटाणुओं से बचाइए।' इस दौर को फिल्म में न सिर्फ आज़ादी के बाद के भारत के आशावाद और लोगों की आकांक्षाओं के साथ-साथ समाज पर कलंक की तरह फैल रहे भ्रष्टाचार की भयावहता और अंधकार के साथ दर्शाया गया है।

इसी फिल्म से राज कपूर को चैपलिन जैसी आवारा की छवि मिली, जो शहर और उसकी कठोर वास्तविकताओं में संघर्ष कर रहा था, और यह छवि बाद की कई फिल्मों में उनके साथ बनी रही। पृथ्वीराज कपूर और के.एन. सिंह ने भी शानदार अभिनय किया। 1930 के दशक से 1950 के दशक तक, फिल्मों का स्वरूप और विषयवस्तु दोनों धीरे-धीरे विकसित हुए और उनमें परिष्कार बढ़ा। राज कपूर की फिल्म आवारा (1951) में पहली बार इस्तेमाल किया गया स्वप्न दृश्य, नए, स्वतंत्र भारत में आम आदमी के लिए आशा का प्रतीक बन गया। इसका गीत 'मुझको चाहिए बहार' राजू (राज कपूर) के माध्यम से आम लोगों की इच्छाओं को उजागर करता है। इसमें प्रकृति की तुलना में सामाजिक परिवेश को व्यक्ति के विकास पर अधिक प्रभाव डालने वाला दिखाया गया है। इस विषय ने हर जगह गरीब जनता

के दिलों को छू लिया। फिल्म आवारा ने लौह-पर्दे के पीछे भारतीय फिल्मों के लिए एक नया रास्ता खोल दिया।
रूस में, इसे लगभग राष्ट्रीय फिल्म का दर्जा मिल गया था। नरगिस और राज कपूर का वहाँ ज़बरदस्त स्वागत हुआ, उनकी लोकप्रियता जवाहरलाल नेहरू की लोकप्रियता के बराबर थी। एक बार, ख्वाजा अहमद अब्बास ने निकिता ख्रुश्चेव से आवारा की असाधारण लोकप्रियता का कारण पूछा। ख्रुश्चेव का मानना था कि रूस ने विश्व युद्ध का पूरा बोझ उठाया था और सबसे ज़्यादा जानमाल का नुकसान झेला था। हालाँकि कई रूसी फिल्म निर्माताओं ने युद्ध पर बेहतरीन फिल्में बनाईं, लेकिन उन सभी ने दर्शकों को उनके नुकसान की याद दिलाई। आवारा के हंसमुख राज कपूर ने गाया, 'ज़ख्मों से भरा सीना है मेरा, हस्ती है मगर ये मस्त नज़र' (मेरा दिल भले ही दुखों से भरा हो, लेकिन मेरा नज़रिया हमेशा सकारात्मक रहता है)। ख्रुश्चेव ने कहा कि इससे उनकी जनता को उम्मीद मिली और उन्हें अपने दुख भुलाने में मदद मिली। ख्वाजा अहमद अब्बास ने अपनी आत्मकथा, 'आई एम नॉट एन आइलैंड' में इस घटना का ज़िक्र किया है।

आह (1953)

मैं अपनी असफलताओं को नहीं भूलूंगा। 'आह' के प्रीमियर तक, यानी उसके तीसरे शो तक, मुझे उसका अंजाम जानने के लिए इंतज़ार नहीं करना पड़ा। मैं बॉम्बे के ओपेरा हाउस में पहले शो के दौरान अंधेरे सभागार में मौजूद था, और वहाँ का माहौल मुझे बार-बार यही कह रहा था, 'तुम्हारी फिल्म फ्लॉप है।' फिल्म निर्माण के वर्षों के अनुभव से आप पहले शो के दौरान सभागार के उस जीवंत, धड़कते माहौल को समझ सकते हैं। यह दर्शकों की प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है। 'आह' फ्लॉप हो गई। उसके बाद 'बूट पॉलिश' आई, और मैं फिर से सांस रोककर बैठा था। वह चली। फिर 'जागते रहो' पर्दे पर आई और उस अंधेरे सभागार का वह जीवंत, धड़कता माहौल मुझे फिर से परेशान करने लगा। इस बार जो उसने मुझे बताया, उसे मैं स्वीकार नहीं कर सका। इसलिए, कार्लोवी वेरी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में 'जागते रहो' को मिला ग्रैंड प्रिक्स पुरस्कार मेरे लिए दोगुना अविस्मरणीय है।

बूट पॉलिश (1954)

इस देश के युवाओं में हर गुण मौजूद है। वे ईमानदार और शिक्षित हैं, और अगर उन्हें अवसर दिए जाएं तो वे देश के बेहतरीन नागरिक बन सकते हैं। लेकिन कुछ सामाजिक दबावों ने हमेशा उन्हें जकड़ रखा है और वे एक ऐसी स्थिति में फंस

गए हैं जहां वे असहाय हैं। सामाजिक दबावों और आर्थिक संसाधनों की कमी से जूझते हुए भी, वे अपने हाथों में आशा की किरण लिए एक नई राह की ओर बढ़ रहे हैं। एक दिन जरूर आएगा जब ये युवा अपने लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

~

बूट पॉलिश में इतालवी नव-यथार्थवादियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अनाथ बच्चों, एक दुष्ट चाची और सोने के दिल वाले एक तस्कर की कहानी पर आधारित यह फिल्म एक भावुक कथानक है और उनकी विशिष्ट प्रेम कहानियों से बिलकुल अलग है। एक दृश्य में, एक भाई-बहन ट्रेन में भीख मांग रहे हैं और विकलांग होने का नाटक कर रहे हैं, तभी अचानक लड़का भूल जाता है कि उसे अंधा होना है। उसकी छोटी बहन उपहास उड़ाते हुए कहती है, 'क्या कोने में ऊंघ रहा वह फटेहाल आदमी, बाकी यात्रियों की तरह, महान राज कपूर नहीं है?' वह आगे कहती है, 'आजकल तो हर कोई राज कपूर जैसा दिखता है।'

राज कपूर एक ऐसे शख्स थे जो दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करने में माहिर थे, एक अभिनेता के तौर पर वे अपनी छाप छोड़ने में सक्षम थे और एक निर्देशक के रूप में भी वे काफी प्रभावी थे, जो कलाकारों और क्रू को अपने इशारों पर नचाते थे। लेकिन जैसा कि बूट पॉलिश में उनकी छोटी सी भूमिका से संकेत मिलता है, वे अपने मशहूर आम आदमी वाले व्यक्तित्व और अपने वास्तविक, रोजमर्रा के जीवन के बीच के अंतर से भली-भांति परिचित थे।

जैसा कि हम जानते हैं, 'बूट पॉलिश' राज कपूर की अद्भुत संगीत प्रतिभा का बेहतरीन उदाहरण है। यह इस बात का प्रमाण है कि उनका मानना था कि बॉक्स ऑफिस पर सफलता के मामले में संगीत ही सबसे अहम भूमिका निभाता है। सत्तर मिनट की इस फिल्म का निर्देशन राज कपूर के सहायक प्रकाश अरोरा ने किया था और इसमें कोई गीत नहीं थे। राज कपूर ने फिल्म देखी और सोचा: यह फ़िल्म चलेगी कैसे? फिर उन्होंने फिल्म में अपना योगदान देने का फैसला किया और कहानी में गीत शामिल किए, जिनमें 'ननहे मुन्हे बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है' जैसे सदाबहार गीत भी शामिल थे। इस तरह उन्होंने प्रकाश अरोरा की फिल्म को सफल बनाया।

राज कपूर की नजर उन छोटी-छोटी कमियों पर गहरी थी जो वंचितों का मनोबल तोड़ देती हैं। फिल्म 'बूट पॉलिश' के एक और दृश्य में, कैमरा राशन के लिए कतार में खड़े लोगों पर फोकस करता है। यह हमारे देश के वंचितों की एक झलक है, जो जरूरत में एकजुट हैं। अचानक बारिश शुरू हो जाती है और वंचित फिर से बंट जाते हैं। कुछ लोग छाता निकालते हैं और कुछ भीग जाते हैं। सबसे गरीब लोगों की यह दयनीय स्थिति आपको झकझोर देती है, लेकिन राज कपूर की फिल्म होने के कारण यह आपको हंसाती भी है, और जल्द ही एक मधुर गीत बजने लगता है। राज कपूर का काम एक विचारधारा थी, अगर इसे विचारधारा कहा जा सकता है, जिसमें भावनात्मकता और मनोरंजन का मिश्रण था; उन्होंने अपनी सामाजिक चिंताओं को हास्य, संगीत और मेलोड्रामा के साथ पेश किया। आजादी के बाद की सामूहिक निराशा के जो समाधान उन्होंने सुझाए, उनका राजनीति से कम और प्रेम से अधिक संबंध था। हालांकि यह प्रवृत्ति उनके अधिक राजनीतिक सहयोगियों को निराश करेगी, लेकिन इससे भारतीय सिनेमा को दुनिया से परिचित कराया जाएगा और बॉलीवुड की नींव रखी जाएगी, जो भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक राजदूत है।

श्री 420 (1955)

श्री 420 में चैपलिन जैसे किरदार की वापसी होती है, जो अमीरों की एकांत दुनिया और गरीबों के खुलेपन या खुले दिल के बीच का अंतर दिखाता है। यह फिल्म आवारा के विषय पर आधारित एक रूपांतरण थी। सिनेमाई सामाजिक यथार्थवाद,

जो अंततः कमजोर की जीत से स्पष्ट होता है, उन्हें जनता के बीच लोकप्रिय बनाता है। उनकी फिल्में सादगी की ओर लौटने का आह्वान करती हैं। फिल्म का शीर्षक भारतीय दंड संहिता की धारा 420 से लिया गया है, जिसके तहत धोखाधड़ी और जालसाजी करने वालों पर मुकदमा चलाया जाता है। वास्तव में, शहर को एक बुराई भरे वातावरण के रूप में चित्रित करना 1950 के दशक में एक प्रमुख विषय बन गया था। श्री 420 उच्च वर्ग के भ्रष्टाचार की और भी तीखी आलोचना थी, और यह इस बात की गहरी समझ व्यक्त करती है कि गरीबों के खिलाफ जटिल रूप से रची गई दुनिया में नैतिक रूप से व्यवहार करना कितना कठिन है, यहां तक कि इसके नायक जैसे कॉलेज की डिग्री वाले ईमानदार लोगों के लिए भी।

एक दृश्य ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखे गए तीखे संवादों के माध्यम से कहानी के विषय को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। राजू (राज कपूर) इलाहाबाद का एक अनाथ है, जो कई सपनों के साथ मुंबई आया है। वह ईमानदार और मेहनती है। वह यह बात सड़क किनारे भीख मांगने वाले एक भिखारी से कहता है, जो मुंबई में जीवन यापन के मामले में उसका तुरंत दोस्त, मार्गदर्शक और दार्शनिक बन जाता है। उस भीड़भाड़ वाली सड़क पर, लंगड़ा भिखारी ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसके पास एक अजनबी के लिए समय है। राजू के मुंबई में ईमानदारी से मेहनत करके जीवन यापन करने के इरादे को सुनकर, वह कहता है कि चूंकि राजू पढ़ा-लिखा, मेहनती और युवा है, इसलिए उसे सड़क पर भीख मांगनी चाहिए: 'तुम पढ़े लिखे हो, मेहनती हो, जवान हो, तो तुम्हें मुंबई में भीख मांगनी चाहिए।'

श्री 420 में, राज (राज कपूर) विद्या (ज्ञान) और माया (नादिरा द्वारा प्रस्तुत भ्रम) के बीच उलझा हुआ है, क्योंकि वह अपराध के भंवर में फंस जाता है। अंत में, उसे एहसास होता है कि ईमानदार जीवन जीना महत्वपूर्ण है। राज कपूर की फिल्में क्लासिक हैं क्योंकि वे मनोरंजन तो करती ही हैं, साथ ही रोमांटिक चमक के नीचे वर्ग संघर्ष को भी गहराई से दर्शाती हैं। राज कपूर ने अपनी कहानी की सकारात्मक सरलता से बॉक्स ऑफिस पर प्रतिद्वंद्वियों को मात दी। श्री 420 के पात्र भोले-भाले और क्षमाशील हैं। उनकी सांस्कृतिक मूल्यों को उनकी दयनीय परिस्थितियों से कोई चुनौती नहीं मिलती। वे 'दिल का हाल सुने दिलवाला' और 'रामैया वस्तावैया' जैसे गीतों के साथ गाते, हंसते और अपनी भावनाओं का जश्न मनाते हैं, और उनके मन में कोई द्वेष नहीं है!
जैसे-जैसे एक के बाद एक घटनाएँ सामने आती हैं, वे हमें एक बेचैन अमीर वर्ग और भरोसेमंद, खुशमिजाज गरीब वर्ग के विरोधाभासी पहलुओं से रूबरू कराती हैं। यह फिल्म राज कपूर के संदेश को उनके जाने-माने रोमांटिक अंदाज में पेश करती है: कि मूल्य मानवीय भावनाओं में निहित होते हैं, न कि व्यावहारिक प्रकृतिवाद में। उन्हें पूरा विश्वास था कि प्रेम और करुणा ही सब कुछ हैं। पापा को शारीरिक हिंसा की कोई ज़रूरत नहीं थी। मुझे लगता है कि यही राज कपूर की सभी फिल्मों की सबसे व्यापक विशेषता है। उनके विषयों की आत्मा और नैतिक बल हमेशा कथा, पात्रों, कथानकों और घटनाओं पर हावी रहते थे। आग से लेकर मेहंदी तक, उनकी सभी फिल्मों के विषयों में एक निश्चित निरंतरता है।

Jagte Raho (1956)

आजादी के बाद हमारे राजनीतिक नेताओं द्वारा पैदा किए गए जोश से हर कोई उत्साहित था, और वे अपने सपनों का भारत बनाना चाहते थे। उन्होंने आजादी के लिए लड़ाई लड़ी थी, लेकिन फिर उन्हें इसे 'हासिल' भी करना था। और इसी तरह मैं धीरे-धीरे सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध सिनेमा की ओर बढ़ा और आवारा, बूट

पॉलिश, श्री 420 और जागते रहो जैसी फिल्में बनाईं। हम एक सुधरे हुए सामाजिक व्यवस्था, एक खास तरह के अनुशासन, गरीबी उन्मूलन के लिए शिक्षा आदि चाहते थे। मैंने उस माहौल और लोगों पर उसके प्रभाव को देखा और उसे रोमांटिकता और अपनेपन की एक खास संवेदनशीलता, मानवतावाद के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की, और कुल मिलाकर यह प्रेम के रूप में सामने आया।

इस हिंदी-बंगाली द्विभाषी फिल्म को बंगाली संस्करण में 'एक दिन रात्रे' के नाम से जाना जाता था। आर.के. फिल्म्स की नवयथार्थवादी शैली की इस फिल्म ने सामाजिक असमानता पर एक संदेश देने के लिए रूढ़ियों को चुनौती दी, जिसमें एक गरीब किसान के पानी की तलाश में शहर आने की एक दिलचस्प और मनोरंजक कहानी दिखाई गई है।

राज कपूर के अभिनय में चैपलिन की तरह दिखने वाला आवारा किरदार आलोचकों को लगातार आकर्षित करता रहा। जागते रहो एक ऐसी फिल्म है जो एक साधारण किसान (राज कपूर) की नज़र से एक रात में घटित भ्रष्ट शहरी जीवन पर व्यंग्य करती है। एक गिलास पानी की तलाश में और बिना किसी गलती के कानून से भागते हुए, वह एक रिहायशी फ्लैट में रहने लगता है जहाँ उसके लगभग हर घर में तरह-तरह की आपराधिक गतिविधियाँ चल रही होती हैं। उसे इतना डराया-धमकाया जाता है कि वह इसे और सहन नहीं कर पाता और फिल्म के अंत में हाथ में लाठी उठाकर यही कहता है। इतनी लंबी फिल्म में, आमतौर पर संवादों के शौकीन राज कपूर अंत तक एक शब्द भी नहीं बोलते। फ्लैटों का वह ब्लॉक पूरे समाज का प्रतीक है, जहाँ केवल बच्चे और गृहिणियाँ ही निर्दोष और ईमानदार पात्र हैं। उसका यह आक्रोश ऐसे समाज की निंदा है।

उनकी गहरी समझ और कलात्मक प्रतिभा ही राज कपूर को जागते रहो की थीम तक ले आई। राज कपूर किसी अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रतिष्ठित ग्रैंड प्रिक्स

पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय निर्माता थे। यह समारोह कार्लोवी वेरी में आयोजित हुआ, जहां राज कपूर को स्टैंडिंग ओवेशन मिला। 1956 में जागते रहो की बॉक्स ऑफिस पर असफलता राज कपूर के लिए एक बड़ा झटका था। उन्होंने कहा था, 'एक फ्लॉप दो हिट फिल्मों की मेहनत को बर्बाद कर सकती है।' कुछ साल बाद जब उन्हें पता चला कि फिल्म दोबारा रिलीज होने पर सफल रही, तो राज कपूर ने पूछा, 'और इसे किसने देखा?' उन्होंने आह भरते हुए कहा, 'एक फिल्म निर्माता को अपनी रचना से मुनाफा और उसकी स्वीकार्यता देखने के लिए दस-बारह साल इंतजार नहीं करना चाहिए।' जागते रहो के साथ ही नरगिस और राज कपूर का साथ खत्म हो गया।

Ab Dilli Door Nahin (1957)

एक बार जब जवाहरलाल नेहरू की मुलाकात राज कपूर से हुई, तो उन्होंने बच्चों के लिए फिल्मों की कमी पर दुख व्यक्त किया और वादा किया कि अगर ऐसी कोई फिल्म बनती है, तो वे शूटिंग के लिए अपना कीमती निजी समय देंगे। इसके जवाब में, राज कपूर ने 'अब दिल्ली दूर नहीं' की शूटिंग शुरू की। यह फिल्म एक ऐसे गांव के लड़के की कहानी है जो अपने पिता के अन्यायपूर्ण ढंग से गिरफ्तार होने पर न्याय पाने के लिए दिल्ली की ओर पैदल यात्रा शुरू करता है। उसके पास न तो पैसा है, न ही कोई साधन, बस यही विश्वास है कि चाचा नेहरू उसे न्याय दिलाने में मदद करेंगे। अपनी लंबी यात्रा के दौरान, वह कई उदार लोगों से मिलता है और अंत में वह नेहरू से मिलने में सफल हो जाता है।

Jis Desh Main Ganga Behti Hai (1960)

यह स्वतंत्रता के बाद का दौर था। कई ऐसे कारक थे जिन्होंने युवाओं के मन को प्रभावित किया, और उन्होंने मुझे भी प्रभावित किया। पंडितजी (नेहरू) ने कहा था कि वे चाहते हैं कि इस देश का हर भारतीय राष्ट्र के लिए कुछ करे, इसे उस खूबसूरत सपने के अनुरूप बनाए जो उन्होंने देखा था। वे एक दूरदर्शी व्यक्ति थे और मैंने उनका अनुसरण करने का प्रयास किया, फिल्मों के माध्यम से अपनी पूरी कोशिश की।

~

'जिस देश में गंगा बहती है' फिल्म अपराधियों के आत्मसमर्पण और राष्ट्रवादी मुख्यधारा में उनकी वापसी की कहानी है। संयोग से, जिस समय राज कपूर ऊटी

में 'जिस देश में गंगा बहती है' के अंतिम भाग की शूटिंग कर रहे थे, उसी समय गांधीजी के प्रमुख शिष्य विनोबा भावे से प्रेरित होकर चंबल के डाकू मध्य प्रदेश सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण कर रहे थे। फिल्म में एक मार्मिक दृश्य है, जिसमें नाना पालसिकर द्वारा अभिनीत एक बूढ़ा सेवानिवृत्त डाकू चारपाई पर लेटा हुआ अपने साथियों की पत्नियों और बहनों से मजाक कर रहा है। उसे देखकर एक युवा डाकू कहता है, 'हमने राजाओं को शासन करते देखा है, मुगलों को शासन करते देखा है, अंग्रेजों को शासन करते देखा है, डाकुओं के शासन का समय कब आएगा?' इस पर बूढ़ा डाकू जवाब देता है, 'मूर्ख, राजा, मुगल और अंग्रेज आते-जाते रहते हैं, लेकिन हम डाकू हमेशा राज करते हैं।'

संगम (1964)

लंदन में चार महीने बिताने के बाद मैं बॉम्बे लौटा, संगम की रिलीज़ से ठीक चार दिन पहले, जो पहले दिल्ली में रिलीज़ होने वाली थी। यह एक अजीब क्षण था, संघर्ष और उस संघर्ष की सफलता के बीच फंसा हुआ। मन में आशंका और आश्वासन दोनों थे। आशंका इसलिए क्योंकि हर फिल्म निर्माता को रिलीज़ से ठीक पहले ऐसा ही महसूस होता है। आश्वासन इसलिए क्योंकि मैंने अभी-अभी अपने दिल्ली के वितरक से लंबी दूरी की बातचीत समाप्त की थी, जिन्होंने मुझे बताया कि अग्रिम बुकिंग काउंटरों पर शुक्रवार और शनिवार की बिक्री अभूतपूर्व थी। अब, कॉटेज में अकेले बैठे हुए, मैं कागज़ पर यह लिखने की कोशिश कर रहा हूँ कि संगम का भारत में किस तरह का प्रभाव पड़ने की उम्मीद है और विदेशों में, इसे देखने वाले कई पश्चिमी लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ चुका है। मेरे सामने ट्विकेनहैम फिल्म स्टूडियो के ध्वनि निदेशक श्री स्टीफन डाल्बी का एक पत्र पड़ा है, जिसे मैं यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा, क्योंकि यह पश्चिमी मानसिकता पर संगम के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक उपयुक्त प्रारंभिक बिंदु प्रदान करता है।

प्रिय श्री राज कपूर,

आपकी फिल्म 'संगम' का काम पूरा हो चुका है, इसलिए मैं आपके साथ काम करने का आनंद और इस फिल्म में मेरी रुचि को व्यक्त करना चाहता हूँ। फिल्म की तकनीकी गुणवत्ता, विशेष रूप से श्री अलाउद्दीन खान द्वारा की गई साउंड रिकॉर्डिंग, ने मुझे बेहद प्रभावित किया है। फिल्म में पोस्ट-सिंक्रोनाइजेशन की बहुत कम आवश्यकता होना सराहनीय है। साउंड इफेक्ट्स का इस्तेमाल फिल्म में नाटकीय प्रभाव पैदा करने के लिए किया गया है और ये कहानी में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। संगीत की गुणवत्ता और रचना उत्कृष्ट है।

फिल्म की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र लंदन में ट्विकेनहैम फिल्म स्टूडियो और टेक्नीकलर लिमिटेड दोनों जगह हमारे तकनीशियनों, आर.के. यूनिट द्वारा बनाए गए प्रभाव का एक सटीक नमूना है। तकनीकी विशेषज्ञ होने के नाते, वे राधू कर्माकर, अलाउद्दीन और एम.आर. अचरेकर के काम की गुणवत्ता से बेहद प्रभावित थे, जिसकी उपलब्धि को उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर का बताया। वे संगम की उच्च तकनीकी उत्कृष्टता से भी प्रभावित थे। जैसी कि टेक्नीकलर के श्री जॉर्ज गन ने कहा, 'श्री कपूर, आपकी फिल्म में क्या गजब का प्रोडक्शन है!' यह कहना गलत होगा कि हम इससे प्रभावित नहीं हुए; दुनिया के कुछ शीर्ष फिल्म तकनीशियनों से यह प्रशंसा वास्तव में सराहनीय है। लेकिन मैं यहाँ सिर्फ इसी के बारे में नहीं लिखना चाहता। यह फिल्म, इसकी

विषयवस्तु और निर्देशन की बारीकियां ही हैं जिन्होंने पश्चिमी आम दर्शकों पर इतना गहरा प्रभाव डाला। 'आंसर प्रिंट' तैयार होने के बाद, हमने ट्विकेनहैम के पोस्ट-सिंक्रोनाइजेशन थिएटर में तैयार फिल्म का एक नमूना पूर्वावलोकन किया था। यह एक दिन पहले की सूचना पर आयोजित किया गया एक आकस्मिक पूर्वावलोकन था। फिर भी थिएटर खचाखच भरा हुआ था। बैठने की जगह नहीं थी और देर से आए एक अंग्रेज़ दंपति प्रोजेक्शन बूथ तक गए और वहाँ बने छोटे से कमरे से पूरी फिल्म देखी। शो के बाद, वहाँ आम चर्चा हुई। एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'श्री कपूर, आपने इस फिल्म का इतना बड़ा हिस्सा यूरोप में क्यों फिल्माया?' क्यों? क्योंकि, पहली बात तो यह एक नया स्थान था। दूसरी बात, आज बहुत से भारतीय विदेशों में रहते हैं, इंग्लैंड के साथ-साथ जर्मनी, फ्रांस, इटली और अन्य जगहों पर। वे अपने साथ भारत की संस्कृति लेकर चलते हैं और उसे पश्चिमी जीवन के व्यापक संदर्भ में ढाल लेते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इस फिल्म में मैं भी इसी तरह का समावेश करना चाहता था। इस फिल्म का नाम संगम रखना कोई संयोग नहीं है।

Raj Kapoor with Rajendra Kumar and Vyjayanthimala in Sangam

इसका नाम 'घरौंदा' भी हो सकता था, जिस नाम से मूल पटकथा लिखी गई थी। इसका नाम 'हम तीनों' भी हो सकता था, इत्यादि। लेकिन बात यह नहीं है। संगम महज़ एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह एक भारतीय अवधारणा का प्रसार है— आत्माओं का मिलन, ठीक वैसे ही जैसे पवित्र नदियाँ गंगा और यमुना मिलती हैं और तीसरी नदी, पौराणिक सरस्वती, त्रिवेणी पर विलीन हो जाती है। उदाहरण के लिए, कहानी को ही लीजिए। पश्चिम इसे कैसे देखता? अगर गोपाल, जो राधा से प्रेम करता है और राधा भी उससे प्रेम करती है, एक पश्चिमी होता, तो वह आँख बंद करके राधा को अपना बना लेता। संगम में दिखाए गए संघर्ष जैसा कोई संघर्ष नहीं होता, क्योंकि पश्चिमी मूल्य अलग हैं। अगर वे पश्चिमी होते, तो उनका (गोपाल और राधा का) प्रेम शायद पूर्ण हो जाता। लेकिन यहाँ प्रेम मूल रूप से आध्यात्मिक

है, और त्याग में यह एक दिव्य भावना में परिवर्तित हो जाता है, जो भारतीय मूल्यों का मूलभूत आधार है। इसीलिए संगम की रिलीज से ठीक पहले मैंने एक बात पर विशेष जोर दिया था—संगम कोई मनोरंजन का खजाना नहीं है। संदेश देने वाला मनोरंजन भी नहीं। जब आप इसकी ऊपरी चमक को भेदेंगे, जब इस फिल्म को देखने से उत्पन्न होने वाली अंतर्धाराएं आपके भीतर समा जाएंगी, तब आपको पता चलेगा कि संगम मूल रूप से एक बहुत ही गंभीर और एक बहुत ही भारतीय फिल्म है। यह त्रिवेणी, त्रिमूर्ति की अवधारणा को तीन मनुष्यों के संदर्भ में प्रस्तुत करती है।

उदाहरण के लिए, गीत 'प्रेम पत्र' की पंक्तियाँ लें: 'तुझे गंगा में समझूंगा... तुझे यमुना में समझूंगा... तू दिल के पास है इतनी... तुझे अपना में समझूंगा... अगर मर जाऊं रूह भटकेगी... तेरे इंतज़ार में... इंतज़ार में... इंतज़ार में (मैं तुम्हें पवित्र गंगा के समान स्वीकार करता हूँ... मैं तुम्हें पवित्र यमुना के समान स्वीकार करता हूँ... तुम मेरे दिल के इतने करीब हो... मैं तुम्हें अपना मानूंगा... अगर मैं मर जाऊं, तो मेरी आत्मा तुम्हारे लिए भटकती रहेगी... तुम्हारा इंतज़ार करती रहेगी... तुम्हारा इंतज़ार करती रहेगी... तुम्हारा इंतज़ार करती रहेगी)।' चूंकि हम इस विषय को मानवीय भावनाओं के संदर्भ में समझ रहे हैं, इसलिए यह स्पष्ट रूप से प्रियतम को संबोधित है, लेकिन फिर, उमर खय्याम, सूफी कवियों और कवि हाफ़िज़ की तरह, प्रियतम ईश्वर का दूसरा नाम है। और यह श्लोक अंत में उस दिव्यता को प्राप्त करता है जब प्रेमी की अस्थियों को गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम, त्रिवेणी संगम पर विसर्जित किया जाता है। या पेरिस में फिल्माए गए उस हास्यप्रद गीत को ही लीजिए। यह दृश्य, जिसे संयोगवश, इस फिल्म को देखने वाले पश्चिमी दर्शकों ने खूब सराहा, हमारे शास्त्रों में निहित सार को दर्शाता है—एक स्त्री, अपने विभिन्न रूपों में - पत्नी, माता, प्रेमिका, वेश्या, सहेली। यहाँ, पति पेरिस के एक नाइट क्लब में जाना चाहता है। पत्नी साथ आने की ज़िद करती है। वह मना कर देता है, कहता है कि यह सभ्य महिलाओं के लिए जगह नहीं है! वह व्यंग्य करती है और पूछती है कि क्या यह सभ्य पुरुषों के लिए जगह है? लेकिन वह ज़ोर देता है कि पुरुषों का मनोरंजन करना इन महिलाओं का काम है। वह जवाब देती है—और यही मुख्य बिंदु है—'क्या पति का मनोरंजन करना पत्नी का भी काम नहीं है? जो स्त्रियाँ ऐसा नहीं करतीं, वे अपने पतियों को खो देती हैं!'

संगम में मैंने पूरब और पश्चिम के ऐसे सामंजस्य को स्थापित करने का प्रयास किया है कि भारतीय दर्शक इसे सराह सकें और समझ सकें, साथ ही यह पश्चिमी दर्शकों को भी सोचने पर मजबूर कर सके। इससे मुझे लंदन में संगम देखने के बाद तीन आकर्षक युवतियों की कही बातें याद आती हैं, एक ऐसे मुद्दे पर जो

आमतौर पर पाश्चिमी दर्शकों के ध्यान में नहीं आता। यह बंदूक के भाव-विन्यास से संबंधित था। जब पति को पता चलता है कि वह सच्चे प्रेम में बाधा है, तो वह सबसे पहले रास्ते से हट जाना चाहता है। वह बंदूक उठा लेता है। लेकिन पत्नी के लिए वैवाहिक संबंध उसके पहले प्रेम की याद से कहीं अधिक पवित्र होते हैं। वह चाहती है कि उसका पति जीवित रहे, इसलिए बंदूक उसके हाथ में चली जाती है। और अंत में, जब प्रेमी को पता चलता है कि जब तक वह जीवित रहेगा, दुख ही रहेगा, तो वह बंदूक उठा लेता है। यह एक विशिष्ट भारतीय भाव-विन्यास है, और मुझे नहीं लगता था कि बहुत से लोगों ने इस पर ध्यान दिया होगा। हाँ, मुझे खुशी है कि संगम देखने वाले इतने अलग-अलग लोग इससे इतने अलग-अलग तरीकों से उत्साहित हुए हैं।

मैं अपनी फिल्म में साथ काम कर रही एक मशहूर अभिनेत्री को 'संगम' में एक भूमिका देना चाहता था। मैंने उन्हें एक टेलीग्राम भेजा और पूछा कि क्या वह मेरी फिल्म में भूमिका निभाने का खर्च उठा सकती हैं—या यूं कहें कि क्या वह ऐसा करना चाहती हैं। वह मद्रास में काम कर रही थीं, इसलिए मैंने उन्हें यह संदेश भेजा: 'बोल राधा बोल, संगम होगा की नहीं (हे राधा, क्या हम गंगा और यमुना की तरह मिलेंगे)?' कुछ दिनों तक कोई जवाब नहीं आया, लेकिन जब आया तो उसमें लिखा था, 'होगा... होगा... होगा (हम मिलेंगे... हम मिलेंगे... हम मिलेंगे...)!' यह उस समय आया जब मेरे गीतकार शैलेंद्र मेरे साथ बैठे थे, और इसी तरह उन्होंने लोकप्रिय गीत 'बोल राधा बोल, संगम होगा की नहीं' लिखा, जिसमें नायिका ने जवाब में गाया, 'होगा... होगा... होगा'।

Mera Naam Joker (1970)

'क्या किसी ने मेरा दिल देखा है?' फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के शुरुआती दृश्य में ये वाक्य मुझे बहुत प्रभावित करता है। कलाकार, यानी जोकर, अपने अतीत के सभी रिश्तों, उन सभी लोगों को आमंत्रित करता है जिनसे वह भावनात्मक रूप से जुड़ा रहा है। वह अपना आखिरी प्रदर्शन दे रहा है क्योंकि उसे पूर्वाभास हो गया है कि उसकी मृत्यु होने वाली है।

मुझे लगता है कि हम (कलाकार) शायद इस दुनिया के उन कुछ भाग्यशाली लोगों में से हैं जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि लोग हमारे दिल की बात जान पाते हैं, हम उनसे प्यार कर पाते हैं और बदले में प्यार पाते हैं। यह बात मुझ पर गहरा प्रभाव डालती है।

Simi with Rishi Kapoor in Mera Naam Joker

नजरिया बदलते ही सब कुछ कितना अलग हो जाता है! सालों पहले, जब 'मेरा नाम जोकर' सिर्फ के.ए. अब्बास द्वारा लिखा गया एक विशाल 'साहित्यिक कथानक' था, तब मैं इसे सरसरी तौर पर पढ़ा करता था और इसे फिल्माने की संभावना से ही लगभग डर जाता था! इसका पूरा ताना-बाना इतना विशाल और आकर्षक था, मनोरंजन जगत और कलाकारों का इतना विस्तृत परिदृश्य, कि इसे समझने में मुझे कुछ समय लग गया।

किसी भी विषय पर चर्चा शुरू करने से पहले, मैं अपने करीबी लोगों और यहां तक कि अजनबियों की प्रतिक्रिया जानने का प्रयास करता हूं। इसलिए, मैंने अपने श्रोताओं को 'जोकर' के अध्याय पढ़कर सुनाना शुरू किया। मैं जोकर के किरदार से बहुत प्रभावित था और देखना चाहता था कि लोग उस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। हर बार प्रतिक्रिया तुरंत और सकारात्मक रही।

जोकर का किरदार 'आम आदमी' का किरदार है—जैसा कि मैंने आवारा, श्री 420 और जिस देश में गंगा बहती है जैसी फिल्मों में निभाया है—लेकिन इसमें आध्यात्मिक आयाम भी समाहित हैं। वर्षों से मेरी कुटिया की दीवारों पर मानवता के सभी देवी-देवताओं और आध्यात्मिक गुरुओं के चित्र लगे हैं, और मैं हर रात उनके सामने सिर झुकाकर प्रार्थना करता हूँ। वहाँ बुद्ध, ईसा मसीह, पारसी और भारत के महान आध्यात्मिक गुरु गांधी जी हैं। जोकर का किरदार आध्यात्मिकता और निस्वार्थता का प्रतीक है; यह उन सभी महान आध्यात्मिक गुरुओं की शिक्षाओं को समाहित करता है जिन्होंने मानवता को सुख देने के लिए स्वयं कष्टमय जीवन व्यतीत किया। अपने बचपन से लेकर मृत्यु तक, जोकर अपने जीवन के एक चरण से दूसरे चरण में आगे बढ़ता है। जिन विभिन्न महिलाओं से वह प्रेम करता है, वे सभी उसके हृदय पर वियोग और अपूर्ण प्रेम के घाव छोड़ जाती हैं। लेकिन उसके होठों पर हमेशा एक मुस्कान रहती है। अपने आंसुओं को छुपाते हुए, वह लोगों को खुश करने, युवा और वृद्ध सभी के जीवन और दिलों में हंसी और आनंद फैलाने के अपने जीवन के मिशन को पूरा करने में जुट जाता है।

Padmini and Raj Kapoor in Mera Naam Joker

कहते हैं, 'हंसो तो दुनिया तुम्हारे साथ हंसेगी, रोओ तो अकेले रोओगे'। ये भी कहते हैं, 'अनेक प्रेम मिलकर जीवन बनाते हैं'। यही इस फिल्म का दर्शन है। फिल्म में जितनी चकाचौंध, भव्यता और दिखावे हैं, उतनी ही गहराई भी है। बचपन से ही मैं कलाकारों के जीवन से मोहित रहा हूँ, तब मुझे यह एहसास भी नहीं था कि एक दिन मैं भी उन्हीं की श्रेणी में शामिल होऊंगा। स्कूल के दिनों में मेरी जेब खर्च हमेशा कम पड़ती थी, क्योंकि जो थोड़ा-बहुत मिलता था, वो मैं टॉफियों और मिठाइयों पर खर्च कर देता था! लेकिन जब सर्कस शहर में आता था, तो मैं उसे देखने जरूर जाता था—चाहे मुझे तंबू के नीचे रेंगकर ही क्यों न जाना पड़े! और फिर फिल्में! मैंने कभी कोई फिल्म नहीं छोड़ी, चाहे मुझे टिकट के पैसे भी मांगने, उधार लेने या चुराने ही क्यों न पड़े। इसलिए, ये फिल्म तो बननी ही थी।

जब लोग मुझसे पूछते हैं कि मैंने 'मेरा नाम जोकर' क्यों बनाई और कैसे सोचा कि मैं एक गाथा जैसी विशाल पटकथा को एक फिल्म के दायरे में समेट सकता हूँ, तो मैं मन ही मन मुस्कुराता हूँ और अपने स्कूली दिनों को याद करता हूँ—अनगिनत विदूषक जिनके साथ और जिन पर मैं हँसा था, चार्ली चैपलिन, मार्क्स ब्रदर्स, बस्टर कीटन, जो ई. ब्राउन, लॉरेल और हार्डी जैसे पुराने दोस्त, और भी बहुत से लोग, सर्कस जो मैंने देखे थे, करतब दिखाने वाली लड़कियाँ और मज़ेदार करतब दिखाने वाले जानवर। और इस सारी हँसी के बीच, मुझे विदूषक की आँख के नीचे बहता एक आँसू याद आता है। ब्रह्मांड की आत्मा एक हँसी और एक आँसू में समाई है और मैंने अपने जीवन को पूरी तरह से जीते हुए इन दोनों से गहराई से प्रभावित हुआ हूँ।

मैं अपने काम के बारे में सिर्फ उन्हीं लोगों से बात करना पसंद करता हूँ जो मेरी मंशा को समझते हैं। बीस साल के फिल्म निर्माण के दौरान मैंने दस ऐसी फिल्में बनाई हैं जिनमें राज कपूर के दर्शन की झलक साफ नजर आती है। उस सारी मेहनत का नतीजा आखिरकार 'मेरा नाम जोकर' के रूप में सामने आया, जो मनोरंजनकर्ताओं की नजरों से देखी गई जिंदगी की गाथा है। यह ज़िंदगी की वो गाथा है जो चकाचौंध में जी जाती है, जैसे हम फिल्मी किरदार जीते हैं। और दूसरी तरफ, यह ज़िंदगी की वो गाथा भी है जो चकाचौंध से परे होती है—फिर से, जैसे हम फिल्मी किरदार अनुभव करते हैं। यह इंसान की आत्मा की आध्यात्मिक यात्रा है; उसकी आकांक्षाओं और उसकी स्वाभाविक सुंदरता की; उसके सुख-दुखों की; उसके प्रेम और कुंठाओं की; उसके चेहरे पर बनावटी मुस्कान की और उसके भीतर छिपी दर्द भरी शिकन की...

इतनी विशाल फिल्म बनाना, कल्पना की हर उड़ान को पर्दे पर उतारना आसान काम नहीं है, और 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण में कई बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन सभी चुनौतियों का समाधान बड़े पैमाने पर किया गया। भव्य सेट तैयार किए गए और लागत की परवाह किए बिना उन्हें खड़ा किया गया। 'फोर्सड पर्सपेक्टिव' और ऑप्टिकल इल्यूजन जैसे अद्भुत विजुअल इफेक्ट्स की कल्पना की गई और फिर हमने अपनी सभी कल्पनाओं को हकीकत में बदल दिया! यह शुरू से अंत तक कड़ी मेहनत थी और इसका असर भी पड़ा। हमारे अंदर पहले किए गए सभी कामों और भारतीय पर्दे पर अब तक किए गए सभी कामों को पीछे छोड़ने का जुनून था, एक ऐसी चुनौती जो 'मेरा नाम जोकर' की पटकथा ने हमें दी थी। हम इस चुनौती का सामना करने के लिए मजबूर थे। बहुत सारा काम पहले ही हो चुका था, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती सर्कस सीक्वेंस थी।
फिल्म की सात नायिकाओं में से एक रूसी फिल्म उद्योग की एक खूबसूरत युवा अभिनेत्री थीं। इस लड़की ने उस करतब कलाकार की भूमिका निभाई जिससे विदूषक को प्यार हो जाता है। वह सोवियत राज्य सर्कस के सदस्यों के साथ शूटिंग के लिए भारत आई थीं। शूटिंग स्थल पर एक विशाल सर्कस अखाड़ा विशेष रूप से बनाया गया था, जो शायद किसी भी भारतीय फिल्म के लिए किया गया अब तक का सबसे विस्तृत और विशाल लोकेशन वर्क था।
मेरा काम ही मेरा धर्म है। मेरा जुनून है। मेरी सफलता या असफलता मेरे रचनात्मक कार्यों पर निर्भर करती है। इसीलिए 'मेरा नाम जोकर' के संदर्भ में लंबाई, फुटेज, कितने भाग होंगे आदि से जुड़े प्रश्न मुझे बिल्कुल अप्रासंगिक लगते हैं। जी हां, दो फिल्में होंगी, 'मेरा नाम जोकर भाग 1' और 'मेरा नाम जोकर भाग 2'। जी हां, दोनों भाग लंबे होंगे। क्या मानव जीवन लंबा नहीं होता? और क्या यह रोचक नहीं होता? और क्या इसमें कभी कोई नीरस पल नहीं होता?
जोकर की आत्मा को कभी समझा नहीं जा सका। जैसे कि जोकर की माँ की मृत्यु, जब उसे अभी भी प्रदर्शन करना है—वह रो नहीं सकता, क्योंकि जोकर की आँखों में आँसू कोई नहीं देख सकता, इसलिए वह इसे एक नाटक बना लेता है, और जब उसकी ट्रॉली चोरी हो जाती है, तो वह अपनी आँखों से फव्वारे की तरह आँसू बहाता है—यह शायद दर्शकों के लिए बहुत भारी था। पंजाबी में एक कहावत है, 'मा जावंदी सात पर कर्म ना देंदी वंद (माँ सात बच्चों को जन्म दे सकती है, लेकिन वह उन्हें उनका भाग्य नहीं दे सकती)।' मेरा नाम जोकर मेरे दिल के बहुत करीब है क्योंकि जिस तरह एक बीमार या दिव्यांग बच्चा अपने माता-पिता के करीब होता है, उसी तरह एक प्यारी फिल्म, जो दुर्भाग्य से असफल हो जाती है, दिल के करीब होती है। जागते रहो के लिए भी मुझे ऐसा ही लगता है। ये खूबसूरत फिल्में—या तो उनमें कुछ कमी थी या वे इतनी शानदार फिल्में थीं कि लोग उन्हें समझ नहीं पाए।

Kal Aaj Aur Kal (1971)

अगर रणधीर को मेरे निर्देशन में काम करने का सौभाग्य नहीं मिला, तो कम से कम मैं तो उनसे कहीं अधिक भाग्यशाली रहा हूँ, क्योंकि मुझे उनकी दो फिल्मों, कल आज और कल और धर्म कर्म में उनके निर्देशन में काम करने का अवसर मिला। उनकी पहली फिल्म, कल आज और कल में, डब्बू एक कुशल निर्देशक थे। भले ही फिल्म न चली हो, लेकिन मेरी पहली फिल्म, आग भी तो नहीं चली थी। कल आज और कल एक ऐसी फिल्म है जिस पर मुझे उतना ही गर्व है जितना

कि अपनी निर्देशित फिल्मों पर। डब्बू में ताजगी, युवा जोश और एक ऐसी विशिष्टता है जो इस फिल्म में स्पष्ट रूप से झलकती है, जो कई मायनों में मेरी सभी फिल्मों से अलग है। एक ही फिल्म में पिता और पुत्र दोनों के साथ काम करना एक दुर्लभ सौभाग्य था। इतना ही नहीं, मेरी होने वाली बहू, बबीता भी फिल्म में मेरे बेटे की प्रेमिका के रूप में नजर आईं; इससे कहानी को और भी अधिक प्रामाणिकता मिलती है। निर्माता और कलाकार दोनों के रूप में मेरे लिए इस फिल्म में काम करना बेहद खुशी की बात थी, जो बदलते समय के अनुरूप मेरी एक बिल्कुल नई छवि प्रस्तुत करती है।

बॉबी (1973)

मेरा नाम जोकर फ्लॉप हो गई। मेरे साथ काम करने वाले, मेरे साथ खड़े रहने वाले और मेरी फिल्मों से करोड़ों रुपये कमाने वाले सभी लोगों ने मुझसे मुंह मोड़ लिया। आर.के. स्टूडियो, मेरा घर, मेरी पत्नी के गहने, जो कुछ भी मेरी नज़र में था, सब गिरवी रखा हुआ था। मुझे लगा सब खत्म हो गया। फिर मैंने ऊपर देखा और उस मशहूर आर.के. बैनर को देखा और महसूस किया कि सब कुछ गिरवी रखा हुआ है, सिवाय राज कपूर के नाम के और जब तक यह बैनर रहेगा, राज कपूर रहेंगे। और मुझे यकीन है कि यह बैनर हमेशा रहेगा, जैसे आज चमक रहा है। जब मैंने बॉबी को लॉन्च किया, तो मेरा मकसद एक फिल्म निर्माता के रूप में अपनी प्रतिष्ठा वापस पाना था। चूंकि मैं हमेशा से ही किशोर प्रेम और युवा प्रेम में विश्वास रखता आया हूं, इसलिए मैं बॉबी से उतना ही जुड़ाव महसूस कर पाया जितना बाद में लाखों लोगों ने किया। मुझे पूरा भरोसा था। लेकिन जब मैंने तय किया कि मेरा बेटा ऋषि कपूर इस भूमिका के लिए बिल्कुल सही रहेगा, तो मैंने सबसे पहले उससे पूछा कि क्या वह मेरे जैसे फ्लॉप फिल्म निर्माता और बेहद सख्त निर्देशक के साथ काम करना चाहेगा!

सच कहूँ तो, मैं बहुत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। मुझे लगता है कि जीवन से ही जागरूकता प्राप्त करना बहुत ज़रूरी है। आर्ची की एक कॉमिक में मुझे आर्ची का ही एक वाक्य मिला, कुछ इस तरह, 'सत्रह साल की उम्र अब जवानी नहीं रही; हमारी भी अपनी ज़िंदगी है और हम इसके प्रति सजग हैं!' इस वाक्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मुझे लगा, इसमें कुछ बहुत गहरा अर्थ छिपा है। आज के बच्चे बीस साल पहले के बच्चों जैसे नहीं हैं। वे अपने परिवेश और खुद के प्रति कहीं अधिक जागरूक हैं। वे बीस, तीस या चालीस साल पहले के हम लोगों की तुलना में कहीं अधिक ज़िम्मेदार हैं। हमारे पूर्वज बड़े हो चुके थे, शादीशुदा थे और उनके बच्चे भी थे, फिर भी उनसे कहा जाता था: 'चुप रहो, तुम बच्चे हो!' अब आप किसी बच्चे से ऐसा नहीं कह सकते। इसी सोच ने मुझे बॉबी को बनाने के लिए प्रेरित किया।

~

राज कपूर ने 'मेरा नाम जोकर' की असफलता के बाद इस युवा और मनोरंजक फिल्म से अपनी किस्मत पलट दी। इस फिल्म से उनके बेटे ऋषि कपूर ने प्रतिभाशाली डिंपल कपाडिया के साथ धमाकेदार शुरुआत की। लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल को लोकप्रिय गाने बनाने के लिए लाया गया, जिनमें 'झूठ बोले कौवा

काटे' चार्ट्स में टॉप पर रहा और फिल्म 1973 की सबसे बड़ी हिट साबित हुई। फिल्म को न सिर्फ बिलबोर्ड पर लाल स्विमिंग सूट में सेक्सी डिंपल कपाडिया की मौजूदगी के कारण, बल्कि इसके बोलों के कारण भी काफी 'बोल्ड' माना गया। आनंद बख्शी का गीत 'हम तुम एक कमरे में बंद हों' शैलेंद्र और हसरत जयपुरी की कल्पनाशील कविताओं की तुलना में कहीं अधिक बोल्ड और उत्तेजक था, जो आमतौर पर आर.के. फिल्म्स से जुड़ी होती थीं।

Dharam Karam (1975)

धर्म कर्म, उदार, समाजवादी और लोकतांत्रिक फिल्म आवारा से विषयवस्तु के मामले में बिल्कुल विपरीत है। आवारा में, न्यायाधीश का बेटा अपने सामाजिक और आर्थिक परिवेश के कारण चोर बन जाता है, जबकि धर्म कर्म में, एक संगीतकार का बेटा झुग्गी बस्ती में एक अपराधी के साथ पलता-बढ़ता है, लेकिन तमाम कठिनाइयों के बावजूद उसमें संगीत की प्रतिभा उभर आती है, वहीं खलनायक को संगीतकार पालता है जो उसमें संगीत की समझ पैदा करने में असफल रहता है। इस प्रकार, धर्म कर्म की भावना सामंती और पतित है। इस फिल्म के निर्देशक, राज कपूर के बेटे रणधीर कपूर ने यह स्थापित किया कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने में उसके पालन-पोषण के परिवेश की तुलना में जीन की भूमिका कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है।

धर्म कर्म शंकर (प्रेम नाथ) की कहानी है, जो एक गुंडा है और 'शंकर दादा' के नाम से जाना जाता है। वह अपने जीवन से नाखुश है और चाहता है कि उसका बच्चा कानून का पालन करने वाला, सभ्य और सम्माननीय व्यक्ति बने। उसका मानना है कि यह तभी संभव है जब उसे उचित वातावरण में पाला-पोसा जाए, न कि उस घर और परिवेश में जिसमें वह रहता है। इसलिए, जब उसकी पत्नी एक बेटे को जन्म देती है, तो वह उसे उसी समय पैदा हुए एक अन्य बच्चे से बदल देता है, जो एक प्रसिद्ध कलाकार अशोक (राज कपूर) का बच्चा होता है। अब शंकर का बेटा रणजीत (नरेंद्र नाथ) अशोक के घर में पलता है और अशोक का बेटा धर्म (रणधीर कपूर) एक झुग्गी बस्ती में। पटकथा लेखक प्रयाग राज और निर्देशक रणधीर कपूर की सोच के अनुरूप, यह साबित होता है कि जीन पालन-पोषण और वातावरण से कहीं अधिक शक्तिशाली होते हैं। इसलिए, बुरे वातावरण में पलने-बढ़ने के बावजूद, धर्म बुरा व्यक्ति नहीं बनता है और अनुकूल वातावरण में पलने-बढ़ने के बावजूद रणजीत गलत रास्ते पर चला जाता है।

Satyam Shivam Sundaram (1978)

सत्यम शिवम सुंदरम बनाने की प्रेरणा मुझे लता मंगेशकर की आवाज़ से मिली। 1950 के दशक में, वह सुबह तड़के तक बैठकर हमें अपने संगीत से मंत्रमुग्ध करती थीं। मैं आँखें बंद करके समाधि जैसी अवस्था में चला जाता था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ईश्वर किसी स्त्री को दिव्य आवाज़ और असाधारण सुंदरता दोनों का वरदान नहीं देता। वह तो दुनिया को हिला सकती थी! मैं एक ऐसी फिल्म बनाना चाहता था जिसमें एक साधारण दिखने वाली लड़की अपनी सुरीली आवाज़ से एक जवान, आकर्षक युवक को अपने जाल में फंसा लेती है। मैंने लता जी से इसमें अभिनय करने के लिए कहा था। वह मान गईं, लेकिन बाद में उन्होंने मना कर दिया।

सत्यम शिवम सुंदरम में, मैं यह दर्शन प्रस्तुत कर रहा था कि प्रेम और आस्था ही रिश्तों को पवित्र बनाते हैं और सुंदरता केवल ऊपरी दिखावा है। अगर आपको याद हो, तो फिल्म की शुरुआत सड़क के किनारे पड़े एक पत्थर के दृश्य से होती है। फिर आप लोगों को उस पत्थर को फूलों और कुमकुम से सजाते और उसकी पूजा करते हुए देखते हैं। वह पत्थर उनका भगवान बन जाता है। आखिर कौन सी बात एक पत्थर को भगवान बना देती है? हमारा प्रेम, आस्था और आराधना। यह संदेश सभी को समझ नहीं आया और फिल्म फ्लॉप हो गई।

आज के बच्चे शायद इस बात पर यकीन न करें, लेकिन एक बार एक चमत्कार हुआ था। इस नदी (लोनी में मेरे खेत के पास वाली नदी) ने मेरी बहुत मदद की है। मैं फिल्म के क्लाइमेक्स की शूटिंग कर रहा था, जब पूरा गांव बाढ़ में डूब गया। पूरा खेत भी पानी में डूब गया। चारों तरफ पानी ही पानी था। सौभाग्य से मेरे लोग कैमरे के साथ वहां मौजूद थे और उन्होंने जितना हो सका, फिल्माया। मैंने अपने सारे सेट यहीं लगाए थे, मंदिर वगैरह। और ये वही सेट थे जिन्हें बाढ़ में डूबना था। यह मेरी किस्मत थी। तो यह नदी मेरे लिए बहुत भाग्यशाली रही है।
हम नग्नता देखकर हैरान हैं। हमें समझदार बनना होगा। जिस देश में सात करोड़ बच्चे पैदा हुए हैं, वहां लोग आंशिक नग्नता देखकर हैरान हो जाते हैं! हम इतने पाखंडी क्यों हैं? बच्चे पेड़ों पर नहीं उगते। वे बिस्तर पर पैदा होते हैं। और एक खूबसूरत लड़की को दिखाने में क्या अनैतिक है? सिनेमा को गांवों तक ले जाओ, उन्हें मनोरंजन दो। अभी उनके पास मनोरंजन का एकमात्र साधन शराब बनाना, पीना और बच्चे पैदा करना है। जब फिल्म (सत्यम शिवम सुंदरम) पूरी हो गई, तो मैंने सेंसर बोर्ड से पूछा, 'यह या जो आप अनुमति दे रहे हैं, इनमें से कौन सा ज्यादा हानिकारक है? आप पूरे भारत में बैनर और पोस्टर देखते हैं। अहिंसा का प्रचार करने वाले देश में हर कोई बंदूक या तलवार या मारने के लिए कोई हथियार लिए खड़ा है! क्या आप यह नहीं समझ सकते कि यही हानिकारक है?'

में महिलाओं का सम्मान करता हूँ और मुझे समझ नहीं आता कि मुझ पर उनके शोषण का आरोप क्यों लगाया जाता है। अगर फेलिनी किसी महिला को नग्न अवस्था में चित्रित करते हैं, तो उसे 'कला' माना जाता है। अगर मैं किसी महिला की सुंदरता का प्रदर्शन करता हूँ, तो उसे शोषण कहा जाता है! 1950 के दशक के आरंभिक वर्षों में मेरे काम को प्रभावित करने वाली बातें जरूरी नहीं कि 1980 के दशक के काम को भी प्रभावित करें। ऐसा नहीं है कि आदर्शवाद खो गया है। मैंने ऐसे विषयों को चुना है जिनमें महिलाएं शायद पुरुषों से अधिक सक्रिय हैं या समाज द्वारा भावनात्मक अत्याचार का अधिक शिकार हैं।

बीवी ओ बीवी (1981)

चंद्र (रणधीर कपूर) का जीवन का लक्ष्य शादी करना है, लेकिन उसकी कुंडली में मंगल के अशुभ प्रभाव के कारण यह काम मुश्किल हो जाता है। अपने दोस्त गफूर (देवेन वर्मा) के ज़रिए चंद्र को एक थिएटर में नौकरी मिल जाती है, जहाँ उसका अभिनय आशा (पूनम ढिल्लों) का ध्यान आकर्षित करता है और आशा उससे तुरंत प्यार करने लगती है। लेकिन सच्चे प्यार की राह में सबसे बड़ी बाधा आशा के पिता कर्नल मंगल सिंह (संजीव कुमार) हैं, जो एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी हैं। वे अपनी बेटी को किसी आम नागरिक से शादी करने की इजाज़त नहीं देते और आशा की शादी अपने दोस्त कर्नल हरि के बेटे, जो एक कैप्टन है, से कराने की योजना बनाते हैं। इसलिए वे कैप्टन से रिश्ता तय करने के लिए कश्मीर जाते हैं, लेकिन इससे पहले आशा उन्हें अपनी दुविधा के बारे में बता देती है। दयालु कैप्टन आशा से शादी करने से इनकार कर देते हैं और चंद्र को अपना रूप धारण करने देते हैं। इसके बाद गलत पहचान, नकल और मजेदार चालबाज़ियों से भरपूर एक ज़बरदस्त कॉमेडी शुरू होती है। इस फिल्म का निर्माण राज कपूर ने किया था और निर्देशन राहुल रवैल ने किया था, जो अपनी मेहनत और सूझबूझ के कारण राज कपूर के पसंदीदा सहायक निर्देशक थे। पटकथा पापा को सुनाई गई और उन्हें इसमें निहित हास्य की संभावनाएं बहुत पसंद आईं। फिल्म में संजीव कुमार का दोहरी भूमिका में अभिनय मुख्य आकर्षण था।

Prem Rog (1982)

प्रेम रोग मेरी सार्थक फिल्मों की दुनिया में वापसी थी, और इसे बनाने में मुझे बहुत आनंद आया क्योंकि मेरे पास एक सशक्त और स्पष्ट संदेश था। हम भारतीय पाखंडी हैं। एक ओर, हम नारी जाति को महान और श्रेष्ठ, मातृत्व की प्रतीक मानते हैं। जब हम अपने राष्ट्र को सर्वोच्च सम्मान देना चाहते हैं, तो उसे 'भारत माता' कहकर पुकारते हैं। लेकिन व्यवहार में हम अपनी महिलाओं के साथ सबसे बुरा बर्ताव करते हैं। इस देश में महिलाओं को अपमानित और नीचा दिखाया जाता है। उन्हें ज़िंदा जला दिया जाता है। कई घरों में तो पालतू जानवरों को भी बेहतर व्यवहार मिलता है। किसी अन्य देश में बलात्कार और दुल्हन जलाने के इतने मामले सुनने को नहीं मिलते। हमारे परिवारों में लड़की का जन्म अभिशाप माना जाता है। ऐसा क्यों है? मेरे लिए, नारी जाति प्रेम, स्नेह और आत्मीयता का प्रतीक है। महिलाओं को सम्मान और उच्च स्थान मिलना चाहिए। उन्हें भी पुरुषों के समान सुख का अधिकार है। मेरी फिल्म उनके सुख के अधिकार के लिए एक संघर्ष है।

हर कहानी का एक किरदार, एक व्यक्तित्व और एक नियति होती है, और उसे उसी के अनुसार ढालना पड़ता है। मेरी पिछली फिल्में नायक-प्रधान थीं, जबकि प्रेम रोग न केवल नायिका-प्रधान फिल्म थी, बल्कि इसमें एक महिला मुख्य किरदार थी, इसलिए प्रस्तुति अलग होनी ज़रूरी थी। मैं सामाजिक नियम बनाने वालों के दोहरे मापदंडों को उजागर करना चाहता था। मैं उन रीति-रिवाजों, परंपराओं और परंपराओं की बात कर रहा हूँ जिनका आज के जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। हम सामंती व्यवस्था में जीते हैं और खुद को सामाजिक कहते हैं। परंपरा के नाम पर हम दूसरों को दुख और पीड़ा पहुँचाते हैं। आज भी गाँवों और छोटे कस्बों में, जहाँ अमीर और सामंती ठाकुरों का दबदबा है, एक विधवा को इस कदर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है कि उसका जीवन नरक बन जाता है। वही समाज एक विधुर को पत्नी की मृत्यु के कुछ ही महीनों बाद एक युवती से विवाह करने की अनुमति देता है। परंपरा और खानदान के नाम पर युवतियों को समाज से बहिष्कृत जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है। मैं हमारे सामंती पुरुषों के गहरे रूढ़िवादी रवैये को उजागर करना चाहती थी, जो सोचते हैं कि वे जो चाहें कर सकते हैं, जबकि उनकी महिलाओं को सीधे और सही रास्ते पर चलना चाहिए। मैं किसी उदार समाज का प्रचार नहीं कर रही हूँ। मैं केवल समाज के ठेकेदार कहलाने वालों के जीवन में व्याप्त दोहरेपन को उजागर करना चाहती हूँ। यह दुख की बात है कि विज्ञान के इस युग में भी हमें ऐसे विषयों पर चर्चा करनी पड़ रही है, लेकिन बलात्कार और दहेज हत्याओं जैसी भयावह घटनाएं आज भी हमारे समाज में एक भयावह वास्तविकता हैं।

प्रेम रोग में मैंने एक विधवा की दुर्दशा का विरोध किया और फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर सफल बनाने के लिए उसमें बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाने वाले तत्वों का इस्तेमाल किया, क्योंकि मैं चाहता था कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इसे देखें। जितने ज़्यादा लोग इसे देखेंगे, उतनी ही ज़्यादा जनमत जागृत होगा।

राम तेरी गंगा मैली (1985)

हम 'जिस देश में गंगा बहती है' फिल्म के एक गाने के कुछ हिस्सों की शूटिंग के लिए कलकत्ता गए थे। मैं हुगली नदी के किनारे स्थित प्रसिद्ध दक्षिणेश्वर मंदिर में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के मठ में था। वहाँ एक साधु ने मुझे एक अत्यंत रोचक घटना सुनाई, जो पच्चीस साल बाद 'राम तेरी गंगा मैली' की रचना का आधार बनी। घटना कुछ इस प्रकार है: एक दिन, ऋषिकेश के प्रसिद्ध नंगा साधु, तोतापुरी महाराज, श्री रामकृष्ण से मिलने और उनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों की परीक्षा लेने के लिए हुगली नदी के किनारे आए थे। वे एक ऐसे स्थान पर मिले जहाँ गंगा की सहायक नदी हुगली सबसे अधिक प्रदूषित थी और तोतापुरी महाराज ने कहा: 'राम, ये तेरी गंगा कितनी मैली है।' उन्हें ध्यान से देखते हुए, श्री रामकृष्ण ने उत्तर दिया: 'महाराज, यह तो स्वाभाविक ही है।' ऋषिकेश से यहाँ तक बहती हुई वह मनुष्य के पापों को धो डालती है।' यह घटना मेरे मन में बसी रही और अंततः इसी से प्रेरित होकर मैंने राम तेरी गंगा मैली की रचना की।

गंगा - पवित्र, गंगा - कुंवारी, गंगा - हिमालय की सुंदरता, गंगा - निष्ठावान। गंगा शब्द के इतने सारे अर्थ हैं कि उसे चित्रित करने वाली किसी भी लड़की को ऐसा होना चाहिए था जो पहले कभी न देखी गई हो और जिसे किसी और रूप में न पहचाना जा सके। और इसी तरह मुझे यह नई लड़की मंदाकिनी मिली, जो गंगा जैसी दिखती थी और गंगा बन गई। हालांकि तथाकथित नग्नता, कम वस्त्रों में गंगा को लेकर भारी आलोचना हुई, लेकिन गंगा (नदी) की पवित्रता में विश्वास ने गंगा (फिल्म में चरित्र) की मासूमियत में विश्वास को बनाए रखा। यही वह चीज थी जो कायम रही और तमाम आलोचनाओं के बावजूद गंगा आज भी बह रही है।

मेहंदी (1991)

इस समय मैं एक ऐसी पटकथा पर काम कर रहा हूँ जिसे मैं लगभग चौदह साल पहले लिखता, जिसका नाम है 'हेन्ना'। फिल्म की प्रेरणा एक प्रसिद्ध शेर से मिली है: 'क्या अकल आती है बशेर तो ठोकरें खाने के बाद, और रंग लाती है हेन्ना, पत्थर पर पिस जाने के बाद' (मनुष्य अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों और परेशानियों से सीखता है, ठीक उसी तरह जैसे मेहंदी को कुचलने के बाद उसका रंग आता है)।

हेन्ना मानवीय रिश्तों की कहानी है, दो ऐसे राष्ट्रों की कहानी है जो कभी एक थे, जिनका जल तब तक एक था जब तक उसमें जहर नहीं मिला दिया गया। कहानी झेलम नदी के इर्द-गिर्द बुनी गई है, जो भारत से शुरू होकर पाकिस्तान में बहती है। देश का यह हिस्सा हिंदू है, लेकिन जैसे ही आप दूसरे हिस्से में जाते हैं, वह

मुस्लिम हो जाता है। क्यों? क्योंकि इंसान ने इसे बाँट दिया है। लेकिन क्या प्यार को बाँटा जा सकता है? मैं इसी तरह की फिल्म बनाना चाहता हूँ। यह मानवीय मूल्यों का एक सुंदर दस्तावेज़ है, यह सभी समझदार लोगों के साझा मूल्यों से संबंधित है, चाहे वे कोई भी हों, किसी भी जाति, धर्म, देश या भाषा के हों। वे ईश्वर के लोग हैं। वे दयालु लोग हैं और वे प्रेम कर सकते हैं।

~

यही मूलतः फिल्म का विषय है। आर.के. फिल्म्स ने 1990 में 'हेन्ना' का निर्माण पूरा किया। राज कपूर के सबसे बड़े बेटे रणधीर ने फिल्म का निर्देशन किया, उनके दूसरे बेटे ऋषि ने मुख्य भूमिका निभाई और उनके सबसे छोटे बेटे राजीव ने निर्माण कार्य में सहयोग दिया। फिल्म का प्रीमियर भारत के राष्ट्रपति द्वारा महान अभिनेता राज कपूर की स्मृति को श्रद्धांजलि के रूप में किया गया था। फिल्म ब्लॉकबस्टर सफल रही।

सहकर्मी और मित्र

'मुझे केवल वही आकर्षित करता है जो समर्पण के साथ पूर्णता की निरंतर खोज में लगा रहता है।'—राज कपूर

हसरत जयपुरी, जयकिशन, शंकर और शैलेन्द्र के साथ राज कपूर

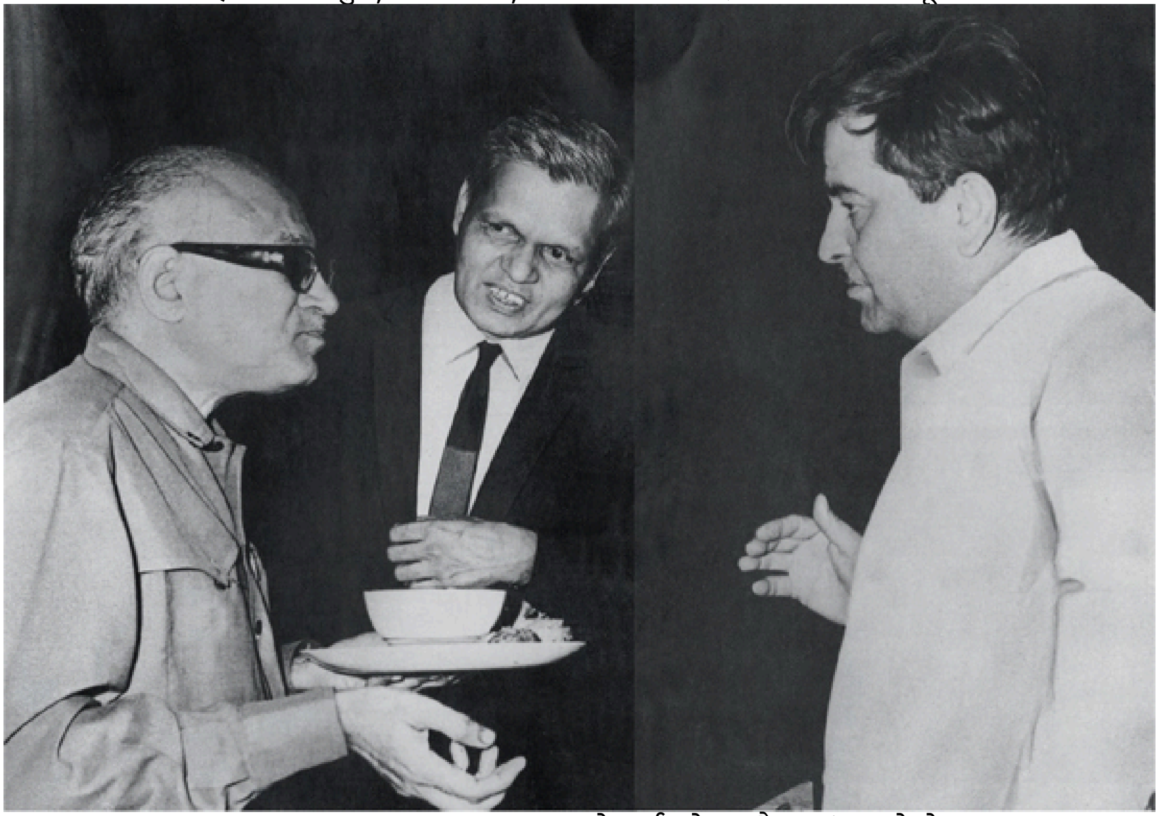

राज कपूर, ख्वाजा अहमद अब्बास (सबसे बाईं ओर) और वसंत साठे के साथ।

The R.K. team – a happy family: Seen here are Geeta Dutt, Lata Mangeshkar, Manna Dey, Mahendra Kapoor, Mukesh, Jaikishen and Raj Kapoor at the recording of 'Hum bhi hai, tum bhi ho' from the film Jis Desh Main Ganga Behti Hai. The song took almost forty-eight hours to record.

आवारा से लेकर श्री 420 तक, राज कपूर, के.ए. अब्बास और वसंत साठे की जोड़ी ने लोकप्रिय सिनेमा को एक नई लय दी।

आर.के. फिल्म्स के शुरुआती दौर में सर्वहारा वर्ग की विचारधारा के लिए के.ए. अब्बास जिम्मेदार थे। जैसा कि अब्बास खुद बड़े चाव से याद करते हैं, उनका मेल कुछ अनोखा था। राज कपूर एक गहरे धार्मिक व्यक्ति थे; अब्बास अज्ञेयवादी और तर्कवादी थे। राज कपूर एक अस्पष्ट प्रगतिशील थे, जो ज्यादातर राजनीति से दूर रहते थे, जबकि अब्बास कट्टर मार्क्सवादी थे। फिर भी यह मेल कारगर साबित हुआ, क्योंकि जैसा कि अब्बास ने एक बार कहा था, 'राज कपूर कोई महान विचारक तो नहीं हैं, लेकिन विचारों से उन्हें कोई परहेज़ नहीं है। दरअसल, आम आदमी के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति के कारण, वे सामाजिक रूप से प्रगतिशील विचारों और मानवतावादी आदर्शों के प्रति पूरी तरह से ग्रहणशील हैं, बशर्ते कि उनकी प्रस्तुति उनकी फ़िल्म की लोकप्रियता को प्रभावित न करे।'

राज कपूर अपने पेशेवर संबंधों पर

सौभाग्य से, मैं शुरू से ही अपने पेशेवर संबंधों में खुश रहा हूँ और अपने फ़िल्मी करियर के शुरुआती दौर में ही, जब मैंने मुश्किल से डेढ़ फ़िल्म ही की थी, के.ए. अब्बास के साथ मेरा जुड़ाव शुरू हुआ। वह फ़िल्म थी 'आवारा', एक रोमांचक बौद्धिक अनुभव, जिसने अब्बास साहब और मेरे बीच विचारों के आदान-प्रदान और काम करने के तरीके की शुरुआत की। 'आवारा' में मैंने एक तरह के 'सार्वभौमिक मानवता' प्रतीक को सबसे पहले गढ़ा, जो कई फ़िल्मों के माध्यम से

और भी निखरता गया, यहाँ तक कि 'मेरा नाम जोकर' में यह मेरे संपूर्ण जीवन दर्शन के सार के रूप में उभरा। जोकर की कल्पना 'आवारा' के बाद के वर्षों में ही कर ली गई थी और अब्बास साहब की लंबी पटकथा वर्षों के चिंतन और परिश्रम का परिणाम थी। फिर भी, कई साल और कई फिल्में बीत गईं, तब जाकर मैंने आखिरकार इसे बनाने का साहस जुटाया। अब्बास साहब के साथ काम करना हमेशा से एक प्रेरक और बौद्धिक अनुभव रहा है और वर्षों तक साथ काम करने और एक जैसी सोच रखने का यह चरमोत्कर्ष 'मेरा नाम जोकर' में देखने को मिला। जोकर मेरे जीवन, प्रेम और संतुष्टि के पूरे दर्शन का प्रतीक है।'

अध्यायवार लिखी और चित्रित की गई यह कहानी जोकर के जीवन के विभिन्न चरणों से गुज़रती है। हर चरण में उसकी मुलाकात एक अलग महिला से होती है, और हर चरण का अंत अपने अनोखे मोहभंग के साथ होता है। प्रेम और दुःख की इस प्रक्रिया के दौरान, जोकर बहुत कुछ सीखता है, बहुत कुछ सिखाता है, और अंत में उसके जीवन का अंतिम पड़ाव फिल्म को उसके सबसे यादगार चरमोत्कर्ष तक ले जाता है, एक ऐसा चरमोत्कर्ष जो ईसाई धर्म की सर्वोच्च परंपराओं को दर्शाता है।

इसीलिए इस फिल्म का निर्माण मेरे लिए एक बड़ी चुनौती है। इस चुनौती का सामना करने के लिए मुझे पहले फिल्म जगत में जीवन भर का कठिन परिश्रम करना पड़ा है।

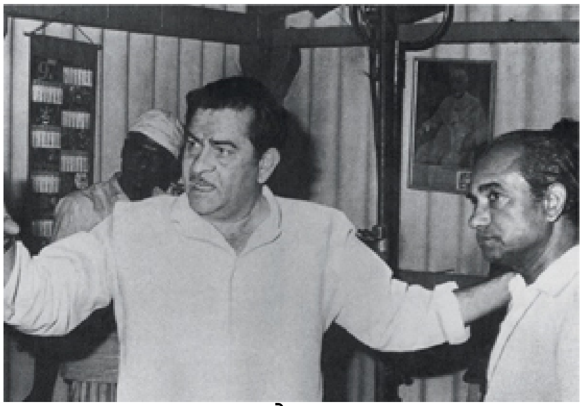

राधु करमाकर के साथ राज कपूर

बरसात के दौरान ऑर्सन वेल्स के सिनेमैटोग्राफी से मैं काफी प्रभावित हुआ था। आग में बहुत ही धीमी रोशनी का इस्तेमाल किया गया था। काले और सफेद रंग का कंट्रास्ट बहुत ही जीवंत था... मैं चाहता था कि मेरा कैमरामैन मुझे ब्लैक एंड ग्रे रंग की तस्वीरें दे। लेकिन उस समय किसी को भी मेरी धीमी रोशनी पसंद नहीं आई। उन दिनों तेज रोशनी वाली तस्वीरें चलन में थीं। जब राधू कर्माकर मुझसे मिलने आए (उन्होंने बॉम्बे टॉकीज के लिए मिलन नाम की एक फिल्म बनाई थी), तो मैंने उनसे पहला सवाल पूछा, 'क्या आप मुझे मिलन का रात्रि दृश्य दिखा सकते हैं?' मुझे जो दिखा, वह मुझे पसंद आया और वे आवारा के लिए मेरे कैमरामैन बन गए। मुझे राधू की कंट्रास्ट लाइटिंग बहुत अच्छी लगी। यह मेरे दृश्यों के मूड के लिए, खासकर नाटकीय दृश्यों के लिए बहुत फायदेमंद थी। आवारा मेरी सबसे बेहतरीन सिनेमैटोग्राफी वाली फिल्मों में से एक है। यह क्रांतिकारी थी, और इसका श्रेय राधू कर्माकर को जाता है।

मैं आम आदमी के लिए फिल्में बनाता हूँ, इसलिए उनके बीच रहना, आम आदमी और औरतों के बीच रहना ज़रूरी है। यहाँ, आम आदमी के ढाबों में, बहुत से

लोगों से मिलने और जीवन को करीब से देखने का मौका मिलता है। लोग प्यार और स्नेह से मिलते हैं। उनमें कोई द्वेष या अहंकार नहीं होता। इन जगहों पर मुझे वही स्वागत मिलता है जो मुझे बचपन में मिलता था—बस फर्क इतना है कि बचपन में मैं उधार पर खाना खाता था और अब नकद भुगतान करता हूं!

Mehboob Khan

राज कपूर गुरु दत्त, बिमल रॉय और महबूब खान जैसे महान निर्माताओं और निर्देशकों की परंपरा के अंतिम वाहक थे। इन निर्देशकों ने न केवल हिट फिल्में, लोकप्रिय सितारे और मुनाफा कमाया, बल्कि अपनी-अपनी अनूठी शैलियाँ भी विकसित कीं, जो एक साथ विशिष्ट और सार्वभौमिक थीं। बिमल रॉय ने फिल्मी पर्दे पर रोजमर्रा की जिंदगी को चित्रित करने की शुरुआत की। गुरु दत्त की खूबी उनकी बारीकी थी, चाहे वो क्राइम थ्रिलर हों या किसी निराश प्रेमी की आत्मकथात्मक फिल्में। महबूब खान ने अपनी फिल्म 'मदर इंडिया' के माध्यम से भारतीय भावनाओं के व्यापक दायरे को छुआ। लेकिन भारतीय सिनेमा में राज कपूर का योगदान सरल सामाजिक संदेशों को गहन जुनून में पिरोने की उनकी अनूठी शैली थी।

महबूब खान की फिल्म 'अंदाज़' भारतीय सिनेमा के इतिहास में सबसे यादगार फिल्मों में से एक के रूप में अमर हो गई है। इसने एक नए युग की शुरुआत की, आने वाले कल के युग की, जो समय-समय पर आता है जब एक पीढ़ी समाप्त होती है और अगली पीढ़ी उसकी जगह लेने लगती है। महबूब खान ने शायद उस समय इसे महसूस किया हो या न किया हो, लेकिन सच्चाई यह है कि उन्होंने दिलीप कुमार और राज कपूर के साथ नरगिस को कास्ट करके इतिहास का सबसे बड़ा कास्टिंग स्टंट किया था। इस कदम के कई फायदे थे। पहला, जाने-माने सितारों को डिस्ट्रीब्यूटर्स से ज़्यादा रकम मिली; दूसरा, जाने-माने सितारे सहज रूप से जानते थे कि उनके निर्देशक क्या चाहते हैं, और कैमरे के सामने कम से कम रीटेक के साथ बेहतरीन प्रदर्शन कर सकते थे। शूटिंग के दौरान कीमती समय की बचत हुई, साथ ही कीमती पैसा और कीमती रॉ फिल्म भी!

जब महबूब खान ने अंदाज़ में तीनों मुख्य कलाकारों को चुना, तब उनमें से कोई भी नया नहीं था। इस तिकड़ी ने देश के युवाओं पर ऐसा जादू कर दिया कि वे उनकी भावनाओं को झकझोरने, उनके विचारों को आकार देने, उनके पहनावे, हेयरस्टाइल, तौर-तरीकों, विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करने में सक्षम थे। सही मायने में समकालीन, वे भारतीय सिनेमा जगत में एक ही समय में उभरे और समय के साथ भारतीय सिनेमा के शीर्ष व्यक्तित्व बन गए। यही कारण है कि महबूब खान की अंदाज़ कई मायनों में एक महत्वपूर्ण फिल्म थी। यह न केवल भारतीय सिनेमा को हॉलीवुड के तकनीकी और कलात्मक स्तर तक पहुंचाने वाली पहली फिल्म थी, बल्कि इसमें राज कपूर और दिलीप कुमार अपने करियर में पहली और आखिरी बार एक साथ नजर आए थे।

1955 में, राज कपूर ने मद्रास में सत्यजीत रे की फिल्म 'पथेर पांचाली' देखी, जहाँ वे 'चोरी चोरी' नामक फिल्म की शूटिंग कर रहे थे। वे फिल्म से इतने प्रभावित हुए कि दंग रह गए। उन्होंने सत्यजीत रे से आर.के. फिल्म्स के लिए एक फिल्म निर्देशित करने का अनुरोध किया, लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सका, क्योंकि सत्यजीत रे ने स्वीकार किया कि उन्हें हिंदी का उतना ज्ञान नहीं था।

सत्यजीत रे द्वारा राज कपूर पर टिप्पणी

राज कपूर से मेरा रिश्ता तीस साल पुराना है। वो मेरे दोस्त थे। उन्होंने मेरी पहली फिल्म 'पथेर पांचाली' देखी और उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे उनके लिए जो चाहूँ वो करने की पूरी छूट दे दी। लेकिन मैंने तब उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया क्योंकि उसमें हिंदी में काम करना शामिल होता। हालांकि, इससे हमारी दोस्ती पर कोई असर नहीं पड़ा। वो अंत तक मेरे प्रति स्नेहपूर्ण, दोस्ताना

और प्यार भरे रहे। उन्हें दिलदारिया कहा जा सकता है। उनमें कोई बनावट नहीं थी; वो बिल्कुल खुले दिल के थे। मैंने उन्हें पहली बार 'आग' में देखा था और उनमें बहुत प्रतिभा देखी थी। उनकी कुछ और फिल्में जो मुझे याद हैं, वे हैं 'आवारा' और 'मेरा नाम जोकर'। मुझे 'मेरा नाम जोकर' का पहला भाग बहुत पसंद आया था। हालांकि, 'श्री 420' शायद उनकी सबसे बेहतरीन फिल्म थी। उनकी आखिरी फिल्म जो मैंने देखी, वो थी 'बॉबी'। उसके बाद मेरी दिलचस्पी खत्म हो गई। राज कपूर ने खुद माना था कि वो आम जनता के लिए फिल्में बनाते हैं, हम जैसे लोगों के लिए नहीं। राज कपूर का यही सहज स्वभाव मुझे सबसे ज्यादा पसंद आया। वो मेरा बहुत सम्मान करते थे और मुझे इज्जत देते थे। भारतीय सिनेमा में उनके योगदान की बात करें तो, मुझे लगता है कि वे एक बेहद कुशल शिल्पकार और एक माहिर कलाकार थे।

Prem Nath

राज कपूर के बहनोई प्रेम नाथ, उनके साथ तब जुड़े जब राज कपूर अपना करियर बनाने की दहलीज पर थे। दोनों ने फिल्म 'आग' से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की और प्रेम नाथ ने 'बरसात', 'आवारा' में एक छोटी भूमिका, 'धर्म कर्म' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों से सफलता की नई ऊंचाइयों को छुआ। अंतर्मुखी राज कपूर और बहिर्मुखी प्रेम नाथ की जोड़ी ने राज कपूर की लोकप्रियता को और भी मजबूत किया। प्रेम नाथ बताते हैं: 'जब नागपुर में पृथ्वी थिएटर 'दीवार' नाटक का मंचन कर रहा था, तब राज कपूर और मैं दोनों रामू (नौकर) की

भूमिका निभाते थे। होली का दिन था, मौज-मस्ती, शराब पीने और उत्सव के गीत गाने का दिन। ज्यादा जश्न मनाने के कारण राज कपूर की आवाज बैठ गई और वे शाम के शो के पहले एक्ट से आगे नहीं गा सके। उन्होंने मुझे अपनी जगह मंच पर भेजा और कहा: "दर्शक मुझे सुन नहीं पा रहे हैं, जाओ और अगले एक्ट में मेरी भूमिका निभाओ क्योंकि शो तो चलता रहना चाहिए।" मैंने वैसा ही किया और किसी को भी बदलाव का पता नहीं चला।'

Dilip Kumar, Raj Kapoor and Prem Nath

दिलीप कुमार

राज कपूर और दिलीप कुमार में कई समानताएँ थीं। दोनों का जन्म दिसंबर में पेशावर में हुआ था। दिलीप कुमार का जन्म 11 दिसंबर 1922 को और राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को हुआ था। दोनों एक ही स्कूल में पढ़े, दोनों के दोस्त भी एक जैसे थे और बाद में दोनों ने एक ही पेशे को अपनाया। शुरुआत से ही राज कपूर आत्मविश्वास से भरे नौजवान थे, जिनमें युवावस्था का जोश कूट-कूटकर भरा था और वे रंगमंच और सिनेमा की ओर बेतहाशा आकर्षित थे। वहीं दूसरी ओर, दिलीप कुमार स्वभाव से बेहद विनम्र और अंतर्मुखी थे। यहाँ तक कि वे स्कूल के नाटकों में भी हिस्सा लेने से मना कर देते थे। वे राज कपूर से कहते थे, 'डर के मारे मेरी जान ही निकल जाएगी!' अपनी शुरुआती बीसियों में राज कपूर क्रिकेट के मैदानों में अकड़कर चलते हुए, बिखरे बालों के साथ, एक कान पर एक ही भुजा से फिट किए हुए चश्मे पहने नज़र आते थे। वहीं दिलीप कुमार घर पर बैठकर जीन पॉल सार्त्र की रचनाएँ पढ़ते थे। फिर भी, एक ही अलौकिक प्रेरणा ने उन दोनों को प्रेरित किया, हालांकि विपरीत दिशाओं से, जिससे वे अपने विपरीत स्वभाव और अभिनय कला के प्रति बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण के साथ, एक ही अनमोल सिक्के के दो पहलू बन गए। फिल्मों की दुनिया में लगातार साथ रहने वाले ये दो विशिष्ट व्यक्तित्व जल्द ही आगे बढ़े, अपने कम प्रतिभाशाली समकालीनों को पीछे छोड़ते हुए, एक ऐसी दोहरी नेतृत्व क्षमता विकसित की जो अक्सर तीव्र प्रतिस्पर्धा और एक सुलगती, कभी-कभी अप्रत्यक्ष, प्रतिद्वंद्विता में प्रकट होती थी। राज कपूर हमेशा अपने साथी दिलीप कुमार और अपने प्रशंसकों के बीच तुलना करते थे। उन्होंने कहा, 'मेरे प्रशंसक इस दुनिया के गरीब, गली के

बच्चे, लंगड़े, अंधे, वंचित और वंचित लोग हैं! परिपक्क और परिष्कृत युवतियां नहीं! नहीं, वे सभी दिलीप कुमार के प्रशंसक हैं! वे सभी उनसे बेइंतहा प्यार करते हैं!'

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा, दिलीप कुमार और सायरा बानू के साथ।

Rajendra Kumar

राज कपूर के निधन के बाद राजेंद्र कुमार ने याद करते हुए कहा: "जब राज कपूर के सबसे प्रिय मित्र और सहकर्मी मुकेश का अमेरिका में हृदय गति रुकने से निधन हो गया, तो राज जी और मैं उनका शव लेने मुंबई हवाई अड्डे गए। जब ताबूत कार्गो होल्ड से बाहर आया, तो राज जी ने उसे देखकर दुख से कहा, "हमारा यह मित्र यात्री बनकर गया था और सामान बनकर लौटा है।" यह विडंबना ही है कि नियति राज कपूर को भी दिल्ली एक सम्मानित यात्री के रूप में ले गई और मुकेश की तरह उन्हें भी सामान बनकर वापस ले आई। अगली सुबह, जब मुकेश के पार्थिव शरीर को अंतिम संस्कार के लिए उनके घर से ले जाया जाना था, तो अंतिम संस्कार की सारी व्यवस्था राज जी ने की थी। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे, इसलिए उन्होंने सभी धर्मों के पुजारियों को प्रार्थना करने के लिए बुलाया था। मैं उनके बगल में खड़ा था। उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा, "भाई, याद रखना जब मैं जाऊं, तो मेरे लिए भी ऐसा ही करना।" और हमने वैसा ही किया।"

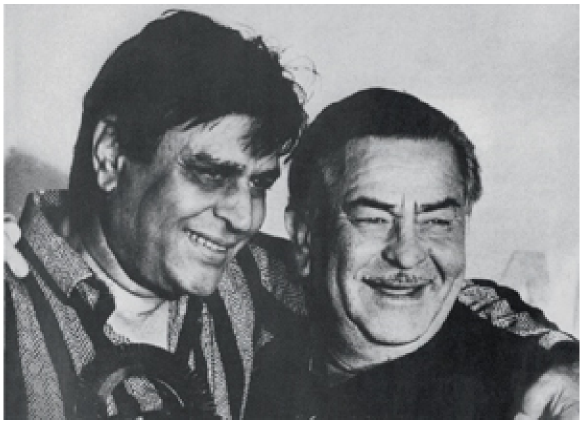

From left: Raj Kapoor, Rajendra Kumar, Dilip Kumar and Shammi Kapoor

संगीत

'हमारे देश में हमारा संपूर्ण अस्तित्व, हमारी जीवनशैली, हमारा सांस्कृतिक ताना-बाना संगीत से जुड़ा हुआ है। हमारा जीवन, हमारा जन्म संगीत से जुड़ा है। हमारी मृत्यु एक शोकगीत से जुड़ी है, जो कि संगीत ही है। हमारे रीति-रिवाज, हमारे देवी-देवता, हमारे त्यौहार, हमारी फसल कटाई, सब कुछ संगीत ही संगीत है... जहाँ शब्द कम पड़ जाते हैं, वहाँ संगीत ही शब्दों से कहीं अधिक अर्थ व्यक्त करता है।'—राज कपूर

मुकेश के साथ

With Lata Mangeshkar

मुकेश के साथ

Raj Kapoor on Lata Mangeshkar

मेरी फिल्मों के कई गीतों में हमेशा साथ देने वाला एक बहुत बड़ा नाम है लता मंगेशकर। बरसात फिल्म से ही लता को पहली बार मेरी फिल्मों में मौका मिला। ऐसा लगा जैसे मैं उनके आने का ही इंतज़ार कर रहा था, ताकि राज कपूर और उनके संगीत को आज जो मुकाम मिला है, वो उन्हीं की वजह से है। लोगों ने आपको संगीत में मेरी रुचि के बारे में तो बताया होगा, लेकिन शायद उन्होंने मेरी प्रेरणा यानी लता के बारे में नहीं कहा होगा।

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा और लता मंगेशकर के साथ

राज कपूर के साथ अपने जुड़ाव पर लता मंगेशकर की टिप्पणी

लगभग सन् 1948 की बात है, मैं मशहूर रिकॉर्डिंग स्टूडियो में संगीत निर्देशक अनिल बिस्वास के लिए एक गाना रिकॉर्ड कर रहा था। उस समय राज कपूर का उसी इमारत की दूसरी मंजिल पर एक छोटा सा दफ्तर था। अनिल बिस्वास ने उनसे संपर्क किया और उन्हें स्टूडियो आकर मेरी आवाज़ सुनने के लिए कहा। मैंने गाना गाया और उन्होंने सुना। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उन्होंने सुना और चले गए! अगले दिन, अनिल बिस्वास ने फोन किया और कहा कि राज कपूर ने आपको महालक्ष्मी कार्यालय में बुलाया है।

कोल्हापुर में मैंने पृथ्वीराज कपूर की फिल्म सिकंदर पंद्रह बार देखी थी। मैं उनका बहुत बड़ा प्रशंसक था। वे लंबे और बेहद आकर्षक थे। मैंने सोचा कि अपने पसंदीदा स्टार के बेटे राज कपूर से मिलने का यह अच्छा मौका हो सकता है। मैंने निमंत्रण स्वीकार किया और चला गया। राज कपूर अपने दफ्तर में अपनी डेस्क पर बैठे थे। मैं उनके सामने बैठा। उन्होंने कहा, 'मैं चाहता हूं कि तुम मेरी फिल्म के लिए गाओ,' और मुझसे पूछा कि इसके लिए उन्हें कितना भुगतान करना होगा। मैंने जवाब दिया कि वे मुझे जो भी राशि दें, मुझे स्वीकार्य होगी। उन्होंने इसके लिए मुझे 500 रुपये देने की पेशकश की। उस समय राम गांगुली संगीत निर्देशक थे और शंकर और जयकिशन दोनों संगीत संयोजनकर्ता थे। वे सभी पृथ्वी थिएटर में एक साथ काम करते थे। शंकर तबला बजाते थे और जयकिशन हारमोनियम। उन्होंने फिल्म बरसात के लिए 'जिया बेकरार है' गाना गाया और मुझे सिखाया।

इस रिकॉर्डिंग के बाद ही राज कपूर ने फैसला किया कि फिल्म के संगीत निर्देशक राम गांगुली नहीं बल्कि शंकर-जयकिशन होंगे। यह ऐतिहासिक निर्णय था, जिसके बोल शैलेंद्र और हसरत जयपुरी ने लिखे थे, और इसी से आर.के. फिल्म्स के सदाबहार संगीत का जन्म हुआ।

मुझे याद है राज जी ने जयकिशन को चेतावनी दी थी। उन्हें मेरी इस बात की चिंता थी कि शास्त्रीय गायिका होने के नाते मैं व्यावसायिक फिल्मी गाने गा पाऊँगी या नहीं! यह सुनकर मैं स्वाभाविक रूप से बहुत परेशान हो गई थी। मैं नई थी और फिल्म इंडस्ट्री में काम नहीं किया था। मैंने बरसात फिल्म के सभी गाने गाए। राज साहब की तरफ से बरसात के एक गाने में भैरवी आलाप की गुजारिश सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने वो आलाप गाया और उन्हें बहुत पसंद आया और वे बहुत प्रसन्न हुए। इस फिल्म का संगीत बहुत सफल रहा। बाद में, अगली फिल्मों के लिए, वे धुन की बारीकियां मुझ पर छोड़ देते थे। लेकिन वे हमेशा ऐसा आलाप चाहते थे जो लाखों लोगों के दिलों को छू ले।

Dev Anand, Raj Kapoor, Lata Mangeshkar and Dilip Kumar

मुझे याद है वो दिन जब हम आवारा फिल्म का मशहूर गाना 'घर आया मेरा परदेसी' रिकॉर्ड कर रहे थे, मेरे साथ मन्ना डे भी थे। हम रिकॉर्डिंग थिएटर पहुंचे। शंकर और जयकिशन ने हमें गाने के बोल और धुन सिखाई, लेकिन बाद में आए

राज साहब ने हमारी दिन भर की मेहनत को नकार दिया। उन्होंने जयकिशन से कहा, 'मुझे कोई घटिया गाना नहीं चाहिए!' उन्होंने पूरा गाना ही बदल दिया। उन्होंने गाने में आलाप भी जोड़ दिया! ये सब सुबह 3 बजे तक चलता रहा और जब काम खत्म हुआ तब उन्होंने कहा, 'अब चलो खाना खाते हैं!' उन्होंने पूरी यूनिट के लिए खाने का इंतजाम किया था। मुझे याद है पूरी टीम सड़क के बीच में बैठकर खाना खाया था। उन दिनों, खासकर सुबह 3 बजे, ट्रैफिक लगभग न के बराबर होता था। सड़क पर एक चादर बिछाई गई थी, जहां हम सबने खाना खाया और घर के लिए निकल गए। यही उनका काम करने का तरीका था। एक दिन जब राज जी की फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' बन रही थी, उन्होंने मुझे रात 11 बजे फोन किया। और उन्होंने कहा, 'अभी आओ! मुझे तुम्हारा आलाप चाहिए!' रिकॉर्डिंग स्टूडियो मेरे घर के पास ही था और आधी रात तक मैं वहाँ पहुँच गया। गाना मुकेश गा रहे थे। राज जी ने कहा, 'मैं इस गाने में एक आलाप जोड़ना चाहता हूँ, ऐसा आलाप जिसे लोग हमेशा याद रखें!' उन्होंने आगे कहा, 'आपको शंकर या जयकिशन से सलाह लेने की ज़रूरत नहीं है।' आलाप रिकॉर्ड किया गया और राज जी को वह बहुत पसंद आया। हालाँकि, संगीत निर्देशक जयकिशन इस बात से नाराज़ और परेशान थे। राज जी ने उनसे कहा, 'छलिया बाबू (जिस नाम से वे उन्हें बुलाते थे), मुझे जो करना है, मैं करूँगा। कृपया दखल न दें।' राज जी ने उसी गाने में एक और आलाप जोड़ा, वो भी ऊँची पिच पर! राज जी बहुत खुश हुए और गाना ज़बरदस्त हिट हुआ। इसका फिल्मांकन बहुत ही सुंदर था और यह फिल्म की जान बन गया। फिल्म में आत्मसमर्पण करने जा रहे डाकुओं के काफिले के साथ-साथ बादल का हिलना देखकर प्रकृति ने भी राज जी के उच्च स्वर वाले आलाप को शामिल करने के फैसले का समर्थन किया!

बाएं से: गायिकाएं गीता दत्त और लता मंगेशकर राज कपूर के साथ

राज कपूर, नरगिस और लता मंगेशकर के साथ। फिल्म 'आवारा' के स्वप्न दृश्य में कुछ खास संगीत प्रभाव पैदा करने के लिए ज़ाइलोफोन विशेष रूप से खरीदा गया था।

मैं भी गुस्सैल स्वभाव का था। मैं अक्सर झगड़ा करता था। मैं उनके बेटे रणधीर कपूर के साथ उनकी फिल्म 'कल आज और कल' के लिए रिकॉर्डिंग कर रहा था। राज जी रिकॉर्डिंग के लिए आए थे। वहाँ उन्होंने मुझे बताया कि वे जल्द ही अपनी अगली फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' शुरू करने वाले हैं, जिसके लिए वे मेरे भाई हृदयनाथ मंगेशकर से संगीत बनवाना चाहते हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं अपने भाई से पूछ लूँगा। मैं अपने भाई को मनाने में कामयाब रहा, जबकि उन्हें फिल्मों के लिए संगीत देने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। राज जी ने हृदयनाथ का संगीत

सुना था और मुकेश ने ही उनका नाम सुझाया था। मैं अपने अमेरिका दौरे पर चला गया, जहाँ मुकेश से यह सुनकर मुझे गहरा सदमा लगा, 'हृदयनाथ की पिक्चर गई!' यह मेरे लिए बहुत शर्मनाक था। हृदयनाथ ने मुझे फोन किया और कहा कि उन्होंने मेरे कहने पर ही फिल्म स्वीकार की थी, लेकिन अखबारों में कुछ और ही छप रहा था। वे नाराज और शर्मिंदा थे। मैं राज जी से बहुत नाराज़ था। वापस आकर मैंने उन्हें फोन किया और पूछा, 'आपने ऐसा क्यों किया?' मैंने उसे इसलिए राजी किया था क्योंकि आपने मुझसे ऐसा करने को कहा था!

~

हृदयनाथ इस फिल्म इंडस्ट्री की राजनीति का शिकार हुए। राज कपूर ने खुद उनसे सत्यम शिवम सुंदरम के लिए संगीत तैयार करने का अनुरोध किया था। लगभग सब कुछ तय हो चुका था, लेकिन लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल ने आखिरी समय में राज कपूर का मन बदल दिया। राज कपूर के इस बर्ताव से नाराज होकर लता कपूर ने उनसे झगड़ा कर लिया। उन्होंने कहा, 'मैं अब आपके लिए नहीं गाऊंगी!'

लता मंगेशकर ने राज कपूर को परेशान करना शुरू कर दिया। उन्होंने भविष्य में गाए जाने वाले गानों के लिए भी राज कपूर से रॉयल्टी की मांग शुरू कर दी, जैसा कि वह अन्य निर्माताओं के साथ करती थीं। उन्हें और अधिक पैसे चाहिए थे और उन्होंने रिकॉर्डिंग में भी देरी करवाई। पंडित नरेंद्र शर्मा, जो लता मंगेशकर के बहुत प्रिय थे और जिन्हें वह 'पापा' कहकर बुलाती थीं, ने जब उन्हें समझाया कि केवल वही उस गाने के साथ न्याय कर सकती हैं, जिसके बोल उन्होंने लिखे थे, तब जाकर वह आर.के. फिल्म्स के लिए फिर से गाने को राज कपूर को राज़ी किया। लता मंगेशकर ने बताया, 'मैंने शर्त रखी कि मैं रिकॉर्डिंग स्टूडियो में किसी से बात नहीं करूंगी। मैं गाऊंगी और चली जाऊंगी।' उन्होंने लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल से यह भी कहा कि वे राज कपूर को रिकॉर्डिंग रूम में न आने दें, लेकिन अपनी शरारत के चलते वह लगातार आसपास रहकर उन्हें परेशान करते रहे और यहां तक कि लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल से इतनी जोर से गाने में कुछ और आलाप डालने को कहते रहे कि लता के कानों तक पहुंच जाए! मुझे याद है

कि मैंने गुस्से में धीरे से कहा था, “अरे, प्लीज़! एक और ऐसा सुझाव दिया तो मैं पूरे गाने को सिर्फ़ आलापों से भर दूंगी!” उन्होंने फिल्म के लिए अपनी अंतिम रिकॉर्डिंग के लिए राज कपूर को लंबा इंतजार करवाया और विदेश यात्रा पूरी करने के बाद ही गाना गाया। लेकिन राज कपूर, उनकी अपार कलात्मकता को भलीभांति जानते हुए, धैर्यपूर्वक इंतजार करते रहे और उनका धैर्य रंग लाया। आज लता मंगेशकर के आज भी लोकप्रिय, जटिल क्लासिक्स जैसे ‘सत्यम शिवम सुंदरम’, ‘भोर भये पनघट पे’ और ‘यशोमती मैया से’ को सुनकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि ये गाने संगीत की रानी ने इतने गुस्से में और एक ही टेक में रिकॉर्ड किए थे। लता मंगेशकर ने याद किया, ‘मैंने संगीत निर्देशक लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल के साथ गाने सीखे और उनका अभ्यास किया। गाना एक ही टेक में रिकॉर्ड हो गया। राज कपूर को यह बहुत पसंद आया और उन्होंने बार-बार कहा, “बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया!” मैंने गाना गाया और बिना किसी से बात किए सीधे कार में चली गई। बॉबी बन रही थी।’ मैंने राज कपूर को फोन किया और उन्हें बताया कि गायक संघ ने गायकों से निर्माताओं से सीधे रॉयल्टी लेने को कहा है। उन्होंने तुरंत जवाब दिया, “मैं यहाँ व्यापार करने आया हूँ, रॉयल्टी बाँटने नहीं!” मैंने जवाब दिया, “आप व्यापार करने आए हैं और मैं रानी बाग आई हूँ!”

लता मंगेशकर फिल्म 'बॉबी' के सेट पर नारियल फोड़ रही हैं। 'संगम' के बाद थोड़े समय के लिए मनमुटाव के बाद वह आर.के. कपूर के साथ वापस लौटी थीं। यहां वह आनंद बख्शी, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और राज कपूर के साथ नजर आ रही हैं।

1950 के दशक में मॉस्को में मुकेश के साथ, अपने प्रशंसकों के लिए 'आवारा हूं' गाना गाते हुए।

राज कपूर के अनुरोध पर लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल ने इस शीत युद्ध में हस्तक्षेप करने की कोशिश की। लता मंगेशकर ने उनके सभी प्रयासों को नकार दिया और उनसे कहा कि वे उन्हें आगे परेशान न करें। अंततः, राज कपूर ने उन्हें फोन किया और कहा, "अगर तुम मेरी फिल्म के लिए गाने से इनकार करती हो, तो मैं तुम्हारे घर के सामने तंबू लगाकर बैठूंगा।" आख़िरकार, वह मान गईं और बॉबी के लिए गाने के लिए तैयार हो गईं। सोलह साल की उम्र में लता मंगेशकर ने बॉबी के लोकप्रिय गाने जैसे 'ऐ फंसा', 'झूठ बोले कौवा काटे', 'अक्सर कोई लड़का' को सहजता से गाया और उन्होंने यादगार गीत 'अंखियों को रहने दे अंखियों के आस पास' में भी अपना जादू बिखेरा, जो एक पंजाबी लोक गीत पर आधारित था। लता और शैलेन्द्र सिंह का फंतासी गीत, 'चाबी खो जाए', शायद फिल्म का सबसे बड़ा हिट था।

राज कपूर अपने संगीत सहयोगियों के बारे में

मुकेश थे, मेरी आत्मा, मेरी आवाज़; मैं तो बस एक शरीर मात्र थी। दुनिया भर के लोगों के दिलों को छूने वाले गीत उन्होंने गाए, मैंने नहीं। राज कपूर तो बस एक छवि थे, मांस और हड्डियों का एक ढांचा। जब उनका (मुकेश का) निधन हुआ, तो सब कुछ नष्ट हो गया। मुझे लगा, मेरी सांस चली गई, मेरी आत्मा चली गई। मुझे पता है मुझसे क्या छिन गया। एक खालीपन छा गया, एक शून्य, और फिर मुझे उससे उबरकर आगे बढ़ना पड़ा। यही एक कलाकार की कीमत होती है।

राज कपूर मुकेश कपूर के साथ 'मेरा नाम जोकर' फिल्म के एक गाने की रिहर्सल कर रहे हैं।

कहते हैं कि गायक महत्वपूर्ण होता है, गीत नहीं, लेकिन मेरे लिए गायक और गीत दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। लता जी, मुकेश जी, रफी जी, मन्ना डे जैसे गायकों ने मेरे फिल्मी सफर में मेरा साथ दिया है। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। मैंने अपने गीतकारों शैलेंद्र और हसरत जयपुरी से, अपने संगीत निर्देशकों राम गांगुली, शंकर और जयकिशन, लक्ष्मीकांत और प्यारेलाल, रविंद्र जैन से भी बहुत कुछ सीखा है। वे ही मूल तत्व हैं, मैं तो बस संचालक हूं। उनका हुनर, उनकी प्रतिभा, उनकी कला ही मूल तत्व है। मैं उनकी ही शान में चमक रहा हूं।

मेरे विषय हमेशा मुझे एक विशेष प्रकार के संगीत का सुझाव देते थे—वह शैली फिल्म के अंतिम स्वरूप में सटीक बैठती थी। संगीत की शैली में एक विशेष प्रकार का जोश और आक्रामकता आवश्यक थी। मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मेरी फिल्मों के गीतों का कोई अर्थ हो और उनमें वह विशिष्टता हो जो पहली बार सुनने पर ही दिल को छू जाए। मेरी फिल्मी शख्सियत कभी भी मेरे संगीत से अलग नहीं रही है। आप कह सकते हैं कि कई बार मेरी फिल्मों में संगीत ने संवादों की जगह ले ली है। 'जीना यहाँ, मरना यहाँ' से बेहतर कोई गीत फिल्म निर्माण के प्रति, बल्कि जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को, इतने सटीक रूप से व्यक्त नहीं करता। मेरी फिल्म में शामिल होने वाला हर संगीत दिल से आना चाहिए। मैं ऐसा ही बना हूँ, मैं कर्कश ध्वनि को मधुरता के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे लिए संगीत वह है जो दिल को छू जाए।

~

शैलेंद्र, शंकर, जयकिशन और मुकेश, ये सभी राज कपूर के करीबी लोगों में शामिल थे। यह जानना दिलचस्प है कि शैलेंद्र ने आर.के. फिल्म्स के लिए गीत लिखना कैसे शुरू किया, क्योंकि इससे राज कपूर के व्यक्तित्व और व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

Mukesh, Hasrat Jaipuri, Raj Kapoor and Anandswami

शैलेंद्र, जो रेलवे कर्मचारी होने के साथ-साथ कविताएँ भी लिखते थे, दृढ़ निश्चय से वामपंथी थे। वे एक जोशीले नौजवान थे और नई पीढ़ी के कवि, जन कवि थे। उनकी कविताएँ बोलचाल की भाषा में लिखी जाती थीं और उनके भाव आम

जनता के होते थे। किसी भी आदर्शवादी की तरह, शैलेंद्र फिल्मों और फिल्म जगत के लोगों से थोड़ा तिरस्कार रखते थे। राज कपूर ने एक मुशायरे में शैलेंद्र को सुना था और उनसे अपने लिए कविताएँ लिखने को कहा था। शैलेंद्र ने मना कर दिया। आसानी से हार मानने वाले राज कपूर ने शैलेंद्र को अपने घर बुलाया और एक लंबी बातचीत के बाद अपना प्रस्ताव दोहराया। शैलेंद्र ने फिर से मना कर दिया। राज कपूर ने कहा, "ठीक है, रहने दो। लेकिन ये रहा लिफाफा," और एक लिफाफे में कुछ पैसे डाल दिए। उन्होंने लिफाफे को सील कर दिया और उस पर शैलेंद्र का नाम लिख दिया। "मैं इसे दफ्तर में रख रहा हूँ। जब भी आपको किसी परेशानी में होना पड़े और पैसों की ज़रूरत हो, आकर ले जाना। कोई शर्त नहीं है।" आखिरकार, एक समय ऐसा आया जब उस जोशीले कवि को पैसों की ज़रूरत पड़ गई। उनके बड़े बेटे का जन्म होने वाला था और उन्हें अस्पताल के बिल चुकाने थे। वे आए और लिफाफा ले गए। राज को इसकी सूचना दी गई, लेकिन उन्होंने कवि से संपर्क करने का कोई प्रयास नहीं किया। कुछ दिनों बाद, शैलेंद्र स्वयं कविताओं का एक गट्ठा लेकर आए। उन्होंने कहा, 'ये आपके लिए हैं।' राज ने कहा, 'आपको ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है।' कवि ने झल्लाकर कहा, 'क्या आपको लगता है कि मैं भीख लूंगा?' और इस तरह, शैलेंद्र आर.के. परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गए और भारतीय सिनेमा के सबसे यादगार चेहरों में से एक बन गए।

शैलेंद्र की फिल्म 'तीसरी कसम' की शूटिंग मध्य प्रदेश के दमोह के पास कहीं हो रही थी। शैलेंद्र के बहनोई का विवाह दमोह में रहने वाले प्रोफेसर घोष की बेटी से हुआ था। निर्देशक बसु भट्टाचार्य ने लोकेशन को मंजूरी दे दी थी। यह एक आम सा गांव था, जैसा कि आप भारत के ग्रामीण इलाकों में कहीं भी देख सकते हैं। दरअसल, महाराष्ट्र में ऐसे गांव मौजूद थे और वहां शूटिंग करने का कोई खास कारण नहीं था, सिवाय शैलेंद्र के बहनोई की जान-पहचान के, जो फिल्म से सिर्फ इसलिए जुड़े हुए थे क्योंकि वे शैलेंद्र के रिश्तेदार थे। कलाकारों और तकनीशियनों के लिए यह बेहद असुविधाजनक था, लेकिन सभी शैलेंद्र से इतना प्यार करते थे कि उन्होंने यह थका देने वाला सफर तय किया। राज कपूर अपने निजी सहायक जॉन के साथ वहां पहुंचे, जो उनके लिए खाना बनाते थे। वे अपने मेकअप मैन और हेयर ड्रेसर आदि को साथ नहीं लाए, सिर्फ इसलिए क्योंकि वे निर्माता के पैसे बचाना चाहते थे। यह ध्यान देने योग्य है कि उन्होंने शैलेंद्र को निर्माण करने से मना किया, सिर्फ इसलिए क्योंकि यह उनके काव्यात्मक स्वभाव के अनुकूल नहीं था। बात इतनी बढ़ गई कि उन्होंने शैलेंद्र को कार्यकारी निर्माता बनाकर और मुनाफे में बड़ा हिस्सा खुद लेने की पेशकश की। शैलेंद्र खुद निर्माता बनने के लिए अड़े हुए थे क्योंकि उन्होंने फणीश्वर नाथ रेणु की अन्य कहानियों, जिनमें उनके उपन्यास मैला आँचल और पार्टी परिकथा शामिल थे, का भी निर्माण करने की योजना बनाई थी।

राज कपूर अपनी पत्नी कृष्णा और करीबी दोस्त मुकेश के साथ नई दिल्ली के इंपीरियल होटल में ठहरे हुए थे। यह फिल्म 'तीसरी कसम' के प्रीमियर का मौका था। शैलेंद्र को दिल्ली न आने के लिए कहा गया था क्योंकि उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी था। उनके बहनोई ने फिल्म के वितरण अधिकार दो वितरकों को बेच दिए थे। राज कपूर ने मुकेश से सच्चाई का पता लगाने को कहा। एक वितरक ने 80,000 रुपये दिए थे और अपनी मूल राशि वापस मिलने पर ही कानूनी कार्यवाही वापस लेने को तैयार था। राज कपूर ने पैसे दिए और फिल्म रिलीज करवा ली। मुकेश ने कानूनी मामलों को संभाला। विट्ठल भाई पटेल ने दिल्ली के नव-उद्घाटित होटल में फिल्म रिलीज के बाद पार्टी दी। दुखद, लेकिन सच, फिल्म 'तीसरी कसम' के निर्माण के तनाव के कारण शैलेंद्र की मृत्यु हुई, और वह भी उनके प्रिय सहकर्मी और मित्र राज कपूर के जन्मदिन पर।

With music directors Kalyanji, Anandji, Shankar, Jaikishen, Laxmikant, Pyarelal

राज कपूर संगीत पर

मैं यह नहीं कहता कि मैं संगीत रचता हूँ, बल्कि मैं उसका संचालन करता हूँ। मैं अपने संगीत को उसी तरह प्रस्तुत करता हूँ जैसा मैं कल्पना करता हूँ, किस विशेष क्षण में वाद्य यंत्रों की ध्वनि प्रवाहित होनी चाहिए, ताल वाद्यों की तीव्रता और ध्वनि किस स्तर पर होनी चाहिए। यही संचालन की कला है। इसलिए, चाहे संगीतकार या लेखक कोई भी हो, इसकी अपनी एक अलग विशेषता होती है।

बचपन से ही मुझे संगीत में रुचि रही है। दरअसल, मेरी पहली ख्वाहिश संगीत निर्देशक बनने की थी। मैंने चित्तौड़ विजय, जेल यात्रा और गोपीनाथ जैसी अपनी शुरुआती फ़िल्मों में गीत भी गाए हैं। संगीत के प्रति मेरी रुचि बचपन से ही है, जब मैं पापाजी के साथ कलकत्ता के थिएटर में जाया करता था। मुझे सबसे ज्यादा रायचंद बोराल का संगीत कक्ष आकर्षित करता था। बाद में, जब हम मुंबई आए, तो पापाजी ने मतुंगा स्थित नारायण राव व्यास की संगीत अकादमी में दाखिला लिया, जहाँ मैंने तीन साल तक शास्त्रीय संगीत सीखा और हारमोनियम, तबला, सितार आदि वाद्य यंत्र बजाना सीखा। मैं कुछ समय अनिल दा (अनिल बिस्वास) के साथ भी रहा। मुझे याद है, बाम्बे टॉकीज में क्लैपर बाय के रूप में काम करते हुए, मुझे एक हफ्ते के लिए निलंबित कर दिया गया था क्योंकि निर्देशक रेमसे मुझे ढूंढ रहे थे और मैं संगीत हॉल में अनुपस्थित था। फिर पृथ्वी थिएटर में, शो के बाद, हम सब साथ बैठकर धुनें बनाते थे। मुझे धुनें बनाने का बहुत शौक था। मैंने राम बाबू (राम गांगुली) के साथ कुछ धुनें बनाईं; शंकर और जयकिशन के साथ

भी, जिनमें से एक हारमोनियम वादक थे और दूसरे तबला वादक। और यहीं पर शंकर-जयकिशन और राज कपूर की इस जोड़ी का जन्म हुआ।
बरसात के बाद से मेरा संगीत कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो बस यूं ही शामिल हो जाए, बल्कि फिल्म का अभिन्न अंग बन गया है। संगीत मनोरंजन का एक ऐसा रूप है जो इस गरीब विकासशील देश में लाखों लोगों तक पहुंचता है, और यह सबसे सस्ता भी है। लोग अपना संगीत, अपने नृत्य, अपना रोमांच, अपने जादू के शो, सर्कस, लड़ाई, सब कुछ चाहते हैं। संगीत हमारे सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है, इसे यूं ही उखाड़ फेंकना संभव नहीं है। इसलिए, जागते रहो जैसी फिल्म में भी, जो मूल रूप से बिना संगीत के थी, मुझे दो-तीन ऐसे मौके मिले जहां गानों की ज़रूरत थी। लेकिन मैं हमेशा ऐसे गाने शामिल करने की कोशिश करता हूं जो कहानी की गति को बनाए रखें और अगर मैं ऐसा नहीं कर पाता, और अगर गाना बस वहीं रुक जाता है, स्थिर हो जाता है, तो मैं उसे हटा देता हूं। कई बार मैंने गाना रिकॉर्ड किया, उसे फिल्माया, और फिर उसे हटा दिया। संगम में भी ऐसा ही हुआ था; वेनिस में फिल्माया गया गाना इस्तेमाल नहीं किया गया था। सत्यम शिवम् सुंदरम में भी ऐसा ही हुआ।
अब मैं लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के साथ काम कर रहा हूँ। वे पूछते हैं कि आप क्या चाहते हैं? मैं उन्हें स्थिति, पिछला दृश्य, अगला दृश्य, पूरे क्रम का प्रभाव समझाता हूँ, बोल लिखवाता हूँ, उन्हें देता हूँ, बताता हूँ कि जब कलाकार दृश्य का अभिनय कर रहे होंगे, तो भावनात्मक स्तर ऐसा होगा और पृष्ठभूमि संगीत कुछ इस तरह का होगा, और यहीं से गीत का जन्म होगा। इस तरह उन्हें गीत के बारे में काफी जानकारी मिल जाती है और फिर वे उसे संगीतबद्ध करते हैं, और यह आसान हो जाता है, क्योंकि धीरे-धीरे मैं गीत की कल्पना करने लगता हूँ। बॉबी में, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने एक सुंदर धुन तैयार की थी। लेकिन उसमें कुछ कमी थी, कुछ ऐसा जो दिल को छू नहीं रहा था... 'हम तुम एक कमरे में बंद हों, और चाबी खो जाए...' धुन, लय और तुकबंदी के हिसाब से यह ठीक-ठाक था। तो क्या करें? तभी एक विचार आया, 'सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो'। बस, यही सही था। उस नई लाइन के साथ, कल्पनाओं और ख्वाबों की दुनिया खुल सकती है। इसलिए, हम ऐसी ही चीजों की तलाश करते हैं। कभी-कभी हमें वो मिल जाती हैं, कभी-कभी नहीं।
प्रेम रोग में छह गाने हैं और वे बेहद खूबसूरती से लिखे गए हैं, जो कहानी, परिस्थितियों और किरदारों से प्रेरित हैं। किरदार संवादों या छंदों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इसलिए, संगीत भावनाओं की चरम सीमा है, जहाँ शब्द भावनाओं को व्यक्त करने में विफल रहते हैं, वहाँ व्यक्ति गीत के माध्यम से उमड़ पड़ता है। प्रेम रोग का एक गाना हॉलैंड में, ट्यूलिप के खेत में फिल्माया गया था। फिल्म में एक दृश्य में लड़का लड़की से कहता है, 'जब तुम मुस्कुराती हो तो ऐसा लगता है जैसे लाखों फूल खिल गए हों।' अब, यह विचार, 'लाखों फूल', मेरे मन में बस गया। और मुझे लाखों फूल कहाँ से मिलेंगे? मैंने हर जगह खोजबीन की। मैं उत्तर प्रदेश सरकार के कार्यालय गया, बद्रीनाथ में फूलों की एक घाटी है लेकिन वहाँ आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता। मैंने इसे हॉलैंड में देखा था, इसलिए मैंने वहाँ शूटिंग करने के बारे में सोचा और चतुराई से इस तथ्य को छिपा लिया कि यह यूरोप का एक आधुनिक शहर है। खैर, मुझे लगता है कि यह आने वाले वर्षों में फिल्माए गए सबसे बेहतरीन गानों में से एक होगा।

~

एक आलोचक के अनुसार, राज कपूर अपनी फिल्मों के संगीत को आकार देने में अपनी सारी रचनात्मक ऊर्जा लगा देते थे। वे एक वास्तुकार की तरह थे, जो संगीत की नींव पर अपनी फिल्में बनाते थे। उन्हें अपने संगीतकारों, गीतकारों और गायकों से ठीक-ठीक पता होता था कि उन्हें क्या चाहिए। वे आसानी से संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वे अपनी टीम को मनाते, फुसलाते और परेशान करते रहते, और तभी काम खत्म करते जब गाने एकदम सही हों, धुन एकदम सटीक हो, बोल सही हों, ऑर्केस्ट्रा दमदार हो और रिकॉर्डिंग त्रुटिहीन हो। फिर वे आराम से लेट जाते और उस गाने को पर्दे पर जीवंत करने के सौ अलग-अलग तरीकों के बारे में सोचने लगते।

राजनीतिक बैठकें

'एक शोमैन और एक राजनेता एक ही मंच पर चुनाव लड़ते हैं... वे सपने बेचते हैं'—राज कपूर

With Indira Gandhi and Shankar-Jaikishen

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद से राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए (1956)

पद्मिनी और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन के साथ

मेरा हमेशा से यही मानना रहा है, और मैं इसे फिर से पूरे ज़ोर से दोहराता हूँ, कि एक शोमैन और एक राजनेता एक ही मंच पर चुनाव लड़ते हैं, वे सपने बेचते हैं। कुछ सपने सच होते हैं, कुछ नहीं। फिल्म बनाना कुछ हद तक चुनाव लड़ने जैसा

है, लेकिन कम से कम चुनाव में धांधली तो की जा सकती है, लेकिन जनमत को प्रभावित नहीं किया जा सकता!

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन से राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए

एक बार जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ की यात्रा से लौटे, जिसमें स्टालिन से उनकी मुलाकात भी शामिल थी। उसी दौरान उनकी मुलाकात पापाजी (मेरे पिता पृथ्वीराज कपूर) से हुई। नेहरूजी ज़्यादा फ़िल्में नहीं देखते थे, लेकिन मेरे पिता को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने मेरे पिता को एक तरफ़ ले जाकर कहा, 'आपके बेटे ने जो फ़िल्म 'आवारा' बनाई है, वो क्या है? स्टालिन तो हर समय उसी की बात करते रहते थे।'

एक बार दिलीप कुमार, देव आनंद और मुझे भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के तीन मूर्ति स्थित आवास पर उनसे मिलने का निमंत्रण मिला। सुरक्षा गार्ड अपनी मोटरसाइकिलों पर हमारी लिमोसिन के आगे-पीछे चलते हुए हमें वहाँ तक ले गए और उनका स्वागत उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने किया, जो उस समय नेहरू परिवार की देखभाल कर रही थीं। वे विनम्र और शर्मीली थीं, कम बोलती थीं, लेकिन अत्यंत शिष्ट थीं और उन्होंने हमें विशेष चाय पिलाई। फिर हमें पंडितजी के अध्ययन कक्ष में ले जाया गया, जहाँ उनका एकाधिकार हो गया।

पूर्व राष्ट्रपति वी.वी. गिरि से पद्म भूषण प्राप्त करते हुए (1971)

Raj Kapoor with Vyjayanthimala and former Prime Minister Jawaharlal Nehru

हाल ही में वे एक दुर्भाग्यपूर्ण स्ट्रोक से उबरे थे और शांत और कुछ हद तक निराश दिख रहे थे। उन्होंने अपने तीन महान नेताओं (जैसा कि हमारे प्रसिद्ध तिकड़ी को कहा जाता था) को अपनी बाहों में थाम रखा था और जल्द ही उनका

मूड अच्छा हो गया, वे अपने समय के कुछ महान विश्व नेताओं के साथ अपने अनुभवों को सुनाने लगे। हम सब उन्हें बड़े ध्यान से सुन रहे थे, जैसे बच्चे अपने दादाजी से कोई रोमांचक कहानी सुन रहे हों। वे बिल्कुल एक बच्चे की तरह थे, हमें अपने समकालीन कई प्रसिद्ध हस्तियों से मिली यादगार चीजें दिखाते हुए उन्हें बहुत गर्व और खुशी हो रही थी। हम सबने अपने दिल की बात खुलकर कही, मानो हमें कोई बिछड़ा हुआ दोस्त मिल गया हो, और उन्होंने भी उसी तरह बच्चों जैसी खुशी के साथ प्रतिक्रिया दी। शायद वे अपने बोझिल जीवन से कुछ पल की राहत चाहते थे, जो उनके आसपास की राजनीतिक होड़ और चापलूसी के दबाव से भरा हुआ था। हमने उनसे पूछा, 'हमने सुना है कि पंडितजी, आप जहाँ भी जाते थे, बहुत लोकप्रिय और महिलाओं के बीच बेहद आकर्षक हुआ करते थे!' उन्होंने अपनी मशहूर मुस्कान के साथ तुरंत जवाब दिया, 'आप लोगों जितने लोकप्रिय नहीं!' हमने उनके बारे में पढ़ा था कि उनकी मुस्कान बेहद मनमोहक थी और उनका चेहरा बेहद आकर्षक था। इसलिए हमने पूछा, 'आपकी दिलकश मुस्कान ने लेडी माउंटबेटन का दिल जीत लिया था... क्या यह सच है, महोदय?' वे सवाल सुनकर शरमा गए और हंसते हुए बोले, 'मुझे अपने बारे में ये सारी कहानियाँ बहुत पसंद हैं!' 'लेकिन सब कहते हैं कि उन्होंने खुद आपके प्रति अपनी कमज़ोरी स्वीकार की थी!' दिलीप कुमार ने बड़े ही मजाकिया अंदाज में कहा। 'लोगों ने मुझे इन कहानियों पर विश्वास दिला दिया।' वे फिर हल्के-फुल्के अंदाज में हँसे। अब मैं उत्सुकता से उनके अध्ययन कक्ष का निरीक्षण कर रहा था और मैंने पूछा, 'क्या यह वही मशहूर कुर्सी है जहाँ से हमारे देश के प्रधानमंत्री अपने राष्ट्र को आदेश देते हैं?' उन्होंने कुर्सी की ओर देखा और हंसते हुए कहा, 'जाओ और वहाँ बैठो। तुम्हें पता चल जाएगा।' पंडितजी ने हमें पूरी तरह से मोहित कर लिया। लेकिन मुझे उनमें एक विशेष प्रकार की उदासी दिखाई दी, मानो वे अपने आसपास घट रही दुखद घटनाओं को देख रहे हों। वह महान नेता, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए जेल में रहते हुए अपनी पुस्तक 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में इतिहास रचा और स्वतंत्रता प्राप्त करके इतिहास का नाम रोशन किया, जल्द ही स्वयं इतिहास का हिस्सा बनने वाले थे। उनके कभी-कभी थोड़ी उदास हंसी से यह स्पष्ट था कि उन्हें अपने ईश्वर के बुलावे का पूर्वाभास हो रहा था।

काम

'मेरा काम एक व्यक्ति का नहीं है, मैंने हमेशा संस्थाओं के माध्यम से काम किया है, और मेरा योगदान हमेशा एक स्रोत के रूप में ही रहा है।'—राज कपूर

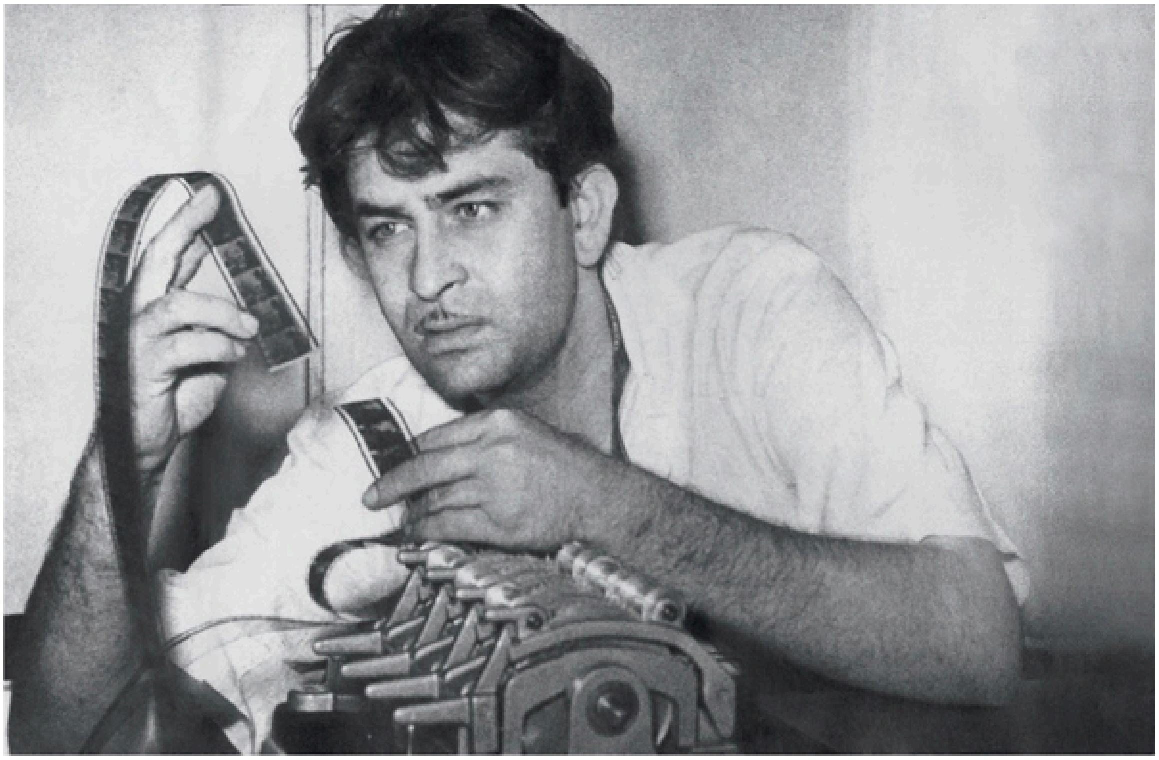

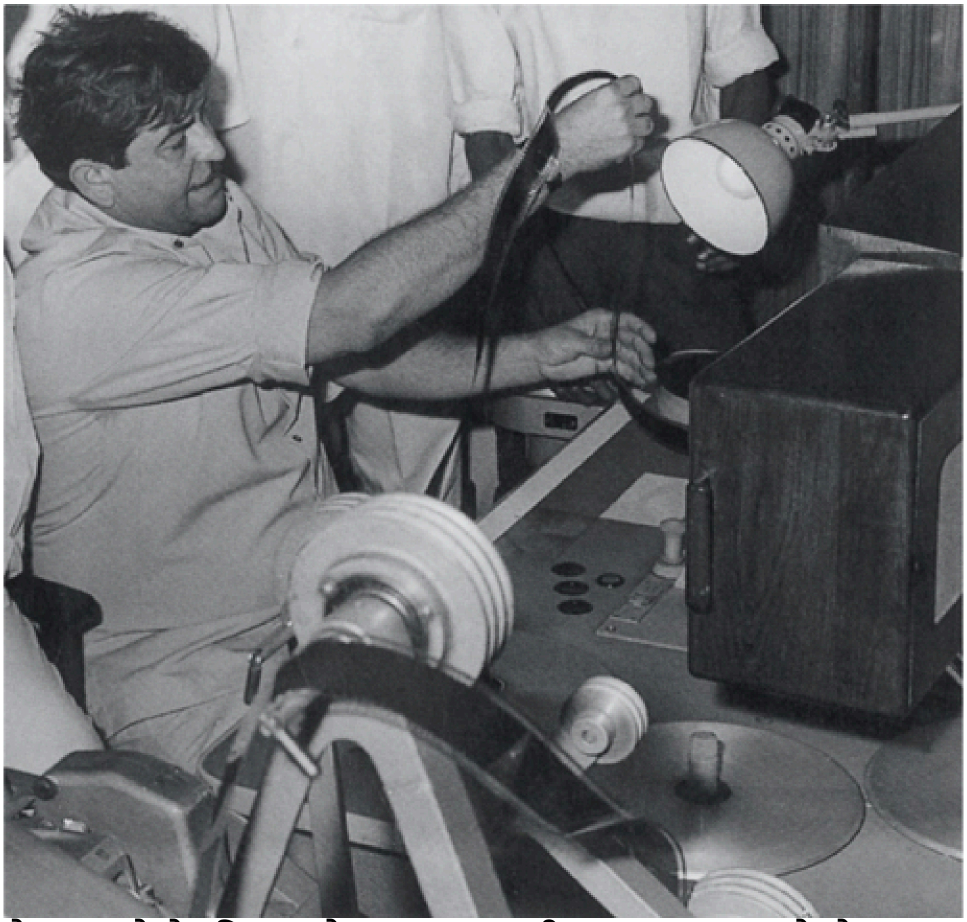

सिनेमा को समझने के लिए मुझे बहुत कुछ सीखना पड़ा। उनमें से एक यह था कि संपादन, मोंटाज, सिनेमा जगत में सफलता पाने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ों में से एक है। आप अपने भीतर लय बनाते हैं। फुटेज ही आपको लय सिखाता है। एक पैर ज़्यादा होने से भी दृश्य बिगड़ सकता है और एक पैर कम होने से भी उतना ही नुकसान होगा। यह वास्तव में एक बहुत ही रचनात्मक प्रक्रिया है। फिल्में लेखन और संपादन के दौरान बनती हैं; बाकी सब तो बस कलाबाजी है। मुझे नहीं लगता कि मैंने अपनी किसी और फिल्म के लिए इतना काम किया जितना प्रेम रोग के लिए किया। कहानी तो पूरी थी लेकिन पटकथा लगभग एक साल में लिखी गई, और फिल्म की लंबाई को लेकर आप सटीक नहीं हो सकते। आप सीमा से ज़्यादा भी कर सकते हैं और मैंने हमेशा सीमा से ज़्यादा किया है। उदाहरण के लिए, प्रेम रोग के लिए एक बड़ा सेट था और जब आप पहली बार सेट पर जाते हैं तो सब कुछ नया होता है क्योंकि हमारे पास मॉडल तैयार करने, परिदृश्य बनाने, कैमरा मूवमेंट और कट की पूर्व-योजना बनाने की व्यवस्था नहीं थी। ऐसा लगता है मानो सब कुछ पहली बार आपके सामने खुल रहा हो, और आप सोचने लगते हैं कि इसे फिल्म में कैसे उतारा जाए? मेरा पहला शॉट पूरे परिदृश्य को दिखाता है। सब कुछ एकदम नया और ताज़ा होता है, और आप दिखाना चाहते हैं कि, देखो, ये सीढ़ियाँ हैं, ये बरामदा है, ये मेहराब हैं, ये खंभे हैं, ये वरांडा है, और यहाँ से एक व्यक्ति सीढ़ियों से नीचे उतरता है, बरामदे से गुजरता है, और फिर एक किरदार से मिलता है और बात करता है। बाद में, जब फिल्म की शूटिंग पूरी हो जाती है और वह लगभग पूरी होने वाली होती है, तो आप पिछले और अगले दृश्यों के

संदर्भ में उस शॉट को संपादित करते हैं और पाते हैं कि चालीस या पचास फीट का यह लंबा शॉट ज़रूरी नहीं है। फिल्म में सेट को इतनी बार दोहराया जा चुका है कि लोग धीरे-धीरे समझ जाते हैं कि कौन सी जगह कहाँ है, चाहे वह पहली मंजिल हो, दूसरी मंज़िल हो या रसोईघर। इसलिए, वह लंबा पहला शॉट अनावश्यक था। मैं अभी 'प्रेम रोग' के इसी चरण में हूँ, जहाँ मैं फिल्म में कुछ काट-छाँट करने की कोशिश कर रहा हूँ और काफी हद तक कर भी चुका हूँ, लेकिन यह बहुत ही कष्टदायक काम है, खासकर अगर आप फिल्म के निर्माता भी हों, क्योंकि आपने बेवजह इतना समय, मेहनत और पैसा खर्च कर दिया होता है। मैं खुद से कहता रहता हूँ: 'अरे बेवकूफ, राज कपूर, तुम कभी नहीं सीखोगे, तुम हमेशा हद से ज़्यादा करते हो!' मुझे डर है कि इतने सालों में भी मुझे कुछ समझ नहीं आया, लेकिन मान लीजिए कि मैंने सारी शूटिंग नहीं की होती और मुझे उसकी ज़रूरत पड़ती। सेट तो होता ही नहीं। तब मैं क्या करता? इसलिए, बेहतर है कि आपके पास ज़्यादा शॉट्स हों ताकि आप उन्हें मोंटाज कर सकें: आप उड़ते हुए पक्षियों को दिखा सकते हैं, पानी पर लहरों को, हिलते हुए पेड़ों और खेतों को। हो सकता है कि आप उन सभी शॉट्स का इस्तेमाल न करें, लेकिन अगर आपके पास वे हैं तो आप उनमें से कुछ हिस्सों को शामिल करना चाहेंगे, जैसे कि आने वाले तूफान का संकेत देने के लिए।

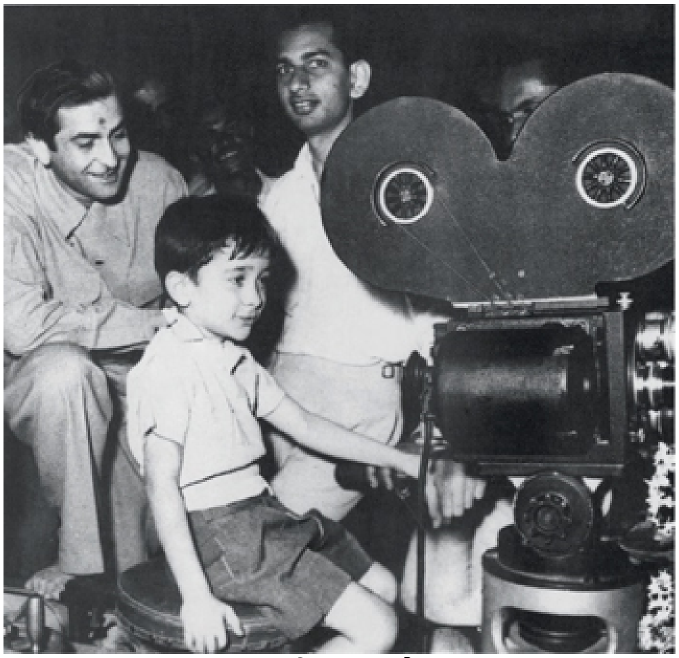

युवा रणधीर कपूर के साथ

वैजयंतीमाला के साथ

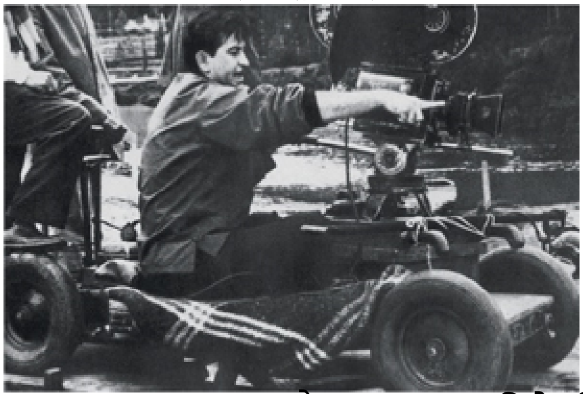

मेरी शुरुआती फिल्में 'आग', 'बरसात' और 'आवारा' विदेशी फिल्मों से प्रभावित थीं। विशेष रूप से उन तीन इतालवी फिल्मकारों से, जो 1952 में बॉम्बे फिल्म महोत्सव में आए थे: रॉबर्टो रोसेलिनी, विटोरियो डी सिका और सेसारे ज़ावत्तिनी। ये तीनों इटली में नवयथार्थवाद आंदोलन के अग्रदूत थे। डी सिका की फिल्मों,

विशेष रूप से 'मिरेकल इन मिलान', 'बाइसाइकिल थीव्स' और 'शूशाइन' ने मुझे बहुत प्रभावित किया। ज़ावत्तिनी डी सिका के पटकथा लेखक थे और मेरी उनसे लंबी बातचीत हुई थी। फ्रैंक कैप्रा भी महोत्सव के लिए भारत आए थे और उनसे भी मेरी लंबी बातचीत हुई थी। कैप्रा की फिल्में 'इट हैपेंड वन नाइट' और 'मिस्टर डीड्स गोज टू टाउन' ने भी मुझे प्रभावित किया। मैं सेसिल बी. डेमिल का भी प्रशंसक था, मैंने उनकी सभी फिल्में देखीं, लेकिन जिन फिल्मों ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वे थीं 'द टेन कमांडमेंट्स', 'रीप द वाइल्ड विंड' और 'द ग्रेटेस्ट शो ऑन अर्थ'। डी सिका और ज़ावत्तिनी ने पर्दे पर वही उतारा जो उन्होंने देखा और महसूस किया। कुछ ऐसा जो वास्तविक था। जीवन के अंश। किसी अमेरिकी फिल्म में आप कभी किसी छोटे बच्चे को पेशाब करते नहीं देख सकते। 'बाइसाइकिल थीव्स' में बच्चा पेशाब करता है और पिता सड़क के किनारे साइकिल के साथ इंतजार करता है... यह कितना सरल है। कितना वास्तविक है। हालांकि, इस पूरे आंदोलन का सबसे प्रभावी पहलू फिल्मों में निहित प्रतीकात्मकता थी। यह बहुत महत्वपूर्ण था। दूसरी बात थी स्टूडियो की चार दीवारों से बाहर निकलकर खुले में फिल्में बनाना। इनमें से कई निर्देशकों ने मुझसे कहा, 'आप कितने भाग्यशाली हैं! भारत में तो साल भर धूप रहती है, आप स्टूडियो के अंदर शूटिंग क्यों करते हैं? बाहर इतनी शानदार रोशनी है, तो आप कृत्रिम दृश्यों के साथ शूटिंग क्यों करते हैं? हम स्टूडियो में तभी काम करते हैं जब आवश्यक हो।'

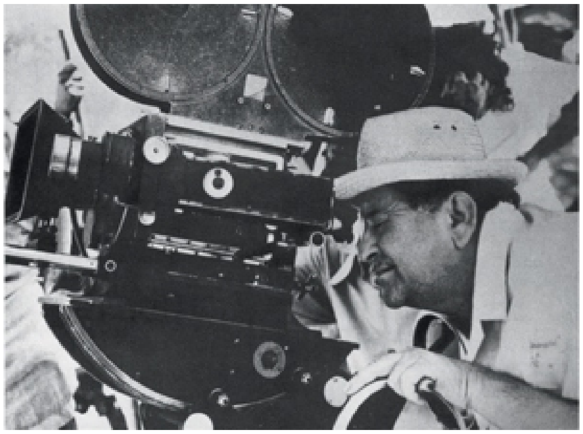

अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पादों में हमेशा समय लगता है। यह माध्यम बहुत ऊर्जा लेता है। यहां तक कि जब आप फिल्मों के बारे में सोच रहे होते हैं, योजना बना रहे होते हैं या दिवास्वप्न देख रहे होते हैं, तब भी यह काम ही होता है। मेरा एक पसंदीदा किस्सा जोसेफ कॉनराड के बारे में है। एक बार किसी ने उनसे पूछा कि उनके काम से जुड़ी सबसे मुश्किल चीज क्या है, तो उन्होंने जवाब दिया, 'अपनी पत्नी को यह समझाना कि जब मैं खिड़की से बाहर देख रहा होता हूं, तब भी मैं वास्तव में काम कर रहा होता हूं।' यहां तक कि जब मैं इंटरव्यू दे रहा होता हूं, तब भी मैं आने वाली फिल्मों के स्वरूप, फिल्माए जाने वाले दृश्यों और पहले से फिल्माए गए दृश्यों के बारे में सोच रहा होता हूं। तो क्या मैं काम नहीं कर रहा हूं?

~

अपने अंतिम दिनों में भी, जब राज कपूर बेहद अस्वस्थ थे, उनके मन में काम करने का ही ख्याल था। रणधीर, जिन्होंने 1990 में अपने पिता की अधूरी परियोजना 'हेन्ना' को पूरा करके रिलीज़ किया, याद करते हैं: 'यह अजीब बात है कि मेरे पिता ने अस्पताल में भर्ती होने से ठीक एक दिन पहले मुझे पाँच हज़ार रुपये दिए और कहा: "मैं चाहता हूँ कि तुम 'हेन्ना' का निर्देशन करो"।'

यह कॉटेज पापा का एकांतवास स्थल था, जो आर.के. स्टूडियो के बनने से भी पहले बना था, जो इसके ठीक बगल में बना था। यह कॉटेज उनके रचनात्मक, पेशेवर और निजी जीवन का केंद्र था। वे इसी कॉटेज में पालथी मारकर बैठते थे, चाहे व्यापारिक मामलों को निपटाना हो या किसी स्क्रिप्ट पर चर्चा करना। दीवारों पर दुनिया के सभी धर्मों के देवी-देवताओं और पैगंबरों की तस्वीरें, उनके पिता पृथ्वीराज कपूर का एक पुराना चित्र, आवारा फिल्म में नरगिस, जिस देश में गंगा बहती है में पद्मिनी और संगम फिल्म में वैजयंतीमाला के चित्र लगे थे। ये वे महान हस्तियां हैं जिनके चित्र दीवार पर टंगे हैं।

मैं इसे अपनी वेदी कहता हूँ, यह सभी धर्मों का प्रतिनिधित्व करती है। ये महान आत्माएँ हैं, ये वे लोग हैं जो महान विचारक रहे हैं और जिन्होंने मानवता को उस मुकाम तक पहुँचाया है जहाँ आज हम प्रेम, शांति और आध्यात्मिकता को पूरी तरह से नहीं तो थोड़ा-बहुत तो जानते और समझते हैं। हमने अभी तक पूर्ण पारलौकिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, फिर भी हम धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहे हैं, उसकी ओर आरोहण कर रहे हैं। मेरे लिए यह स्थान आज भी वही कमरा है जो बहुत पहले था—मेरे स्टूडियो बनने से भी पहले—एक शांत जगह पर, न कि आज के मुंबई के घनी आबादी वाले उपनगरीय इलाके में। फिर भी, इस छोटी सी कुटिया में आज भी बहुत शांति है। यह बहुत छोटी जगह है, लेकिन इसकी बहुत सी यादें हैं। इस स्थान की पवित्रता उन अनगिनत कलाकारों से आती है जिन्होंने राज कपूर या आर.के. फिल्म्स को आज जो मुकाम हासिल हुआ है, उसमें अपना योगदान दिया है। मेरे लिए यह एक पवित्र स्थान के समान है, एक ऐसी जगह जहाँ भले ही कई लोग मुझे छोड़कर चले गए हों और मैं स्वयं अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर हूँ, फिर भी कोई न कोई हमेशा यहाँ से गुजरेगा और लोगों द्वारा दिए गए योगदान और विरासत को आगे बढ़ाएगा। यहाँ बैठकर चिंतन करने से मुझे असीम आनंद मिलता है। मैं अपने सभी सहकर्मियों को देखता हूँ, उन्हें धन्यवाद देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हम कभी लुप्त न हों, चाहे कुछ भी हो जाए, यह स्थान हमेशा मजबूत बना रहे, ताकि यह लोगों के विचारों को एक साथ ला सके और सिनेमा कला में योगदान दे सके।

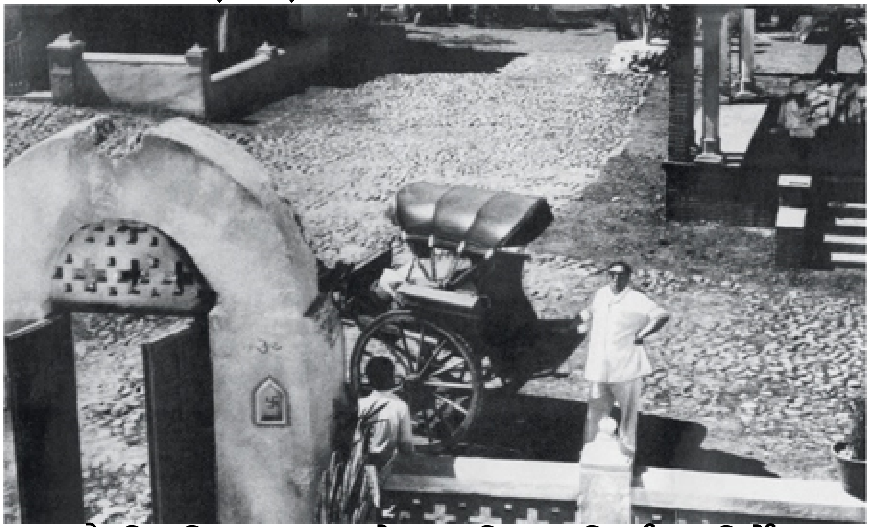

मेरा मूल विश्वास है कि फिल्म कला केवल फिल्म निर्माता, निर्देशक की कला है। संगीत निर्देशक फिल्म का एक हिस्सा देखता है, लेखक का अपना हिस्सा होता है, और कला निर्देशक का अपना। पूरी रचना केवल निर्देशक के दिमाग में होती है। और निर्देशक भी एक इंसान है, जो हर तरह की मनोदशाओं और समस्याओं से प्रभावित होता है—घर पर पत्नी से झगड़ा, बच्चों का स्कूल जाना और कार से टक्कर हो जाना, या फिर अभिनेता का देर से आना, अभिनेत्री का समय पर गाउन न मिलना, इत्यादि। आप शांत रहते हैं और अपना काम करते रहते हैं। कभी सफलता मिलती है, कभी नहीं। फिल्म एक सामूहिक प्रयास है, यह लेखन या चित्रकला की तरह व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है। जब एक लेखक लिखना शुरू करता है, तो उसे केवल कागज और कलम या टाइपराइटर की आवश्यकता

होती है, और जब उसे अपना लिखा हुआ पसंद नहीं आता, तो वह उसे फाड़ देता है, फेंक देता है और फिर से लिखना शुरू कर देता है। शायद एक चित्रकार भी कुछ ऐसा ही करता है। लेकिन एक फिल्म निर्माता के लिए, दुर्भाग्य से, जब तक वह वास्तव में अपने किए का फल देख पाता है, तब तक वह पीछे जाकर दोबारा शुरुआत नहीं कर सकता। उसके पास पैसे नहीं होते। यह व्यवसाय खर्चीला है। लेकिन एक बार इसमें उतर जाने के बाद, आप बस भगवान से प्रार्थना करते हैं; या हर बार यही विश्वास करने की कोशिश करते हैं कि यह आपकी अब तक की सबसे बड़ी बॉक्स-ऑफिस हिट फिल्म होगी। एक कलाकार वह होता है जिसमें विनम्रता, कोमलता और दूसरों का प्यार पाने की क्षमता होती है, और वह हर काम को अपना मानकर करता है। अगर आप सबके चहेते कलाकार बन सकते हैं, तो आपसे बड़ा कलाकार कोई नहीं हो सकता। एक और बात जो मैंने सीखी है, वह यह है कि कभी भी ऐसी कोई फिल्म न बनाएं जिस पर आपको विश्वास न हो। मैंने ऐसी फिल्में बनाई हैं जिन पर मुझे पूरा भरोसा है, जिन पर मुझे विश्वास है। मुझे स्क्रिप्ट ढूंढने में बहुत समय लगा है, या कभी-कभी मेरे पास स्क्रिप्ट तो होती है लेकिन मैंने उन्हें तब तक नहीं बनाया जब तक मुझे सही लोग नहीं मिल जाते, उदाहरण के लिए, संगम। और कुछ स्क्रिप्ट तो बस यूं ही मेरे पास आ गईं, जैसे आवारा, श्री 420, जागते रहो इत्यादि। कभी-कभी मुझे ऐसी फिल्में या स्क्रिप्ट ऑफर की जाती हैं जो बॉक्स ऑफिस पर खूब चलने वाली मानी जाती हैं, लेकिन मुझे उनमें कभी दिलचस्पी नहीं रही। ऐसा नहीं है कि मेरी फिल्में लोकप्रिय या बॉक्स ऑफिस पर हिट नहीं हुई हैं; शायद वे बाकी सभी फिल्मों से कहीं ज्यादा सफल रही हैं। फिर भी, जो चीज मुझे प्रभावित करती है, वह है स्क्रिप्ट में निहित मानवीय मूल्य।

~

राज कपूर की फिल्मों के विषय और थीम इतने सटीक होते थे कि वे अपनी पसंद के अनुसार कलाकारों का चयन कर सकते थे। कलाकारों को केवल अपने किरदार के अनुरूप अभिनय क्षमता की आवश्यकता होती थी, बाकी सब कुछ विषय और थीम द्वारा तय हो जाता था। हालांकि, बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। अगर आपने गौर किया हो, तो 'जिस देश में गंगा बहती है', 'संगम', 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'बॉबी', 'प्रेम रोग' और 'हेन्ना' के चयन के पीछे स्पष्ट कारणों से कहीं अधिक कारण थे। विशेष रूप से, 'जिस देश में गंगा बहती है' में प्राण, 'संगम' में आकर्षक राजेंद्र कुमार, 'बॉबी' में प्रेम चोपड़ा, 'सत्यम शिवम सुंदरम' में ज़ीनत, 'प्रेम रोग' में शम्मी कपूर और 'हेन्ना' में सईद जाफरी को सामान्य से कहीं अधिक सावधानी से चुना गया था। वे कई मायनों में अपने किरदारों के लिए एकदम उपयुक्त थे।

अगर किरदार और अभिनेता एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हों, तो पटकथा अपने आप ही बन जाती है। अगर राज कपूर की पूरी फिल्म को एक महाकाव्य गीत मान लें, तो पटकथा उसके बोल कहलाएगी। लेकिन यहाँ एक पेंच है, पटकथा कभी काव्यात्मक नहीं होती थी। यह ज्यादातर सरल हिंदी में होती थी और हमेशा किरदारों के अनुरूप होती थी। दार्शनिक भाषण के सबसे करीब वे फिल्म के अंत में ही पहुंचते थे। संगीत में लोकगीतों के प्रति राज कपूर के प्रेम की

तरह, उनकी पटकथाएँ भी सरल होती थीं और सीधे दिल को छूती थीं, कानों को नहीं। फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के उस दृश्य में, जब रूसी लड़की और वे विदा हो रहे होते हैं, वह उनसे पूछती है, 'तुम नाराज़ तो नहीं हो?' वे सिर हिलाते हैं। वह फिर पूछती है, 'तुम दुखी तो नहीं हो?' वे फिर सिर हिलाते हैं। फिर वह कहती है, 'चश्मा उतारो।' पटकथा में दर्शन के सबसे करीब पहुँचने के लिए उन्हें बस इतना ही करना पड़ा।

~

अलग-अलग लोग अपने जन्मदिन को अलग-अलग तरीके से मनाते हैं। अधिकतर लोगों के लिए यह उत्सव और मौज़-मस्ती का दिन होता है। मेरे जन्मदिन का महत्व मेरे लिए कम और मेरे कर्मचारियों के लिए ज़्यादा है। वे उस दिन खूब आनंद लेते हैं, जिसे आर.के. स्टूडियो में कर्मचारियों की छुट्टी घोषित किया गया है। मैंने हमेशा अपने जन्मदिन को अपने काम और अपनी फिल्मों के संदर्भ में मापा है। यह हमेशा से एक परंपरा रही है कि हर नई फिल्म का शुभारंभ आर.के. स्टूडियो में 14 दिसंबर को मेरे पिता पृथ्वीराज कपूर द्वारा किए गए मुहूर्त के साथ होता था।
तो, मेरा जीवन काम है, और मेरा काम सिनेमा है। मैं सिनेमा के सपने देखता हूँ, सिनेमा में साँस लेता हूँ और सिनेमा में जीता हूँ। मैं बस एक साधारण इंसान हूँ। मैं यह दावा नहीं करता कि मेरे पास कोई अकादमिक योग्यता है, सिवाय इसके कि मैं अपने आस-पास की चीजों से अच्छी तरह वाकिफ रहा हूँ और इसलिए मुझे मानवीय दर्शन, मानवीय दया और करुणा का थोड़ा-बहुत ज्ञान है, और शायद इसी ने मेरे अंदर के विदूषक को जन्म दिया है, और वह विदूषक, आँसुओं की कीमत पर भी, सबको खुश करने की कोशिश करता है। क्योंकि मेरा मानना है कि हर इंसान के अंदर एक खूबसूरत पहलू छिपा होता है, जो कि विदूषक है। सिनेमा जनसंचार के सबसे प्रभावी रूपों में से एक है और लाखों लोगों तक पहुँच सकता है क्योंकि यह एक ही समय में श्रव्य और दृश्य दोनों है। यह आपको सोचने पर मजबूर करता है और भावनाओं को जगा सकता है। सभी फिल्मों में, चाहे वे किसी भी भाषा की हों, एक सार्वभौमिक अपील होती है। उनके माध्यम से दिया गया संदेश लोगों के दिलों तक पहुँचता है। रूसी, तुर्की या पाकिस्तानी फिल्मों में कोई अंतर नहीं है। चाहे अमेरिकी हो या रूसी, माँ के आँसुओं का असर एक जैसा होता है। इसी तरह, लोगों के मुस्कुराते चेहरे भी एक जैसे होते हैं। आँसुओं और मुस्कानों के लिए भाषा की आवश्यकता नहीं होती। इन अनुभवों को दुनिया में कहीं भी समान समझ के साथ महसूस किया जा सकता है।

~

राज कपूर ने आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज की अपनी टीम के बारे में कहा था, 'हमारी टीम इतनी एकजुट है कि मुझे अपनी बात स्पष्ट रूप से बताने की भी जरूरत नहीं पड़ती।' टीम की सफलता का राज उसकी निरंतरता में छिपा था। आवारा फिल्म के कैमरामैन राधू कर्माकर ने राज कपूर की आखिरी फिल्म राम तेरी गंगा मैली में कैमरा यूनिट का निर्देशन किया था और राज कपूर के निधन के बाद हेन्ना के निर्माण में भी उन्होंने यही भूमिका निभाई। एस. काला चंद्र अड़तीस वर्षों तक राज कपूर के सहायक निर्देशक रहे। शंकर-जयकिशन ने 1970 में

जयकिशन के निधन तक राज कपूर की फिल्मों का संगीत तैयार किया। पत्रकार वी.पी. साठे और लेखक के.ए. अब्बास ने बरसात, आवारा और श्री 420 जैसी फिल्मों में राज कपूर के साथ वर्षों तक काम किया। शैलेंद्र ने आर.के. फिल्म्स के लिए गीत लिखना शुरू किया और अपनी मृत्यु तक इसे जारी रखा। हसरत जयपुरी भी राज कपूर के लिए नियमित रूप से गीत लिखते थे।
राज कपूर के वितरकों ने भी उनकी आखिरी फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' में उनका पूरा साथ दिया। यह आखिरी फिल्म उस शानदार अभिनेता के लिए एक नाजुक दौर में आई थी। आर्थिक रूप से वे बेहद मुश्किल में थे। आखिरी समय में होने वाले ज़रूरी निर्माण कार्यों के लिए उनके पास बिल्कुल भी पैसा नहीं बचा था, जो राज कपूर जैसे पूर्णतावादी व्यक्ति को संतुष्ट करने के लिए बेहद महत्वपूर्ण थे। वितरकों के अनुसार, उन्होंने अपने सभी वादे पूरे कर दिए थे, और कुछ मामलों में तो ज़रूरत से ज़्यादा ही कर दिया था। फिर भी उन्होंने अपनी फिल्म पूरी की, और सब कुछ इस बात पर निर्भर था कि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कैसा प्रदर्शन करेगी। और फिर एक बड़ा झटका लगा। राज कपूर को अपने व्यवसाय के व्यावसायिक पहलू में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी, जिसके कारण वे हमेशा कर बकाया के शिकार होते रहे। उन पर आयकर विभाग द्वारा संपत्ति ज़ब्त किए जाने का गंभीर खतरा मंडरा रहा था। उनके पास अपने वितरकों के अलावा कोई और सहारा नहीं था। वितरकों को उन पर भरोसा था और उन्होंने मुश्किल समय में उनका साथ दिया। बकाया चुका दिया गया और संकट टल गया। 'राम तेरी गंगा मैली' अपने समय की सबसे बड़ी हिट फिल्म बन गई।
श्री 420 के बाद, राज कपूर को अक्सर 420 कहकर पुकारा जाने लगा, खासकर उनके प्रशंसकों द्वारा, और उन्हें यह बहुत अच्छा लगता था। हालांकि, एक बार ऐसा भी हुआ जब उन्हें शुरू में इतना अच्छा नहीं लगा। राज कपूर ने अप्सरा थिएटर में संगम की हीरक जयंती के अवसर पर हुई घटना को याद किया, जब वे अपनी यूनिट के अधिकांश सदस्यों के साथ मंच पर आए थे। दरअसल, सोवियत संघ की लंबी यात्रा से लौटने पर, आर.के. स्टूडियो के उनके एक कर्मचारी ने उन्हें 'हैलो 420!' कहकर अभिवादन किया। राज कपूर चौंक गए और सोचने लगे कि क्या यह सिर्फ एक मजाक था या कर्मचारी दामोदर उनका अपमान कर रहा था। उन्होंने इसे नजरअंदाज करने की कोशिश की, लेकिन यह बात उनके दिमाग से नहीं निकली। आखिरकार उन्होंने कर्मचारी को बुलाया और उससे पूछा कि उसका मतलब क्या था। क्या यह मजाक था? अपनी चतुराई को साबित करने का मौका पाकर दामोदर बहुत खुश हुआ - इतना चतुर कि उसके बॉस को भी इसका पता नहीं चला - और बोला: 'मैं तो बस आपको यह बताना चाहता था कि संगम ने अप्सरा थिएटर में साठ सप्ताह पूरे कर लिए हैं, यानी 420 दिन!'
यह घटना आर.के. स्टूडियो में मालिक-कर्मचारी के सौहार्द का एक बेहतरीन उदाहरण है। कहावत है कि 'कोई भी व्यक्ति अपने नौकर का हीरो नहीं होता', लेकिन आर.के. स्टूडियो में राज कपूर हमेशा पहले एक प्यारे हीरो थे, फिर एक

दोस्त और आखिर में बॉस। इसीलिए उनकी तकनीशियनों और कलाकारों की टीम हर सुख-दुख में उनके साथ खड़ी रही। गीतकार शैलेंद्र ने एक घटना सुनाई जो राज कपूर के चरित्र के इस पहलू पर प्रकाश डालती है। एक दिन बहुत तेज बारिश हो रही थी और शैलेंद्र राज कपूर को उनकी छोटी सी झोपड़ी में ले गए। छत बुरी तरह टपक रही थी। शैलेंद्र ने कहा, 'अब आपको पता चल गया होगा कि हम लोग कैसे रहते हैं।' राज कपूर काफी देर तक चुप रहे, फिर धीरे से बोले, 'ऐसे ही कमरों में असली भारत बसता है। मैं इसके बारे में कुछ करूंगा।'

एक निर्देशक के तौर पर, मैं स्थिति और अभिनेता से अपनी अपेक्षाओं को स्पष्ट करता हूं। सही ढंग से भाव व्यक्त करना अभिनेता पर निर्भर करता है। यहीं पर अभिनय प्रतिभा काम आती है। चाहे कोई भी अभिनय कर रहा हो या निर्देशन, फिल्म हमेशा निर्देशक की ही रचना होती है। आखिरकार, फिल्म की पूरी अवधारणा उसी के पास होती है। उदाहरण के लिए, 'आई लव यू' वाक्य को ही लें। आप इसे तीन अलग-अलग तरीकों से कह सकते हैं: तीनों शब्दों में से किसी एक पर ज़ोर देकर। केवल निर्देशक ही जानता है कि वह किस शब्द पर ज़ोर देना चाहता है। वह सौ वाद्ययंत्रों वाले ऑर्केस्ट्रा के संचालक की तरह होता है, जो हर स्वर-लहर को भलीभांति समझता है। भले ही हर वाद्ययंत्र बजाने वाला कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, उसे संचालक के निर्देशों का पालन करना ही पड़ता है। मैंने अन्य निर्देशकों द्वारा निर्देशित कई फिल्मों में अभिनय किया है और मुझे अपनी व्यक्तिगत पहचान को त्यागकर केवल निर्देशों का पालन करने वाले अभिनेता बनने के लिए आलोचना और प्रशंसा दोनों मिली हैं। (लेकिन) मेरा मानना है कि सिनेमा फिल्म निर्माता की कला है। बेशक, इसमें संगीत, लेआउट, वेशभूषा, संपादन और कई अन्य चीजें शामिल होती हैं। लेकिन निर्देशक ही वह समन्वयक होता है जो पूरी फिल्म को एक कलाकृति के रूप में प्रस्तुत करता है।

ऋषि कपूर और डिंपल कपाडिया के साथ

With Padmini Kolhapure

हमने आशावाद के दौर में अपना काम शुरू किया था। गणतंत्र नया था, शासक नेतृत्व में नए थे। मेरा सिनेमा आदर्शवाद के युग में जन्मा। इसीलिए मेरी फिल्मों के गीतों में एक पवित्रता है, महिलाओं का रूप-रंग मासूम और भोला-भाला है। यह अजीब है, लेकिन आज जैसे जटिल समय में भी आदर्शवाद कारगर साबित होता है। लेकिन आज कोई भी बिना किसी योग्यता के निर्माता या निर्देशक बन सकता है। पुराने जमाने में हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना पड़ता था। आज तो मेरा ड्राइवर सिर्फ ड्राइवर होने के नाते ही निर्माता बन सकता है! मैं लोगों के निर्माता बनने के खिलाफ नहीं हूँ, यह एक स्वतंत्र देश है और हर किसी को अपना पेशा चुनने का अधिकार है, लेकिन इसके लिए बुनियादी नियम तय होने चाहिए। वरना हम सब दलदल में फंसकर धीरे-धीरे डूबते चले जाएंगे।

~

काम के प्रति राज कपूर बेहद सतर्क थे, यहाँ तक कि अपनी जान जोखिम में डालकर भी। ऊँचाई पर रहने के कारण उनकी साँस लेने की समस्या बढ़ जाती थी, इसके बावजूद वे हिमालय की ऊँची पहाड़ियों में गंगा के उद्गम स्थल गंगोत्री पर ही फिल्म बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। गंगोत्री ग्लेशियर के ऊपर 4100 मीटर की ऊँचाई पर स्थित गोमुख की बर्फीली गुफा में शूटिंग के लिए राज कपूर को पर्वतीय पालकी उठाने वालों द्वारा ले जाया गया था। जैसा कि उन्होंने कहा था, 'मेरी फिल्म गंगा है (राम तेरी गंगा मैली की नायिका का नाम गंगा नदी के नाम पर रखा गया है), मेरा विचार गंगा है, तो मैं आसानी से पहुँचने योग्य होने के कारण गंगा को कहीं और चित्रित करने की कल्पना कैसे कर सकता हूँ? यह न केवल सिनेमाई छल होगा, बल्कि लाखों लोगों की आस्था के साथ खिलवाड़ होगा।'

राजीव कपूर के साथ

अपने शुरुआती दौर में भी राज कपूर प्रामाणिकता हासिल करने के लिए अथक प्रयास करते थे। श्री 420 के अंतिम दृश्य में, जहाँ एक आवारा व्यक्ति सूर्यास्त की ओर चलता है, बादलों के पैटर्न को सही ढंग से दिखाने के लिए वे अपनी टीम के साथ खंडाला के लिए रवाना हुए। लेकिन कुछ भी ठीक नहीं था, और टीम खंडाला से आगे बढ़ते हुए ऊटी तक पहुँच गई, जो कई सौ किलोमीटर दूर था, और टीम के सदस्य गर्मी के कपड़ों में ठंड से काँप रहे थे। दो घंटे की यात्रा के रूप में शुरू हुई शूटिंग तीन दिनों में समाप्त हुई। फिल्म निर्माण की अर्थव्यवस्था को तर्कसंगत बनाना कठिन है। व्यापारिक बाज़ार की सामर्थ्य में सौंदर्यशास्त्र की क्या भूमिका है? एक कला कब व्यवसाय बन जाती है? क्या कोई कलाकार पैसा न कमाने पर अपनी कला को छोड़ देगा? अगर उनकी फिल्में किसी भी कारण से बॉक्स ऑफिस पर असफल हो जाती थीं, तो राज कपूर अगली फिल्म को और भी अधिक ऊर्जा के साथ बनाते थे। उनकी फिल्म की व्यावसायिक सफलता उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी कि कलात्मक आनंद। और मुझे इसका केवल एक ही कारण नज़र आता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि वे राष्ट्र के हैं, उनके भाव और सपने उतने ही उनके अपने हैं जितने कि पूरे राष्ट्र के, और यदि कोई फिल्म असफल हो जाती, तो इसका अर्थ था कि वे जनता से दूर हो गए हैं, और उन्हें बहुत देर होने से पहले खुद को संभालना होगा। दूसरे शब्दों में, असफलता केवल आर्थिक नहीं थी। वे शायद अपनी भावनाओं के प्रति वफादार रहने की कोशिश करने के बजाय अपने विश्वासों से समझौता करके अधिक धन कमा सकते थे। बहरहाल, उनकी फिल्मों में उनके निर्माण मूल्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे। वे कभी भी अत्यधिक भव्य और अतिरंजित नहीं थे, लेकिन उन्होंने कभी भी पैसे बचाने के चक्कर में कंजूसी भी नहीं की। इसका एक उदाहरण सत्यम शिवम सुंदरम का क्लाइमेक्स है। अगर वे चाहते तो इसे स्टूडियो के अंदर ही पूरा किया जा सकता था, लेकिन संवाद 'ऐसा कहर तो सिर्फ तब आता है जब किसी फरिश्ते की बद-दुआ लगती है!' का पूरा अर्थ ही खो जाता। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह

है कि 'शिव ही सुंदर है' का अर्थ केवल सुखद बसंत या शरद ऋतु नहीं है। यहां तक कि तूफान और शिव की अपार शक्ति भी सुंदर है। राज कपूर ने सत्यम शिवम सुंदरम के क्लाइमेक्स पर ही बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च किया होगा। शायद वो अच्छे व्यवसायी नहीं थे, लेकिन एक महान कलाकार थे!

लेकिन राज कपूर परंपरावादी नहीं थे, प्रयोग करने से कतराते नहीं थे। उनका मानना था, 'शो बिजनेस का भविष्य विशेष आकर्षणों में निहित है। विचित्र, असामान्य और अद्वितीय चीजों में। बहुत से लोग पुरानी परंपराओं में बंधे हुए हैं जो अब खत्म हो चुकी हैं।'

उदाहरण के लिए, बरसात की शूटिंग के दौरान, राज कपूर ऑर्सन वेल्स की फिल्म 'सिटीजन केन' में ग्रेग टोलैंड की छायांकन शैली से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने कैमरामैन वी.एन. रेड्डी, जिन्होंने उनकी पिछली फिल्म 'आग' की छायांकन की थी, को वाइड-एंगल लेंस का व्यापक उपयोग करने का आदेश दिया। रेड्डी, जो एक रूढ़िवादी कैमरामैन थे, स्तंभों और खंभों के छोटे होने के विचार से भयभीत थे और उन्होंने इनकार कर दिया। अंततः, बरसात की छायांकन का कार्य जल मिस्त्री को सौंपा गया।

~

क्या मेरे जाने के बाद आर.के. स्टूडियोज़ टिक पाएगा? मेरे विचार से तो ऐसा ही होगा। डाबू एक अच्छा प्रशासक है, चिंटू अभी शुरुआत ही कर रहा है, लेकिन मेरा अंतर्ज्ञान कहता है कि वह एक अच्छा निर्देशक बनेगा, और चिंपू भी निर्देशक बनेगा, और बहुत अच्छा निर्देशक बनेगा। आर.के. फिल्म्स का भविष्य मेरे इन तीनों बेटों के हाथों में है। एक अभिनेता के लिए सबसे कठिन प्रदर्शन तब होता है जब उसे बिना बोले किसी संवाद या परिस्थिति पर प्रतिक्रिया देनी होती है। उस समय उसे केवल अपने हाव-भाव से ही सब कुछ व्यक्त करना होता है, और इसके लिए उसकी आँखों का बोलना आवश्यक है। एक निर्देशक के रूप में, आपको कभी-कभी ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, खासकर किसी नाटकीय दृश्य की शूटिंग करते समय, जहाँ अभिनेता से अपेक्षित मौन प्रतिक्रिया नहीं मिल पाती। इस स्थिति से निपटने का उपाय है अभिनेता का क्लोज-अप शॉट लेना। जब दर्शक फिल्म देखेंगे, तो शॉट की भव्यता इतनी प्रभावशाली होगी कि दर्शक उससे प्रभावित हो जाएंगे। फिल्म माध्यम रचनात्मक कलाकार के लिए हमेशा असीमित और गतिशील माध्यम रहेगा, बशर्ते कि वह इससे जुड़ी आर्थिक समस्याओं का समाधान कर सके। फिल्म को 'उद्योग' और 'कला' के रूप में परिभाषित करना प्रत्येक उपयोगकर्ता के लिए अपरिहार्य है। अंततः यह फिल्म निर्माता की ईमानदारी पर निर्भर करता है। हर कोई पैसा खर्च करता है, लेकिन अंत में जो बात स्पष्ट रूप से सामने आती है, वह है फिल्म निर्माता की स्वयं की ईमानदारी। जादू फिल्म निर्माता द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीकों में नहीं, बल्कि उसकी अपनी दृष्टि और 'फिल्मी अभिव्यक्ति' में है, जिस पर मानव निर्मित कोई प्रतिबंध नहीं है।

With Rajiv, Rishi and Randhir Kapoor

छूट

'जानवर सिर्फ प्यार दे सकते हैं, उनकी कोई मांग नहीं होती। कुत्ते इंसानों से ज्यादा करीब होते हैं। कितनी दुख की बात है कि वे बोल नहीं सकते!'—राज कपूर

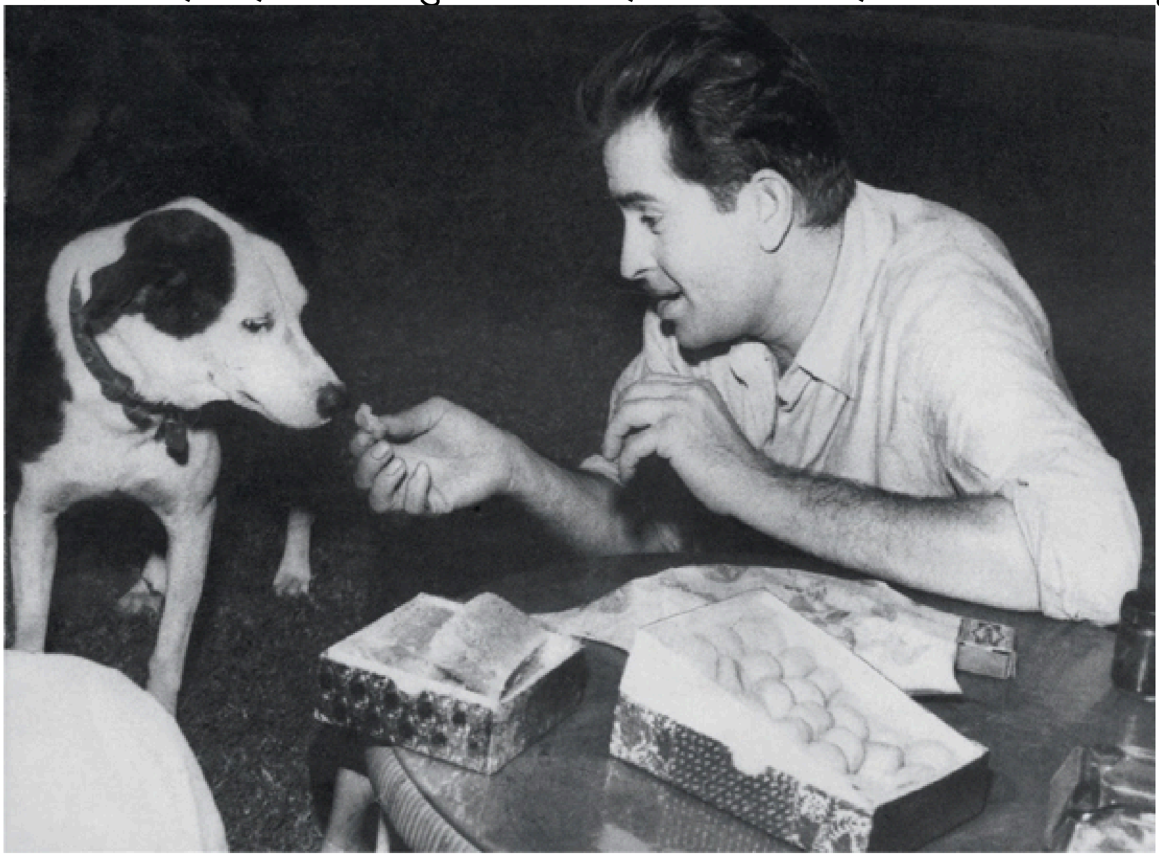

'दिवाली के त्योहार के दौरान ताश खेलना एक परंपरा है, लेकिन मेरी फिल्में मेरा सबसे बड़ा जुआ हैं!'

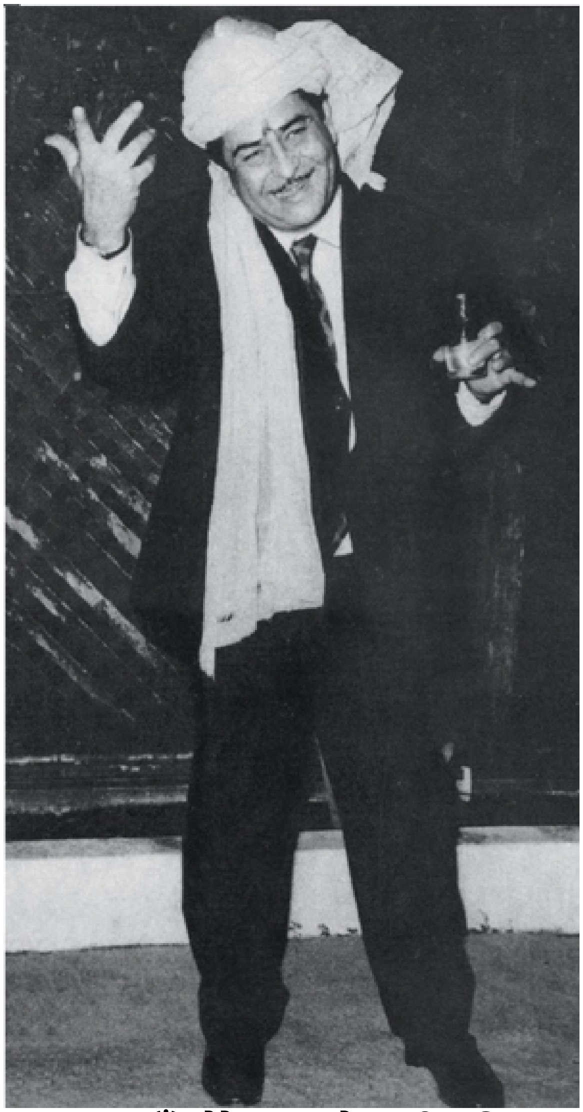

मैं शराबी नहीं हूँ, मैं मदमस्त हूँ! मेरे कुछ बेहतरीन विचार शराब पीते समय ही आए हैं। शराब पीना एक वरदान है।

राज कपूर दिल से जवान थे और आखिरी दिनों तक ऐसे ही रहे। सिनेमा के प्रति उनका जुनून क्रिकेट के प्रति उनके उत्साह के बराबर ही था। अपने युवा दिनों में, वे चैरिटी के लिए धन जुटाने वाले मैचों में फिल्मी सितारों की टीमों का नेतृत्व किया करते थे। वे गेंदबाजी की शुरुआत करते थे—हालांकि हमेशा सफलता नहीं मिलती थी, लेकिन उनके लिए खेल की भावना और दर्शकों को मिलने वाला मनोरंजन ही सबसे महत्वपूर्ण था।

राज कपूर को खेती से बेहद प्यार था। पुणे में स्थित उनका 100 एकड़ का फार्म राज बाग, 'वह जगह है जहां मैं एक दिन रिटायर होकर जाऊंगा,' वे अक्सर कहते थे। 'फिल्म और खेती में एक अजीब सी समानता है। एक फिल्म निर्माता के विचार किसान के बीजों की तरह होते हैं। उन्हें बोने का एक सही समय होता है। फिर वे अंकुरित होते हैं। फिल्म निर्माता के सामने कई बाधाएं आती हैं, ठीक वैसे ही जैसे किसान को आसमान और सौ अन्य चीजों पर नजर रखनी पड़ती है। जब आपकी फिल्म आपको मुनाफा देती है, तो वह भरपूर मुनाफा देती है। और धरती भी अगर मेहरबान हो तो भरपूर मुनाफा देती है।'

जब शोमैन राज कपूर मुंबई के आर.के. स्टूडियो में होली मनाते थे, तो रंगों का यह त्योहार हमेशा एक नया अर्थ धारण कर लेता था। हर साल यह समारोह सितारों से भरा रहता था। जैसे-जैसे नए कलाकार उद्योग में आते थे, लोग यह देखने के लिए उत्सुक रहते थे कि उनमें से किसे आर.के. स्टूडियो में होली के निमंत्रण पर बुलाया जाएगा। बहुत पहले, जब रेखा ने आर.के. स्टूडियो में होली

समारोह में शिरकत की, तो उन्होंने राज कपूर के पैर छुए और बस इतना ही काफी था। उन्हें सितारों के समूह में शामिल कर लिया गया।

अमिताभ बच्चन के साथ होली मनाते हुए

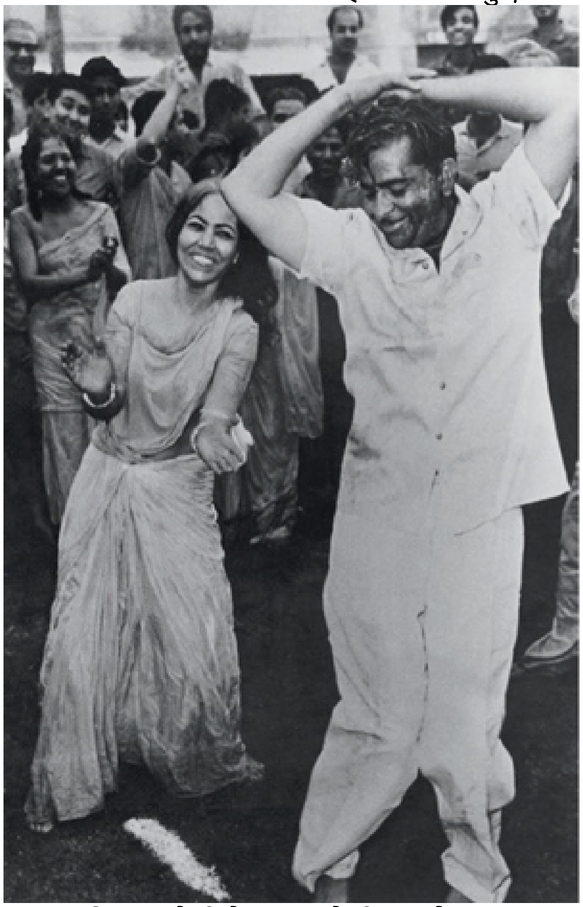

सितारा देवी के साथ होली मनाते हुए

राज कपूर की होली की पार्टियों में अमिताभ बच्चन, मनमोहन देसाई, कामिनी कौशल, प्राण, संजय खान, शत्रुघ्न सिन्हा और प्रेम नाथ नियमित रूप से शामिल होते थे। यहां तक कि जब राज कपूर का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, तब भी होली का उत्सव उनकी मृत्यु (1988) से दो साल पहले तक जारी रहा।

कृष्णा कपूर कहती हैं, 'राज कपूर के घर होली हमेशा परिवार और दोस्तों के साथ खूब मस्ती भरी होती थी। खूब नाच-गाना होता था। इस मौके के लिए एक टंकी बनवाई जाती थी और उसे रंगीन पानी से भर दिया जाता था। जैसे ही कोई नया मेहमान आता, उसे विधिपूर्वक टंकी में डुबो दिया जाता था। सभी को रंगीन पानी की टंकी में डुबोया जाता था, लेकिन महिलाओं को नहीं।' 'महिलाएं सिर्फ सूखे रंगों से खेलती थीं और राज कपूर इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि कोई उनके साथ बदतमीजी न करे। वे सारी तैयारियों में गहरी दिलचस्पी लेते थे और एक बेहतरीन मेजबान थे।' कथक नृत्यांगना सितारा देवी राज कपूर की पसंदीदा मेहमानों में से एक थीं। वे हमेशा जोश से भरी रहती थीं और नाचती-गाती थीं। 'दरअसल, सब लोग भांग पीते थे और नशे में धुत हो जाते थे। कुछ पुरुष बीयर भी पीते थे। तभी वे पार्टी का हिस्सा बनते थे।'

'सबको खाना खिलाया जाता था। खाना तो बहुत होता था, लेकिन उसमें ज्यादा वैरायटी नहीं होती थी क्योंकि बात सिर्फ खाने की नहीं होती थी। झामा के समोसे और जलेबी बहुत ही स्वादिष्ट होते थे। हर साल जश्न सुबह करीब 11 बजे शुरू होता और शाम करीब 4 बजे खत्म होता था।' कृष्णा राज कपूर को उन दिनों की यादें ताजा हैं। 'झामा रेस्टोरेंट होली के लिए खाना सप्लाई करता था। आर.के. कपूर की होली बहुत मशहूर थी। उन आयोजनों में हमेशा बिन बुलाए मेहमान आ जाते थे। राज कपूर की फिल्मों के सह-कलाकार और क्रू मेंबर सब वहां मौजूद होते थे। जाति-धर्म का कोई भेद नहीं होता था। हर जाति के लोग आते थे। यह किसी के त्योहार की बात नहीं थी। हर साल एक बड़ा जमावड़ा होता था, जहां सब लोग आपस में मिलते-जुलते, नाचते-गाते थे। राज कपूर जब मेजबानी करते थे तो बहुत खुश होते थे और नाचते भी थे। उन्हें संगीत से खास लगाव था। वे ढोलक बजाते और नाचते थे।'

राज कपूर को खाना बनाना सबसे ज़्यादा पसंद था, जिससे वे आराम करते थे। वे अक्सर पंजाबी कहावत दोहराते थे, 'खाओ दाल जेडी निभे नाल', जिसका मतलब है कि दुनिया का सबसे बढ़िया खाना खा लिया जाए, लेकिन आखिर में एक सादी, अच्छी तरह पकी हुई दाल ही सबसे अच्छी होती है। कपूर परिवार को स्वादिष्ट खाने का जितना शौक था, उतना ही खूबसूरत महिलाओं के प्रति उनका आकर्षण भी था, लेकिन इन सब बातों ने फिल्म निर्माण के प्रति उनके अटूट जुनून में योगदान दिया। हैरानी की बात यह है कि उन्हें मेज पर तरह-तरह के व्यंजन सजे देखना पसंद था, लेकिन वे सिर्फ थोड़ा-थोड़ा खाते थे। वे खाना जल्दी-जल्दी नहीं खाते थे, बस उसका स्वाद लेते थे। उनकी खाने की मेज हमेशा सलीके से सजी होती थी।

राज कपूर दुनिया के विभिन्न शहरों में मिलने वाले स्वादिष्ट भोजन के बारे में अच्छी तरह जानते थे। एक बार उनके वितरक जे.पी. चौकसे उनके साथ सागर नामक शहर गए। राज कपूर ने चौकसे से भोपाल के एक रेस्तरां से ट्रॉटर्स (सूअर के पैर) मंगवाने को कहा। उन्होंने बताया, "मैंने भोपाल में अपने आदमी राशिद खान को ट्रॉटर्स लाने को कहा था। हमें रात 10 बजे तक भोपाल के रामसन होटल पहुंचना था।" राज कपूर परंपराओं का पालन करते थे और दो दिनों से केवल शाकाहारी भोजन कर रहे थे और शराब से भी परहेज कर रहे थे। उन्होंने सड़क किनारे एक सुविधाजनक जगह पर गाड़ी रोकी और उनके नौकर जॉन ने एक चादर बिछा दी। हमने पीना शुरू किया। एक ट्रक रुका और उसका ड्राइवर राज कपूर को नमस्कार करने आया, जिस पर राज कपूर ने उसे भी शामिल होने के लिए कहा। एक अन्य ट्रक ड्राइवर ढोलक लेकर आया और राज कपूर ने उसे कुशलता से बजाया। उन्होंने ट्रक ड्राइवरों के साथ गाना गाया और नृत्य किया और वह रात "चांद तारों के तले, रात ये गाती चले" जैसी थी। यह अचानक शुरू हुई पार्टी काफी देर तक चली और हम सुबह 4 बजे रामसन पहुंचे। उन्होंने ट्रॉटर्स (पशु के पैर) मांगे, लेकिन मेरा साथी जा चुका था। राज कपूर बड़बड़ाते रहे और कुछ भी

खाने से इनकार कर दिया। हम दोपहर को बॉम्बे पहुंचे और वार्डन रोड स्थित अपने घर पहुंचते ही मुझे चेंबूर स्थित उनके आवास देवनार कॉटेज में बुलाया गया। मुझे कुछ आशंकाएं थीं, लेकिन वहां पहुंचते ही मुस्कुराते हुए राज कपूर ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया और मुझे अपने साथ ट्रॉटर्स खाने के लिए कहा। उनकी हंसी बिल्कुल स्वाभाविक थी, उसमें कोई व्यंग्य नहीं था, बल्कि किसी बच्चे की शरारत जैसी थी। ट्रॉटर्स गाथा का तीसरा और अंतिम अध्याय कई साल बाद हैदराबाद में हुआ। हम वहां अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में भाग लेने गए थे। मैं सिकंदराबाद के एक दो सितारा होटल, सवेरा में ठहरी थी। एक रात, मुझे जगाया गया और बताया गया कि राज कपूर लॉबी में मेरा इंतजार कर रहे हैं। वह मुझे किसी गली में ले गए और हम एक छोटे से रेस्तरां में पहुंचे जो अपने स्वादिष्ट ट्रॉटर्स के लिए मशहूर था। राज कपूर बिना किसी द्वेष या दुर्भावना के खुलकर हँसते थे। यही उनका जीवन का भरपूर आनंद लेने का तरीका था।

राज कपूर को मुर्गियां पालना बहुत पसंद था और उनकी दिनचर्या का एक हिस्सा था उन्हें दाना खिलाना, जिसके लिए वे 'आ, आ, आ' की आवाज़ निकालते थे। वे अक्सर मज़ाक में अपने पोते-पोतियों को भी इसी लहजे में बुलाते थे। वे अपनी हर मुर्गी का नाम रखते थे। उनके निधन के बाद भी, उनकी एक मुर्गी काफी समय तक उनके बिस्तर पर अंडे देती रही!

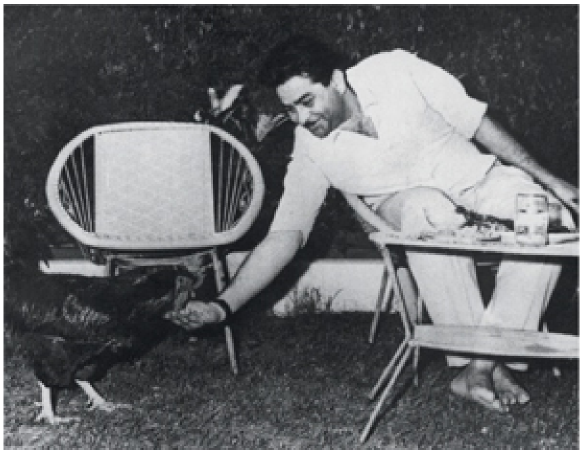

कुछ विचार

‘आखिर इंसान चाहता क्या है? पैसा, पद और सफलता... ये सब गौण हैं। मूल बात तो कल है: यह ज्ञान और आश्वासन कि कल आज से बेहतर होगा। इसके अलावा कुछ मायने नहीं रखता।’—राज कपूर

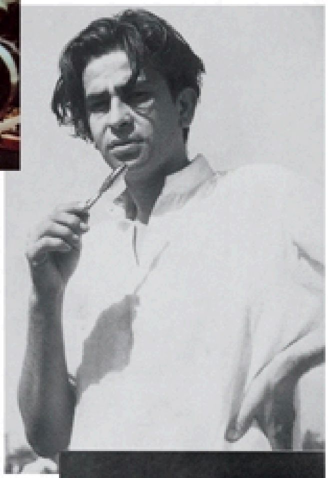

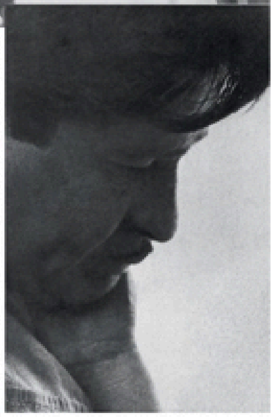

अगर फिल्मों का मतलब कहानी सुनाना है, तो राज कपूर एक अपवाद थे। राज कपूर की किसी भी फिल्म की कहानी दृश्यों के बीच कहीं घटित होती है। कथानक और घटनाएँ इतनी सरल और स्पष्ट होती हैं कि वह कहानी कम और वर्णन ज्यादा लगती है। वह एक ब्रह्मांड का निर्माण करते थे, और उसके साथ-साथ छोटे-छोटे संसार अपने आप बनते चले जाते थे। मुझे नहीं लगता कि राज कपूर की फिल्मों को काल्पनिक या गैर-काल्पनिक कहना उचित है। अगर मैं उनमें से किसी को काल्पनिक कहूँ, तो भी वही भावनात्मक उथल-पुथल हमारे आसपास की दुनिया में घट रही होती... अगर मैं उनमें से किसी को गैर-काल्पनिक कहूँ, तो भी उनमें इतना नाटक, संगीत और जुनून होता है जो सिनेमाघर के बाहर दिखाई नहीं देता! उन्हें 'ग्रेटेस्ट शोमैन' यूँ ही नहीं कहा जाता था। यहाँ मुझे एक बात अवश्य कहनी चाहिए जो मैंने उनकी सभी फिल्मों में देखी

है। उनकी हर फिल्म में कम से कम एक या दो दृश्य ऐसे होते हैं जो वह पूरी तरह से अपने आनंद के लिए करते हैं। मानो उस क्षण उन्हें किसी और की परवाह ही न हो। मैं कुछ उदाहरण देता हूँ: 'मेरा नाम जोकर' का वो दृश्य, जब रूसी लड़की उसे अलविदा कहती है और उसे शांत रहने के लिए कहती है, फिर अचानक रनवे पर टैक्सी कर रहे विमान का दृश्य आता है, पृष्ठभूमि में मुकेश की आवाज़ और 'आवारा' का एक गाना बजता है। वो दृश्य कहानी के बारे में नहीं था, बल्कि खुद मुकेश के बारे में था—उसका शरीर, मन और आत्मा हमारे सामने प्रस्तुत की गई थी—एक ईमानदार आदमी के गर्व के साथ, जिसके पास अपने लिए कुछ भी नहीं बचा है। एक और उदाहरण 'सत्यम शिवम सुंदरम' में है। एक तनावपूर्ण स्थिति पैदा की जाती है जहाँ ज़ीनत का किरदार गर्भवती है और शशि के किरदार के पास यह मानने का कोई कारण नहीं है कि बच्चा उसका है। दृश्य तार्किक रूप से आगे बढ़ता है, शशि उसे घर से बाहर घसीटता है, उसके पिता के इस दावे पर कि बेटी संस्कारी है, वह कोसती है, और जब लगता है कि सब खत्म हो गया है, तभी पृष्ठभूमि में लता की आवाज़ गूंजती है, 'सत्या बीज है, अंकुर है शिव, सुंदर रूप हज़ारा, दया करो प्रभु, हो ना कलंकित, ये वरदान तुम्हारा, राधा मोहन शरणम, सत्यम शिवम सुंदरम'। इस तरह के क्षण का उपयोग करके इस धुन को दोहराना केवल राज कपूर ही कर सकते थे। एक और बात। हम जानते हैं कि राज कपूर को 'डान्यूब वेव्स' बहुत पसंद थी; आग से लेकर बॉबी तक, हर फिल्म में सबसे रोमांटिक पलों में यह धुन सुनाई देती है। लेकिन बॉबी का विशेष उल्लेख आवश्यक है। यह राज कपूर की आम फिल्मों जैसी नहीं थी, इसका मूल विषय और कहानी पूरी तरह से उनकी अपनी नहीं थी, बल्कि यह के.ए. अब्बास की विशिष्ट शैली थी - एक समाजवादी मजदूर और एक पूंजीवादी धन प्रबंधक के बीच संघर्ष, किशोर प्रेम कहानी आर.के. की पिछली सभी फिल्मों की तुलना में अधिक जोशीली और कम भावुक थी। आम तौर पर दिखने वाला राष्ट्रवादी जोश गायब था, एक युवा राष्ट्र सत्ता में आ गया था, लेकिन मेरा मुद्दा यह नहीं है। मुद्दा यह है कि बॉबी की ताजगी के बावजूद, राज कपूर अपने सबसे प्रिय क्षणों में बाकी सब कुछ दरकिनार कर देते हैं। फिल्म में दो उदाहरण हैं—पहला जब ऋषि कपूर डिंपल के घर का दरवाजा खटखटाते हैं और वह पहली बार स्क्रीन पर दिखाई देती हैं, 'डान्यूब वेव्स' की शुरुआत दरवाजे के खुलने के साथ होती है, मानो पहले से तय हो, एक पल के लिए ऐसा लगता है कि कहीं से नरगिस प्रकट होंगी। और दूसरा तब जब प्राण और प्रेम नाथ प्राण के घर में हैं, एक शादी तय करने की उम्मीद में है और दूसरा इससे बचने के लिए पैसे देने की कोशिश में। सब कुछ तय प्रक्रिया के अनुसार चलता है—लड़की का पिता विनम्र है, लड़के का पिता दूसरे को अपमानित करने के लिए शब्दों की तलाश में है। जब बात हद से ज्यादा बढ़ जाती है और प्राण कहता है, 'और जैसा फंदा आपने डाला है...', तभी दृश्य ऋषि के शयनकक्ष में बदल जाता है। डिंपल ने अपना दुपट्टा उसके गले में डाला और देखते ही देखते 'डेन्यूब वेव्स' बजने लगा! मैं पूरी तरह से हैरान रह गई। कोई

इतना ईमानदार कैसे हो सकता है? क्या उसे पता नहीं था कि यह पूरी दुनिया के सामने है? क्या उसे परवाह थी? मुझे नहीं पता, शायद उसे परवाह थी, और शायद उसे हम पर भरोसा भी था कि हम उसे समझ लेंगे, कि मानवता हमारे मतभेदों के बारे में नहीं है, बल्कि हमारी समानताओं के बारे में है।

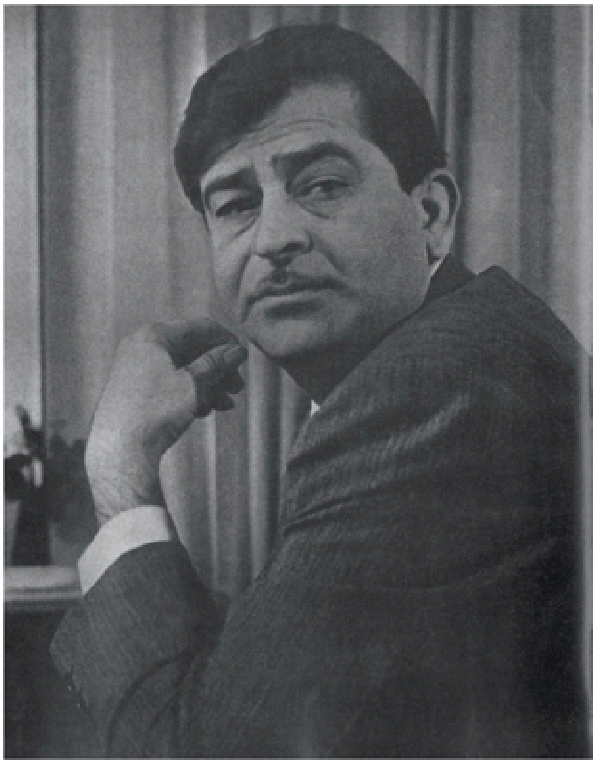

उनका निर्देशन केवल दृश्यों तक ही सीमित नहीं था। यह पृष्ठभूमि संगीत, गीतों, संपादन और फिल्म के हर पहलू में स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। मानो उन्होंने फिल्म के हर पल पर अपनी छाप छोड़ी हो।

~

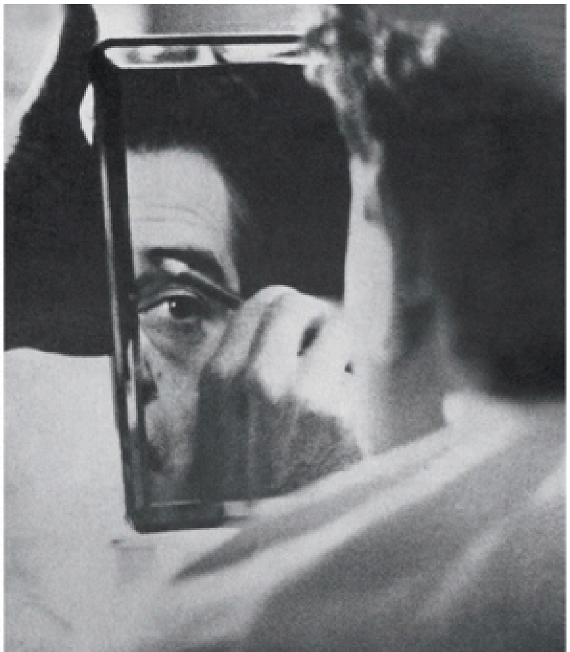

अपनी पहली फिल्म से ही मैंने ग्लैमर से दूर, सरल किरदार निभाए हैं। मैंने कभी भी खूबसूरत, नीली आंखों वाले आशिक बनने की कोशिश नहीं की। मुझे यही सबसे अच्छा लगता था, और धीरे-धीरे इसी ने मुझे आम आदमी की भूमिका की ओर ले गया। आध्यात्मिक रूप से मुझे इससे बहुत खुशी मिली, खासकर भारत

जैसे देश में। आज भी लाखों-करोड़ों आम आदमी फुटपाथों पर, झोपड़ियों में, हर जगह मौजूद हैं।

मुझे सबसे ज़्यादा दुख तब होता है जब मैं देखता हूँ कि लोग, जिनमें से कई खुद को मेरे दोस्त बताते हैं, मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं और बड़े घमंड से सोचते हैं कि वे बच निकलेंगे। बेशक वे बच निकलते हैं, क्योंकि मैं उन्हें ऐसा करने देता हूँ। मैं अनजान होने का नाटक करता हूँ, जबकि असल में मैं हर बात पर नज़र रखता हूँ!

सिनेमा तो सिनेमा ही है! मनोवैज्ञानिक रूप से, सिनेमा ही अपने दर्शकों को अपने साथ जोड़ता है। आप कितनी देर तक टीवी देख सकते हैं? घर पर टेलीविज़न देखते समय आप और आपका परिवार ही होते हैं, लेकिन जब आप सिनेमा हॉल जाते हैं, तो आपके चारों ओर बहुत सारे लोग होते हैं, और आप सब एक समान भावना से जुड़ जाते हैं। आप चाहें फिल्म की आलोचना करें या उसका आनंद लें, लेकिन यह आप सब में एक समान भावना होती है। आप इसका आनंद लेते हैं, हंसते हैं, ताली बजाते हैं और पूरा हॉल हंसता है। जब आपको लगता है कि आपके साथ अन्याय हुआ है या आपको धोखा दिया गया है, तो पूरा हॉल ठगा हुआ महसूस करता है। यह एक बिल्कुल अलग तरह की भावना है। यही कारण है कि अमेरिकी, जो कभी सबसे बड़े फ़िल्म निर्माता थे, ने कभी भी शो बिज़नेस में वैसा स्वर्णिम दौर नहीं देखा जैसा उन्होंने हाल ही में देखा है, भले ही उनके पास तीस टीवी चैनल हैं।

ऐसा लग रहा था मानो मेरी ही परछाई मुझे देख रही हो, हर चीज़ को शॉट्स के रूप में देख रही हो, हर वाइप, डिसॉल्व, फेड-इन, कट के साथ, सब कुछ एक असंपादित सेल्युलाइड स्क्रिप्ट के ढेर में सिमट गया हो, कैमरे की लगातार निगाहों

में कैद, जीवन के आर्क लैंप की अथक रोशनी में। आज हर साथी अपने-अपने व्यक्तिगत भ्रम के पीछे अपने-अपने रास्ते चला गया है और मैं खुद को एक बार फिर, मानो, अपने जीवन के एक नए चरण की दहलीज पर खड़ा पा रहा हूँ।

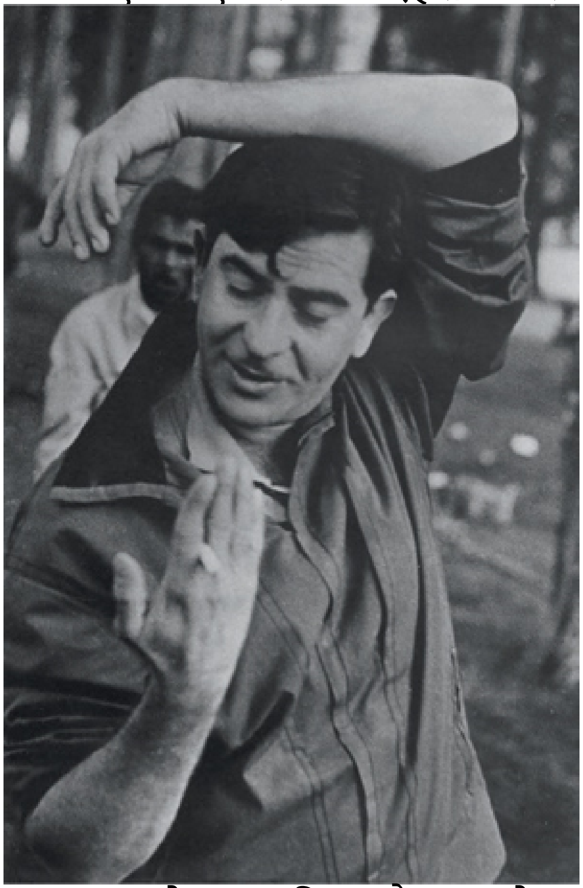

मैंने कई बार लगातार बहत्तर घंटे काम किया है। आपके भीतर कुछ ऐसा है जो ऊर्जा, शक्ति और जीवंतता प्रदान करता है। आपको यह करना ही है, इसलिए आप इसे करते हैं। कभी-कभी मैं आलस करता हूँ, बेसुध होकर सोता हूँ। मैं बहुत कम मनोरंजन पसंद करने वाला व्यक्ति हूँ। काम, काम और बस काम—यही हमेशा से मेरा जीवन रहा है। जब मैं किसी फिल्म पर काम नहीं कर रहा होता, तो मैं उस फिल्म में अपने काम के बारे में सोचता रहता हूँ। इसीलिए जन्मदिन जैसे अवसर मुझे काम के प्रति अपनी अटूट निष्ठा से एक दुर्लभ विराम प्रदान करते हैं। यह मुझे फिर से ऊर्जावान बनाता है, मुझे संपूर्ण और नया बना देता है।

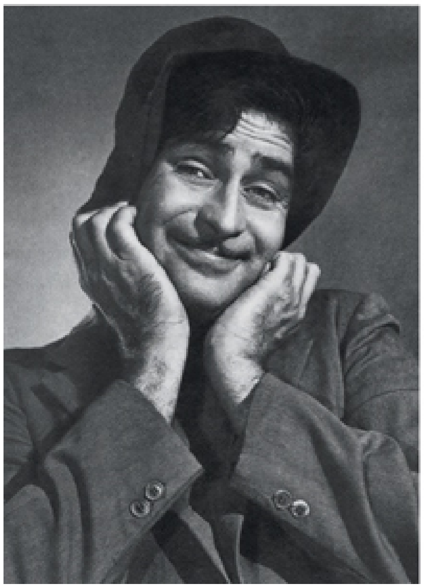

रात में मेरे घर के लॉन में पार्टी होती है। लोग आते हैं—उद्योग के सहकर्मी, उद्योग के अंदर और बाहर के मित्र। यह मुझे फिर से बाहरी दुनिया से जोड़ता है। मैं वहां मस्ती और हंसी देखता हूं। मैं उनकी कहानियां सुनता हूं। उन सबको खुश देखकर मुझे खुशी होती है। और अगली सुबह, एक और जन्मदिन बीत जाता है। अब मैं अपने लिए एक नए साल की शुरुआत कर रहा हूं। यह मेरे विश्वास को मजबूत करने का समय है—अपने काम में विश्वास को मजबूत करने का, जो सर्वोपरि है। साथ ही, लोगों में, महान भारतीय जनता में, जिनके मनोरंजन, उन्हें खुश करने और संभव हो तो उन्हें ज्ञान प्रदान करने का भी मेरा जीवन का मिशन है।

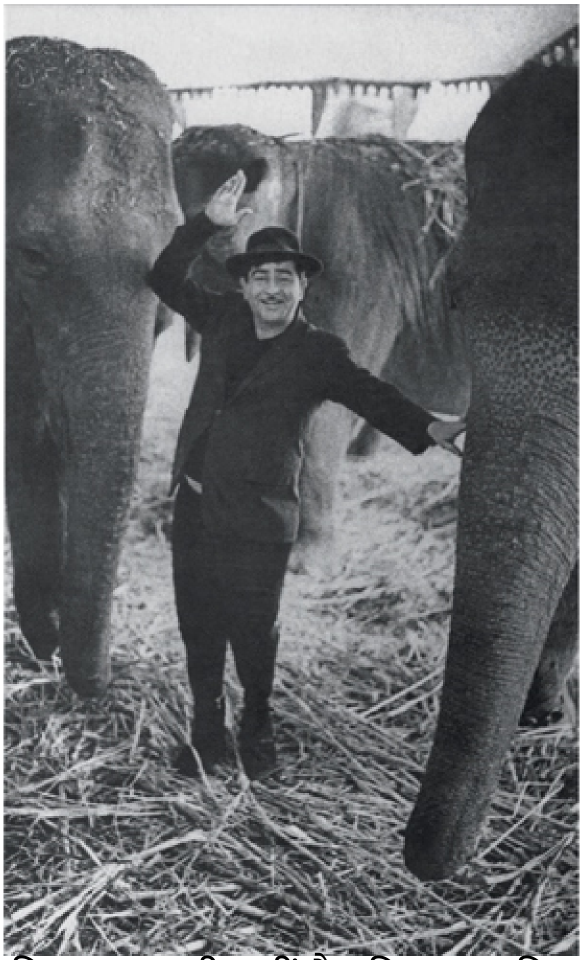

इस संसार में प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं है। जितना अधिक आप इसे फैलाते या देते हैं, उतना ही यह बढ़ता है। जितना अधिक आप प्रेम को ग्रहण करते हैं, उतना ही यह प्रबल होता है। जितना अधिक आप प्रेम को आकर्षित करते हैं, उतना ही आप श्रेष्ठ और महान बनते हैं। प्रेम के अनेक रूप होते हैं। यदि आप इसे संकीर्ण बना देते हैं, तो यह स्वार्थी हो जाता है। स्वार्थी प्रेम से व्यक्ति को लाभ तो हो सकता है, लेकिन वह अपना महत्व खो देता है।

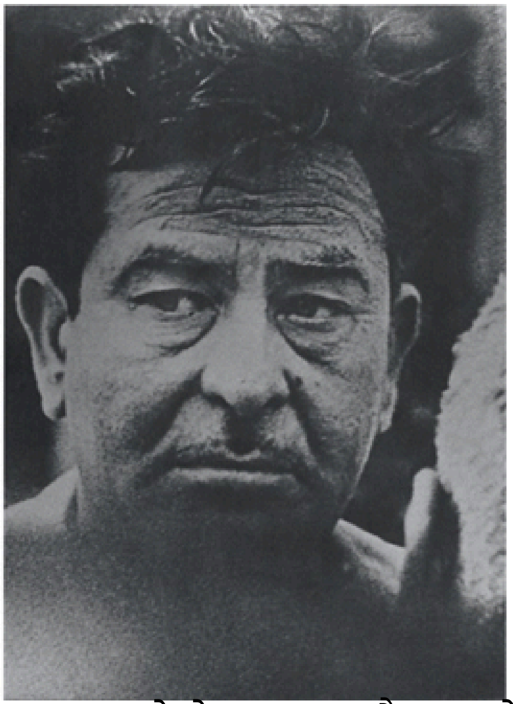

मैं एक जन्मजात रोमांटिक हूँ। मुझे प्रेम की अवधारणा से बेहद लगाव है। यह मेरे व्यक्तित्व का एक हिस्सा है। यह मेरी पहचान है। इसीलिए मैं गहन प्रेम पर फिल्में बनाता हूँ। प्रेम रोग जैसी फिल्में। देखिए, बहुत कम लोग इतने भाग्यशाली होते हैं कि उन्हें सच्चा प्रेम मिलता है। और उससे भी कम लोगों को ऐसा प्रेम मिलता है जो सच्ची तीव्रता प्राप्त कर रोग बन जाता है। जब ऐसा होता है, तो वह लाइलाज हो जाता है। तब प्रेमी भगवान और अपनी प्रेमिका के बीच अंतर नहीं कर पाता। अगर मेरे बारे में सब कुछ रोमांस के रूप में वर्णित किया जाए तो मैं क्या करूँ। मैं पर्दे पर जो भावना प्रदर्शित करने का प्रयास करता हूँ, वह सच्ची, हमेशा शुद्ध और दिल से निकली हुई होती है। मैं चाहता हूँ कि मेरे दर्शक न केवल रोमांस को दृश्य रूप से देखें, बल्कि उसे महसूस भी करें—दृश्य बेहद खूबसूरत होना चाहिए। लड़की खूबसूरत होनी चाहिए। लड़का खूबसूरत होना चाहिए। सुंदरता हर फ्रेम की आत्मा है। दर्शकों को लड़की और लड़के से प्यार होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होगा, तो वे उनके लिए महसूस नहीं करेंगे। मुझे उस तरह के प्रेम से कोई मतलब नहीं है जो अपने ही दुख में डूबा रहता है। मैंने एक बार अपनी फिल्म आह में ऐसा करने की कोशिश की थी और बुरी तरह असफल रहा। मैं उस प्रेम में रुचि रखता हूँ जो सुंदर और उदात्त हो। हाँ, कभी-कभी यह पहुँच से थोड़ा बाहर होता है। लेकिन यही बात इसे रोचक बनाती है। यहीं से सस्पेंस शुरू होता है। क्या वह उसे पा सकेगा? क्या वह उसे नहीं पा सकेगा? बेशक, उसे उसे पाना ही होगा। मेरे दर्शक निराश होकर नहीं लौट सकते। मेरा मानना है कि प्रेम में 'सफलता' प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। मेरा यह मत है कि प्रेम करके खो देना, प्रेम न करने से बेहतर है।

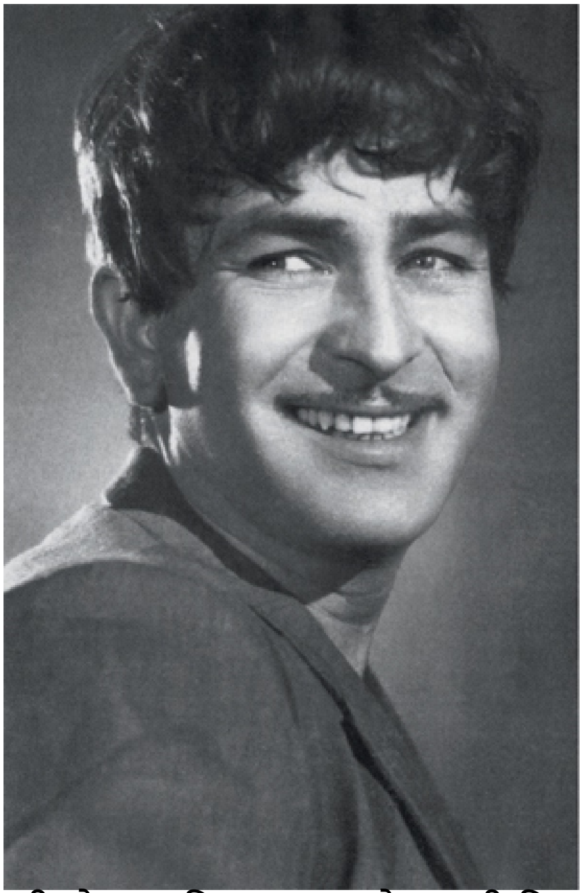

चाहे फिल्म किसी की भी हो, वह फिल्म जगत के बाकी फिल्म निर्माताओं के काम को पूरा करती है और उनका समर्थन करती है। चाहे मेरी फिल्म हो, सुभाष घई की हो, या अतीत में श्री शांताराम या श्री महबूब की रही हो—आर्थिक रूप से, हर महान और सफल फिल्म ने किसी न किसी तरह से हर निर्माता और फिल्म उद्योग से जुड़े हर व्यक्ति की मदद की है। आज जब हम अनगिनत गैजेट्स और मीडिया के विभिन्न रूपों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं, तो वास्तव में यह हमारे देश के उदार, दयालु और सराहना करने वाले दर्शकों की बदौलत ही संभव हो पाया है कि 'राम तेरी गंगा मैली' अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है! मैं अपने सभी तकनीशियनों और सहकर्मियों को धन्यवाद देता हूं, ईश्वर करे वे भी ऐसी ही स्वर्ण

जयंती मनाएं और हम सब फिर से एक साथ मिलकर फिल्म जगत में एक-दूसरे को शुभकामनाएं दें, चाहे आज टेलीविज़न, वीडियो कैसेट और चोरी-पायरिंग जैसी समस्याएं क्यों न हों। सिनेमा हमेशा रहेगा।

निर्देशक और अभिनेता राज कपूर को एक इंसान के रूप में अलग नहीं किया जा सकता। एक इंसान के रूप में उनका व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। एक पुरुष के रूप में, मेरे लिए प्रेम हमेशा से एक बहुत ही खास भावना रही है। मेरा मतलब उस प्रेम से नहीं है जिसे पुरुष और स्त्री के बीच के रिश्ते में समझा जाता है। एक अलग तरह का प्रेम होता है जो कुछ भाग्यशाली लोगों को जीवन में एक बार मिलता है, एक शानदार स्पेक्ट्रम की तरह, अपनेपन के एक विशाल क्षेत्र की तरह। आप जानते हैं कि मैं प्रेम के बारे में इतना क्यों सोचता हूँ? क्योंकि मुझे बचपन से ही बहुत प्रेम मिला है। मेरी माँ, मेरे शिक्षकों और दोस्तों ने मुझे प्यार किया। ऐसा लगता है कि मुझे अपनी गोरी त्वचा और नीली आँखों की वजह से ज़रूरत से ज़्यादा प्रेम मिला है! मुझे प्यार मिला और मैंने बदले में प्यार किया। मैंने लोगों, चीजों, जगहों, फूलों, पहाड़ियों, अपने आस-पास की हर चीज से प्यार किया। मुझे लगता है कि प्रेम रचनात्मकता में एक महान् एकता लाने वाली शक्ति है। व्यापार की दुनिया में भी, प्रेम चमत्कार कर सकता है। नफ़रत से समझौता नहीं किया जा सकता, है ना? आज, मैं अपने आस-पास देखता हूँ और हमारी समकालीन फिल्मों में देखता हूँ कि उनमें प्रमुख भावनाएँ क्रोध, घृणा, हिंसा, प्रतिशोध और कड़वाहट हैं। मेरी फिल्मों में हमेशा प्यार और उससे जुड़ी हर चीज़ पर बात की गई है। प्यार के विकास में क्रांति भी शामिल है।

लोग डायरी लिखते हैं, मैं पटकथा लिखता हूँ। मेरा जीवन एक पटकथा की तरह है, हर घटना, हर कही हुई बात, हर रंग, हर आवाज़ और हर आहट मेरी स्मृति में अंकित है। किसी के आप पर भरोसा करने से पहले, आपको खुद पर भरोसा करना होगा। आप जो भी करें, खुद का सम्मान करें और जो भी काम करें, छोटा

हो या बड़ा, उसका आनंद लें। हमेशा अपने विश्वासों की ओर काम करें और जिस दिन आप अपने विश्वासों को जुनून में बदलना शुरू करेंगे, उसी दिन आप अपने सपनों को साकार करना शुरू कर देंगे। मैं फिल्म सबसे पहले खुद को खुश करने के लिए बनाता हूँ। अगर फिल्म मुझे खुश करती है, तो मुझे लगता है कि दूसरों को भी खुश करने की अच्छी संभावना है। लेकिन सबसे पहले मुझे खुद को खुश करना होगा।

आज हम जो फ़िल्में बना रहे हैं! मैं खास तौर पर तथाकथित लोकप्रिय सिनेमा की बात कर रहा हूँ। जब हम फिल्में बनाते थे, तब वे भी लोकप्रिय होती थीं, बहुत लोकप्रिय, न सिर्फ हमारे देश में बल्कि पूरी दुनिया में। लेकिन उन फिल्मों के ज़रिए हम बहुत कुछ कहते भी थे। हमारे पास दिखाने के लिए कुछ था, दुनिया को बताने के लिए कुछ था। हमें अपने नेताओं, विचारकों, कवियों, लेखकों से दिशा-निर्देश मिलते थे, और उसी से प्रेरित होकर हममें से कई लोगों ने ऐसी फिल्में बनाईं। उनके ज़रिए हमने भारत को चित्रित किया: यह हमारी संस्कृति है, यह हमारा संगीत है, यह हमारा संघर्ष है और यह वो है जो हम हासिल करना चाहते हैं। दुर्भाग्य से, आज एक जागरूक फिल्म निर्माता चौराहे पर खड़ा है, यह नहीं जानता कि कौन सा रास्ता चुने। कोई सकारात्मक दिशा नहीं है। बहुत सारी बाधाएँ हैं। और यही कारण है कि हममें से ज़्यादातर लोग पलायनवादी फ़िल्में बना रहे हैं या सिर्फ नकल कर रहे हैं। इससे हमें कोई फायदा नहीं हो रहा है। लेकिन मुझे पता है कि वो समय फिर आएगा, और बहुत जल्द। शायद मैं तब तक न रहूँ, लेकिन ऐसे लोग ज़रूर होंगे जो ऐसा सिनेमा बनाएंगे जो हमारे देश और पूरी दुनिया में लाखों लोगों तक पहुँचेगा और उन्हें प्रभावित करेगा।

हमारे लोग उदार और दयालु हैं। वे सिनेमा जाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, लंबी कतारों में खड़े होते हैं और टिकट प्राप्त करते हैं। वे भीड़भाड़, चिलचिलाती धूप और मूसलाधार बारिश में भीगते हुए आपकी फिल्म देखने आते हैं, और जैसा कि मैंने हमेशा कहा है, यदि आप दर्शकों को धोखा नहीं देते हैं, तो वे आपके प्रति बहुत दयालु होते हैं। उन्हें मूर्ख न बनाएं। उन्हें हल्के में न लें। वे शायद अन्य दर्शकों जितने बुद्धिमान या आलोचनात्मक न हों, लेकिन वे जानते हैं कि वे थिएटर क्यों आए हैं, वे जानते हैं: वे मनोरंजन चाहते हैं।

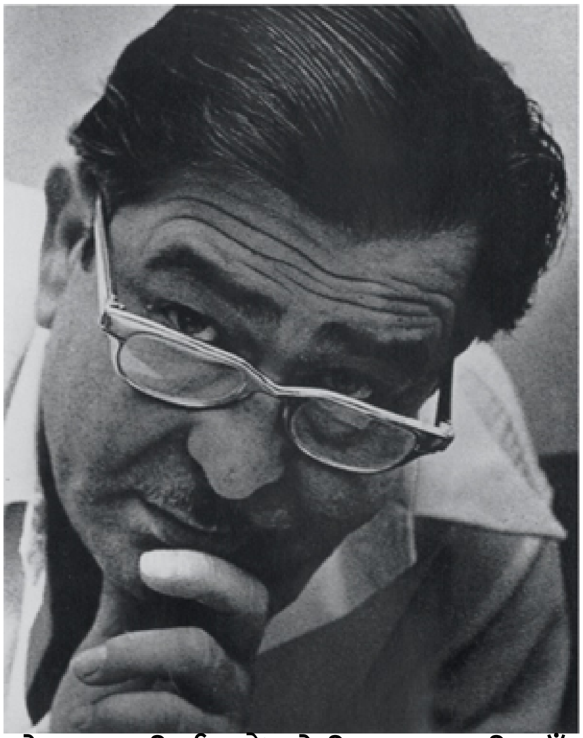

फ़िल्में मेरी ज़िंदगी हैं, मेरा आशीर्वाद हैं, मेरी आत्मा की साँस हैं। वर्षों से, मुझे यह एहसास होता आया है कि अगर मैं फ़िल्में न बनाता, तो मैं इस खूबसूरत दुनिया को उतना नहीं जान पाता जितना मैं जानता हूँ। मुझे एहसास है कि मेरा पूरा अस्तित्व सिनेमा के ज़रिए, लोगों के ज़रिए जो थोड़ा-बहुत जानता हूँ, उसी में सिमट गया है। इंसान, रिश्ते, दर्द, दुख, खुशी, आनंद, कितनी ही चीज़ें, सब कुछ सिनेमा के ज़रिए। मेरी फ़िल्में और मैं! मेरे लिए यह कहने जैसा है, मेरा प्रिय और मैं, या मेरी जीवन-साँस और मैं, या मेरा उद्देश्य और मैं। मेरे लिए मेरी फ़िल्में इन सभी का एक सम्मिश्रण हैं, शायद इससे भी कहीं ज़्यादा!

फ़िल्म बनाना एक सपने को बेचने जैसा है। दर्शक दीर्घा में बैठा व्यक्ति नायक को बीस लोगों को पीटते हुए देखता है और खुशी से झूम उठता है। वह नायक से जुड़ाव महसूस करता है और अपनी दबी हुई कुंठाओं को बाहर निकालने का एक रास्ता ढूंढ लेता है। वह उनका सपना खरीद लेता है। मैं भी सपने बेचता हूँ, लेकिन मैं प्रेम के उदात्त दर्शन बेचता हूँ। यही मूल अंतर है। उनका सिनेमा घृणा का है, मेरा प्रेम का। मैंने हमेशा अभिनेताओं के भावों को निर्देशित किया है, न कि दृश्य या पटकथा को।

आईने में खुद को देखो और देखो कि क्या तुम्हें अपनी छवि पसंद है। अगर तुम खुद से प्यार करोगे, तो दुनिया भी तुमसे प्यार करेगी। एक कहावत है कि इंसान इस दुनिया में नग्न आता है और नग्न ही चला जाता है। मैं तो इस दुनिया में नग्न ही जीता हूँ। मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, सब कुछ प्रकट करने के लिए है। मैं हिंदू परिवार में जन्म लेने के कारण हिंदू नहीं हूँ। मुझे एक महान दर्शन विरासत में मिला है और मैं उस सार्वभौमिक चेतना का हिस्सा हूँ जिसे हिंदू धर्म कहा जाता है। लेकिन मेरा अपना एक ब्रह्मांड है, जिस पर मेरा पूर्ण नियंत्रण है और मेरे अपने ब्रह्मांड में कई दुनियाएँ विद्यमान हैं। मैं एक शाश्वत मसखरा हूँ और मनुष्यों को हँसाना ही मेरा धर्म है। मैं वह यात्री हूँ जो एक ही बार आता है। मैं नाचता-गाता हूँ ताकि आपके दिलों को आनंद से भर सकूँ और फिर चला जाता हूँ, यह जानते हुए कि आपने दिल खोलकर हँसा है।

हँसी सबसे अच्छी दवा है। हँसो तो दुनिया तुम्हारे साथ हँसेगी, रोओ तो अकेले रोओगे। बचपन से ही मेरा सपना था कि मैं अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर

लोगों का मनोरंजन करूँ। जीवन में लोगों का मनोरंजन करने से बढ़कर कोई महान कार्य नहीं है।

मैं कोई राजनेता नहीं हूँ। मैं एक कलाकार हूँ। मैं ऐसे देश से आता हूँ जहाँ लोग अपने मूलभूत बल, यानी अपने विश्वास के प्रति भावुक और संवेदनशील होते हैं। यह हमारे भीतर गहराई से समाया हुआ है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस बात को, चाहे इसका कितना भी महत्व हो, एक ऐसे उत्सव से जोड़ दिया जाए जिसका इससे कोई लेना-देना नहीं है। हम यहाँ अपने देश की स्वतंत्रता का जश्न मनाने आए हैं। मेरा मानना है कि इस स्वतंत्रता के पीछे सबसे बड़ी शक्ति सिखों की भागीदारी थी और है। पंजाब के इस वीर समुदाय ने स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष किया और लोगों का बलिदान दिया। इसलिए, यह सुनकर दुख होता है कि जिस दिन भाइयों, बहनों, बेटों के बलिदान को याद किया जाना चाहिए, आप उसे राजनीतिक मुद्दा बना देते हैं और अपनी शिकायतों को व्यक्त करने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। मुझे नहीं लगता कि ऐसा किया जाना चाहिए। यह वह दिन है जब हम अपनी शिकायतों को एक तरफ रख दें और केवल एक बात याद करें—हमारे पूर्वजों ने क्या किया, उन्होंने एकता की उस एक महत्वपूर्ण शक्ति के साथ कैसे व्यवहार किया। हम जानते हैं कि हमारा देश विविधतापूर्ण है। इतने सारे धर्म, इतनी सारी जातियाँ, प्रांत, भाषाएँ। फिर भी हम एक हैं। हम हमेशा से एक रहे हैं। किसी भी ताकत को देश और जनता को बांटने या अलग करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि ये सभी एक ही हैं। यही एकता हमारी सच्ची आध्यात्मिकता है। क्या हम इस मंच का इस्तेमाल फूट डालने के लिए करेंगे? अगर ऐसा होता है तो यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण होगा। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा नहीं होगा, क्योंकि 15 अगस्त, जिसे हम मनाएंगे, वह दिन है जब हम अपने सभी मतभेदों को भुलाकर एक स्वर में कहते हैं कि हम भारतीय हैं। हम सब मिलकर अपनी स्वतंत्रता का जश्न मनाएंगे, चाहे वह पंजाबी हो, सिख हो, मुसलमान हो, हिंदू हो, पारसी हो, दक्षिण भारतीय हो या उत्तर भारतीय। मुझे पूरा विश्वास है कि महान खालसा परंपरा के मेरे भाई-बहन इस बात को समझेंगे और इस महान राष्ट्रीय दिवस को बाधित करने का प्रयास नहीं करेंगे।

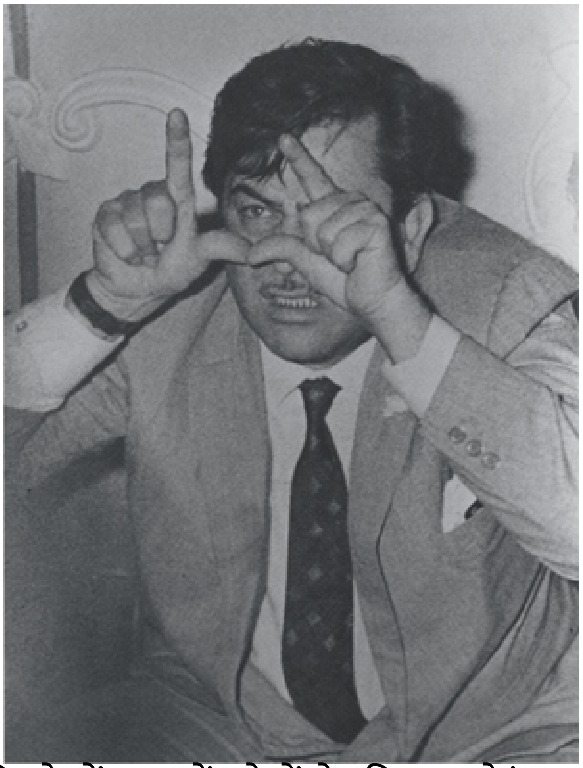

हम, दुनिया के इस हिस्से में, लाखों लोगों के लिए मनोरंजन का निर्माण करते आ रहे हैं। मैं भी उन अनेक लोगों में से एक हूँ जिन्होंने इस देश में बहुत से लोगों को एकजुट करने में योगदान दिया है। सांप्रदायिकता है और अब तथाकथित आतंकवाद भी—हर कोई अपनी ज़मीन पर दावा कर रहा है। कौन सी ज़मीन? किसकी है? हमारी! इन मुद्दों को पृष्ठभूमि में रखकर मनोरंजक फिल्में बनाकर हम बहुत कुछ कर सकते हैं। हम उन लाखों लोगों तक पहुँच सकते हैं जो आज इन चीजों से अनभिज्ञ हैं, और उनमें चेतना और जागरूकता पैदा कर सकते हैं। यही हमारा लक्ष्य है। हम इसमें कितना सफल हुए हैं? मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, सिनेमा पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर को एक साथ लाने, यहाँ के लोगों को एक-दूसरे के बारे में जानने में मदद करने वाली एक बहुत ही महत्वपूर्ण शक्ति रही है, और मुझे उम्मीद है कि यह एक महान योगदान रहा है।

मेरे जीवन के अधिकांश जुनून, मेरी सबसे प्यारी उम्मीदें मेरे काम में ही समाई हुई हैं और हर फिल्म के अंत में नतीजा हमेशा यही होता है कि मैं अकेला महसूस करता हूँ। शुक्र है मैंने ज्यादा पढ़ाई नहीं की। शुक्र है मैं किताबी कीड़ा नहीं हूँ। शुक्र है मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ। शुक्र है मैं मूर्ख या मसखरा हूँ। मैं बस सरल और ज़मीन से जुड़ा हुआ हूँ ताकि मैं दूसरे को समझ सकूँ और उसके दर्द को महसूस कर सकूँ। मैं उसके साथ मुस्कुरा सकता हूँ; मैं उसके दर्द और उसकी खुशी, दोनों को फुटपाथ पर बैठकर बाँट सकता हूँ।

मेरे भीतर की इस संवेदनशीलता ने मुझे खूबसूरत इंसानों से मिलवाया है। उनमें जो खूबसूरती मैंने देखी, उसे मैंने स्वीकार किया और जो बदसूरत थी, उसे मैंने नकार दिया। जवानी में यह रोमांस और संवेदनशीलता दोनों साथ-साथ चलती हैं। अगर आप प्यार करना चाहते हैं, तो आपको संवेदनशील होना पड़ेगा। अगर आप असंवेदनशील हैं, तो आप प्यार में नहीं पड़ सकते।

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि मेरी फिल्मों में संगीत, धारावाहिक और हर तरह की चीज़ों का बेमेल मिश्रण क्यों होता है? मैं किसके लिए फिल्में बना रहा हूँ? मैं ड्राइंग रूम में बैठकर बातचीत करने के लिए फिल्में नहीं बनाता। मैं इस देश के लाखों लोगों के मनोरंजन के लिए फिल्में बनाता हूँ। इसलिए, मेरे पास संगीत है, रोमांस है, एक खूबसूरत पटकथा है, नृत्य है, शानदार दृश्य हैं और बस! सब ठीक है, सब खुश हैं और ईश्वर महान है! सिनेमा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो एक ही समय में लाखों लोगों तक पहुँचता है, और यही कारण है कि मैं ऐसी फिल्में बनाने की कोशिश करता हूँ जिन्हें लाखों लोग देख सकें। आप इसे लोकप्रिय सिनेमा कह सकते हैं, इसे किसी भी तरह का सिनेमा कह सकते हैं, लेकिन जब तक यह मेरे देश के लाखों लोगों तक पहुँचता है, और अगर मैं उन्हें सोचने, गाने या हँसने के लिए कुछ दे सकता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैंने अपना काम कर दिया है।

स्वयं को समझना इतना कष्टदायी क्यों है? ऐसे महान लोग हुए हैं जिन्होंने इसे समझने का प्रयास किया है—भगवान बुद्ध, ईसा मसीह, मोहम्मद, भगवान कृष्ण, भगवान राम। वे दयालु लोग थे जिन्होंने अपने दर्द से प्रेरित होकर इस संसार के दुखी लोगों के साथ स्वयं को जोड़ा, उन्हें सुख दिया, उन्हें सांत्वना देने का प्रयास किया। मुझे लगता है कि उन्होंने शायद यह महसूस किया होगा कि हर कोई दुखी है। इसलिए, हमें इस पीड़ा का इलाज करना होगा, ठीक वैसे ही जैसे बीमारी होने पर करना पड़ता है। हम बीमारी का इलाज कैसे करते हैं? निदान होता है, दवा होती है जो आराम देती है। दर्द पर क्या लगाया जा सकता है? प्रेम है, स्नेह है, दया है।

कला की वो लौ जो वर्षों पहले मेरे भीतर प्रज्वलित हुई थी, आज भी जल रही है, बल्कि और भी तेज़ और चमकदार हो गई है। मैं मूल रूप से एक मनोरंजनकर्ता और एक शोमैन हूँ। मैं अपने दर्शकों को एक संदेश का सजी-धजी संस्करण देता हूँ। मुझे उद्योग में आई यह नई लहर समझ में नहीं आती। और मुझे कुछ लोगों द्वारा 'व्यावसायिक' सिनेमा शब्द के प्रयोग का तरीका पसंद नहीं है। सिनेमा आम जनता का माध्यम है, ड्राइंग रूम की बातचीत का नहीं। मनोरंजन क्या है? किसी के लिए यह एक सुंदर गीत या नृत्य हो सकता है, किसी के लिए यह एक बौद्धिक नाटक, एक ड्रामा या कुछ ऐसा हो सकता है जो उसे संतुष्टि दे; वह स्थिति या अभिनेता से जुड़ाव महसूस करता है। किसी के लिए यह केवल अपनी दबी हुई

भावनाओं को व्यक्त करने का एक साधन हो सकता है: वह एक लड़ाई देखता है और उसे लगता है कि नायक के रूप में उसने एक ही वार में लगभग पचास लोगों को गिरा दिया है, वह ताली बजाता है, चिल्लाता है और कहता है, 'वाह, वाह!' उस फिल्म में शायद कुछ खास न हो, लेकिन इसने उसे संतुष्टि दी, उसे खुश किया और उसे उन दैनिक समस्याओं को भुला दिया जिनका वह सामना करता है। एक पल के लिए वह सब कुछ भूल जाता है, वह आनंद लेता है। बस, यही तो असली मनोरंजन है!

आज जब मैं अपने चारों ओर देखता हूँ, तो मुझे हर तरफ भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार नज़र आता है। ऐसा लगता है जैसे लोग दिन-ब-दिन असभ्य और अशिष्ट होते जा रहे हैं। उनमें मूल्यों का नामोनिशान नहीं है। बुनियादी गुण, सच्चाई, वफ़ादारी, जिन्हें हम मानवता के अनमोल रत्न मानते थे, वे अब कहीं नज़र नहीं आते। पूरी व्यवस्था में ही कुछ गड़बड़ है। मैं खुद को न तो नैतिकतावादी कहता हूँ, न सुधारवादी। मैं न तो उपदेशक हूँ, न दार्शनिक, न बुद्धिजीवी। मैं बस एक आम इंसान हूँ जो अपने मन की बात कह रहा हूँ।

हिंदू दर्शन जीवन के चरणों को परिभाषित करता है: बचपन, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। मैं वानप्रस्थ अवस्था में हूँ, जहाँ मुझ पर किसी चीज़ का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं सांसारिक जीवन से विरक्त हूँ। मैं अपने विश्वास के अनुसार कार्य कर रहा हूँ। मैं अभी भी अपने विश्वास के अनुसार कार्य कर रहा हूँ, और मुझे लगता है कि मैं लोगों के करीब आ गया हूँ, जहाँ मैं होना चाहता था, उनके दिलों में बसना चाहता हूँ। मैं इसे प्राप्त करना चाहता हूँ।

कुछ साल पहले, जब मैं किसी फिल्म की शूटिंग कर रहा था, एक अमेरिकी पत्रकार मेरा इंटरव्यू लेने आया। इंटरव्यू धार्मिक दर्शन और 'जोकर के दर्शन' पर चर्चा में बदल गया। तब मैंने कहा, दुनिया के महानतम पुरुष जोकर थे। ईसा मसीह एक महान जोकर थे। बुद्ध और गांधी भी। पत्रकार पूरी तरह से हैरान रह गया। तो मैंने समझाया। बेशक, ईसा मसीह एक जोकर थे। जब किसी ने उन्हें एक गाल पर थप्पड़ मारा, तो उन्होंने दूसरा गाल आगे कर दिया। लोग उन पर हँसे, यह समझे बिना कि उनके कहे और किए में कितनी सच्चाई छिपी थी। दरअसल, वे न केवल अपने समय से, बल्कि उन लोगों से भी बहुत आगे थे जिन्हें वे प्रकाश दिखाना चाहते थे। अपने समय में, उन पर हँसा गया, ठीक वैसे ही जैसे बुद्ध और गांधी का उपहास किया गया था, लेकिन जिस दुनिया ने उनका उपहास किया, वही दुनिया उन्हें सम्मान देने लगी। इन पुरुषों के हृदय इतने विशाल थे कि वे दुनिया के सारे प्रेम, दुनिया के सारे दुख, दुनिया की सारी पीड़ा, दर्द, अकेलापन और बलिदान को समाहित कर सकते थे। और यही जोकर का गुण है। उनका हृदय वह भट्टी है जो संसार के समस्त दर्द को उनके चेहरे की हँसी और होठों पर चुटकुलों में बदल देती है। तमाम मौज-मस्ती, दिखावे और तमाशे, चुटकुलों और हँसी, सर्कस और जादू, गीत और नृत्य, संगीत और अभिनय के उस अद्भुत नज़ारे के नीचे, उस शाश्वत 'छोटे आदमी' का गहरा भाव और मानवतावाद छिपा है, जो विदूषक के वेश में मसीहा है, जिसका उद्देश्य अपने ही बलिदान पर सुख, आनंद, हँसी और शांति फैलाना है। यही उस 'छोटे आदमी' की गाथा है, उस विदूषक की जिसने दुख और पीड़ा का बोझ अपने कंधों पर उठाया और मानवता के शाश्वत कल्याण के लिए हमेशा शांति और प्रेम का संदेश दिया।

फिल्म उद्योग में धन की कमी एक अभिशाप है, लेकिन अत्यधिक धन उससे भी बड़ा अभिशाप है। लोग अधिक फिल्में बनाने लगते हैं और इससे रचनात्मकता नष्ट हो जाती है। एक कलाकार के जीवन में जनता से संपर्क सबसे अनमोल पुरस्कार है। यह संपर्क हर फिल्म के निर्माण के साथ निरंतर नवीनीकृत होता रहता है।

फिल्म घर की चारदीवारी में बैठकर देखने के लिए नहीं बनती। यह लोगों के लिए एक संदेश लेकर बनाई जाती है और हर बार जब आप फिल्म बनाते हैं, तो आपको लोगों के लिए अपने अस्तित्व का एक अनमोल हिस्सा कुर्बान करना पड़ता है। कोई भी बनावटी या नकली चीज़ नहीं चलेगी क्योंकि आपकी ईमानदारी के सिवा कुछ भी मायने नहीं रखता। दर्शक, जो आपकी फिल्म देखने के लिए थिएटर में बैठते हैं, उसे महसूस कर सकते हैं या उसमें कुछ कमी भी। इसीलिए मैं अपनी हर फिल्म में अपना दिल और आत्मा झोंक देता हूँ।

एक फिल्म निर्माता संगीत समारोह में कंडक्टर की तरह होता है। वह न तो धुन बनाता है और न ही वाद्य यंत्र बजाता है। फिर भी, जब वह आता है, तो संगीतकार खड़े हो जाते हैं। एक सच्चे फिल्म निर्माता को उतना ही सम्मान मिलना चाहिए जितना एक महान साहित्यकार को, क्योंकि उसमें लोगों के विचारों को सही दिशा में प्रभावित करने की क्षमता होती है। उसे राष्ट्र निर्माता के रूप में उतना ही सम्मान मिलना चाहिए जितना एक महान राजनीतिज्ञ और राजनेता को मिलता है।

भारत से परे

'आवारा सोवियत संघ-भारत मित्रता में मेरा छोटा सा योगदान था।'—राज कपूर

राज कपूर की फिल्म 'आवारा' मॉस्को के एक थिएटर में दिखाई जा रही है।

सोवियत संघ की यात्रा

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत संघ ने अपने समाज को सुव्यवस्थित करते हुए, अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और सोवियत संघ का गठन करने वाले चौदह गणराज्यों में सत्तावादी साम्यवाद की व्यवस्था लागू करने के प्रयास में बाहरी दुनिया के लिए अपने दरवाजे बंद कर दिए थे। 1954 में, पहली बार, इसने लौह परदा हटाया और बाहरी दुनिया से आगंतुकों को आने की अनुमति दी। सोवियत संस्कृति मंत्रालय ने भारत के फिल्म उद्योग से कहा कि वे प्रमुख और लोकप्रिय फिल्म सितारों का एक प्रतिनिधिमंडल सोवियत संघ में अपने समकक्षों से मिलने के लिए भेजें, ताकि दुनिया के उस निषिद्ध हिस्से में चल रही गतिविधियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया जा सके। वामपंथी विचारधारा वाले ख्वाजा अहमद अब्बास को सोवियत संघ में राजकीय अतिथि के रूप में यात्रा करने के लिए चौदह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का चयन करने और उसका नेतृत्व करने के लिए कहा गया, ताकि वे सोवियत संघ के साम्यवाद के प्रयोगों से परिचित हो सकें। राज कपूर को इसके सदस्यों में से एक के रूप में चुना गया था। यह एक ऐतिहासिक यात्रा थी।

सोवियत संघ के लोग संस्कृति मंत्रालय द्वारा निर्मित फिल्में देखने के आदी थे, जिनमें ऐसे विषय और मुद्दे होते थे जिनका प्रचार-प्रसार राज्य की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक था। बाहर से आने वाली कोई भी ऐसी चीज़ जो उन्हें इसके विपरीत प्रभावित कर सकती थी, उस पर सख्त प्रतिबंध था और ज़रूरत पड़ने पर उसे पूरी तरह से प्रतिबंधित भी कर दिया जाता था। पहली बार, ताज़ी हवा के झोंके की तरह, भारतीय संगीत और नृत्य की भव्य प्रस्तुतियाँ और प्रेम कहानियों से भरपूर फिल्में उनके सिनेमाघरों में पहुँचीं, और सोवियत लोग उन्हें देखने के लिए किसी जादुई दुनिया में पहुँचे बच्चे की तरह उत्साहित हो गए। उन्होंने सिनेमाघरों को खचाखच भर दिया, हमारे गीत गाए और किशोरों की तरह ऑटोग्राफ मांगने वालों की तरह हमारे फिल्मी सितारों और फिल्म निर्माताओं के पीछे-पीछे चले। आवारा फिल्म के साथ, जो जल्द ही एक कल्ट फिल्म बन गई, राज कपूर देश के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति बन गए।

'आवारा हूं' गाना हर किसी की जुबान पर था, हर जगह ऐसे गाया जा रहा था मानो वह देश का राष्ट्रगान हो। 1954 में, स्टालिन की मृत्यु के एक साल बाद, तथाकथित ख्रुश्चेव के उदारीकरण के दौर में, सोवियत संघ में मीडिया और कला के क्षेत्र में अचानक एक नई स्वतंत्रता आ गई। अकेले उसी साल, अनुमानतः चौंसठ मिलियन लोगों ने, जिनमें ज्यादातर युवा थे, आवारा फिल्म के टिकट खरीदे। 'कपूर उन्माद', जैसा कि सोवियत संघ में इसे कहा जाता था, अगले साल उनकी अगली फिल्म, श्री 420 के साथ और भी उग्र हो गया। सोवियत लोगों को अपनी फिल्मों में मार्क्सवादी समाधानों की आवश्यकता नहीं थी। सरकारी रेडियो पर इसकी कोई कमी नहीं थी।

उन्होंने उन गीतों का जश्न मनाया, जो रेडियो पर हर जगह सुनाई देने लगे, और राज कपूर की तस्वीर वाले पोस्टकार्ड खरीदे जो आज भी संग्रहणीय वस्तुएं हैं। उन्होंने सामाजिक परंपराओं के विरुद्ध अपनी इच्छाओं का पीछा करने वाले उस युवा नायक को अपना बना लिया। प्रतिनिधिमंडल जहाँ भी जाता, राज कपूर से उनका गीत गाने की माँग होती, और वे पूरे दिल से, दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हुए, पियानो की कुर्सी पर बैठकर गाते, चारों ओर से उन्हें वोदका के गिलास पेश किए जाते, जबकि उनका अपना व्हिस्की का गिलास पियानो पर खाली पड़ा रहता, फिर से भरने की प्रतीक्षा में। जैसे ही वे गाते, पुरुष और महिलाएं गीत में शामिल हो जाते, नाचते, चिल्लाते और मदहोश होकर झूमते। 1955 में सोवियत संघ की नेहरू की पहली प्रधानमंत्री यात्रा पर, उन्हें देखने उमड़ी भीड़ ने भारतीय नेता के लिए 'आवारा हूँ!' का नारा लगाया। उस समय बुल्गानिन सोवियत प्रधानमंत्री थे। भारत के प्रधानमंत्री के लिए आयोजित आधिकारिक भोज में, नेहरू के बाद जब बुल्गानिन की बोलने की बारी आई, तो उन्होंने 'आवारा हूँ!' गाया।

राज कपूर अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति यूरी गैगारिन के साथ।

राज कपूर और नरगिस, निकोले चेरकासोव (अभिनेता) और वेसेवलोड पुडोवकिन (निर्देशक) के साथ, 1954

राज कपूर के इतने दीवाने थे कि रूसी अक्सर अपने देश आने वाले भारतीयों से, प्रतिनिधिमंडल के चले जाने के काफी समय बाद भी, पूछते थे, 'क्या आप आवारा की धरती से हैं?' यहां तक कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी राज कपूर के दीवाने हो गए थे, जब उन्होंने भारतीय फिल्म स्टार की लोकप्रियता को हर जगह देखा और सुना।

पूर्वी अफ्रीका, रोमानिया, मिस्र, अफगानिस्तान, ईरान, मध्य पूर्व और चीन में भी ऐसे कई उत्साही युवा घुमक्कड़ थे। चेयरमैन माओ भी राज कपूर के प्रशंसक थे! तुर्की में, 'आवारा' एक लोकप्रिय टेलीविजन शो बन गया; 'आवारा हूं' आज भी इतना प्रासंगिक है कि इससे प्रेरित होकर हिप-हॉप संस्करण भी बनाया जा सकता है।

पहली बार जब मैं तथाकथित लौह पर्दे के पार, सोवियत दुनिया में गया, तो वह वर्ष 1954 था। सौभाग्य से मुझे आमंत्रित किया गया था। यह मेरे लिए एक बिल्कुल नया अनुभव था। सोवियत संघ में एक विशाल फिल्म उद्योग था, लेकिन उससे भी बढ़कर, वहाँ के लोग और लाखों लोगों का स्वागत और उनका प्यार मुझे बेहद प्रभावित कर गया। रूस में मेरी लोकप्रियता एक ऐसी घटना है जिसे मैं स्वयं समझा नहीं सकता, सिवाय इसके कि मेरी फिल्में 'आवारा' और 'श्री 420' एक ऐसे उपयुक्त समय पर आईं, जब रूसी लोग सांस्कृतिक रूप से खुद को बदल रहे थे। इन फिल्मों में, उन्होंने विद्रोही भारतीय युवाओं की भावना देखी और उन्हें प्यार किया, क्योंकि वे उनकी अपनी भावना के प्रतीक बन गए थे। भारतीय युवाओं के साथ यह जुड़ाव, जिसे मैंने चित्रित किया, ने हमें और करीब ला दिया। हमारी दोस्ती लंबे समय से चली आ रही है। आज भी मुझे उनसे गर्मजोशी से स्वागत मिलता है। सोवियत संघ के लोगों ने 'आवारा' को बहुत पसंद किया और मेरे काम को भी सराहा। उन्होंने मुझे बहुत स्नेह दिया, जिसे मैं आज भी, अट्ठाईस साल बाद भी महसूस करता हूँ! मैं अत्यंत सम्मानित महसूस करता हूँ, लेकिन इसका सारा श्रेय मैं स्वयं को नहीं देता। आवारा (घोड़ा) या मेरे काम के प्रति उन्होंने जो प्रेम और स्नेह दिखाया, वह उस समय के भारतीय युवाओं के लिए प्रतीकात्मक था। वह

प्यारा आवारा प्रेम, स्नेह और मित्रता की तलाश में था और जिसने भी उसकी ओर हाथ बढ़ाया, उसने उसे थाम लिया। सोवियत संघ-भारत मित्रता में मेरा यही छोटा सा योगदान था। मॉस्को में हमने जो पहले शब्द सुने, वे थे: 'प्रिय मित्रों, साथियों'। इन सरल लेकिन महत्वपूर्ण शब्दों को सुनने के बाद रूसी भाषा का और अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं रही। हम हमेशा से कहते आए हैं कि अगर हम किसी को मित्र कहते हैं, तो वह हमेशा के लिए मित्र बन जाता है।

फिल्म निर्माता के रूप में विदेश यात्रा के अपने पहले अनुभव में, मैंने जिन लोगों से मुलाकात की, उनसे बहुत कुछ सीखा और हासिल किया। हम उनके दिलों की गहराई तक पहुँच गए और उन्होंने हमें वह सब कुछ बताया जो हम जानना चाहते थे। मैंने कम ही बोला, लेकिन मैंने हर बात को ध्यान से सुना और समझा।

संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा

संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश विभाग और मोशन पिक्चर एसोसिएशन ऑफ अमेरिका के संयुक्त निमंत्रण पर, सितंबर 1952 में, भारतीय फिल्म उद्योग की चौदह शीर्ष हस्तियां चार सप्ताह के दौरे के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका गईं, जिसमें हॉलीवुड की यात्रा सहित देश के आठ शहरों का दौरा शामिल था।

राज कपूर के स्वयं के कथनानुसार, जब उन्होंने 1952 में भारतीय फिल्म प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में पहली बार अमेरिका की यात्रा की, तब वे पूरी तरह से अज्ञात थे। यहाँ तक कि जब उनकी फिल्म 'आवारा' रिलीज़ हुई, तब तक दुनिया भर में उन्हें महान फिल्म निर्माता के रूप में सराहा जा रहा था, लेकिन अमेरिकी न तो उनके बारे में जानते थे और न ही उनके काम के बारे में जानने की परवाह करते थे। हालांकि, जो राज कपूर के भाग्य में 1950 के दशक में नहीं लिखा था, वह अंततः 1980 के दशक में हुआ। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और फिल्म समारोह निदेशालय, दिल्ली ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स (यूसीएलए) और न्यूयॉर्क के आधुनिक कला संग्रहालय (एमओएमए) के सहयोग से 1985 में न्यूयॉर्क और लॉस एंजिल्स में राज कपूर की फिल्मों का एक पूर्वव्यापी प्रदर्शन आयोजित किया। भारतीय सिनेमा के जानकार, यूसीएलए फिल्म, ऑडियो और टेलीविजन अभिलेखागार के प्रोग्रामिंग निदेशक ज्योफ्री गिलमोर और एमओएमए के फिल्म विभाग की क्यूरेटर एड्रिएन मानसिया, न्यूयॉर्क में आयोजित होने वाले भारतीय महोत्सव के उद्घाटन समारोह में राज कपूर को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के लिए बेहद उत्सुक थे। उन्होंने राज कपूर को आने के लिए राजी कर लिया, और जब बार-बार खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने यात्रा रद्द करने का संदेश भेजा, तो एड्रिएन मानसिया ने आर.के. स्टूडियो को जवाब में संदेश भेजा: 'राज कपूर की जगह कौन ले सकता है? राज कपूर ही हों या कोई नहीं!' इससे राज कपूर न केवल खुश हुए बल्कि बेहद प्रसन्न भी हुए, और उन्होंने अमेरिका की यात्रा की।

राज कपूर को भारतीय प्रतिनिधिमंडल के साथ, राष्ट्रपति ट्रूमैन के साथ, वाशिंगटन में अमेरिकी फिल्म उद्योग द्वारा आयोजित एक स्वागत समारोह में देखा गया।

राज कपूर अमेरिकी फिल्म निर्देशक और लेखक गैब्रियल पास्कल और उनकी पत्नी के साथ (1952)।

स्क्रीन डायरेक्टर्स गिल्ड के अध्यक्ष जॉर्ज सिडनी ने राज कपूर को गिल्ड का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया (1952)।

लॉस एंजिल्स मेमोरियल कोलिज़ियम में, मोशन प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के अतिथि के रूप में, टेक्सास के राइस विश्वविद्यालय और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बीच एक फुटबॉल मैच देखने के लिए दर्शक पहुंचे। उनका स्वागत भारत के फूल की प्रतिकृति वाले कार्ड से किया गया और सार्वजनिक संबोधन प्रणाली के माध्यम से उनकी मातृभाषा में उनका अभिनंदन किया गया। विलियम लुंडिगन, जॉर्ज मर्फी और रोनाल्ड रीगन (जो उस समय स्क्रीन एक्टर्स गिल्ड के अध्यक्ष थे और बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बने) उन्हें मैच तक ले गए (1952)।

वार्नर ब्रदर्स के प्रोडक्शन विभाग के प्रभारी उपाध्यक्ष जैक एल. वार्नर को भारत से एक उपहार भेंट किया गया। बदले में, राज कपूर को वार्नर ब्रदर्स स्टूडियो की चाबी मिली (1952)।

राज कपूर का कोलंबिया स्टूडियो में अंतर्राष्ट्रीय विभाग के प्रमुख और एसोसिएशन ऑफ मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स ऑफ अमेरिका के सदस्य एली लेवी द्वारा स्वागत किया गया (1952)

राज कपूर न्यूयॉर्क में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए।

मुझे आप सभी का आभार है कि आपने मुझे न्यूयॉर्क में, अमेरिकी धरती पर, भारतीयों और अमेरिका के लोगों के साथ भारत की स्वतंत्रता का जश्न मनाने का अवसर दिया—यह वह दिन है जिसे हम सभी नागरिक, भारत की संतानें, अत्यंत गर्व के साथ मनाते हैं। हमने इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है और अब इसे संरक्षित और मजबूत करना हमारा दायित्व है। भारत और उसके लोग केवल एक ही बात का समर्थन करते हैं, और वह है शांति, राष्ट्रों और विश्व के लोगों के बीच शांति और मित्रता। हम भारतीय हैं और अपने सभी विविध धर्मों के बावजूद हम एकजुट हैं। हर देश की अपनी समस्याएं होती हैं, लेकिन स्वतंत्रता के इस दिन सभी के लिए खुशी है और हम एक हैं।

राज कपूर और नरगिस अमेरिकी अभिनेता और मनोरंजनकर्ता डैनी केय के साथ।

कंडक्टर ज़ुबिन मेहता याद करते हैं कि एक बार लॉस एंजिल्स में उन्होंने अपने घनिष्ठ मित्र और बेहतरीन रसोइये, अमेरिकी स्टार डैनी केय से राज कपूर के लिए खाना बनाने को कहा था। ज़ुबिन ने राज कपूर को बताया था कि डैनी समय के पाबंद हैं, लेकिन जब वे मेहमानों को लेने पहुंचे तो पाया कि खाना तैयार नहीं था। ज़ुबिन को यह देखकर राज कपूर ने चौंकाते हुए कहा, 'कृष्ण ने चांद नहीं देखा!' उन्होंने आगे बताया, 'आज पति के सम्मान में पत्नी द्वारा साल में एक बार रखा जाने वाला धार्मिक व्रत है, और व्रत तोड़ने से पहले उसे चांद देखना ज़रूरी है।' वे प्रशांत महासागर की ओर आधे रास्ते तक गाड़ी चला चुके थे कि संयोग से उनमें से एक को चांद दिखाई दिया और उसने कृष्ण को दिखाया। फिर वे डैनी केय के घर के लिए तेज़ी से निकल पड़े। ज़ुबिन की कोशिशों के बावजूद, उन्हें पच्चीस मिनट की देरी हो गई। जैसा कि उम्मीद थी, जब वे अंदर आए तो डैनी के चेहरे पर स्वागत का भाव नहीं था। उनके लिए तो उनका पास्ता बर्बाद हो चुका था। राज कपूर को डैनी केय का दिल जीतने में सिर्फ दस मिनट लगे, खासकर तब जब मेजबान ने देखा कि उनके बनाए खाने की कितनी तारीफ हुई। वे घनिष्ठ मित्रों की तरह विदा हुए, और ज़ुबिन मेहता जब भी डैनी केय से मिले, उन्होंने भारत के इस महान व्यक्तित्व के बारे में जरूर पूछा।

चार्ली चैपलिन के साथ (1955)

सोवियत संघ जाते समय, हम जिनेवा में कुछ दिनों के लिए रुके, फिर प्राग के लिए उड़ान भरी, जो उस समय कम्युनिस्ट चेकोस्लोवाकिया की राजधानी थी। वहाँ से एक सोवियत विमान प्रतिनिधिमंडल को मॉस्को ले जाने वाला था। उस समय चार्ल्स चैपलिन स्विट्जरलैंड के मोंटेक्स के पास बस गए थे, क्योंकि अमेरिकी सरकार ने उन्हें वामपंथी करार दिया था और अमेरिकी विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के कारण उन्हें देश छोड़ने के लिए कहा था। उन्होंने जिनेवा से कुछ घंटों की दूरी पर एक आलीशान हवेली खरीदी थी, जिसे वे अपना 'व्हाइट हाउस' कहते थे। उन्होंने इसे अमेरिकी राष्ट्रपति भवन के बाहरी हिस्से जैसा बनवाया था, इस तरह उन्होंने अमेरिकी सरकार से अपना बदला लिया था। हमारे प्रतिनिधिमंडल के नेता, के.ए. अब्बास, महान हास्य कलाकार से मिलना चाहते थे, और वे अपने विला में कॉफी पर अनौपचारिक बातचीत के लिए हमसे मिलने को तैयार हो गए थे। हम सभी उस महान हस्ती से मिलने के लिए उत्सुक थे।

चैपलिन ने अपने घर में हमारा स्वागत किया। वे हमें अपने आलीशान विला के मुख्य हॉल से होते हुए बरामदे तक ले गए, जहाँ से हरे-भरे लॉन दिखाई देते थे और सामने एक बेहद खूबसूरत स्विस घाटी नज़र आती थी। जब भी कोई पर्यटक बस उस जगह से गुज़रती, बस का कंडक्टर बड़े गर्व और खुशी से हमें चैपलिन का मशहूर घर दिखाता। मुख्य हॉल के एक कोने में, जहाँ से हम बरामदे की ओर जा रहे थे, एक पियानो रखा था और एक बेहद सजी-धजी महिला उसे बजा रही थी। पियानो बजाते हुए उन्होंने हमें हल्के से सिर हिलाकर अभिवादन किया। मुझे लगा कि वे चैपलिन की नई पत्नी ऊना होंगी, जो मशहूर नाटककार यूजीन ओ'नील की बेटी थीं। उनकी गोद में एक नन्हा बच्चा बैठा था, जो शायद चार्ली से उनकी बेटी थी। ऊना द्वारा बजाई गई धुन ने महान दार्शनिक और हास्य कलाकार से हमारी मुलाकात का माहौल तैयार किया। हम उनके चारों ओर घास पर बैठ गए, जबकि वे अपनी आरामकुर्सी पर आराम से बैठे थे। उन्होंने अपने जीवन के दर्शन,

अपनी फिल्मों में हास्य का तड़का, रोमांस, कविता, समृद्धि और अमेरिका से मोहभंग के बारे में बात की, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने जीवन के सबसे अच्छे साल वहीं बिताए थे। वे हमारे हर सवाल का जवाब देने के लिए तैयार थे। पापा सचमुच उनके चरणों में बैठ गए। एक उत्साही शिष्य होने के नाते, वे जाने-अनजाने में चैपलिन की शैली का अनुसरण कर रहे थे। 'चार्ली' के साथ बिताए वे तीन अंतरंग घंटे, दुनिया भर में लिखी गई उनकी सभी जीवनियों को पढ़ने के बराबर थे। अपने विला के मुख्य द्वार पर हमें विदा करते समय उन्होंने जो विदाई चुंबन दिया, वह पूरी यात्रा के दौरान हमारे साथ रहा। हम साम्यवाद की दुनिया की यात्रा पर निकले, जहाँ हम जाने वाले थे, और इस दौरान उनकी आभा हमारे साथ थी। जैसे ही हमें जिनेवा वापस ले जाने वाली बस मुड़ी और एक मोड़ लिया, जिससे उस महान कलाकार, विचारक और हास्य कलाकार की छोटी सी आकृति नजरों से ओझल हो गई, राज कपूर को बस की खिड़की से बाहर लटकते हुए बार-बार चिल्लाते हुए सुना गया: 'अलविदा छोटे दोस्त, अलविदा छोटे दोस्त, अलविदा छोटे दोस्त।'

महान् सर चार्ल्स चैपलिन और राज कपूर की कोई तुलना नहीं है। मैं सूरज के सामने एक दीपक की तरह हूँ। उनकी कला अमर रहेगी, जब तक इस धरती पर मनुष्य रहेंगे और फूल खिलते रहेंगे। जब मैं बहुत छोटा था, तब से मैं चार्ली चैपलिन का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। मैंने उनकी फ़िल्में 'सिटी लाइट्स', 'मॉडर्न

टाइम्स', 'द गोल्ड रश' और 'लाइमलाइट' देखी थीं। उनके काम में मुझे जो बात प्रेरित करती थी, वह थी 'आम आदमी', और जब मैंने अपने करियर की शुरुआत की, तो मैंने अपने देश में हर जगह 'आम आदमी' को देखा—दबे-कुचले लोग, वो लोग जिन्हें बिना किसी गलती के पीटा जाता था। चैपलिन की फ़िल्मों की ओर मुझे जो बात खींचती थी, वो खुद चैपलिन थे—एक आवारा, एक भिखारी, एक आम आदमी। मैं उनकी वेशभूषा की वजह से नहीं, बल्कि 'आम आदमी' की सादगी और उसकी मानवीय भावनाओं की वजह से उनकी ओर आकर्षित हुआ। इतनी गरीबी में भी उन्होंने जीवन का आनंद कैसे लिया। चैपलिन की बहुत सी बातें थीं जिन्होंने मुझे प्रभावित किया—उनके सभी विश्वासों के पीछे की सोच। मुझे लगता है कि उनका आवारा किरदार अब तक के सबसे महान किरदारों में से एक था।

राज कपूर, फ्रैंक कैप्रा और नरगिस के साथ

कुछ फिल्मों ने मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ा है, जैसे कुछ रिश्तों ने। और कुछ फिल्म निर्माताओं ने मेरी कला को लगभग बदल दिया, जैसे फ्रैंक कैप्रा। मेरी सभी फिल्मों में, अंततः आम आदमी, कमजोर व्यक्ति ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ हासिल करता है। मैं हमेशा से कैप्रा की फिल्म 'इट हैपेंड वन नाइट' के आशावाद से

सहमत रहा हूँ।

पिछले दिनों

'इस दुनिया में, इस जीवन में, सब कुछ है। अच्छा, बुरा, सुख, दुख, सब कुछ। मृत्यु के बाद कुछ नहीं है। सब कुछ एक शून्य है। आप जीते हैं और मर जाते हैं। और यहीं सब खत्म हो जाता है। शायद, जब आप उस मुकाम पर पहुँचते हैं जहाँ आपको पता चलता है कि आप अब एक महान हस्ती बन चुके हैं... तब जाने का समय आ जाता है।'—राज कपूर

मुझे यह सम्मान मिलने की खबर सुनकर जो खुशी हुई, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। मैं आप सभी का शुक्रिया अदा करता हूं। मैं दो कारणों से खुश हूं। पहला, क्योंकि मेरे पिता को मरणोपरांत दादासाहेब फाल्के पुरस्कार मिला था, और मुझे उनकी ओर से यह पुरस्कार ग्रहण करने का सौभाग्य और सम्मान प्राप्त हुआ। मुझे ज़रा भी अंदाजा नहीं था कि एक दिन किस्मत इसे मेरे हाथों सौंप देगी। दूसरा, इससे मुझे याद आता है कि साथी, सहकर्मी, टीम, मेरी यूनिट, मेरे विचारक, संगीतकार, तकनीशियन, कलाकार, ये सभी शब्द कितने मायने रखते हैं। सिर्फ मैं ही नहीं, बल्कि वे सभी लोग भी हैं जिन्होंने मुझे उनकी ओर से यह सम्मान प्राप्त करने में सक्षम बनाया है, वे जो अब मेरे साथ नहीं हैं और वे जो हैं। मुझे यकीन है कि इस समय वे सुन रहे हैं। मैं आप सभी का आभारी हूं।

~

भारत के पूर्व राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन से दादासाहेब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करते हुए (1988)

2 मई 1988 को, नई दिल्ली के सिरी फोर्ट सभागार में आयोजित पैंतीसवें राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव पुरस्कार समारोह में, राज कपूर को सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दादासाहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत के पहले फिल्म निर्माता के नाम पर रखा गया यह पुरस्कार भारतीय फिल्म उद्योग का सबसे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार है। अचानक अस्थमा का दौरा पड़ने के कारण राज कपूर मंच तक चलने में असमर्थ थे। कलाकार को श्रद्धांजलि देते हुए, भारत के राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने प्रोटोकॉल को दरकिनार करते हुए मंच से नीचे उतरकर दर्शकों के बीच पहली पंक्ति में बैठे बीमार राज कपूर को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया। यह आखिरी बार था जब राज कपूर अपने पैरों पर खड़े हुए थे। तालियों और जयकारों के बीच उस कलाकार के जीवन का अंत हो गया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने 'मेरा नाम जोकर' के दूसरे भाग के अंत में कल्पना की थी, एक ऐसी पटकथा जो लिखी तो गई लेकिन कभी फिल्म नहीं बन पाई।

भारतीय सिनेमा के दिग्गज कलाकार राज कपूर का 2 जून 1988 को नई दिल्ली में निधन हो गया। उनका अंतिम समय रात 9:20 बजे था। वे 64 वर्ष के थे। उनका निधन कई अंगों के फेल होने और हृदय-श्वसन अवरोध के कारण हुआ। कपूर परिवार को भले ही गहरा व्यक्तिगत दुख हुआ, लेकिन एक अनकहा एहसास भी था कि इस कलाकार को इससे बेहतर अंत नहीं मिल सकता था। मृत्यु का दर्द फीका पड़ गया और राज कपूर ने हमेशा की तरह सबका दिल जीत लिया।

बीमार अभिनेता 2 मई से जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे। डॉक्टरों के तमाम प्रयासों के बावजूद उनकी हालत बिगड़ती चली गई और 27 मई को वे कोमा में चले गए। अस्पताल में भर्ती होने के बाद से ही वे वेंटिलेटर पर थे। दवाओं के ज़रिए उनकी हृदय संबंधी क्रियाएं स्थिर रखी गई थीं, लेकिन वे भी बिगड़ने लगीं। गुर्दे काम करना बंद कर देने के कारण उन्हें डायलिसिस पर रखना पड़ा। उनके अंतिम समय में उनका परिवार उनके पास ही था। भारत सरकार ने इस महान व्यक्ति के पार्थिव शरीर को विशेष चार्टर्ड विमान से मुंबई भेजने की व्यवस्था की।

राज कपूर को उनके निवास से आर.के. स्टूडियो होते हुए श्मशान घाट ले जाया गया, उस दिन पूरी फिल्म इंडस्ट्री शोक में डूबी हुई थी। राज कपूर अक्सर कहते थे, 'जब भी मेरी मृत्यु हो, मुझे मेरे स्टूडियो ले जाना, क्योंकि संभव है कि सभी रोशनी की जगमगाहट के बीच मैं फिर से उठ खड़ा होऊं और चिल्लाऊं, एक्शन! एक्शन!' विडंबना यह है कि दादासाहेब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करने से एक दिन पहले दूरदर्शन को दिए अपने अंतिम टेलीविजन साक्षात्कार में उन्होंने कहा था, 'कल खेल में हम हों ना हों, गर्दिश में तारे रहेंगे सदा... भूलोगे तुम, भूलेंगे वो, पर हम तुम्हारे रहेंगे सदा (कल मैं ब्रह्मांडीय खेल का हिस्सा न रहूं, लेकिन तारे सदा अमर रहेंगे... तुम मुझे भूल सकते हो, और वे भी, लेकिन मैं तुम्हारा सदा रहूंगा)।'

राज कपूर के पार्थिव शरीर का हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार 3 जून 1988, शुक्रवार को अंतिम संस्कार किया गया, जिससे भारतीय सिनेमा के एक गौरवशाली अध्याय का अंत हो गया। भारतीय सिनेमा के इस दिग्गज कलाकार का चेंबूर श्मशान घाट में वैदिक मंत्रों के उच्चारण के बीच अंतिम संस्कार किया गया। उनकी चिता को उनके सबसे बड़े बेटे रणधीर कपूर ने अग्नि दी।

~

मुझे बहुत अफ़सोस है, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं अपने लक्ष्य के आस-पास भी पहुँच पाया हूँ। हे प्रभु, मुझे अभी अपने से दूर मत ले जाओ, जब मैंने अभी खेलना शुरू ही किया है। जब समय, जीवन, आपको यह सिखाता है कि आप उस ईश्वर की दी हुई हर चीज़ को स्वीकार करने के करीब हैं, जो आपको भरपूर मात्रा में करने और हासिल करने के लिए दी गई है, तो आपको लगता है कि देर हो रही है, समय कम है। बहुत कम समय बचा है। मुझे लगता है कि मैं मुरझा रहा हूँ।

इस अस्थमा के साथ मेरी सांसें रुक जाती हैं। ये मेरी जीवनशैली नहीं है। इंसान को होने वाली इतनी सारी बीमारियों में से मुझे अस्थमा ही क्यों चुनना था? मुझे लगता है कि जीवन का सार सांस लेना है; आप गीत गा सकते हैं, नाच सकते हैं, रचना कर सकते हैं, जी सकते हैं। आप सिगरेट नहीं पीते, शराब नहीं पीते, पहले जितना खाते नहीं, ठीक है! लेकिन फिर भी, कभी-कभी आप बेबस हो जाते हैं। खैर, मैं फिल्में बनाने से खुद को रोक नहीं सकता और मेरी सांसें फूलना भी लाचारी का कारण है। सांस आती नहीं, अब मैं कहता हूं कि सांस जाती क्यों नहीं!

राज कपूर जिस फिल्म 'हेन्ना' पर काम कर रहे थे, उसी फिल्म की कुछ तस्वीरें, जिसे उनके बेटों ने 1990 में पूरा किया था।

श्रद्धांजलि

देव आनंद: अभिनेता, निर्माता, निर्देशक और मित्र
राज कपूर का निधन नहीं हुआ है। उन्होंने अपने काम और फिल्म उद्योग में अपने अतुलनीय योगदान से खुद को अमर कर दिया है। वे अपने दर्शकों के दिलों और दिमाग में हमेशा जीवित रहेंगे। लोग हमेशा उन्हें शो बिजनेस हॉल ऑफ फेम की पहली पंक्ति में बैठे हुए देखेंगे और उन्हें गर्व से मुस्कुराते और हंसते हुए पाएंगे। उन्होंने अपने अंतिम पुरस्कार को ग्रहण करते हुए, अपने करियर के अंतिम क्षणों में अंतिम सांस ली। उनकी आत्मा को शांति मिले और उनके परिवार को इस बात से सांत्वना मिले कि राज कपूर का निधन बिल्कुल उचित तरीके से हुआ।

देव आनंद और उनकी पत्नी कल्पना, श्री और श्रीमती राज कपूर के साथ।

अमिताभ बच्चन: अभिनेता, निर्माता और रिश्तेदार

एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखना मुश्किल है जिसने अपनी रचनात्मकता और स्वभाव से जीवन को नई अभिव्यक्ति दी। कैमरे के पीछे उनका काम तो सर्वविदित है—उनकी कला और समर्पण अद्वितीय थे और उन्होंने नए मानदंड स्थापित किए। लेकिन कैमरे के सामने भी वे असाधारण थे। अगर किसी ने जीवन को पूरी तरह से जिया है, तो वो राज जी थे। उन्होंने एक अनोखे उत्साह के साथ जीवन जिया और काम किया। उनमें किसी भी कमरे में प्रवेश करते ही उत्साह का स्तर अकल्पनीय ऊंचाइयों तक ले जाने की क्षमता थी। यही उत्साह उनकी फिल्मों में भी झलकता था। वे हमेशा बड़े सपने देखते थे। उनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं थी—यह भव्य, संवेदनशील और आनंदमय थी। वे हर समय अपने साथ एक निडर भावना और जीवन के प्रति एक दुर्लभ जुनून लिए रहते थे। कई लोग उनके पास से गुजरकर और उनकी भावना और ऊर्जा का एक छोटा सा अंश भी ग्रहण करके अपना जीवन व्यतीत कर सकते थे।

राज कपूर का नाम मैंने पहली बार 1950 के दशक की शुरुआत में अपने पड़ोसियों से सुना था, जो इलाहाबाद में हमारे किराए के चार-भाग वाले घर में रहते थे। वे भी कपूर परिवार से थे और दावा करते थे कि वे राज कपूर के दूर के रिश्तेदार हैं। मैं अक्सर उनके परिवार के बड़ों और बच्चों को फिल्मी गाने गाते सुनता था, जो मुझे बहुत बाद में पता चला कि आवारा नाम की फिल्म के थे। मैं लगभग दस साल का रहा होगा और उस उम्र में लॉरेल और हार्डी, सिंड्रेला, स्नो व्हाइट और द लोन रेंजर कॉमिक्स ही मेरा मनोरंजन का साधन थीं। जैसे-जैसे साल बीतते गए, स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय, सिनेमा की दुनिया और उससे जुड़े महान कलाकार मेरे जीवन में बढ़ते गए, और इसमें मेरी माँ का बहुत बड़ा

योगदान था, जो हमेशा मेरे साथ रहती थीं और इस आकर्षक माध्यम में मेरा मार्गदर्शन करती थीं। राज कपूर और उनकी फिल्में मेरी माँ की बातचीत का एक अहम हिस्सा थीं, न सिर्फ फिल्मों के विषय के कारण, बल्कि मेरे पिता और पृथ्वीराज कपूर के बीच बढ़ते रिश्ते के कारण भी। पृथ्वीराज कपूर अपने बेहद लोकप्रिय संस्थान, पृथ्वी थिएटर के प्रख्यात और ऊर्जावान रंगमंच व्यक्तित्व थे और राज कपूर के पिता थे। पृथ्वीराज जी जब भी अपनी मंडली के साथ इलाहाबाद दौरे पर आते थे, हमारे साधारण से घर में नियमित रूप से आते थे। अक्सर देर रात तक कविता पाठ होते थे, जहाँ पृथ्वीराज जी और उनके कलाकार घंटों मेरे पिता की कविताएँ सुनते थे। मुझे याद नहीं कि उन मुलाकातों में राज कपूर की कोई बात हुई थी या नहीं, लेकिन हम सभी जानते थे कि पृथ्वीराज जी किसके पिता थे। लगभग सन् 1960 में, अपने पिता और परिवार के साथ बंबई की निजी यात्रा के दौरान, हमारे मेजबान हमें एक फिल्म की शूटिंग दिखाने ले गए—एक ऐसा प्रयास, एक महत्वाकांक्षा, एक ऐसी दिली ख्वाहिश, जो आज भी हर व्यक्ति शहर की यात्रा के दौरान चाहता है। स्टूडियो आर.के. स्टूडियो था और वहाँ 'छलिया' नाम की फिल्म की शूटिंग चल रही थी, जिसमें राज जी मुख्य भूमिका में थे। स्टूडियो के पहले तल पर उत्सुक लोगों और आगंतुकों की भीड़ के बीच से, मैंने एक ट्रेन का सेट देखा और राज जी को एक दृश्य में अभिनय करते हुए पहली बार देखा। कोई मुलाकात नहीं, बस दूर से एक झलक। उस दिन से लेकर फिल्म जगत में मेरे बाद के सफर तक, राज जी ने हमेशा मेरे साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार किया, मानो हम परिवार के सदस्य हों। शायद यह हमारे पिताओं के बीच के अच्छे संबंधों के कारण था। या शायद यह पूर्वाभास था: उनके पोते निखिल, जो उनकी सबसे बड़ी बेटी ऋतु का पुत्र है, ने मेरी बेटी श्वेता से विवाह किया।

समय तेज़ी से बीत गया, मैंने फ़िल्मों में करियर बनाने का फ़ैसला किया, और खुद को मुंबई में पाया, एक महान महानगर और सिनेमा उद्योग की हलचल में। जुहू के सन-एन-सैंड होटल में एक सामाजिक समारोह में, जहाँ मुझे किसी तरह निमंत्रण मिल गया था, मेरी उस महान व्यक्ति से पहली मुलाक़ात और हाथ मिलाने का अवसर मिला। वे गर्मजोशी और दोस्ताना थे और जब मैंने उन्हें अपने परिचय दिए—बाबूजी, पृथ्वीराज-जी और इलाहाबाद—तो उन्होंने मुस्कुराते हुए अभिवादन किया। बातचीत सुखद रही और कुछ ही सेकंड तक चली। पेशे में आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए इतना ही काफ़ी था कि वह उत्साह से चिल्ला उठे! लेकिन जैसे-जैसे समय और भाग्य मुझे मेरे पेशे में आगे बढ़ाते गए, काम के सिलसिले में आर.के. स्टूडियो जाना और राज-जी से मिलना बढ़ता गया। उन्होंने के.ए. अब्बास के ज़रिए मेरी पहली फ़िल्म 'सात हिंदुस्तानी' देखी, जिनका उनसे घनिष्ठ संबंध था, और उसकी तारीफ़ की। हम अक्सर उन्हें आर.के. स्टूडियो में प्रवेश करते और स्टूडियो के भीतर उनके निजी क्षेत्र, 'कुटिया' तक गाड़ी चलाते हुए देखते थे। कभी-कभी वे हमें और हमारे काम को सलाम करते थे। उन्होंने मुहूर्तों में अपनी उपस्थिति से हमें सम्मानित किया, जहाँ उन्होंने कृपापूर्वक पहली ताली बजाने की सहमति दी। उन्होंने हमें चेंबूर स्थित अपने घर में मेहमाननवाज़ी का सौभाग्य दिया, जहाँ हमें कृष्ण जी की असाधारण देखभाल और स्वादिष्ट भोजन का भरपूर आनंद मिला। परिवार में शादियाँ, होली का उत्सव, उनके साथ रूस की यात्रा पर जाना, उस देश में उनकी अविश्वसनीय लोकप्रियता और सम्मान को देखना, ये कुछ सौभाग्यशाली क्षण थे जो उनकी महिमा में सराबोर होकर बीते।

लेकिन कई यादगार पलों में से दो घटनाएं सबसे अलग हैं। एक बार मैं आर.के. स्टूडियो में शूटिंग कर रहा था, जब वहां एक खास मेहमान आए हुए थे। कुछ औपचारिकताओं के बाद, राज जी उस मेहमान को अपने 'कॉटेज' में ले गए और इतने सारे लोगों के होने के बावजूद, उन्होंने मेरी तरफ इशारा करके मुझे भी साथ आने को कहा। यह पहली बार था जब मैंने इस चर्चित निजी संपत्ति की जालीदार लकड़ी की चारदीवारी के पीछे का नजारा देखा। कॉटेज बिल्कुल खाली था। वहां सिर्फ फर्श पर एक बड़ा सा सफेद चादर से ढका गद्दा था। बस इतना ही। उन्होंने हम दोनों को अंदर बुलाया और उस मेहमान की तरफ मुड़कर कहा, 'मैं चाहता हूं कि आप अमिताभ बच्चन से मिलें। वह हमारे फिल्म उद्योग के सबसे बड़े सितारे हैं।' शर्मिंदा और विनम्र होकर, मैं इस अनुचित प्रशंसा पर शर्म से लाल हो गया। मैं बस इतना ही कह पाया, 'सिर्फ कद में राज जी,' और जाने की इजाजत मांग ली।
1982 में, जब फिल्म 'कुली' के सेट पर मेरा एक्सीडेंट हुआ और मैं ब्रीच कैंडी अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहा था, तब एक सुबह वो हाथ में शैम्पेन की बोतल लहराते हुए आईसीयू में आए, मेरे बगल में बैठ गए और बोले, 'जल्दी बाहर निकलो, हमें तुम्हारी जिंदगी की नाव पर ये बोतल तोड़नी है और एक नई शुरुआत करनी है।' फिल्म इंडस्ट्री के सबसे बड़े शोमैन, राज जी, जीवन के प्रति उमंग से भरे हुए थे। वो नेतृत्व करते थे और उनका उत्साह उनके साथ चलता था।

Raj Kapoor gives the mahurat clap for an Amitabh Bachchan film

एक खुले मैदान में आयोजित कार्यक्रम में भारतीय प्रतिनिधिमंडल को एक गीत गाने के लिए कहा गया। राज जी ने तुरंत पहल करते हुए 'सारे जहां से अच्छा, हिंदुस्तान हमारा' गाना शुरू किया, जिसके बाद हम भी उनके साथ शामिल हो गए। यह एक प्रतीकात्मक और महत्वपूर्ण क्षण भी था, क्योंकि वहां अन्य देशों के भी कई प्रतिनिधिमंडल मौजूद थे।

राज जी ने मेरी फिल्म नसीब के गाने 'जॉन जानी जनार्दन' में अतिथि भूमिका निभाई थी, जिसमें उन्होंने अपने अनोखे अंदाज में अकॉर्डियन बजाया था। उस महान् कलाकार के साथ काम करना और उनके साथ एक ही स्क्रीन पर खड़े होने का गौरव प्राप्त करना मेरे लिए गौरव का क्षण था।

राज कपूर एक असाधारण इंसान थे। उन्होंने भारतीय सिनेमा जगत में ऐसा योगदान दिया है जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। उनकी बेटी ऋतु द्वारा इस पुस्तक के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना किसी भी बेटी का सबसे सराहनीय कार्य है। ऐसा करने के लिए एक असाधारण बेटी की आवश्यकता होती है।

सलीम खान: अभिनेता, मित्र और लेखक

क्या कोई महान व्यक्ति जन्म से ही महान होता है या फिर उसकी प्रतिभा और मेहनत मिलकर उसे महान बनाती है? सभी समान पैदा होते हैं, लेकिन महानता हमेशा अर्जित की जाती है। यह जन्मजात गुण नहीं है। लोककथाओं के अनुसार, गर्भवती महिलाओं को महान पुरुषों की तस्वीरें अपने पास रखने की सलाह दी जाती है, जिससे उन्हें एक महान व्यक्ति को जन्म देने में मदद मिल सकती है। बुनियादी अच्छाई के लिए कोई पुरस्कार नहीं मिलता। माता-पिता को अच्छाई अर्जित करनी पड़ती है। सांस्कृतिक मूल्यों को परिवार द्वारा अर्जित किया जाना चाहिए और यही मानवता की भलाई का साधन है। सब कुछ जन्मजात या विरासत में नहीं मिलता। अब्राहम लिंकन का मानना था कि चालीस वर्ष से अधिक आयु का प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के लिए स्वयं जिम्मेदार होता है। आपके विचार और कार्य भी आपके शारीरिक स्वरूप को निर्धारित करते हैं।

पृथ्वीराज कपूर जुहू के जानकी कुटीर की एक संकरी गली में रहते थे। कैफी आज़मी उनके पड़ोसी थे। पृथ्वीराज हर सुबह धूल भरी गली में पानी छिड़कते थे ताकि पूरा इलाका धूल और गर्मी से बचा रहे। रंगमंच और सिनेमा के दिग्गज पृथ्वीराज कपूर एक बेहद नेक इंसान थे और दूसरों की परवाह करते थे। उनका जन्म और पालन-पोषण पेशावर में हुआ था। राज कपूर का जन्म 14 दिसंबर 1924 को यहीं हुआ था। एक साल पहले, दिलीप कुमार का जन्म भी इसी मोहल्ले में हुआ था। पृथ्वीराज और दिलीप के पिता सरवर खान पड़ोसी और मित्र थे। उस समय किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि राज कपूर और दिलीप कुमार दुनिया भर के दर्शकों का मनोरंजन करेंगे और अपनी जन्मभूमि - किस्सागो गली - यानी मनोरंजनकर्ताओं और कहानीकारों की गली को सार्थक साबित करेंगे।

जीवन कल्पना से भी विचित्र है। मैं आँखों में सपने लिए इंदौर से मुंबई आया था। रिश्ते अजीब होते हैं और उनमें से कुछ तो नियति द्वारा रचे हुए लगते हैं। मुझे कपूर परिवार के सभी सदस्यों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, चाहे अभिनेता के रूप में हो या लेखक के रूप में। मैंने शेर शाह सूरी में पृथ्वीराज कपूर के साथ अभिनय किया और रणधीर कपूर ने मेरे द्वारा लिखित चाचा भतीजा में अभिनय किया। महेश कौल की दीवाना में राज कपूर और सायरा बानू ने मुख्य भूमिकाएँ निभाईं और मैंने इस फिल्म में एक सहायक भूमिका निभाई। राज कपूर इतने मिलनसार और विनम्र व्यक्ति थे कि वे अपने सभी सह-कलाकारों, तकनीशियनों से बातचीत करते थे और अक्सर कनिष्ठ कलाकारों के साथ भी घुलमिल जाते थे। पठानों में बड़ों के पैर छूने की परंपरा है, जो सम्मान का प्रतीक है। इसी परंपरा का पालन करते हुए, मैं पृथ्वीराज कपूर के पैर छूता था और उनकी मृत्यु के बाद, कपूर कुल के मुखिया के रूप में, मैं उनके भी पैर छूता था। एक बार दिलीप और राज कपूर साथ खड़े थे और मैं परिसर में दाखिल हुआ, हमेशा की तरह मैंने राज साहब के पैर छुए और फिर दिलीप कुमार से हाथ मिलाया। राज साहब ने बाद में मुझसे कहा कि उन्हें थोड़ी चिंता थी कि क्या मैं दिलीप कुमार की उपस्थिति में परंपरा का पालन करूंगा और उन्होंने मेरी निरंतरता की सराहना की।

राज कपूर जनता को बखूबी समझते थे और उनसे जुड़ाव स्थापित करने में माहिर थे। हमारी फिल्म 'दीवार' देखने के बाद उन्होंने हमारी खूब तारीफ की, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि हमें अपने नायक को उसी बेबाक अंदाज, पहनावे और

तौर-तरीकों में रखना चाहिए था। कहानी के उत्तरार्ध में दिखाए गए परिष्कृत अमीर व्यक्ति के बजाय जनता को यह अंदाज ज़्यादा पसंद आता। मैं उनकी बात से सहमत था।

उन्हें लोगों, स्थानों और रीति-रिवाजों की अद्भुत समझ थी। उनकी पैनी नज़र हर दिखावे को भेद सकती थी। उनकी खोजी जैसी आँखें मनुष्य के अवचेतन मन से अंधकार को दूर कर सकती थीं। यह विचित्र है, लेकिन सच है कि उन्हीं खोजी जैसी आँखों में समस्त मानव जाति के लिए दया और प्रेम था। इन्हीं आँखों ने उनके फिल्मी कैमरे के लेंस में समाकर मानवीय भावनाओं को कैद किया। 'दोस्त दोस्त ना रहा' गीत में उनकी आँखों के मिड क्लोज-अप को देखिए, इससे समझ में आता है कि वे अपने भावों के माध्यम से कितना कुछ व्यक्त कर सकते थे। राज कपूर ने अपनी आँखों और अपनी फिल्मों में निर्देशित पात्रों की आँखों के माध्यम से गहन प्रेम और करुणा का भाव व्यक्त किया। उन्होंने प्रेम, बेबसी और तड़प को आँखों के माध्यम से कैद किया। राज कपूर की आँखें कैमरे के लेंस में जिस तरह समा जाती थीं, उसे विज्ञान की समझ से परे है। पर्दे पर सबसे अंतरंग और गहन प्रेम दृश्यों को राज कपूर और नरगिस ने निभाया है। उनकी ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री जादुई थी। उन्होंने आवारा और श्री 420 जैसी यादगार फिल्मों में शारीरिक और आध्यात्मिक प्रेम को अपार तीव्रता के साथ फिर से परिभाषित किया। नरगिस के कांपते होंठ, सड़क किनारे एक विक्रेता की भाप निकलती चाय की केतली और बारिश की फुहारें मिलकर पर्दे पर अंतरंगता का माहौल बनाती हैं। भारतीय पर्दे ने पहली बार ऐसी कामुकता देखी जो उदात्तता की ऊंचाइयों तक पहुंचती है।

रणधीर कपूर की पहली फिल्म 'कल आज और कल' में एक मृत्यु दृश्य है, जिसमें पृथ्वीराज कहते हैं कि मरना कपड़े बदलने जैसा है और वे 'नए कपड़ों में वापस आएंगे'। मेरी दिली प्रार्थना है कि राज कपूर फिर से लौट आएं, क्योंकि वो अमर हैं। उन्हें लौटना ही चाहिए, जैसे फिल्म 'संगम' में वो कहते हैं 'मैं लौट आऊंगा' और वो लौट आते हैं! दुनिया इसका इंतज़ार करती रहेगी!

एम.एफ. हुसैन: कलाकार

राज कपूर हमेशा प्रशंसकों की भीड़ से घिरे रहते थे; फिर भी, उन्होंने कभी अपने लक्ष्य या दूरदर्शिता को नहीं भुलाया। कई साल पहले, जब वे 'जागते रहो' के प्रीमियर के लिए सिनेमा हॉल में प्रवेश कर रहे थे, तो हजारों लोग उनके ऑटोग्राफ के लिए उनके चारों ओर जमा हो गए। मैं भी उस भीड़ में था। मैंने दूर से ही आवाज़ लगाई, 'राज साहब, क्या मुझे भी आपका ऑटोग्राफ मिल सकता है?' उन्होंने तुरंत जवाब दिया, 'हुसैन, क्या तुम्हें इसकी ज़रूरत है? तुम्हारा दिन भी आएगा।' (श्रद्धांजलि के रूप में, एम.एफ. हुसैन ने फिल्म 'हेन्ना' पर बारह ग्राफ़िक्स बनाए, जो राज कपूर की आखिरी फिल्म थी जिसे उन्होंने शुरू किया था और जिसे उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटों ने पूरा किया।)

जे.पी. चौकसे: मित्र, वितरक, लेखक और पत्रकार

भारतीय राजनीति के स्वर्ण युग में हमारे पास अनेक महान नेता थे, लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरू जनता के सबसे प्रिय थे। इसी प्रकार, भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग में हमारे पास कई प्रतिभाशाली फिल्म निर्माता थे, लेकिन राज कपूर जनता के सबसे प्रिय थे और आज भी हैं। इन दोनों महान व्यक्तित्वों के जीवन में प्रेम और सफलता के इस अद्भुत संगम का वर्णन करना कठिन है। यह विचित्र है कि नेहरू और राज कपूर दोनों दिखने में यूरोपीय लगते थे, फिर भी उन्होंने भारतीय जनता के साथ एक अनूठा संबंध स्थापित किया। शायद यह उनकी प्रेम करने और प्रेम पाने की असाधारण क्षमता का ही कमाल था।

जे.पी. चौकसे के साथ

राज कपूर एक भावुक प्रेमी की तरह फिल्में बनाते थे। उनकी फिल्में उनके दर्शकों के लिए प्रेम पत्र थीं, और दर्शकों ने भी उन्हें प्रेम से स्वीकार किया। उन्होंने कभी फिल्मों पर सवाल नहीं उठाए और न ही उन पर तर्क लागू करने की कोशिश की। उन्होंने उनकी फिल्मों को आलोचनात्मक विश्लेषण से बचाया। उनकी फिल्में दर्शकों के दिलों में बसती थीं। भारतीय सिनेमा में राज कपूर का सबसे बड़ा योगदान वास्तविकता और कल्पना के संयोजन की उनकी शैली है। उनकी फिल्में वास्तविकता पर आधारित होती हैं, लेकिन उनका पूरा प्रस्तुतीकरण एक ओपेरा की तरह होता है, और दर्शक एक सम्मोहन में खो जाते हैं। उन्होंने मानवीय कमजोरियों पर महाकाव्य बनाए। उन्होंने कभी महान योद्धाओं, राजाओं या संतों के जीवन को फिल्माया नहीं। उन्होंने हमेशा आम आदमी को, उनके प्रेम की कमजोरियों और शक्तियों के साथ चित्रित किया। यही कारण है कि राज कपूर

अमर हैं, और यही कारण है कि वे वर्तमान पीढ़ी के सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्माताओं को प्रेरित करते रहते हैं।

दस दिन के आउटडोर कार्यक्रम के दौरान, शैलेंद्र के घनिष्ठ मित्र विट्ठल भाई पटेल, जो सागर के रहने वाले थे (स्थान से कुछ मील दूर), ने मुझे आमंत्रित किया और मैं वहाँ दस दिन रहा। मैंने राज कपूर को करीब से देखा। उन्हें यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरे पास साहित्य में एमए की डिग्री है। हम अक्सर सआदत हसन मंटो, अमृता प्रीतम और साहिर के बारे में बात करते थे, जिन्होंने 'फिर सुबह होगी' और 'दिल ही तो है' के लिए गीत लिखे थे। राज कपूर ने पूछा कि क्या आस-पास कोई शिव मंदिर है। उन्होंने शिवरात्रि की रात एक दूरदराज के मंदिर का दर्शन किया। हमारी बातचीत में उन्होंने कहा कि उनके लिए सच्चा हिंदू वह है जो मनुष्यों को अधिकतम सुख दे और प्राप्त कर सके। ईश्वर एक मसखरे की तरह है जो सबको सुख देता है और अपने आँसू छुपाता है। 'द इलस्ट्रेटेड वीकली' ने भी अपने एक अंक में राज कपूर के इस विचार को प्रकाशित किया था। राज कपूर एक विभाजित व्यक्ति नहीं थे; उनमें जो भी काम करते थे, उसमें पूरी तरह से डूब जाने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने अतीत की छाया या भविष्य के भय को अपने वर्तमान को पूरी तरह से जीने के उत्साह को कम नहीं करने दिया। उसने आज का दिन ऐसे भुनाया मानो कल होगा ही नहीं।

बासु भट्टाचार्य फिल्मों में यथार्थवाद को लेकर एक गहरी सोच रखते थे। राज कपूर को रात 8 बजे दाढ़ी बनाने के लिए कहा गया ताकि अगले दिन रात 8 बजे तक उनकी 24 घंटे वाली दाढ़ी तैयार हो सके। राज कपूर ने बिना किसी शिकायत या नखरे के यह काम कर दिया, जबकि उन्होंने यथार्थवादी फिल्म 'जागते रहो' का निर्माण और उसमें अभिनय भी किया था। दरअसल, किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि फिल्म का समय भी यथार्थवादी था। फिल्म के पहले दृश्य में घड़ी की मीनार पर रात के 1:20 बज रहे हैं और आखिरी दृश्य में, जो भोर का समय है, लगभग 4 बजे का समय है। आखिरी दृश्य में, नायक अपनी प्यास बुझाने के लिए एक बहुमंजिला इमारत के परिसर में प्रवेश करता है और उसे पानी मिल जाता है। फिल्म में दिखाई गई 'प्यास' सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्यास है और शीर्षक सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए जागृत रहने का संकेत देता है।

कुछ हद तक, राज कपूर का सिनेमा पर्दे पर कबीर जैसा था। इस विचार को और आगे बढ़ाना उचित नहीं होगा, लेकिन कबीर की तरह, राज कपूर औपचारिक रूप से उच्च शिक्षित नहीं थे, बल्कि जीवन के पाठ से शिक्षित थे। राज कपूर के साथ कठिन आउटडोर शूटिंग के दौरान बिताए उन दिनों से पता चला कि राज कपूर असल ज़िंदगी में भी एक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। मैं इस सच्चाई से भलीभांति परिचित हूँ कि राज कपूर नामक उस रहस्यमय व्यक्तित्व की गहराई को समझने के लिए कई जन्म लग जाते हैं।

कपूर परिवार को अपने मनोरंजन की पारिवारिक परंपरा पर गर्व है और परिवार का हर सदस्य लगभग एक सदी पुरानी इस परंपरा से प्रेरणा लेकर अपनी प्रतिभा से इसे और समृद्ध करता है। इस प्रकार, परंपरा और प्रतिभा ही उनकी ऊर्जा का मूल स्रोत हैं।

नितिन मुकेश: गायक, पारिवारिक मित्र और मुकेश के पुत्र

मैंने जीवन में जो कुछ भी हासिल किया है, उसकी शुरुआत राज कपूर से हुई। राज अंकल को यह भी नहीं पता था कि मैं एक गायक हूं। उन्हें बस इतना पता था

कि मैं मुकेश का बेटा हूँ और मुझे गाने का शौक है—उन्होंने मुझे गाते हुए कभी सुना भी नहीं था—लेकिन उन्होंने ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, वे मेरी आवाज़ में एक गाना रिकॉर्ड करवाएंगे, फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' के लिए, जिसकी शूटिंग मेरे पिता के निधन के समय चल रही थी। उन्हें मेरे साथ बहुत मेहनत करनी पड़ी, जो उन्होंने अद्भुत धैर्य और प्रेम से की। और इस तरह मुझे अपनी एक अलग पहचान मिली। मैं सिर्फ मुकेश का बेटा नहीं, बल्कि नितिन मुकेश बन गया, जिसने राज कपूर के लिए, आर.के. फिल्म्स के लिए गाया था। इससे मुझे बहुत मदद मिली; अब मैं अपनी फीस बढ़ा सकता था। पापा के निधन के तीन महीने बाद, एक संस्था ने पापा की याद में मेरा एक शो करने पर सहमति जताई, लेकिन वे मुझे अच्छी रकम तभी देंगे जब राज कपूर मुख्य अतिथि के रूप में आएंगे। राज अंकल शूटिंग में व्यस्त थे, लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि वे मुझे क्या पेशकश कर रहे हैं, जो कम से कम एक साल तक मेरे घर का खर्च चलाने के लिए काफी है, तो राज अंकल ने अपनी शूटिंग रद्द कर दी और आ गए। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि पूरा उद्योग—अभिनेता, सितारे और संगीत निर्देशक—शो देखने आए और यह बहुत सफल रहा। उस घटना ने मुझे बहुत आत्मविश्वास दिया। इस तरह राज कपूर ने मुकेश परिवार के भाग्य को सीधे तौर पर प्रभावित किया।

मुझे याद है, एक रात राज अंकल हमारे छोटे से एक कमरे वाले फ्लैट में आए। उन्होंने कहा, 'उठो... उठो... उठो,' और हम सबने जल्दी से अपने बिस्तर समेट लिए। फिर उन्होंने मेरी माँ से कहा, 'भाभीजी, मेरे लिए अंडा बना दो!' उन्हें पता था कि मेरी माँ पक्की शाकाहारी हैं। वे हमारे साथ बैठते, हमें लाड़-प्यार करते और बच्चों को तोहफे देते। मुझे याद है एक बार मेरे पिताजी ने हमसे कहा था, 'राज का हाथ हमेशा हमारे सिर पर रहेगा।' मेरे पिताजी उन्हें 'राज' कहकर बुलाते थे, लेकिन बाकी सब उन्हें 'राज साहब' या 'राज-जी' कहते थे। कृष्णा आंटी ने खुद मुझे बताया था कि 'सिर्फ मुकेश जी ही मुझे "कृष्णा बहनजी" कहते थे, बाकी सब मुझे "कृष्णा भाभीजी" कहते थे, क्योंकि वे मेरे भाई हैं और हमारे बहुत करीब हैं।'

मेरे पिता की पहली मुलाकात राज अंकल से फेमस स्टूडियो में हुई थी। वे पियानो बजा रहे थे। राज अंकल उनके पास से गुजर रहे थे। उन्होंने पियानो बजाना बंद कर दिया और खड़े हो गए। राज अंकल पीछे हटकर उनसे बोले, 'क्या आप मुकेश चंद हैं?' मेरे पिता चौंक गए और बोले, 'जी हां, मैं ही हूं!' तब राज अंकल ने कहा, 'कल स्टूडियो में मुझसे मिलिएगा।' पहली ही नजर में प्यार हो गया और वे दोस्त बन गए। मेरे पिता हमेशा राज अंकल को एक महान् और नेक इंसान और एक महान कलाकार मानते थे। उन्होंने आर.के. फिल्म्स के लिए कई गाने गाए और राज कपूर की आवाज बन गए। राज अंकल हमेशा मेरे पिता का साथ देते थे। अगर किसी फिल्म का गाना, जिसमें वे अभिनय कर रहे होते थे, मुकेश की आवाज के अनुकूल नहीं होता था, तो वे अपने निर्माता से उस गाने को बदलने का अनुरोध करते थे। उनका मानना था कि जब मुकेश उनके लिए गाते हैं, तो गाना हिट हो जाता है। मेरे पिता ने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन राज अंकल हमेशा उनके साथ खड़े रहे। वे हमेशा कहते थे, 'मुकेश के बिना राज कपूर नहीं।'

एक समय मेरे पिता ने फिल्म वितरक बनने का प्रयास किया। संयोगवश, उन्होंने अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर राजस्थान में 'मेरा नाम जोकर' फिल्म वितरित की,

जो बुरी तरह फ्लॉप हुई। परिणामस्वरूप, उन्हें अपना सारा पैसा गंवाना पड़ा! कुछ समय बाद, राज चाचा ने अपनी फिल्म 'बॉबी' रिलीज़ की, जो बेहद सफल रही। राज चाचा ने मेरे पिता के सारे नुकसान की भरपाई की और उन्हें मुआवजा भी दिया, जबकि उन्होंने वह फिल्म वितरित नहीं की थी। उनकी दोस्ती अनोखी थी।

सबसे मार्मिक क्षण तब था जब मेरे पिता का निधन हुआ। राज अंकल पुणे के लोनी में अपनी फिल्म सत्यम शिवम सुंदरम की शूटिंग कर रहे थे। सबसे महंगा सेट तैयार किया गया था और शशि कपूर और ज़ीनत अमान जैसे सितारे मौजूद थे। राज अंकल ने शूटिंग रद्द कर दी। उन्होंने कहा, 'मेरी आत्मा चली गई, अब मैं काम नहीं कर पाऊंगा। मैंने अपना सबसे अच्छा दोस्त खो दिया है।' उसके बाद से, जब तक हम सभी, विशेष रूप से मैं, इस नई वास्तविकता को स्वीकार नहीं कर पाए, तब तक वे और कृष्णा आंटी हमेशा हमारे साथ रहे।

यश चोपड़ा: निर्माता, निर्देशक और मित्र

मैं कॉलेज के दिनों से ही राज कपूर का बहुत बड़ा प्रशंसक रहा हूँ, जब मैंने उनकी पहली फिल्म 'आग' देखी थी। उस फिल्म ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला था। मुझे फिल्म का एक खास डायलॉग याद है: 'सौ साल पहले, जब मैं दस साल का था...' वो लाइन आज भी मेरे मन में बसी हुई है। जब भी मैं फिल्म बनाने के बारे में सोचता हूँ, मुझे लगता है कि मुझे 'आग' बनानी चाहिए, और राज कपूर ने वो फिल्म बनाते समय कितनी कम उम्र की थी!

मुझे याद है जब आवारा रिलीज़ हुई थी। उन दिनों देश भर में फिल्में एक ही दिन रिलीज़ नहीं होती थीं। मैं जालंधर में रहता था और फिल्म दिल्ली में रिलीज़ हो रही थी। हम पहले दिन का पहला शो देखने के लिए रात की ट्रेन से दिल्ली गए थे।

यश चोपड़ा के साथ

राज कपूर एक भावुक फिल्म निर्माता थे। उनकी हर फिल्म फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एक मील का पत्थर थी, वे हर मायने में एक शोमैन थे। आज के फिल्म निर्माताओं के विपरीत, उनके काम की जड़ें हमारी परंपरा में गहरी थीं, वे हमेशा भारतीय सोच रखते थे, फिर भी उन्होंने विषयवस्तु और तकनीकी दृष्टि से अपने

समय से बहुत आगे की फिल्में बनाईं। लोग मुझे रोमांटिक निर्देशक, मानवीय भावनाओं का निर्देशक कहते हैं, लेकिन कोई भी फिल्म निर्देशक अपनी फिल्मों में उस जुनून को चित्रित नहीं कर पाया है जैसा राज कपूर ने किया। मेरी सारी प्रेरणा राज जी से आती है। मुझे याद है मैंने बहुत जुनून के साथ 'सिलसिला' नाम की एक फिल्म बनाई थी। मुझे लगा कि यह एक बेहतरीन फिल्म है, लेकिन इसने मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। मैं निराश था, और कहीं जाने या किसी से मिलने का मन नहीं करता था। एक शादी का कार्यक्रम था जिसमें मुझे जाना ही था, और वहीं मेरी मुलाकात राज कपूर से हुई। वे मेरे पास आए और बोले, 'आपने एक शानदार फिल्म बनाई है, लेकिन आपने कुछ गलतियाँ की हैं।' हर फिल्म निर्माता से गलती होती है, वरना हम भगवान होते... आपकी गलती यह थी कि आपने अपनी नायिका को शादी से पहले गर्भवती कर दिया, जबकि जनता के बीच उसकी छवि अलग थी... यह बात जनता को स्वीकार्य नहीं हुई।' फिर उन्होंने मेरी तारीफ की, जो आज तक मुझे मिली सबसे बड़ी तारीफ है। उन्होंने कहा, 'मैं भी एम्स्टर्डम गया हूं और उन्हीं बगीचों और खेतों में ट्यूलिप की तस्वीरें खींची हैं जहाँ आपने खींची हैं, लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि आपके शॉट्स और आपकी कल्पना में आपने उन ट्यूलिप में कविता भर दी है। अपनी शैली, अपनी संवेदनशीलता कभी मत बदलना। मेरी पत्नी कृष्णा आपकी बहुत बड़ी प्रशंसक हैं। मेरी फिल्में देखने के बाद, वह कहती हैं कि उन्हें सिर्फ आपकी फिल्में ही पसंद आती हैं।' मैं भावुक हो गया और मेरी आँखों में आँसू भर आए। मुझे पार्टी छोड़कर जाना पड़ा। मुझे एहसास हुआ कि हमारा काम फिल्में बनाना है। हम फिल्म के भाग्य को नियंत्रित नहीं कर सकते। दर्शक कभी गलत नहीं होते, हम गलत होते हैं। अगले दिन से मैं एक नया इंसान बन गया और मैंने अपने अगले प्रोजेक्ट की योजना बनाना शुरू कर दिया।

हम सन् 1976 में सोवियत संघ के ताशकंद फिल्म महोत्सव में गए थे। यह हमारे लिए एक यादगार यात्रा थी। मैंने कई महोत्सवों में भाग लिया है, लेकिन मैंने कभी किसी भारतीय को दूसरे देश में इस तरह सम्मानित होते नहीं देखा। वहाँ अड़तालीस प्रतिनिधि थे। बाकी सभी के लिए विशेष बस थी, केवल राज कपूर को निजी कार और एक दुभाषिया दिया गया था। हम सभी को पंजीकरण कराना पड़ा और दोपहर के भोजन और रात के खाने के लिए कूपन लेने पड़े, लेकिन राज कपूर के लिए कोई कूपन प्रणाली नहीं थी। हमने ताशकंद से समरकंद के लिए रात भर की ट्रेन यात्रा की। राज कपूर अकेले ऐसे व्यक्ति थे जिनके लिए एक अलग डिब्बा था। जब हम सुबह समरकंद पहुँचे, तो नजारा अद्भुत था! पूरा शहर उनका स्वागत करने आया था! रात के समारोह में, केवल उनकी फिल्मों के गाने गाए गए। बाद में, हमें मास्को के लिए उड़ान भरनी थी, और राज कपूर ने हमसे रुकने के लिए कहा, जबकि वह एक होटल में जाकर दोपहर के भोजन के लिए बिरयानी और कबाब पैक करवा रहे थे। हम हवाई अड्डे पर देर से पहुंचे, लेकिन जाहिर है कि उड़ान राज कपूर का इंतजार कर रही थी!

एक अच्छी फिल्म के लिए भाषा की आवश्यकता नहीं होती। भले ही आप भाषा न जानते हों और फिल्म को समझ पाएं, किरदारों के साथ रोएं और हंसें, तो वह एक अच्छी फिल्म है। एक महान फिल्म निर्माता को बिना शब्दों के संवाद करने में सक्षम होना चाहिए। राज कपूर ने यही कर दिखाया।

राजेंद्र कुमार की पत्नी शुक्ला कुमार—अभिनेता, सहकर्मी और मित्र

राज जी को श्रद्धांजलि देना मेरे लिए एक बहुत ही खास विषय है। दो ऐसे व्यक्तियों के बीच एक अनमोल रिश्ता, एक दुर्लभ प्रकार की दोस्ती, जो अपने पेशे में समकालीन थे, फिर भी उनके बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी, सिवाय इसके कि कौन दूसरे से अधिक प्रेम करता था। मुझे यह अवश्य बताना चाहिए कि राजेंद्र जी का राज कपूर और उनकी विरासत से पहला परिचय उनके बचपन में ही हो गया था, जब वे पाकिस्तान के सियालकोट में एक कपड़ा व्यापारी के पोते के रूप में पले-बढ़े थे। राजेंद्र जी ने बहुत कम उम्र में ही सिनेमा में रुचि दिखाई, और उन दिनों इसे एक सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता था। लेकिन उन्हें अपने दादाजी की सलाह याद है, जिन्होंने गंभीरता से कहा था, 'यदि तुम फिल्मों में आना चाहते हो, तो पृथ्वीराज कपूर की तरह बनो।'

जब राज जी संगम फिल्म बनाने की योजना बना रहे थे, तब वे दूसरे मुख्य किरदार के लिए किसी अभिनेता की तलाश कर रहे थे। पहले तो उन्होंने दिलीप कुमार के बारे में सोचा, लेकिन उन्हें यह भूमिका निभाने के लिए राजी नहीं कर पाए। राज जी ने राजेंद्र जी से संपर्क किया, जो 1960 के दशक के एक जाने-माने अभिनेता थे। यहीं से सिनेमा के प्रति प्रेम रखने वाले इन दोनों व्यक्तियों के बीच एक गहरा रिश्ता शुरू हुआ, और इसी प्रेम ने उनके बीच एक ऐसा स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित किया जो उनके परिवारों तक भी फैला। राज जी राजेंद्र जी को प्यार से 'पजिंदेरे' कहते थे, जिसका अर्थ है भाई। मुझे लगता है कि वे राजेंद्र जी को उतना ही प्यार करते थे जितना अपने सगे भाइयों को, यहाँ तक कि पापा जी (पृथ्वीराज कपूर को प्यार से इसी नाम से पुकारा जाता था) और कृष्णा जी (राज कपूर की पत्नी) भी राजेंद्र जी से कहते थे कि अगर वे परिवार या काम से जुड़े किसी मुद्दे पर राज जी से सीधे बात नहीं कर पाते थे, तो वे राज जी को संदेश पहुंचा दें। राज जी उनकी बात सुनते थे, भले ही वे उनसे सहमत न हों। उनका एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान अपार था।

यह फिल्म राजेंद्र जी के लिए आत्म-खोज और आत्म-विकास की यात्रा थी, जो उन्हें अपने दोस्त के माध्यम से मिली। उन्होंने साथ में यात्रा की, झगड़े किए, प्यार किया और हँसे। उनकी पत्नियाँ और बच्चे अच्छे दोस्त बन गए। दरअसल, राज जी के बड़े बच्चे राजेंद्र जी और मेरे दोस्त थे। यह रिश्ता वर्षों से सुख-दुख में कायम रहा है और अब पोते-पोतियों तक पहुँच गया है। कृष्णा जी और मैं आज भी सबसे करीबी दोस्त, बहनें और एक-दूसरे के लिए परिवार से भी बढ़कर हैं। मैं राज जी की बहुत बड़ी प्रशंसक थी और आज भी हूँ, अपने पति से भी ज़्यादा, और मैं यह बात अपने पति से कहने में ज़रा भी संकोच नहीं करती।

पेशेवर पलों के अलावा, हमने परिवार के रूप में भी कई अनमोल पल साथ बिताए हैं, विदेश में छुट्टियां मनाई हैं, लोनी स्थित राज जी के फार्म पर समय बिताया है और भी कई अनमोल पल साथ में गुज़ारे हैं। राज जी अपने समय से कहीं आगे एक रचनात्मक प्रतिभा के धनी थे, जिनमें रोमांस की गहरी समझ थी। मैं अक्सर अपने पति से कहती थी कि राज जी के रोमांटिक भाव ने हमारे दिलों को किसी और से ज़्यादा गहराई से छुआ, यहाँ तक कि मेरे पति की कुछ रोमांटिक भूमिकाओं से भी ज्यादा। इस महान व्यक्ति ने हम पर एक ऐसी गहरी और अनमोल छाप छोड़ी है कि मैं बस इतना ही कह सकती हूँ कि उन्होंने अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के जीवन को समृद्ध किया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

बीना लालवानी: पारिवारिक मित्र

फरवरी 1964 की बात है। मेरे जीवन का एक सुनहरा दिन, जो पहले से ही तय था। मैं बाईस साल की थी। मैं अपने बड़े परिवार के साथ लंदन में रहती थी। उनका इलेक्ट्रॉनिक्स का व्यवसाय था, जिसका नाम मेरे नाम पर रखा गया था, बिनाटोन। मेरी बहन पुष्पा और मेरी मुलाकात एक महत्वपूर्ण समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमान और श्रीमती राज कपूर से हुई। जैसे ही हमने आदरपूर्वक नमस्कार किया, हमें एक जाना-पहचाना सा एहसास हुआ। श्रीमती कृष्णा राज कपूर अब तक की सबसे सुंदर और शालीन महिला थीं! उनकी प्यारी मुस्कान आज भी मेरे दिल में उतनी ही जीवंत है जितनी उस पल थी, और राज कपूर, अपने पर्दे के व्यक्तित्व से कहीं अधिक प्रभावशाली लग रहे थे। यह जानकर कि वे अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'संगम' पर काम करने के लिए लंबे समय तक लंदन में ही रहेंगे, पुष्पा और मैंने उन्हें अपने घर पर रात के खाने पर आमंत्रित किया, हालांकि यह थोड़ा अजीब और असंभव सा लग रहा था। यह वाकई ईश्वर की कृपा का क्षण था, क्योंकि उन्होंने हमारा निमंत्रण स्वीकार कर लिया और उसके बाद जो हुआ वह इतिहास है। कपूर और लालवानी परिवारों के बीच वर्षों से एक ऐसा रिश्ता कायम है, जो अब तीसरी पीढ़ी तक पहुंच चुका है, और जिसका ज़िक्र इतिहास की किताबों में मिलता है। आज भी ये दोनों परिवार एक-दूसरे से जुड़े हुए लगते हैं, मानो कोई पवित्र धागा उनके बीच पिरोया हो। अनमोल यादें, उत्सव, दुख और सुख के क्षणों ने मुझे समृद्ध किया है और मेरे चरित्र को कई तरह से प्रभावित किया है। राज जी हमारे परिवार के लिए सच्चे बड़े भाई बन गए और भाभी जी ऊर्जा का एक स्तंभ थीं, जिन्होंने सबके दिलों को रोशन कर दिया। आज भी वे वैसी ही हैं। राज जी से जुड़े कई दिलचस्प किस्सों में से एक किस्सा, जो मुझे सबसे ज़्यादा हंसाता है और जिसके बारे में कम ही लोग जानते हैं, उसे साझा करना ज़रूरी है। यह 1970 के दशक के मध्य की बात है, जब उनकी सबसे महत्वाकांक्षी और भावुक फिल्म 'मेरा नाम जोकर' फ्लॉप हो गई थी और वे कुछ समय के लिए निराश हो गए थे। उनके दर्द को और बढ़ाते हुए, उनके परिवार पर एक और त्रासदी आ पड़ी। उनके आदरणीय पिता, पापा जी को कैंसर का पता चला। तब तक मेरी शादी न्यूयॉर्क में एंडी रमानी से हो चुकी थी और मेरी दो बेटियां थीं, मालिनी और गीतू, जिनकी उम्र दो और तीन साल थी। एयर इंडिया में एंडी की मामूली तनख्वाह से हम शहर के दूरदराज इलाके में एक छोटे से फ्लैट में रहते थे। राज जी ने अपने पिता की देखभाल का जिम्मा उठाया था और उन्हें न्यूयॉर्क के मेमोरियल स्लोन केटरिंग नामक बेहतरीन कैंसर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। यह नई जिम्मेदारी ऐसे समय में आई थी जब उनकी आर्थिक स्थिति और मनोबल दोनों ही बेहद खराब थे। लेकिन राज जी एक व्यावहारिक व्यक्ति थे जो सादगी भरा जीवन जीना पसंद करते थे। उनका बिस्तर ज़मीन पर बिछा गद्दा था, बिना किसी तामझाम के। इसलिए, अपने पिता के पांच-छह सप्ताह के अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान न्यूयॉर्क के किसी आलीशान होटल में ठहरने के बजाय, उन्होंने हमारे अपार्टमेंट में रहना चुना, जहाँ हमने अपने छोटे से भोजन कक्ष में उनके लिए एक आरामदायक कमरा बना दिया। उन्हें बहुत आराम महसूस हुआ, वे सामूहिक खाना पकाने, खेल खेलने में हिस्सा लेते थे और कभी-कभी स्थानीय किराने की दुकान से जो भी उन्हें पसंद आता था, उसे स्वादिष्ट कबाब, तले हुए अंडे, मशरूम आदि बनाकर खा लेते थे।

उन्हें मेरे बच्चे बहुत प्यारे थे और जब वे उनके साथ गद्दे पर चढ़ते-कूदते थे तो उन्हें बहुत खुशी होती थी। वे उनके साथ कविताएँ सुनाते थे। कभी-कभी अस्पताल पहुँचने के लिए वे दो बसें भी बदल लेते थे। इस पूरे समय वे अपनी अगली फिल्म के बारे में सोच रहे थे और गुनगुनाते रहते थे। मैंने उन्हें 'झूठ बोले कौवा काटे' की धुन बनाते हुए सुना! यह सब उनकी सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्म 'बॉबी' का हिस्सा बनने वाला था! शाम को वे मेरे पति एंडी के साथ व्हिस्की का आनंद लेते थे। ब्लैक लेबल अब रेड लेबल हो गई थी। उन्होंने अपने आरामदायक जीवन से इस कथित बदलाव को बड़ी आसानी से अपना लिया। उन कठिन समयों में हमने उन्हें कभी एक मासूम बच्चे के रूप में देखा, कभी एक बोझ से दबे हुए इंसान के रूप में, कभी एक खुशमिजाज व्यक्ति के रूप में जब हम उनके पसंदीदा रूसी रेस्तरां, ओडेसा में जाते थे, फिर अपने पिता के प्रति एक बहादुर, देखभाल करने वाले बेटे के रूप में, और कभी-कभी अपनी उपस्थिति से हम पर बोझ डालने की चिंता करते हुए। हमें उनके साथ बिताया हर पल प्यारा था। यह सब एक अनमोल अनुभव था। दशकों पहले की महान यादें मेरे मन में लगातार उभरती रहती हैं और एक व्यक्ति के रूप में मुझे समृद्ध करती हैं।

कुप्पी खन्ना: पारिवारिक मित्र

चाचा जी बच्चों से लेकर भिखारियों और घरेलू नौकरों तक, सभी को ध्यान से देखते थे। वे आम आदमी के जीवन से प्रेरणा लेते थे। यही बात उनकी रचनात्मक प्रक्रिया को आगे बढ़ाती थी और उन्हें एक अद्भुत कलाकार बनाती थी। जब हम बच्चे थे, तो वे हमें नाचते और गुड़िया-गुड़िया खेलते देखते थे। जो भी बात उनके दिल को छूती, वे उसे अपनी रचनात्मक प्रक्रिया में शामिल कर लेते थे। फिल्म 'बॉबी' का मशहूर गाना 'झूठ बोले कौवा काटे' उनकी बेटी रितु और मुझसे प्रेरित था। हम इस गाने पर गाते और नाचते थे! वे अपनी फिल्मों और संगीत पर हमेशा सबकी राय लेते थे। उनकी संगीत की समझ बहुत अच्छी थी; जब भी वे कोई नया गाना रिकॉर्ड करते, तो उसे खुद दर्शकों के सामने गाते, ताल मिलाने के लिए हाथों का इस्तेमाल करते और सबकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश करते थे। और जब भी वह किसी की प्रतिक्रिया देखकर चौंक जाते, तो कहते, 'देखो, मेरे बाल खड़े हो गए हैं और मेरी आंख में आंसू हैं!' उनकी अंतर्दृष्टि गहरी थी। वह लोगों को भली-भांति समझ लेते थे। उन्हें दक्षिण भारतीय स्थानीय रेस्तरां में समय बिताना बहुत पसंद था, ताकि वह आम लोगों के बीच रह सकें। चेंबूर स्थित गीता भवन उनका पसंदीदा था। वह वहां घंटों बिताते, सब कुछ देखते, समझते और आत्मसात करते। वह निश्चित रूप से पहले एक कलाकार थे, यह उनका स्वाभाविक स्वभाव था। वह स्पष्ट रूप से बोलते थे और हमेशा बहुत जीवंत रहते थे, अपनी बात समझाने के लिए हाथों से इशारे करते थे। चूंकि भाभीजी को 'आटे-दाल का भाव' नहीं आता था, इसलिए वह अक्सर मजाक में उन्हें चिढ़ाते थे, 'देखो मेरी मैरी एंटोनेट को, रोटी न हो तो केक दे दो!'

दिखावटी व्यक्तित्व के पीछे एक बेहद स्नेही पिता छिपे थे, जिनके दिल में अपनी बेटियों के लिए विशेष स्नेह था। वे मुझे भी अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनकी सबसे प्यारी याद मेरी शादी से जुड़ी है। उन्होंने मेरे पिता को, जो उस समय आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे, आश्वस्त किया कि उन्हें मेरी शादी की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, वे इसका ख्याल रखेंगे। और उन्होंने ऐसा ही किया। मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि वे मतुंगा की एक गली में स्थित मेरे घर के द्वार पर खड़े होकर

सभी मेहमानों का व्यक्तिगत रूप से स्वागत कर रहे थे। इस उत्सव के अवसर पर भी, उन्होंने डोली के घर से जाने के बाद ही जश्न मनाया।

करण जौहर: निर्माता और निर्देशक

1990 के दशक की हिट फिल्मों में, जिस दशक में राज कपूर नहीं थे, उनकी झलक साफ दिखती है। वे इतने लोगों के लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं कि न सिर्फ उनका परिवार बल्कि फिल्म इंडस्ट्री के कई फिल्म निर्माता भी राज कपूर की भावना को जीवित रखे हुए हैं। वे सिनेमा के एक ऐसे स्कूल हैं जिनका कई लोगों ने बारीकी से अध्ययन किया है। उनके सिनेमा को अक्सर दो भागों में बांटा जाता है: एक है पुराने राज कपूर का दौर, जिसमें आग और आवारा से लेकर जागते रहो जैसी समीक्षकों द्वारा सराही गई ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों का संग्रह है; और दूसरा है बाद का राज कपूर का दौर, जिसमें बॉबी और संगम जैसी फिल्में बनीं। कई लोगों का मानना है कि पुराने राज कपूर का दौर कहीं बेहतर था और उन्होंने भारतीय सिनेमा में कुछ सबसे बड़े योगदान दिए। दूसरे दौर को आम तौर पर जनहितैषी माना जाता है। इसलिए, राज कपूर उन चुनिंदा फिल्म निर्माताओं में से एक हैं जो अपने काम में कला और मनोरंजन दोनों का संगम करते हैं। समीक्षकों से लेकर आम दर्शकों तक, हर किसी की उनकी फिल्मों पर अपनी राय है।

मेरा मानना है कि राज कपूर ने ही फिल्मी पर्दे पर भव्यता का परिचय कराया। भव्य सेट, जिस तरह से उन्होंने हवेलियों को फिल्माया—ऐसा उनसे पहले कभी नहीं हुआ था। और उन्होंने अपनी महिलाओं को इस तरह प्रस्तुत किया कि वे बेहद आकर्षक लगने लगीं। वे इकलौते फिल्म निर्माता हैं जिन्होंने भावनात्मक टकराव के दृश्यों में कैमरे का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए, पात्र की ओर बढ़ती हुई ट्रॉली का इतना प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया। हम फिल्म निर्माता इसे 'राज कपूर ट्रॉली' कहते हैं। भव्यता की अवधारणा, सिनेमा में शीर्ष शॉट्स लेने की अवधारणा भी राज कपूर की ही देन है।

राज कपूर की सबसे प्रभावी फिल्म निर्माण विधि सूक्ष्म भावों और भव्य पृष्ठभूमि का स्पष्ट विरोधाभास था, जैसा कि प्रेम रोग और राम तेरी गंगा मैली में देखा जा सकता है। उनकी कोई भी भव्य और विशाल फिल्म देखने पर, भाव नाटकीय नहीं होते, फिर भी वे आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली होते हैं। प्रेम रोग का एक छोटा सा दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकता। नायिका के पैर में कांटा चुभ जाता है। नायक उसे निकालने की कोशिश करता है, लेकिन विधवा होने के कारण वह खुद को दूर रखती है। नायक लगातार प्रयास करता रहता है, और नायिका कहती है, 'बहुत ज़िद करने लगे हो, देव।' नायक जवाब देता है, 'तुमने जो करनी छोड़ दी।' इस एक पंक्ति ने सूक्ष्मता से भावों की पूरी श्रृंखला को व्यक्त कर दिया। यही राज कपूर की प्रतिभा थी।

राज कपूर को शब्दों में बयां करना नामुमकिन है, उन्हें बस महसूस करना होगा! उनकी हर फिल्म देखना एक अनोखा अनुभव होता है। उन्होंने हर चीज़ को खूबसूरती से पिरोया है—नाटक, भावनाएं, संगीत। उनकी कोई भी फिल्म उठा लीजिए, हर एक फिल्म अनमोल है। उनसे बेहतर कोई नहीं। अगर आप प्रेम त्रिकोण पर फिल्म बना रहे हैं, तो संगम देखें। युवा प्रेम कहानी के लिए बॉबी देखें। आवारा में उन्होंने पिता-पुत्र के टकराव का ऐसा नाटकीय चित्रण किया है जो मानो सर्वोत्कृष्ट है। जब मैं कभी खुशी कभी गम की शूटिंग कर रहा था, तब भी मैंने

आवारा देखी थी। राज कपूर का काम अधिकांश फिल्म निर्माताओं के लिए बाइबिल के समान है।

केतन देसाई: निर्माता, निर्देशक और शम्मी कपूर के दामाद

मेरे पिता मनमोहन देसाई राज कपूर के बहुत बड़े आदरणीय थे। उन्होंने बीस साल की उम्र में राज जी को फिल्म 'छलिया' में निर्देशित करके अपने करियर की शुरुआत की थी। राज कपूर ने तभी भविष्यवाणी कर दी थी कि मनमोहन देसाई एक महान निर्देशक और फिल्म निर्माता बनेंगे, और वे सच साबित हुए।

जब मेरे पिता अपनी फिल्म 'नसीब' की पटकथा लिख रहे थे, तब उनके मन में एक विचार आया - फिल्मी पर्दे पर एक पार्टी, जिसमें कई फिल्मी हस्तियां शामिल होंगी। मेरे पिता चाहते थे कि मैं राज जी से संपर्क करूं और उनसे उस दृश्य में अतिथि कलाकार बनने का अनुरोध करूं। मैंने हिम्मत जुटाई, उनसे मिलने का समय लिया और उनसे मिलने गया। उनका जवाब था: 'मनमोहन देसाई मुझे फोन पर भी बता सकते थे और मैं सेट पर पहुंच जाता।' मैं दंग रह गया। और उन्हीं की वजह से बाकी सभी कलाकार उस दृश्य के लिए आए, जिसे आज भी फिल्म जगत में किसी भी फिल्म के सबसे बेहतरीन दृश्यों में से एक माना जाता है। उस दृश्य की शूटिंग के दौरान, मेरे पिता इस बात को लेकर चिंतित थे कि इतने सारे सितारों के साथ तालमेल कैसे बिठाएंगे। राज जी समझ गए और बोले, 'मनमोहन, मैं इस स्कूल और इस कार्यक्रम का क्लास मॉनिटर हूं। तुम्हें किसी भी अभिनेता की चिंता करने की जरूरत नहीं है।' और उन्होंने यह काम बखूबी किया, यहां तक कि वे सेट पर समय से पहले पहुंच गए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बाकी सभी कलाकार अपने वरिष्ठों का अनुसरण करते हुए समय पर पहुंचें!

एक बार जब हम आर.के. स्टूडियो में शूटिंग कर रहे थे, तो राज जी शिष्टाचारवश हमारे सेट पर आए। यह उस समय हुआ जब हम सेट की भव्यता और उसमें अभिनय कर रहे सितारों के अनुरूप शॉट सेट करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। राज जी कुछ मिनटों बाद चले गए और मुझे अपने कॉटेज में बुलाया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो उन्होंने मुझे कैमरे की ऊँचाई छह इंच कम करने, कैमरे की स्थिति को दो फीट पीछे करने और एक विशेष प्रकार का लेंस लगाने के लिए कहा। हमने उनकी सलाह मानी और शॉट एकदम सही निकला!

नसीब फिल्म का प्रतिष्ठित गीत अनुक्रम

राहुल रावेल: निर्माता, निर्देशक और सहकर्मी

राज कपूर के साथ सहायक निर्देशक के रूप में काम करना मेरे लिए सबसे बड़ा सौभाग्य रहा है। अगर मैं सिनेमा पर उनकी पकड़ और उन्होंने मुझे जो भी सलाह दी, उसके बारे में बात करना शुरू करूँ, तो शायद मुझे दो महीने लग जाएँगे। मैं बस एक घटना सुनाऊँगा, जो सब कुछ बयां कर देगी।

मैंने 1985 में 'अर्जुन' नाम की एक फिल्म बनाई थी। फिल्म में एक दृश्य था जिसे मुंबई के फ्लोरा फाउंटेन में सात अलग-अलग कैमरों का उपयोग करके फिल्माया गया था, सभी कैमरे गुप्त रूप से अलग-अलग स्थानों पर रखे गए थे। मकसद यह था कि लोगों को पता चले बिना ही दृश्य को फिल्माया जाए, ताकि पर्दे पर वास्तविक प्रतिक्रियाएं कैद हो सकें। यह दृश्य दोपहर 1:30 बजे फिल्माया गया था, जब दोपहर के भोजन के समय भीड़ अपने चरम पर होती है। इस दृश्य का रिटेक संभव नहीं था, इसलिए सभी कैमरामैनों को ज़ूम इन या ज़ूम आउट करने का निर्देश दिया गया था, ताकि मेरे पास उपयोग करने के लिए विभिन्न प्रकार के कोण और आवर्धन उपलब्ध हों।

आर.के. स्टूडियो में राज साहब को फिल्म दिखाई गई। इंटरवल के दौरान, किसी ने मुझसे पूछा कि फ्लोरा फाउंटेन सीक्वेंस के लिए मैंने कितने कैमरे इस्तेमाल किए थे, और मैंने कहा सात। राज साहब तुरंत मुड़कर बोले, 'सात कैमरे कैसे? मैंने तो सिर्फ छह एंगल देखे!' यह सुनकर मैं चौंक गया, क्योंकि हमने शूटिंग के लिए सात कैमरे इस्तेमाल किए थे, लेकिन शूटिंग के दौरान एक कैमरा खराब हो गया था और हमारे पास सिर्फ छह कैमरों का ही फुटेज बचा था। अलग-अलग मैग्निफिकेशन वाले 133 कट्स में से यह पता लगाना कि सात नहीं बल्कि छह कैमरे इस्तेमाल किए गए थे, सिर्फ राज साहब जैसे जीनियस के लिए ही मुमकिन था।

बी.जे. पंचाल: पारिवारिक फोटोग्राफर

मैं 1947 से ही राज कपूर के साथ फोटोग्राफर के रूप में जुड़ा रहा हूं। वे किसी भी कैमरे के लिए एक बेहतरीन विषय थे। राज कपूर और कपूर परिवार के सभी सदस्य शोबिज़ के जन्मजात उस्ताद हैं। वे दर्शकों और कैमरे दोनों को ध्यान में रखकर प्रदर्शन करते हैं।

राज कपूर ने मुझे परिवार के सदस्य की तरह माना। मैं उनके स्टूडियो, उनके परिसर, उनके कॉटेज में कभी भी जा सकती थी। उन्होंने मुझे कभी भी कर्मचारी होने का एहसास नहीं कराया। वे मुझे मद्रास, बैंगलोर, कलकत्ता, दिल्ली, कहीं भी होने वाले सभी प्रीमियर में ले जाते थे। मुझे लगता है कि उनके लिए निजी फोटोग्राफ़र होना एक रुतबे की बात थी!

राज गहरे भावों वाला इंसान था, भले ही वह अपनी भावनाओं को खुलकर ज़ाहिर न करता हो। एक बार टर्फ क्लब में एक समारोह के दौरान, गलती से मेरा अंगूठा बिजली के तार पर लग गया। मैं दर्द से पागलों की तरह चीखने लगा। सब लोग बेबस होकर देखते रहे। राज और नरगिस भी वहाँ मौजूद थे, और शोर सुनकर वे देखने आए कि क्या हो रहा है। मुझे देखते ही राज आगे बढ़ा और उसने तार को लात मारकर हटा दिया। मैं बच गया। बाद में नरगिस ने राज को फटकारते हुए कहा, 'तुमने बिजली के झटके से मर रहे आदमी को कैसे छू लिया! अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो क्या होता?' राज ने जवाब दिया, 'लेकिन वह कोई आम आदमी नहीं था, वह पंचाल था!'

विन्नी आहूजा: पारिवारिक मित्र

राज कपूर ने अपनी फिल्मों पर लाखों रुपये खर्च किए होंगे, लेकिन वे बेहद सरल स्वभाव के, बच्चों जैसे और आम आदमी की तरह व्यवहार करने वाले इंसान थे। कभी-कभी हम सड़क किनारे बने छोटे-छोटे दक्षिण भारतीय रेस्तरां में खाना खाने जाते और बस बैठकर दुनिया को आते-जाते देखते रहते। कभी-कभी हम साथ में रेस देखने जाते थे। बच्चों की तरह, हमारी एक साझेदारी होती थी, हम सब मिलकर 500-500 रुपये लगाते थे! उनका एक सट्टेबाज से समझौता था जो हमारे छोटे-मोटे दांव स्वीकार करता था। रेस खत्म होने के बाद हम कैफे में बैठकर हिसाब-किताब करते थे, जिसमें हमारे खाए हुए नाश्ते का खर्च भी शामिल होता था!

हम पड़ोसी थे और नियमित रूप से, सप्ताह में दो बार, मिलते थे और साथ में बैठकर बातें करते थे। जब उनके साथ सुनने वाले लोग होते थे, तो वे सबसे अच्छे मूड में होते थे। वे कहानियों और अपनी फिल्मों के बारे में बातें करते थे। उन्हें अपनी बातों या धुन को बेहतर बनाने के लिए किसी पटकथा लेखक या संगीतकार की ज़रूरत नहीं होती थी। वे मुझे एक फिल्म समझाते थे और बाद में अगर मैं उसका एक छोटा सा हिस्सा भी स्क्रीन पर देखता था, तो मुझे लगता था कि मैंने पहले ही उसका एक स्पष्ट संस्करण देखा है। उनके हाव-भाव इतने सटीक होते थे कि फिल्म बनाते-बनाते उसकी कुछ गुणवत्ता कम हो जाती थी।

उनकी सोच अत्यंत गहन थी और उनका दर्शन जितना सरल था उतना ही गहरा भी था: यह सब दया और अच्छाई के बारे में था। और यही गुण उन्होंने सिनेमा के माध्यम से व्यक्त किए। उदाहरण के लिए, आवारा या श्री 420—उन्होंने ये फिल्में पचास साल पहले बनाई थीं, लेकिन इनका विषय आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना तब था!

संजय खान: अभिनेता, सहकर्मी और मित्र

राज कपूर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक महान, प्रिय और बेहद प्रशंसित फिल्मी हस्ती थे। उनकी नीली आंखें, उनकी मनमोहक मुस्कान और उनकी आवाज़ का मधुर स्वर, उनसे मिलने वाले या उन्हें पर्दे पर देखने वाले हर व्यक्ति के लिए एक

रोमांचकारी अनुभव पैदा करते थे। राज कपूर से मेरा परिचय उनकी फिल्म 'आवारा' के माध्यम से हुआ। मैं दस साल का था। मैंने इससे पहले कभी कोई फिल्म नहीं देखी थी क्योंकि मेरे पिता मुझे सिनेमा हॉल जाने की अनुमति नहीं देते थे। लेकिन मैंने किसी तरह घर की नौकरानी को मना लिया कि वह मुझे चुपके से थिएटर में ले जाए और मेरे पिता को बिना बताए 'आवारा' फिल्म दिखाए।

राज कपूर के जादू, आवारा के किरदार और 'आवारा हूं' के मधुर संगीत ने मुझे पूरी तरह मंत्रमुग्ध कर दिया था। इसने मुझे पूरी तरह मोहित कर लिया। उसी दिन मैंने फिल्मों में अपना करियर बनाने का फैसला किया। महान राज कपूर से मिलने के लिए मुझे लगभग सात साल इंतज़ार करना पड़ा। आर.के. स्टूडियो में उन्हें साक्षात देखकर मैं अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर सका। मैं एक लंबा, दुबला-पतला, शर्मीला नौजवान था। मैं बस उन्हें देखता रह गया। वे मुस्कुराते हुए उठे, मेरे पास आए और मुझे गले लगा लिया। यह एक महान जुड़ाव की शुरुआत थी जो एक गहरी दोस्ती में बदल गई और अंततः 1978 में रिलीज़ हुई मेरी फिल्म 'अब्दुल्ला' में मेरे आदर्श के साथ निर्देशन और सह-अभिनय करने के साथ परिणत हुई। सेट पर एक घटना घटी, जब उन्हें जैसलमेर में रेगिस्तान के बीचोंबीच 2,000 से अधिक सैन्य कर्मियों के सामने एक लंबा संवाद बोलना था, जो एक बड़ी फिल्म यूनिट और उसके उपकरणों जैसे पंखे और क्रेन से घिरे हुए थे। उन्हें वो पंक्तियाँ बोलनी थीं जिनमें वो अपने दत्तक पुत्र की मृत्यु की खबर सुनकर उसकी माता की समाधि पर टूट पड़ते हैं। बोलते समय मुझे लगा कि संवाद में कुछ गड़बड़ हो गई है, क्योंकि राज कपूर 'जोकर' के रूप में आ गए थे। मैंने तुरंत शॉट काट दिया। हैरान राज कपूर ने मेरी तरफ देखा। उनकी आँखों में गुस्सा साफ दिख रहा था, लेकिन मैं उनके पास गया और उनके कान में फुसफुसाया: 'राज कपूर, कृपया जोकर वाला सीन काट दीजिए।' तुरंत ही उनके चेहरे पर एक प्यारी सी, समझदारी भरी मुस्कान आ गई और आँखों में एक चमक आ गई। अगला शॉट एकदम सही था। उन्होंने इतने जोश के साथ ये शॉट बोला कि उनका ऊँट भी अपनी थूथन से उन्हें धक्का देकर उनके पीछे-पीछे बाहर चला गया।

जिस दिन मैंने राज कपूर को इस फिल्म के लिए साइन किया, निकलते समय मेरी मुलाक़ात डब्बू से हुई। उन्होंने कुछ मज़ाकिया कहा जो मुझे आज भी याद है। उन्होंने कहा, 'क्या तुम पागल हो, राज कपूर को इस फिल्म के लिए साइन कर रहे हो? आर.के. स्टूडियो के मुर्गे भी दोपहर 2 बजे बांग देते हैं। वो शूटिंग के लिए कभी समय पर नहीं आते।' डब्बू गलत थे—वो आए! राज जी और मेरे बीच हुए समझौते के अनुसार, वो हर दिन ठीक 12 बजे आते और देर रात तक रुककर अपना काम खत्म करते। एक दिन, फिल्म के सेट पर रेगिस्तान में शूटिंग के दौरान, यूनिट हैरान रह गई कि दोपहर की समय सीमा बीत जाने के बावजूद राज जी नहीं आए थे। हमने क्षितिज पर एक कार देखी, उनकी सफेद एम्बेसडर। दोपहर के 12:30 बज रहे थे। हमारी यह प्रथा थी कि उनके आने का इंतज़ार करते हुए हम सहायक शॉट लेते और उनके आने पर उन्हें शामिल कर लेते। लेकिन शरारत में मैंने अपने क्रू को सारी लाइटें बंद करने, रिफ्लेक्टर कम करने और आराम करने को कहा, मानो हम घंटों से उस महान स्टार के आने का इंतज़ार कर रहे हों। राज कपूर कार से कूदे और अपने कमरे की ओर भागे, जबकि मैं जानबूझकर गेट की तरफ पीठ करके अखबार पढ़ने का नाटक कर रहा था। मेरे सहायक विजय पांडे, जो मेरे सामने खड़े थे, लगातार बता रहे थे कि

वे कैसे आए और कमरे में भागे। थोड़ी देर बाद, उनके बटलर रेप्ती बाहर आए और विजय पांडे से राज जी से मिलने का अनुरोध किया। विजय उनसे मिलने गए और लौटकर मुझे बताया कि राज जी पूछ रहे थे कि 'साहब' का मूड अच्छा है या खराब। हम एक-दूसरे को प्यार से 'साहब' कहते थे। राज़ कपूर शूटिंग एरिया में आए और क्रू का मूड देखकर लाइटों के पास गए, उन्हें छुआ और अपना सिर हिलाते हुए ज़ोर से हंसने लगे। उन्होंने कहा, 'तुम लोग मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो,' और पूछा कि अगर शूटिंग नहीं हो रही थी तो लाइटें गर्म क्यों थीं। मैंने उन्हें बताया कि हमने ऐसा हंसी-मज़ाक के लिए किया था। पूरी यूनिट हंसने लगी।

राज कपूर, संजय खान और उनकी पत्नी ज़रीन के साथ

राज कपूर बहुत ही स्नेही और उदार व्यक्ति थे। मुझे कभी-कभी लोगों को उनके बारे में कुछ और कहते सुनकर बहुत आश्चर्य होता था। उन्होंने फिल्म 'चांदी सोना' के एक गाने में अतिथि भूमिका निभाई, जिसकी शूटिंग मॉरीशस में हो रही थी। उस समय संगीतकार हड़ताल पर थे। हम दुविधा में थे। राज कपूर ने हड़ताल खत्म करवाने, गाना रिकॉर्ड करवाने और उसे अपने साथ लाने के लिए बहुत प्रयास किया ताकि हम अगले दिन उसकी शूटिंग कर सकें। रूपतारा स्टूडियो में शूटिंग के अंतिम दौर के बाद, हम दोनों उनकी कार में ओबेरॉय में एक शादी में शामिल होने के लिए गए। रिसेप्शन की रस्मों के बाद, राज़ जी और मैं एक बार में बैठकर ड्रिंक कर रहे थे। मेरे पीए एक नए ब्रीफकेस में एक लाख रुपये नकद लेकर आए। उस समय यह रकम बहुत बड़ी मानी जाती थी। मैंने उन्हें यह रकम कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में दी क्योंकि कोई पेशेवर अनुबंध नहीं था और उन्होंने अतिथि भूमिका निभाने के लिए तैयार होने की बात कहीं। वे इस प्रस्ताव से बहुत नाराज हुए और कहा कि वे इसे स्वीकार नहीं कर सकते। कृष्णा जी और मेरी पत्नी ज़रीन की उपस्थिति में, उन्होंने मेरे हाथ के पास अपना हाथ रखकर कहा, 'देखो जी, हम दो पठान, एक हिंदू एक मुसलमान।' उन्होंने मुझसे कहा कि भविष्य में अगर मैं उनके साथ मुख्य भूमिका में कोई फिल्म बनाऊं, तो वे मुझसे शुल्क लेंगे और मुझे उन्हें उतना ही देना होगा जितना वे मांगेंगे। मैंने उनसे हाथ मिलाया और कहा, 'ठीक है।'

1978 में, जब मैं अब्दुल्ला के लिए शूटिंग की योजना बना रहा था, मैं उनके केबिन में गया और उन्हें दीवान पर आराम करते देखा। हमने अब्दुल्ला के बारे में बात की और मैंने उनसे उनकी फीस पूछी। मुझे आज भी याद है कि वे छत की ओर देखते हुए अपनी उंगलियों से अपनी छाती थपथपा रहे थे। अचानक वे उठ खड़े हुए और बोले, 'मैं आपसे इतना लूंगा।' उस समय के हिसाब से यह काफी

बड़ी रकम थी, लेकिन बिना किसी झिझक के मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उनसे हाथ मिलाया। उन्होंने झटक कर अपना हाथ छुड़ा लिया और मुस्कुराते हुए बोले, 'मैं मज़ाक कर रहा था, साहब!' तब मैंने उन्हें मना लिया, उन्हें उनके पठान वाले कथन और हमारे बीच हुए वादे की याद दिलाई—वे कितनी फीस लेंगे और मैं कितनी फीस पर सहमत होऊंगा!

मुझे राज कपूर के साथ बिताए अनगिनत सुखद पल याद हैं, चाहे वो उनकी मशहूर होली की पार्टियाँ हों, मेरी बहन दिलशाद की शादी हो जहाँ राज जी, कृष्णा जी, डब्बू और चिंटू तीनों दिन मौजूद थे और मेहमानों की सेवा कर रहे थे, हमारी विदेश यात्राएँ हों या उनकी फिल्मों के सेट पर बिताए पल हों। ये सभी इस सरल, प्यारे इंसान, हमारे समय के इस महान प्रतिभावान व्यक्ति की मेरी सबसे अनमोल यादों में से कुछ हैं।

एक बात जो मुझे अवश्य बतानी चाहिए, वह यह है कि जब वे आराम के मूड में थे, तब उन्होंने एक किस्सा सुनाया कि कैसे उन्होंने वैजयंतीमाला को टेलीग्राम भेजा, जिसमें लिखा था, 'बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं?' और तुरंत जवाब मिला: 'होगा, होगा, होगा।' इससे उनके मन में एक विचार आया और उन्होंने तुरंत महान गीतकार शैलेंद्र को बुलाया और उन्हें ये दो पंक्तियाँ सौंप दीं। शैलेंद्र एक पर्ची लेकर बगीचे में गए और कुछ ही मिनटों में दो पंक्तियाँ लेकर वापस आए: 'तेरे मन की गंगा, मेरे मन की जमुना का, बोल राधा बोल, संगम होगा कि नहीं'। कुछ पेय पीने के बाद उन्होंने प्रसिद्ध संगीतकार जयकिशन को बुलाया, जो सुबह 3 बजे पहुंचे। सुबह 6 बजे तक संगम का प्रसिद्ध गीत पूरा हो चुका था और रिकॉर्डिंग के लिए तैयार था।

अब्दुल्लाह फिल्म की रिलीज के लिए रूस जाने से पहले, रूसी महावाणिज्यदूत ने मुझे एक बैठक के लिए आमंत्रित किया और वितरण के लिए फिल्म की 1,000 प्रतियां मांगीं। इतनी बड़ी संख्या में प्रतियां देखकर मैं दंग रह गया। लेकिन जब मैंने मॉस्को के विशाल 6,000 सीटों वाले सिनेमाघर में राज कपूर को मंच पर पेश किया, तो पूरे थिएटर की तालियों की गड़गड़ाहट से मैं चकित रह गया, जो पांच मिनट तक चलती रही। उस दिन मैंने रूसियों के बीच उनके प्रति अपार प्रेम और सम्मान देखा और 1,000 प्रतियों की आवश्यकता को समझा। उनके साथ मंच पर खड़े होने पर मुझे और भी गर्व महसूस हुआ।

एक घटना जो मुझे हमेशा हंसाती है, वह है टैबास्को की उस कीमती बोतल के बारे में, जो शायद उन दिनों मॉस्को में इकलौती ही थी। वह हमेशा राज जी की जैकेट की जेब में रहती थी, और वह बड़ी सावधानी से हम सबकी थालियों में उसकी कुछ बूँदें डालते थे, क्योंकि खाना बहुत फीका होता था। सबको खाना परोसने के बाद वह बोतल को वापस अपनी जेब में रख लेते थे। कभी-कभी डाबू कुछ और बूँदें लेने के लिए बोतल छीनना चाहता था, लेकिन राज जी उसे रोक देते और कहते कि बोतल एक ही है और हमें इसे बचा-बचाकर इस्तेमाल करना होगा। एक सुबह, जिस दिन राज जी मॉस्को से लंदन के लिए रवाना हुए, वह बोतल मेरे कमरे में भेजी गई और साथ में यह निर्देश भी दिया गया कि इसे मुझे खुद दिया जाए। राज जी द्वारा बोतल न दिए जाने पर डाबू इससे नाराज़ हो गया।

राज जी को आखिरी बार मैंने ब्रीच कैंडी अस्पताल में देखा था, जहाँ वे दादासाहेब फाल्के पुरस्कार लेने के लिए दिल्ली जाने से पहले नियमित जाँच के लिए गए थे। वे चिड़चिड़े मूड में थे और बार-बार कृष्णा जी से पूछ रहे थे कि उनका पसंदीदा

परफ्यूम 4711 कहाँ है। मैंने बीच में दखल देते हुए कहा, 'साहब, आप कृष्णा जी से छोटी सी बात पर क्यों झगड़ रहे हैं? मैं दुबई फोन करके कल बोतल मंगवा दूंगा।' अगले दिन जब हमें खबर मिली कि राज जी कोमा में चले गए हैं, तो मैं बहुत परेशान हो गया। पूरा देश सदमे में था! इसी बीच, परफ्यूम 4711 आ गया और मैं उसे अपने साथ दिल्ली ले गया, पूरे रास्ते यही सोचता रहा कि वे ठीक हो जाएँगे। मैंने बोतल कृष्णा जी को सौंप दी। लेकिन दुर्भाग्य से, कुछ ही समय बाद उनका देहांत हो गया। जिस दिन उनकी चिता जलाई गई, मैंने काला धुआँ हवा में उठते देखा। मेरी आँखों में आँसू भर आए और 'आवारा हूँ' गाना मेरे मन में गूंजने लगा। मुझे लगा कि मैं अब कभी 'साहब' को नहीं देख पाऊंगी। अंत्येष्टि के सात दिन बाद, कृष्णा जी ने मुझे फोन किया और कहा: 'जानती हो मैंने बोतल का क्या किया? अंतिम स्नान के बाद और अंत्येष्टि से पहले मैंने बोतल का सारा तरल पदार्थ उनके शरीर पर उड़ेल दिया।' मैं फिर से स्तब्ध रह गई और उनकी बात मुश्किल से सुन पा रही थी। मेरे मन में मानो मैं दस साल की बच्ची थी और बेंगलुरु के एल्गिन थिएटर में उनकी फिल्म आवारा देख रही थी।

सुमन सहगल: मित्र

जब भी मैं 'हिंदी रूसी भाई भाई' सुनता हूँ, तो मुझे अपने जीवन की एक घटना याद आ जाती है। वह एक सर्द, अँधेरा और उदास दिन था और मैं लकड़ी के लेन-देन के सौदे पर बातचीत कर रही एक टीम का हिस्सा था। इस सौदे के सिलसिले में हम अमूर नदी के किनारे बसे सुदूर इलाके ब्लागोवेशचेंस्क पहुँचे थे, जो उस समय सोवियत संघ को चीन से अलग करती थी। -43 डिग्री सेल्सियस के तापमान में काँपते हुए, हमने ठंड का सामना करते हुए होटल से बाहर निकलने का फैसला किया। जैसे ही हम ठंड के अनुकूल होने लगे, एक स्थानीय व्यक्ति हमारे पास आया और विनम्रता से पूछा कि हम किस देश से हैं, क्योंकि हम बिल्कुल विदेशी लग रहे थे। यह सुनकर कि हम भारत से हैं, वह तुरंत 'मेरा जूता है जापानी, ये पटलूं इंग्लिशतानी, सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' गाना गाने लगा! कुछ ही मिनटों में राज कपूर के लिए मेरा दिल प्यार से भर गया। पच्चीस से तीस लोग इकट्ठा हुए, गाते-नाचते हुए और ठंड से बचने के लिए आपस में सूखी मछली और वोदका बाँटते रहे। राज कपूर जैसे कलाकार ही बिना शारीरिक रूप से उपस्थित हुए पार्टी का आयोजन कर सकते थे! मैं उस शख्स को सलाम करता हूँ जिसने अपने काम के ज़रिए प्यार फैलाया, जिसे आज भी उस देश में याद किया जाता है और रूस की बुजुर्ग पीढ़ी उससे प्यार करती है। मैं उस शख्स को सलाम करता हूँ जिसने 'हिंदी रूसी भाई भाई' का नारा गढ़ने में अहम भूमिका निभाई।

प्रेम चोपड़ा: अभिनेता, सहकर्मी और पत्नी के बहनोई

राज कपूर ने मुझे बताया था कि पुणे में बन रही फिल्म 'बॉबी' में मेरे लिए एक छोटा सा रोल है। मैं सेट पर पहुंचा और डायलॉग्स मांगे। निर्देशक राज कपूर ने कहा, 'हीरोइन नई है। जैसे ही वो अंदर आए, तुम उसका हाथ कसकर पकड़ लेना और कहना, 'प्रेम नाम है मेरा... प्रेम चोपड़ा!'

मैंने उन्हें खाली निगाहों से देखा। वे अपनी बात पर अड़े रहे: 'यही संवाद है।' राज जी द्वारा दिए गए संवादों पर मुझे आश्चर्य हुआ; मैं खुश नहीं था। मुझे एहसास हुआ कि चूंकि मैं उस समय अन्य भूमिकाएँ कर रहा था, इसलिए यह एक गलत मिसाल कायम कर सकता है। उन्होंने दोहराया कि उस समय यही भूमिका उनके मन में

मेरे लिए थी, लेकिन बाद में एक पूर्ण भूमिका देने का वादा किया। लेकिन ऐसा लगा कि अतिथि भूमिका में भी फिल्म में मेरा सिर्फ यही एक संवाद था। यह ठीक नहीं लगा। मैंने यह बात प्रेम नाथ (मेरे सह-कलाकार और बहनोई) से साझा की, जो उस दिन सेट पर मौजूद थे। उन्होंने भविष्यवाणी करते हुए जवाब दिया, 'बस मुझ पर विश्वास करो, यह फिल्म बहुत बड़ी हिट होगी। तुम्हें लाखों की पब्लिसिटी मिलेगी; तुम्हारा संवाद सुपर हिट होगा।' बॉबी की रिलीज के तुरंत बाद, मैं काला सोना (1975) की शूटिंग के लिए डलहौजी में था। मैं ट्रेन से दिल्ली लौट रहा था, तभी टिकट निरीक्षक (टीटी) और बाकी कर्मचारियों ने मुझे पहचान लिया। ट्रेन चालक ने रेलवे अधिकारियों को ज़रूर सूचित किया होगा कि मैं ट्रेन में हूं, क्योंकि जब हम स्टेशन पहुंचे तो वहाँ भारी भीड़ मेरा इंतज़ार कर रही थी। वे 'वो लाइन' दोहरा रहे थे। ट्रेन चालक ने मुझसे बाहर आकर जनता का अभिवादन करने का अनुरोध किया। जब मैं बाहर निकला, तो वे मुझसे बस यही एक लाइन सुनना चाहते थे। मैंने जनता को खुश करने के लिए कहा, 'प्रेम नाम है मेरा, प्रेम चोपड़ा!' और जनता को यह बहुत पसंद आया! आज भी पसंद है। ट्रेन दिल्ली पहुँचने तक हर स्टेशन पर रुकी, और मैंने हर पड़ाव पर यही दोहराया। अगले दिन दिल्ली के एक अखबार की हेडलाइन थी कि प्रेम चोपड़ा की वजह से डलहौज़ी से दिल्ली जाने वाली ट्रेन एक घंटे लेट हो गई। मैंने ऐसी प्रतिक्रिया की कभी उम्मीद नहीं की थी।

मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि अब से भारत या विदेश में हर शो में मुझे वह डायलॉग बोलना ही होगा। जिस डायलॉग से मैं नाखुश था, उसी ने मुझे ज़िंदगी भर के लिए एक ब्रांड बना दिया। रातोंरात वह मेरा ट्रेडमार्क बन गया, मेरे साथ जुड़ गया।

इंदिरा अश्वानी: पारिवारिक मित्र

पेसु और मैं राज और कृष्णा-जी के पचास साल से भी ज़्यादा पुराने दोस्त हैं। हमने साथ में बहुत अच्छा समय बिताया। वो मेरे सभी बच्चों की शादियों में मौजूद रहे। वो डोली गीत गाते थे और हम सबको रुला देते थे! एक बार मैंने उनसे अपनी समाधि की बेटी की शादी के लिए मंडप सजाने में मदद करने का अनुरोध किया। उन्होंने न सिर्फ़ एक सुंदर मंडप बनाया, बल्कि मेरी बेटी की शादी समझकर शादी के प्रवेश द्वार को भी सजाया! वो हमेशा कृष्णा-जी के प्रति बहुत सुरक्षात्मक थे। एक बार जब मेरी बेटी मीनल की शादी लंदन में हो रही थी, तो कृष्णा-जी को आना था। सर्दी का मौसम था और बहुत ठंड थी। उन्होंने कृष्णा-जी को आने की अनुमति दी, लेकिन एक शर्त पर। उन्होंने कहा, 'उन्हें ले जाइए, लेकिन उनका ख्याल रखिएगा।' एक घटना जो मज़ेदार और शर्मनाक दोनों थी, वो तब हुई जब हमारी एक पार्टी में राज, कृष्णा-जी, वैजयंतीमाला और डॉ. बाली एक ही लिफ्ट में थे! मैंने राज और कृष्णा-जी को आमंत्रित किया था और मेरे पति पेसु ने वैजयंतीमाला और डॉ. बाली को आमंत्रित किया था! ज़ाहिर है, उस समय उनके रिश्ते में तनाव था। मुझे याद है एक बार राज मेरी पार्टी में एक महिला से मिले, जिसके बाद उन्होंने मुझसे कहा कि ऐसी महिलाओं को तुमसे नहीं मिलना चाहिए! एक बार मैंने अपनी आंखों पर आईशैडो लगाया था। राज मेरे पास आए और बोले, 'इंदिरा, तुम जैसी हो वैसी ही खूबसूरत लगती हो। तुम अभिनेत्री नहीं हो! आईशैडो तुम्हारे लिए नहीं बना है!'

डॉ. ओ.पी. कपूर: डॉक्टर और पारिवारिक मित्र

एक बार राज कपूर, ग्रांट मेडिकल कॉलेज छात्र संघ की ओर से डॉ. ओ.पी. कपूर द्वारा शनमुखानंद सभागार में आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथि थे। दो हज़ार छात्रों और डॉक्टरों की उपस्थिति में, अपने भाषण के दौरान उन्होंने कहा, 'डा. कपूर मेरी सेहत का ख्याल रखने के लिए काफी अच्छे हैं। लेकिन, मैं चाहता हूँ कि आप उन पर दबाव डालें कि वे मेरी कमज़ोरियों का भी ख्याल रखें!' उन्हें मिली तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। उन्होंने यह बात इतनी मासूमियत से, एक बच्चे की तरह, और इतनी स्पष्टवादिता से कही कि उनके कद के बहुत कम लोग ऐसा करने की हिम्मत करते!

हिंदुज

1957 में हमने उनकी कई उत्कृष्ट कृतियों को विश्व दर्शकों तक पहुँचाना शुरू किया। विदेशों में आयोजित हमारे अनेक प्रीमियरों में प्रशंसक बेहद उत्साहित हो उठे! यह व्यावसायिक संबंध हमारे और राज कपूर, उनके जीवन के केंद्र कृष्ण जी और उनके प्रतिभाशाली बच्चों के बीच एक घनिष्ठ पारिवारिक रिश्ते में बदल गया। राज कपूर के साथ यह रिश्ता हमारी सबसे प्यारी यादों में से एक है। मैं उन लोगों को सलाम करता हूँ जो प्रतिफल की चिंता किए बिना अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। 'हर दिल जो प्यार करेगा, वो गाना गाएगा'। ये पंक्तियाँ सब कुछ कह देती हैं। राज जी सिर्फ एक महान कलाकार ही नहीं थे; वे एक संपूर्ण कलाकार थे, एक दार्शनिक कलाकार जो जीवन की दुर्लभ बारीकियों को समझते थे और उन्हें इतने सरल ढंग से प्रस्तुत करते थे कि दर्शकों के साथ तुरंत एक गहरा जुड़ाव बन जाता था। वे एक नेक आत्मा थे जिनका हृदय आम आदमी के लिए धड़कता था। एक दुर्लभ फिल्म निर्माता: एक निर्माता, एक अभिनेता, एक निर्देशक, एक संगीतकार, सब कुछ उनमें समाहित था; कला में ऐसी निपुणता मिलना अत्यंत दुर्लभ है। उन्होंने एक ऐसी टीम बनाई जिसने उनके दृष्टिकोण को समझा, उनका अद्वितीय समर्थन किया और उनके मन की बात को पूरी तरह से जानकर, ठीक वही चीज़ पर्दे पर उतारी जो वे चाहते थे। आज तक कोई भी उनकी जगह नहीं ले पाया है और शायद कभी ले भी नहीं पाएगा। फिल्में ही उनकी ज़िंदगी थीं। फिल्में ही उनके जीवन का दर्शन थीं, जिन्हें 70mm स्क्रीन पर उतारा गया था। उनकी रचनाएँ कालजयी हैं और इसलिए वे स्वयं भी सर्वशक्तिमान की एक कालजयी रचना हैं।

एक व्यक्ति के रूप में, वे हर अवसर की जान थे; चाहे कोई पार्टी हो, अनौपचारिक सभा हो या प्रीमियर। हिंदुजा परिवार के साथ उनका रिश्ता मेरे दिवंगत बड़े भाई, गिरिधर हिंदुजा के प्रति उनके स्नेह से शुरू हुआ। फिर इसे मेरे बड़े भाई, श्रीचंद ने और उसके बाद मैंने पोषित किया। विदेशों में उनकी फिल्मों का वितरण करने के कारण, मुझे उनके साथ बिताए कई पल स्पष्ट रूप से याद हैं। रूस और ईरान सहित मध्य पूर्वी बाज़ारों में, वे तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जितने ही लोकप्रिय थे और कुछ देशों में तो उनकी लोकप्रियता नेहरू से भी कहीं अधिक थी।

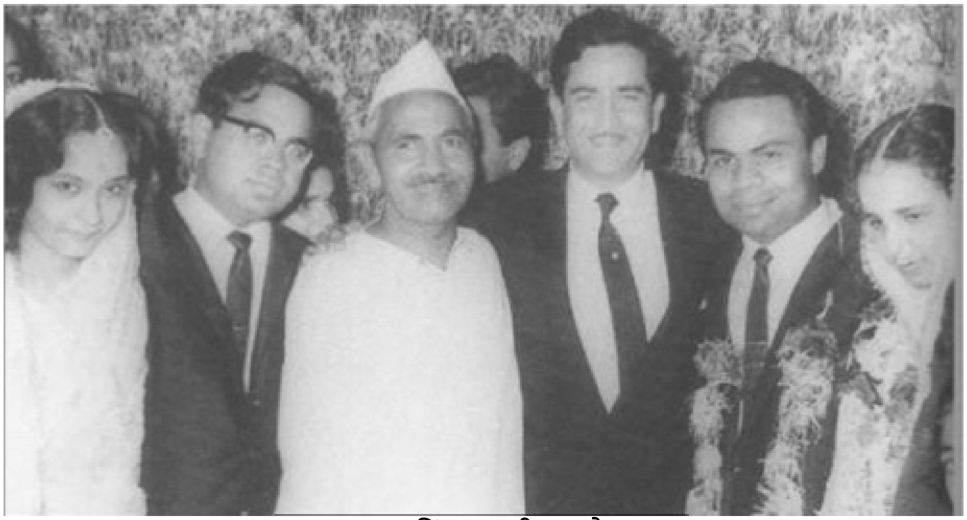

राज कपूर हिंदुजा परिवार के साथ

राज कपूर विदेशों में भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट राजदूत थे। सीरिया, जॉर्डन, ग्रीस या लंदन, दुनिया भर में, राज कपूर की बदौलत ही भारतीय सिनेमा विदेशी बाजारों में अपनी पैठ बना सका और आज के बॉलीवुड का मार्ग प्रशस्त कर सका। उस समय लंदन में, भारतीय फिल्में सप्ताहांत में केवल एक मैटिनी शो में ही चलती थीं। जब संगम रिलीज़ हुई, तो हमने लंदन के सिनेमा हॉल पूरे सप्ताह के लिए बुक कर लिए थे, जिससे थिएटर मालिक हैरान रह गए थे, उन्हें लगा कि हम पागल हो गए हैं। लेकिन जब संगम के सभी शो हाउसफुल रहे, तो अंत में राज कपूर और हम दोनों की ही जीत हुई।
तेहरान में आयोजित श्री 420 के प्रीमियर में, जिसमें उन्हें आमंत्रित किया गया था, कार्यक्रम स्थल तक जाने वाली पूरी गली उनके प्रशंसकों से इतनी भरी हुई थी कि उनके लिए कार्यक्रम स्थल से निकलना लगभग असंभव हो गया था। मुझे याद है कि वे गहरे नीले रंग का सूट और लाल टाई पहनकर आए थे। लाल रंग उस समय साम्यवाद का प्रतीक था और यह तत्कालीन ईरानी शासन की पसंदीदा विचारधारा नहीं थी। हमने उनसे लाल टाई उतरवाई और ईरानी पुलिस से उन्हें सिनेमा हॉल के पिछले दरवाजे से चुपके से बाहर निकलवाया, जेलर की वैन में धकेला और तेजी से रवाना करवा दिया।
राज को नाइटलाइफ़ और नाइटक्लब बेहद पसंद थे। जब भी वह किसी क्लब में जाते, चल रहा शो रोक दिया जाता और उन्हें मंच पर आकर कमान संभालने के लिए कहा जाता। कभी भी निराश न करने वाले राज, आवारा, मेरा नाम जोकर, श्री 420 आदि फिल्मों के अपने बेबाक गाने गाने लगते। तालियाँ लगातार बजती रहतीं और उन्हें गाने के लिए प्रोत्साहित करती रहतीं, और वह हमेशा उनकी बात मानते क्योंकि उनका और उनके प्रशंसकों का रिश्ता अटूट था।
तेहरान में, उनकी सबसे बड़ी कृति 'संगम' लगातार तीन साल तक चली और पहले शो से लेकर आखिरी शो तक सिनेमाघरों में हाउसफुल रही!! हमने अक्सर स्थानीय भाषा की फिल्मों के अपने देश में इतने लंबे समय तक चलने के बारे में सुना है। लेकिन किसी भारतीय फिल्म का ईरान जैसे विदेशी देश में, जहाँ आज तक किसी भी फिल्म का औसत प्रदर्शन तीन सप्ताह से अधिक नहीं रहा है, बिना किसी रुकावट के लगातार तीन साल तक चलना, मैंने अभी तक नहीं देखा है। एक बार उन्हें ईरान में एक टीवी स्टेशन का उद्घाटन करने का निमंत्रण मिला।

रिबन काटने और बटन दबाने से संतुष्ट न होकर, वे ढोलक बजाते हुए पारंपरिक वेशभूषा में उद्घाटन समारोह में पहुंचे और 'हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है' गीत गाया। उद्घाटन समारोह ने धूम मचा दी। आज भी वह टीवी स्टेशन फल-फूल रहा है। ईरान में, अब प्रसिद्ध गायिका, गोगूश, जो तब एक बाल कलाकार थीं, ने राज कपूर की मदद से 'इचक दाना, पिचक दाना' गाकर अपना करियर बनाया।

विदेशों में फिल्म के अधिकार जारी करने के सामान्य अनुबंध में एक शर्त होती है कि फिल्म को संपादित नहीं किया जाएगा। लेकिन स्थानीय बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने के लिए, हमने संगम को संपादित किया और फारसी में डब किया। फिल्म ने प्लेटिनम जुबली जीती! राज कपूर आए और उन्होंने ज़िद की कि वे यह संस्करण देखना चाहेंगे। हमने उन्हें मना किया क्योंकि उन्होंने इसे कई बार देखा होगा। लेकिन वे अड़े रहे और हमें झुकना पड़ा। पूरी फिल्म के दौरान, मैं उनके प्रसिद्ध गुस्से से डरकर लगभग हर पल सतर्क रही। मुझे आश्चर्य हुआ जब फिल्म के अंत में उन्होंने मुझे गले लगाया और कहा, 'इससे बेहतर संपादन तो मैं भी नहीं कर सकता था।'

संगीत और गाने उनके दिल को छू लेते थे। वे अपनी फिल्मों के हर गाने के संगीत और बोल में व्यक्तिगत रुचि रखते थे। वे अक्सर लंदन स्थित हमारे घर आते, हारमोनियम लेकर ज़मीन पर बैठते और गाते थे। एक बार उन्होंने अपनी दार्शनिक आत्मकथा 'मेरा नाम जोकर' का मशहूर गाना 'जाने कहां गए वो दिन' गाया, जो उस समय बन रही थी। फिर उन्होंने पूछा, 'गोपी, क्या कहता है?' मैंने तुरंत कहा कि यह गाना हिट होगा और वाकई हिट हुआ।

राज जीवन के प्रति बेहद उत्साही थे और खाने के बड़े शौकीन थे। जब वे निजी पार्टियां देते थे, तो मेनू का चुनाव वे खुद बड़ी सावधानी से करते थे। वे इतने शानदार मेजबान थे कि उनकी वजह से लजीज पकवानों का स्वाद और भी बढ़ जाता था। एक बार वे तेहरान आए थे; मेरी अभी-अभी शादी हुई थी। रात के 3 बजे थे और उन्होंने मुझे फोन करके कहा कि उन्हें काले पछे (भेड़ के सिर और पैरों से बना एक खास व्यंजन - एक ईरानी पकवान) खाने की इच्छा है। मैं शुद्ध शाकाहारी थी और उस अजीब समय को देखते हुए, मैं उन्हें एक नाइट क्लब के सामने वाले रेस्तरां में ले गई। उन्हें वोदका के साथ खाने का आनंद लेते देख रेस्तरां का मालिक भी हैरान रह गया और उसने मुझे सलाह दी कि उन्हें और न परोसा जाए। जब उनका पेट भर गया, तो मैंने उन्हें उनके हिल्टन होटल के कमरे में छोड़ दिया, जहां वे अगले दिन दोपहर बाद उठे। उन्होंने मुझे फोन किया और कहा, 'चलो कहीं बाहर घूमने चलते हैं।' जीवन के प्रति उनका उत्साह ऐसा ही था। होटल की लॉबी में इंतज़ार कर रही लड़कियों की भीड़ से बड़ी मुश्किल से बचते हुए, हम किसी तरह कार में बैठे और अबाली के एक स्की रिसॉर्ट के लिए तेज़ी से निकल पड़े। उनके करीबी दोस्त और सह-कलाकार राजेंद्र कुमार भी हमारे साथ थे। हम तीनों टट्टुओं पर सवार होकर पहाड़ों में गए और वहाँ खूब मज़ा किया। उन्होंने मुझसे कहा, 'यह अब तक का मेरा सबसे बेहतरीन आउटिंग अनुभव रहा है।'

अपनी पत्नी कृष्णा और तीन बच्चों रणधीर, ऋषि और रितु के साथ, वे मेरे भाई एसपी और मेरी शादी में शामिल हुए, जो संयोगवश एक ही दिन थी। सभी मेहमानों से उन्होंने कहा, 'मैं हिंदुजा परिवार का हिस्सा हूं।' उन्होंने मेरे पिता की

पहनी जाने वाली गांधी टोपी उधार ली और उसे पहनकर हम सभी के साथ शादी की तस्वीरों में पोज़ दिया। उनके बाद, कृष्णा भाभी और उनके बच्चों ने हमारे लंबे समय से चले आ रहे पारिवारिक रिश्ते को संजोकर रखा है और आज भी यह रिश्ता फलता-फूलता है। जब हम लंदन चले गए, तो हमने अपने लंदन मुख्यालय का नाम संगम लिमिटेड रखा, उनकी एक उत्कृष्ट कृति के नाम पर, क्योंकि वे हमारे परिवार का हिस्सा थे। वे हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे: हमारे भाई, राज।

ग्रेगरी पेक: हॉलीवुड अभिनेता और मित्र

राज कपूर से मेरी पहली मुलाकात 1970 के दशक के मध्य में बॉम्बे में हुई थी। जब भारतीय सिनेमा की बात होती है, तो राज कपूर का नाम जरूर आता है, जो असाधारण प्रतिभा और ऊर्जा से भरपूर कलाकार थे। निर्माता, निर्देशक, फिल्म स्टार, संपादक, संगीतकार और कहानीकार। भारतीय फिल्मों के सबसे बड़े मनोरंजनकर्ता के रूप में जाने जाने वाले, उनका कई दशकों का उल्लेखनीय करियर उत्कृष्टता के उच्चतम मानकों को दर्शाता है। मुझे इस महान कलाकार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और उनकी पत्नी, श्रीमती कृष्णा कपूर, और उनके बच्चों को, जो आज रात यहां उपस्थित हैं, अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करते हुए खुशी हो रही है।

अत्यंत प्रशंसा के साथ, ग्रेगरी पेक

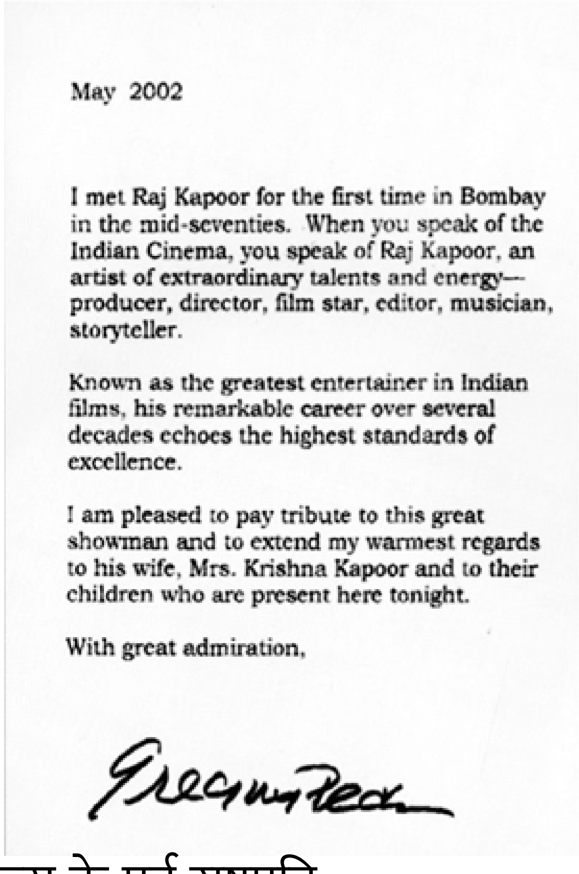

May 2002

I met Raj Kapoor for the first time in Bombay in the mid-seventies. When you speak of the Indian Cinema, you speak of Raj Kapoor, an artist of extraordinary talents and energy—producer, director, film star, editor, musician, storyteller.

Known as the greatest entertainer in Indian films, his remarkable career over several decades echoes the highest standards of excellence.

I am pleased to pay tribute to this great showman and to extend my warmest regards to his wife, Mrs. Krishna Kapoor and to their children who are present here tonight.

With great admiration,

Gregory Peck

बोरिस येल्तसिन: रूस के पूर्व राष्ट्रपति

जब रूस के पूर्व राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन 1993 में भारत आए, तो उनकी मुलाकात राज कपूर की बेटी ऋतु नंदा से हुई। ऋतु नंदा के शब्दों में, "बोरिस येल्तसिन ने जिस आदर से मुझसे मुलाकात की, उसे मैं कभी नहीं भूल सकती। मैं

कोई खास शख्सियत नहीं हूं और राज कपूर अब इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन राष्ट्रपति, जिनका हर मिनट बेहद महत्वपूर्ण आधिकारिक कामों में व्यस्त रहता है, उन्होंने फिर भी मेरे लिए समय निकाला। यह स्पष्ट था कि उनके लिए भी यह एक भावुक क्षण था। उनके हाव-भाव से राज कपूर के प्रति उनकी प्रशंसा साफ झलक रही थी। उन्होंने बताया कि बचपन में उन्हें राज कपूर की वही टोपी पहनने की याद है, जो उन्होंने फिल्म 'आवारा' में पहनी थी! मैंने उन्हें राज कपूर पर छपी उस किताब की एक प्रति भेंट की, जिसे रूस ने फिल्म के माध्यम से दुनिया के लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने में उनके योगदान को श्रद्धांजलि के रूप में प्रकाशित किया था। उन्होंने बदले में मुझे एक उपहार दिया और मेरी किताब की एक प्रति पर हस्ताक्षर करते हुए लिखा, 'मैं राज कपूर से प्यार करता था और मुझे आज भी उनकी याद आती हैं।'"

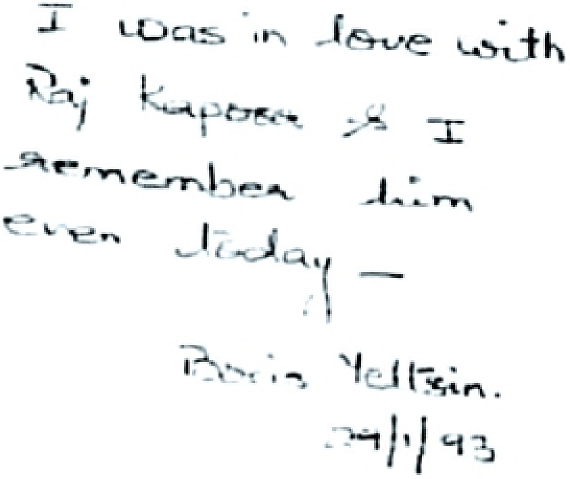

कान्स फिल्म महोत्सव 2002: महोत्सव के इतिहास में पहली बार किसी अभिनेता को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। यह किसी भारतीय अभिनेता के लिए भी पहली बार था।

सोनी टेलीविजन द्वारा श्रद्धांजलि: एक पूरे सीजन के लिए, सोनी टेलीविजन ने 'शोमैन ऑफ द मिलेनियम' नामक एक कार्यक्रम चलाया, जिसके तहत राज कपूर द्वारा निर्मित सभी फिल्मों को नेटवर्क टेलीविजन पर दिखाया गया।

राज कपूर पर वृत्तचित्र: फिल्म्स डिवीजन ऑफ इंडिया ने सिद्धार्थ काक द्वारा निर्देशित 'राज कपूर' नामक वृत्तचित्र का निर्माण किया; और सोनी टेलीविजन ने बॉबी बेदी द्वारा निर्देशित 'कहता है जोकर' नामक वृत्तचित्र का निर्माण और प्रसारण किया।
लंदन के वेम्बली में एक मिलेनियम शो का आयोजन उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए किया गया था, जहां प्रख्यात सितारों ने राज कपूर के गाने गाए।
राज कपूर की 77वीं जयंती पर, भारत सरकार द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया था।

राज कपूर पर प्रकाशित पुस्तकों में बन्नी रूबेन द्वारा लिखित 'राज कपूर द फैबुलस शोमैन', जयप्रकाश चौकसे द्वारा लिखित 'राज कपूर: सृजन प्रक्रिया' (हिंदी में), मालती सहाय और विमल दिसानायके द्वारा लिखित 'राज कपूर की फिल्में: प्रवचनों का सामंजस्य' और उनकी बेटी रितु नंदा द्वारा लिखित 'राज कपूर स्पीक्स' (मॉस्को में इस्कुस्टवो पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित) शामिल हैं।

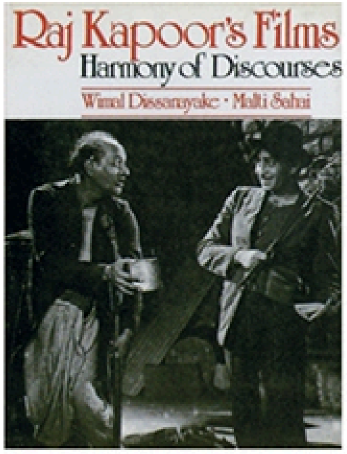

Raj Kapoor Jana Kalyan Sanstha(RKJKS)

राज कपूर जनमानस के नेता थे; उन्होंने स्वयं को जनता से जुड़ा हुआ माना और अपनी लोकप्रियता के लिए हमेशा जनता के ऋणी रहे। उनकी स्मृति में, उनकी पत्नी और बच्चों ने 14 दिसंबर 2001 को, राज कपूर की 77वीं जयंती पर, राज कपूर जन कल्याण संस्था (आरकेजेकेएस) नामक एक पंजीकृत धर्मार्थ संस्था की स्थापना की।

ट्रस्ट द्वारा शुरू किया गया पहला कार्यक्रम भारतीय जीवन बीमा निगम के माध्यम से जनश्री बीमा योजना और शिक्षा सहयोग योजना के द्वारा समाज के आर्थिक रूप

से कमजोर वर्गों की सहायता करना है। इस बीमा योजना के तहत, मात्र ₹100 के प्रीमियम पर, गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले व्यक्ति को प्राकृतिक मृत्यु की स्थिति में ₹20,000 और दुर्घटना से मृत्यु की स्थिति में ₹50,000 का एक वर्ष का बीमा कवर मिलता है। विकलांगता की स्थिति में, उन्हें ₹25,000 से ₹50,000 तक का बीमा कवर मिलता है। शिक्षा योजना के तहत, एक परिवार के अधिकतम दो बच्चों को नौवीं से बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा के लिए ₹100 प्रति बच्चे की दर से, यानी ₹200 प्रति माह, चार वर्षों के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
स्थापना के बाद से, आरकेजेकेएस ने जनश्री बीमा योजना के तहत ₹55.32 लाख के बीमा प्रीमियम का भुगतान करके 55,322 बीमा कवर लिए हैं और ₹61.30 लाख के 218 मृत्यु दावों का निपटान किया है। शिक्षा सहयोग योजना के तहत 3,735 छात्रों को ₹31.40 लाख की छात्रवृत्ति प्रदान की गई है।
ट्रस्ट ने राष्ट्रीय नेत्रहीनता निवारण संस्था को भी दान दिया है, जिसका उपयोग दूरदराज के गांवों में 400 से अधिक बच्चों को चश्मा उपलब्ध कराने के लिए किया गया। ट्रस्ट इन कार्यक्रमों को जारी रखने के लिए दान देता और एकत्र करता है। ट्रस्ट को दिए गए सभी दान आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80G के तहत आयकर छूट के पात्र हैं (पत्र संख्या DIT(E) 2007-08 /R/429/4051 दिनांक 18 मार्च 2008 देखें)। ₹100 या उससे अधिक के दान के चेक राज कपूर जन कल्याण संस्था, ए-1 फ्रेंड्स कॉलोनी (पश्चिम), नई दिल्ली 110065 को भेजे जा सकते हैं।

पुरस्कार

1969: भारत के पूर्व राष्ट्रपति जाकिर हुसैन द्वारा गणतंत्र दिवस पर दिया गया सम्मान
1971: पूर्व राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने सिनेमा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया।
1979: शिरोमणि पुरस्कार (सिख अध्ययन संस्थान, दिल्ली), भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया।
1981: शांति और मित्रता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र, सोवियत लैंड-नेहरू पुरस्कार समिति, मॉस्को
1988: Dadasaheb Phalke Award
फिल्म पुरस्कार
1952
तेज़
अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, मुंबई द्वारा प्रशस्ति पत्र
1954
बूट पॉलिश
सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता, सर्वश्रेष्ठ छायांकन, फिल्मफेयर पुरस्कार

1955
बूट पॉलिश
कान्स फ़िल्म महोत्सव में बेबी नाज़ के लिए अभिनय हेतु विशेष प्रशंसा; दक्षिण पूर्व एशियाई फिल्म महोत्सव में शंकर-जयकिशन को संगीत के लिए पुरस्कार।
श्री 420
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का क्षेत्रीय योग्यता प्रमाण पत्र

राज कपूर को 1957 में फिल्म 'जागते रहो' के लिए कार्लोवी वेरी से मिला प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ।

1956
Ek Din Ratre
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की क्षेत्रीय (बंगाली) श्रेणी में योग्यता प्रमाण पत्र
श्री 420
सर्वश्रेष्ठ छायांकन, सर्वश्रेष्ठ संपादक, फिल्मफेयर पुरस्कार
1957
Jagte Raho
कार्लोवी वेरी अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में ग्रैंड प्रिक्स
1959
अनाड़ी
फिल्मफेयर पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
1961
Jis Desh Mein Ganga Behti Hai
राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों में क्षेत्रीय (हिंदी) श्रेणी में योग्यता प्रमाण पत्र; फ़िल्मफेयर पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन और सर्वश्रेष्ठ संपादन के लिए पुरस्कार।
1964
संगम

फिल्मफेयर पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ ध्वनि अभिलेखपाल, सर्वश्रेष्ठ संपादक; बॉम्बे फिल्म एडिटर्स एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ संपादित फिल्म के लिए प्रशस्ति पत्र

1971

Mera Naam Joker

सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार, सर्वश्रेष्ठ रंगीन छायांकन, सर्वश्रेष्ठ पुरुष पार्श्व गायक (राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार); सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ संगीत, सर्वश्रेष्ठ छायांकन, सर्वश्रेष्ठ ध्वनि अभिलेखपाल, सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक (पुरुष) (फिल्मफेयर पुरस्कार)

1973

पुलिसमैन

फिल्मफेयर पुरस्कार: सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन (रंगीन), सर्वश्रेष्ठ ध्वनि अभिलेखपाल, सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक (पुरुष); फिल्म प्रशंसक संघ, मद्रास द्वारा सर्वश्रेष्ठ निर्देशक; भारतीय फिल्म निर्देशक संघ, बॉम्बे द्वारा सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए प्रशस्ति पत्र; शमा (उर्दू फिल्म पत्रिका) द्वारा उत्कृष्ट निर्देशन; फिल्म दर्शक संघ, बॉम्बे द्वारा सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ फिल्म

1974

तीन दशकों की अवधि में फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति में युवा चेतना के पुनर्जागरण में किए गए सराहनीय योगदान के लिए पुरस्कार, नाना चुडासमा, जायंट्स इंटरनेशनल, बॉम्बे द्वारा प्रदान किया गया।

1975

दो जासूस

सर्वश्रेष्ठ चरित्र अभिनेता, आंध्र प्रदेश फिल्म पत्रकार संघ, विजयवाड़ा

1978

Satyam Shivam Sundaram

सर्वश्रेष्ठ संगीत, सर्वश्रेष्ठ छायांकन, फिल्मफेयर पुरस्कार

1982

Prem Rog

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ संपादक, सर्वश्रेष्ठ गीतकार, फिल्मफेयर पुरस्कार

1985

राम तेरी गंगा मैली

सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ संगीत, सर्वश्रेष्ठ कला निर्देशन, फिल्मफेयर पुरस्कार

फिल्मोग्राफी

1935

INQUILAB

निर्देशक: देबाकी बोस. कलाकार: दुर्गा खोटे, के.सी. डे, पृथ्वीराज, नवाब, राज कपूर (बाल कलाकार के रूप में)

1943

गौरी
Director: Kidar Sharma. Cast: Shamim, Prithviraj, Monica Desai, Raj Kapoor
HAMARI BAAT
Director: M.I. Dharamsi. Cast: Devika Rani, Jairaj, David, Shah Nawaz, Raj Kapoor
1946
वाल्मीकि
निर्देशक: भालजी पेंढारकर. कलाकार: शांता आप्टे, पृथ्वीराज, नीला, बाबूराव पेंढारकर, राज कपूर
1947
चित्तौड़ विजय
निर्देशक: मोहन सिन्हा. कलाकार: मधुबाला, सुरेंद्र, वस्ती, मोनिका देवी, राज कपूर
दिल केएल रानी
निर्देशक: मोहन सिन्हा. कलाकार: मधुबाला, श्याम, बद्री प्रसाद, मुंशी खंजर, राज कपूर
नील कमल
निर्देशक: किदार शर्मा. कलाकार: राज कपूर, बेगम पारा, मधुबाला, राजेंद्र
JAIL YATRA
Director: G. Jagirdar. Cast: Jagirdar, Raj Kapoor, Kamini Kaushal, Harish, Vikram Kapoor, Badri Prasad
1948
आग
निर्माता-निर्देशक: राज कपूर. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, निगार, कामिनी कौशल, प्रेम नाथ
प्यार
निदेशक: एन.एम. केलकर। कलाकार: मधुबाला, राज कपूर, अलका रानी, निंबालकर, माधव काले
गोपीनाथ
निर्देशक: महेश कौल. कलाकार: राज कपूर, तृप्ति मित्रा, नंदकिशोर
1949
अंदाज़
Director: Mehboob. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Dilip Kumar, V.H. Desai, Cuckoo
BARSAAT
निर्माता-निर्देशक: राज कपूर. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, निम्मी, प्रेम नाथ, के.एन. सिंह
PARIVARTAN
निदेशक: एन.आर. आचार्य. कलाकार: राज कपूर, मोतीलाल, अंजलि देवी, मोनी चटर्जी, वसंत मालिनी
SUNHERE DIN

निदेशक:सतीश निगम. कलाकार: राज कपूर, रेहाना, निगार, हारून, हीरा सावंत
1950
BHANWRA
Director: G. Rakesh. Cast: Raj Kapoor, Nimmi, Lalita Pawar, K.N. Singh, Hiralal, Sunder, Ratan Kumar
बावरे नैन
निर्देशक: किदार शर्मा. कलाकार: राज कपूर, गीता बाली, विजयलक्ष्मी, जसवन्त, पेसी पटेल
दास्तान
निदेशक: ए.आर. कारदार. कलाकार: राज कपूर, सुरैया, अल नासिर, सुरेश, प्रतिमा देवी, शकीला, मुराद
JAN PAHCHAN
निदेशक: फली मिस्त्री. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, जीवन, श्यामा, दुलारी, अमर, मुकरी
PYAR
निदेशक: वी.एम. व्यास. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, याकूब, गुलाम, श्यामा, नवाब, नीला, केसरी, डब्ल्यू.एम. KHAN
रक्षक
Director: PL. Santoshi. Cast: Raj Kapoor, Rehana, Om Prakash, David, Baby Tabassum, Paro, Radhakishen
1951
आज की ताजा खबर
निर्माता-निर्देशक: राज कपूर। कलाकार: राज कपूर, नरगिस, के.एन. सिंह, लीला चिटनिस, पृथ्वीराज।
1952
एम्बर
Director: Jayant Desai. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Agha, Baby Tanuja, Ramesh Sinha, Bipin Gupta
अनहोनी
Director: K.A. Abbas. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Agha, Om Prakash, David, Achla Sachdev
आशियाना
Director: B. Trilochan. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Mohna
बेवफ़ा
निर्देशक: एम.एल. आनंद। कलाकार: राज कपूर, नरगिस, अशोक कुमार, नीलम, सिद्दीकी
1953
आह
निर्माता: राज कपूर. निर्देशक: राजा नवाथे. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, विजयलक्ष्मी, प्राण, मुकेश, रमेश सिन्हा, भूपेन्द्र कपूर, लीला मिश्रा
के लिए

Director: Kumar. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Motilal, Kumar, Pramilla, Kamal Mehra
PAAPI
निर्देशक: चंदूलाल शाह. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, दुलारी, पी. कैलाश, मारुति, रमेश ठाकुर
1954
बूट पॉलिश
Producer: Raj Kapoor. Director: Prakash Arora. Cast: Raj Kapoor, Baby Naaz, Ratan Kumar, David, Veena
1955
श्री 420
Producer-director: Raj Kapoor. Cast: Raj Kapoor, Nargis, Nadira, Lalita Pawar, Bhudo Advani, M. Kumar, Hari Shivdasani, Nana Palsikar
1956
CHORI CHORI
निर्देशक: अनंत ठाकुर. कलाकार: राज कपूर, नरगिस, जॉनी वॉकर, प्राण, गोप, अमीर बानो
JAGTE RAHO
निर्माता: राज कपूर. निदेशक: एस. मित्रा और ए. मोइत्रा। कलाकार: राज कपूर, प्रदीप कुमार, सुमित्रा देवी, स्मृति विश्वास, पहाड़ी सान्याल, सुलोचना चटर्जी
1957
AB DILLI DUR NAHIN
निर्माता: राज कपूर. निर्देशक: अमर कुमार. कलाकार: रोमी, सुलोचना, याकूब, अनवर, मोतीलाल
शारदा
Director: L.V. Prasad. Cast: Raj Kapoor, Meena Kumari, Shyama, Anita Guha, Agha, Raj Mehra
1958
देखभाल
निर्देशक: एस. बनर्जी। कलाकार: राज कपूर, माला सिन्हा, महमूद, ललिता पवार, राधाकिशन।
PHIR SUBAH HOGI
निर्देशक: रमेश सहगल. कलाकार: राज कपूर, माला सिन्हा, रहमान, लीला चिटनिस, मुबारक
1959
अनाड़ी
निर्देशक: हृषिकेश मुखर्जी. कलाकार: राज कपूर, नूतन, ललिता पवार, मोतीलाल, शुभा खोटे, मुकरी
CHAR DIL CHAR RAHEN
निदेशक: के.ए. अब्बास. कलाकार: राज कपूर, मीना कुमारी, अजीत, निम्मी, शम्मी कपूर, कुमकुम
डू उस्ताद

निर्देशक: तारा हरीश. कलाकार: राज कपूर, मधुबाला, शेख मुख्तार, सुलोचना, डेज़ी ईरानी
कन्हैया
Director: Om Prakash. Cast: Raj Kapoor, Nutan, Om Prakash, Raj Mehra, Lalita Pawar, Raaj Kumar
MAIN NASHE MEIN HOON
Director: Naresh Saigal. Cast: Raj Kapoor, Mala Sinha, Mubarak, Nishi, Dhumal, Maruti
1960
CHHALIA
Director: Manmohan Desai. Cast: Raj Kapoor, Nutan, Pran, Rehman, Shobhana Samarth, Raja
JIS DESH MEIN GANGA BEHTI HAI
निर्माता: राज कपूर. निर्देशक: राधू कर्माकर. कलाकार: राज कपूर, पद्मिनी, प्राण, तिवारी, नयामपल्ली, चंचल, राज मेहरा, ललिता पवार
SHRIMAN SATYAWADI
निर्देशक: एस.एम. अब्बास। कलाकार: राज कपूर, शकीला, महमूद, नज़ीर हुसैन
1961
NAZRANA
निर्देशक: श्रीधर. कलाकार: राज कपूर, वैजयंतीमाला, उषा किरण, आगा, सविता चटर्जी
1962
AASHIQ
निर्देशक: हृषिकेश मुखर्जी. कलाकार: राज कपूर, पद्मिनी, नंदा, अभि भट्टाचार्य, मुकरी, लीला चिटनिस
1963
DIL HI TO HAI
Directors: P.L. Santoshi and C.L. Rawal. Cast: Raj Kapoor, Nutan, Agha, Pran, Savita Chatterjee
EK DIL SAU AFSANE
Director: R.C. Talwar. Cast: Raj Kapoor, Waheeda Rehman, Lalita Pawar, Sulochana Chatterjee
1964
DULHA DULHAN
निर्देशक: रवीन्द्र दवे. कलाकार: राज कपूर, साधना, आगा, के.एन. सिंह
संगम
Producer-director: Raj Kapoor. Cast: Raj Kapoor, Vyjayanthimala, Rajendra Kumar, Raj Mehra, Nana Palsikar
1965
TEESRI KASAM
Director: Basu Bhattacharya. Cast: Raj Kapoor, Waheeda Rehman, Dulari, Iftekhar, Asit Sen

1967
दुनिया भर में
निर्देशक: पच्ची. कलाकार: राज कपूर, राजश्री, प्राण, राज महमूद, ओम प्रकाश
न्यायाधीश
Director: Mahesh Kaul. Cast: Raj Kapoor, Saira Banu, Kanhaiyalal, Lalita Pawar, Kamal Kapoor, Ulhas, Ravindra Kapoor
1968
SAPNON KA SAUDAGAR
निर्देशक: महेश कौल. कलाकार: राज कपूर, हेमा मालिनी, जयंत, तनुजा, अचला सचदेव
1970
MERA NAAM JOKER
निर्माता-निर्देशक: राज कपूर. कलाकार: राज कपूर, पद्मिनी, केन्सिया रयाबिंकिना, सिमी गरेवाल, ऋषि कपूर
1971
KAL AAJ AUR KAL
Producer: Raj Kapoor. Director: Randhir Kapoor. Cast: Prithviraj Kapoor, Raj Kapoor, Randhir Kapoor, Babita
1973
बॉबी
निर्माता-निर्देशक: राज कपूर. कलाकार: ऋषि कपूर, डिंपल कपाड़िया, प्राण, प्रेम नाथ, प्रेम चोपड़ा, अरुणा ईरानी
MERA DESH MERA DHARAM
निर्देशक: दारा सिंह. कलाकार: राज कपूर, दारा सिंह, मीना राय
1975
DHARAM KARAM
Producer: Raj Kapoor. Director: Randhir Kapoor. Cast: Raj Kapoor,Randhir Kapoor, Rekha
जासूस
Director: Naresh Kumar. Cast: Raj Kapoor, Rajendra Kumar, Shailendra Singh, Bhavna Bhatt
1976
खान दोस्त
Director: Dulal Guha. Cast: Raj Kapoor, Shatrughan Sinha, Mithu Mukherjee
1977
चंडी सोना
निर्देशक: संजय खान। कलाकार: राज कपूर, संजय खान, परवीन बाबी
1978
NAUKRI
Director: Hrishikesh Mukherjee. Cast: Rai Kapoor, Rajesh Khanna, Deven Verma

SATYAM SHIVAM SUNDARAM
Producer-director: Raj Kapoor. Cast: Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Padmini Kolhapure
1980
अब्दुल्ला
Director: Sanjay Khan. Cast: Raj Kapoor, Sanjay Khan, Zeenat Aman
1981
बीवी-ओ-बीवी
Producer: Raj Kapoor. Director: Rahul Rawail. Cast: Sanjeev Kumar, Randhir Kapoor, Poonam Dhillon
1982
GOPICHAND JASOOS
निर्देशक: नरेश कुमार. कलाकार: राज कपूर, जीनत अमान, प्रेम चोपड़ा, आई.एस. जौहर
PREM ROG
Producer-director: Raj Kapoor, Padmini Kolhapure, Shammi Kapoor, Raza Murad
VAKIL BABOO
Director: Asit Sen. Cast: Raj Kapoor, Shashi Kapoor, Zeenat Aman, Rakesh Roshan
1985
राम तेरी गंगा मैली
निर्माता: रणधीर कपूर. निर्देशक: राज कपूर. कलाकार: राजीव कपूर, मंदाकिनी, दिव्या राणा, सईद जाफरी, रज़ा मुराद, कुलभूषण खरबंदा
CHOR MANDALI
निर्देशक: सी.एल. रावल। कलाकार: राज कपूर, आशा पारेख। (फिल्म बनी, लेकिन रिलीज नहीं हुई)
UMEED
निर्देशक: नरेश सहगल. कलाकार: राज कपूर, शम्मी कपूर, पूजा सक्सेना। आंशिक रूप से फिल्माया गया)
मेहंदी
Director: Randhir Kapoor. Cast: Rishi Kapoor, Zeba Bakhtiar

स्वीकृतियाँ

मुझे शक्ति और ज्ञान प्रदान करने के लिए मैं अपने गुरु शिरडी साई बाबा को श्रद्धापूर्वक धन्यवाद देता हूँ। साथ ही, मैं उन सभी लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सहायता और योगदान से यह परियोजना संभव हो पाई है।

टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप, इंडियन एक्सप्रेस, एनएफडीसी (बॉम्बे), फिल्म्स डिवीजन ऑफ इंडिया, इंडिया डाइजेस्ट, एस/आईओआई/वीटी/एमई, इंडिया टुडे, मिड-डे, सिनेब्लिट्ज, फिल्मफेयर, स्क्रीन, बॉबी बेदी, वर्षा बेदी, यशराज फिल्म्स, सोनी टेलीविजन और सिनेविस्टा स्टूडियोज। दुर्लभ व्यक्तिगत तस्वीरें उपलब्ध कराने के लिए, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रेस सूचना ब्यूरो, उमी

सियाल, सुरेश जेठवा, एम.इ. कूर, कलर फोटो स्टूडियो, जितेंद्र आये, आर.एम. कुमटकर, कामथ ब्रोकर्स, कामत फोटो फ्लैश, इंटरनेशनल न्यूज फोटोज, रिपब्लिक फोटो न्यूज ब्यूरो, भारत पब्लिसिटी ट्रस्ट, बी.जे. पंचाल और दीपक स्टूडियोज का धन्यवाद। राज कपूर से संबंधित व्यक्तिगत किस्से सुनाने और अब तक अप्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराने के लिए, मैं कृष्णा कपूर, यश चोपड़ा, जयप्रकाश चौकसे की महात्मा गांधी और सिनेमा, विट्ठल भाई पटेल, कमल और कुप्पी खन्ना, डॉ. ओ.आर. का आभारी हूं। कपूर, रणधीर कपूर, ऋषि कपूर, राजीव कपूर, रीमा जैन, हिंदुजा, गुलु लालवानी, शम्मी कपूर, शशि कपूर, अमिताभ बच्चन, विश्व मेहरा, विन्नी आहूजा, एस.एस. सैनी, अशोक कौल, प्रेम नाम है मेरा, रकिता नंदा द्वारा प्रेम चोपड़ा, बॉलीवुड: ललित मोहन जोशी द्वारा संपादित पॉपुलर इंडियन सिनेमा, रोमांसिंग विद लाइफ: एन ऑटोबायोग्राफी बाय देव आनंद, अवतार: इंडिया इन 50 लाइव्स बाय सुनील खिलनानी, नितिन मुकेश, करण जौहर, धर्मेश दर्शन, केतन देसाई, राहुल रवैल, खालिद मोहम्मद, बनी रूबेन, मालती सहाय।

A special mention of gratitude is due to my husband Rajan Nanda for backing me and being with me on this journey through its most trying moments. For continuous, unending support which is not always easy to enlist, I am grateful to Nitasha Nanda, Nikhil Nanda, Shweta Nanda, Dushyant Mehta, Suman Sehgal, Anuj Bahri, Sharad Gupta, Shantanu Ray Chaudhuri, Bidisha Srivastava, Yugesh Gupta, Rahul Singh, Rakesh Dadwal, Arun Soni, Sunita Bansal, Sunny Abraham, Manoj Srivastava, Sajit, Riti Srivastava, Mangla, Pramod, Shammi Kanojia, Madan Arora and Sumeet Pasricha.

इस परियोजना के लिए प्रारंभिक प्रेरणा और प्रोत्साहन देने के लिए मैं अरुण पुरी का भी आभारी हूं। उन सभी अन्य लोगों का भी आभार व्यक्त करता हूं जिनका योगदान इतना विविध और व्यापक है कि उनका नाम लेना संभव नहीं है, मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि उनकी सहायता मेरे हृदय में अंकित है। मुझे आशा है कि वे सभी इस प्रकाशन की खुशी में शामिल होंगे।

किताब के बारे में

राज कपूर भारतीय सिनेमा के सर्वमान्य जनक थे। वे एक असाधारण कलाकार, प्रेमी, आदर्शवादी, ज्ञानी और समाज सुधारक भी थे। निर्माता, निर्देशक, अभिनेता, संपादक, संगीतकार और उत्कृष्ट कहानीकार के रूप में, सिनेमा पर उनकी पकड़ ने उन्हें विश्व स्तर पर सबसे अधिक देखी जाने वाली कुछ फिल्मों का निर्माण करने में सक्षम बनाया, ऐसी फिल्में जिन्होंने दर्शकों की कई पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध कर दिया है।

राज कपूर के पास न सिर्फ बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग थी, बल्कि ऐतिहासिक सूझबूझ भी थी। उन्होंने सिर्फ फिल्में नहीं बनाईं, बल्कि 'बॉलीवुड' शब्द के प्रचलन में आने से पहले ही उन्होंने भारतीय फिल्म जगत के मुख्यधारा के दर्शकों को गढ़ दिया। सिनेमाई परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, उन्होंने उसमें बदलाव किए, नए तत्व जोड़े और एक विशिष्ट, मोहक रोमांटिक और बेहद लोकप्रिय कृति का निर्माण किया।

वे भारत के सबसे महान सांस्कृतिक राजदूत थे। उनकी फिल्में भावनाओं और मनोरंजन की एक विचारधारा थीं – अगर उन्हें विचारधारा कहा जा सकता है तो। उन्होंने अपने सामाजिक सरोकारों और संदेशों को हास्य, संगीत, रोमांस और मेलोड्रामा के साथ पेश किया और दर्शकों की नब्ज़ को बखूबी समझा। राज कपूर के फिल्म निर्माण में सटीक योगदान पर अंतहीन बहस हो सकती है, लेकिन इस बात से शायद ही कोई इनकार कर सके कि वे हिंदी सिनेमा के अब तक के सबसे महान मनोरंजनकर्ता थे।

लेखक के बारे में

राज कपूर: द वन एंड ओनली शोमैन, उनके पांच बच्चों - रणधीर कपूर, रितु नंदा, ऋषि कपूर, रीमा जैन और राजीव कपूर - द्वारा रचित और आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज द्वारा निर्मित एक अनूठी कृति है। यह आत्मकथा और जीवनी दोनों का अनूठा संगम है। आत्मकथा में उनके स्वयं के शब्दों का उपयोग किया गया है, जिन्हें साक्षात्कारों, डायरियों और किस्सों से संकलित किया गया है, ताकि एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की गहरी झलक मिल सके। राज कपूर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए, उनके विचारों और शब्दों की न तो व्याख्या की गई है और न ही उन्हें पुनर्लिखित किया गया है, बल्कि केवल संकलन और संपादन किया गया है। जीवनी उनके परिवार, सहकर्मियों और मित्रों की यादों के माध्यम से उनके शानदार व्यक्तित्व के कम ज्ञात पहलुओं को भावी पीढ़ियों के लिए संजोने का एक प्रयास है। हर घटना राज कपूर के मन की बात बयां करती है। उनकी बेटी रितु नंदा द्वारा प्रस्तुत और उनके बच्चों द्वारा प्रेमपूर्वक संकलित यह पुस्तक, महान कलाकार का संपूर्ण अध्ययन है और उनकी स्मृति और भावना को सदा जीवित रखेगी।

***** समाप्त

*****

sjeet

Harper Collins
हमसे बात करें
ट्विटर पर बातचीत में शामिल हों
http://twitter.com/HarperCollinsIN

हमारी किताबों से संबंधित पोस्ट ढूंढने और अपने दोस्तों के साथ साझा करने के लिए हमें फेसबुक पर लाइक करें।
http://www.facebook.com/HarperCollinsIndia
इंस्टाग्राम पर हमारी फोटो स्टोरीज़ को फॉलो करें
http://instagram.com/harpercollinsindia/
Tumblr पर हमारी किताबों से जुड़ी मज़ेदार तस्वीरें, उद्धरण और बहुत कुछ पाएं।
http://www.tumblr.com/blog/harpercollinsindia

यह पुस्तक पहली बार 2002 में वाइकिंग/पेंगुइन द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसका संशोधित और अद्यतन संस्करण 2017 में हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स द्वारा भारत में हार्डकवर में प्रकाशित किया गया था।
2 4 6 8 10 9 7 5 3 1
कॉपीराइट © रितु नंदा 2017
चित्रों का कॉपीराइट © आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज के पास है।
पी-आईएसबीएन: 978-93-5277-040-3
ईपुब संस्करण © दिसंबर 2017 ISBN: 978-93-5277-041-0
ऋतु नंदा इस कृति की लेखिका के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार पर जोर देती हैं।
इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और मत लेखिका के अपने हैं और तथ्य उन्हीं के द्वारा बताए गए हैं, और प्रकाशक इसके लिए किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं हैं।
कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ईबुक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रानिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया जाए, संग्रहीत या उसमें शामिल नहीं किया जा सकता है।
कवर डिज़ाइन: हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया
कवर इमेज: आर.के. फिल्म्स एंड स्टूडियोज
www.harpercollins.co.in
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स
ए-75, सेक्टर 57, नोएडा, उत्तर प्रदेश 201301, भारत 1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट, लंदन, SE1 9GF, यूनाइटेड किंगडम 2 ब्लूर स्ट्रीट ईस्ट, टोरंटो, ओंटारियो M4W 1A8, कनाडा 13वां तल, 201 एलिजाबेथ स्ट्रीट (पीओ बॉक्स A565, NSW, 1235), सिडनी NSW 2000, आस्ट्रेलिया 195 ब्रॉडवे, न्यूयॉर्क, NY 10007, संयुक्त राज्य अमेरिका